CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्र. सं.
५९

ऋग्वेद संहिता

(वैदिकजीवनभाष्यसुता)

पदपाठ, शब्दार्थ, संस्कृत और
भाषा अनुवाद टिप्पणी और मन्त्रों के
आशय पर व्याख्यान से युक्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्र. सं. ५३

R.

रत्न पुस्तक भण्डा
"ग्रीन हाउस"
२७१, माईतीघर
काठमाडौं, नेपाल
फोन : ४-२४०८५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वे६-६३८

ऋग्वेद संहिता

(वैदिकजीवनभाष्ययुता)

पदपाठ, शब्दार्थ, संस्कृत और
भाषा अनुवाद टिप्पणी और मन्त्रों के
आशय पर व्याख्यान से युक्त

प्रथम मण्डल : चतुर्थ खण्ड

सम्पादक
शिवनाथ आहिताग्नि
पं० शंकरदत्त शास्त्री

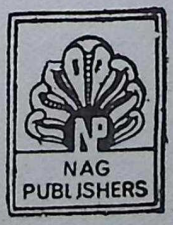

नाग प्रकाशक
११ए/यूए, जवाहर नगर, दिल्ली-७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाग प्रकाशक
(१) ११ए/यू. ए. जवाहरनगर, दिल्ली-७
(२) ८ ए/यू. ए. ३ जवाहर नगर, दिल्ली-७
(३) जलालपुर माफी (चुनार-मिर्जापुर) उ० प्र०

ISBN 81-7081-246-1(SET)

NEPAL SANSKRIT UNIVERSITY, NAGAR
पुस्तकालय
Acc. 25024
29056

प्रथम संस्करण १९०४
द्वितीय संस्करण १९९१

मूल्य: रु०

श्री नागशरण सिंह द्वारा नाग प्रकाशक, जवाहर नगर, दिल्ली से
प्रकाशित ज्ञान आफसेट, शहजादा बाग, दिल्ली से मुद्रित ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वेद ६३८

इन्द्रोदेवता निचृत्त्रिष्टुप्छन्दः।१०।११।११।११।

त्वंमहांइन्द्रयोहशुष्मै द्यावाज-
ज्ञानःपृथिवीअमेधाः । यद्वतेवि-
श्वागिरयश्चिदभ्वा भियाहळ्हासः-
किरणानैजन् ।१।

त्वम्	त्वम्	तू
महान्	महान्	बड़ा
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
यः	यः	जो
ह	एव	ही
शुष्मैः	बलैः	बलों से
द्यावा	द्यावा+	–

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जज्ञानः	प्रादुर्भवन्	प्रकट होता हुअ
पृथिवी०	द्यावा+पृथिवी द्यावा पृथिव्यौ	द्यौ(और)पृथिवी व
१ अमे	भये	भय में
१ धाः	अधारयः	धारण किया
यत्	यदा	जब
ह	खलु	सचमुच
ते	तव	तेरे
विश्वा	सर्वाणि (शेर्लोपः)	सब
गिरयः	पर्वतः	पर्वत
चित्	अपि	भी
अभ्वा	महान्तः (नि०३।३।विभक्तेरात्वम्)	बड़े
भिया	भयेन	भय से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दृळ्हासः	दृढाः	दृढ़
किरणाः	किरणाः	किरणें
न	इव	जैसे
एजन्	कम्पितवन्तः (एजृकम्पने)	कांपने लगे

संस्कृतार्थः

हे इन्द्र ! त्वं महान् (असि) (यस्त्वम्, प्रादुर्भवन्नेव (निज-) बलैर्द्यावापृथिव्योभयेऽधारयः, यदाखलु तव भयेन सर्वाणि (भूतानि) महान्तो दृढाः (च) पर्वता अपि किरणा इव कम्पितवन्तः ॥१॥

भाषार्थः।

हे इन्द्र ! आप महान (हैं) जिस आपने प्रकट होते ही (अपने) बलों से द्यौ (और) पृथिवी को भय में धारण किया, जब सचमुच आप के भय से सम्पूर्ण (जीव) (और) बड़े २ दृढ़ पर्वत भी किरणों की न्याईं कांपने लगे ॥ १ ॥

(१) भय में धारण किया अर्थात भयभीत किया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोदेवता त्रिष्टुप्छन्दः ।१।१।१।१।१।१।

आयद्धरीइन्द्रविव्रतावे रातेवज्रं-
जरितावाह्वोधात् । येनाविहर्य्य-
तक्रतोअमित्रान् पुरइष्णासिपुरु-
हूतपूर्वीः ॥ २ ॥

आ	आ+	-
यत्	यदा	जब
हरी०	अश्वौ	दोनों घोड़ों को
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
विऽव्रता	विविधं व्रतम् (गमन रूपम्)कर्म्म ययोस्तौ (विभक्तेरात्वम्)	अनेक रस्ते चलने वालों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वेः	आ+वेः, आगमयसि (वीगतौ, अन्तर्भावित ण्यर्थो लडर्थे लङ्)	तू लाता है
आ	आ+	–
ते	तव	तेरे
वज्रम्	वज्रम्	वज्र को
जरिता	स्तोता	स्तोता
बाह्वोः	हस्तयोः	दोनों हाथों में
धात्	आ+धात् धारयति (अन्तर्भावितण्यर्थो लडर्थे लुङ्)	रखता है
येन	येन	जिससे
अविहर्य्य तक्रतो०	हेऽप्रेप्सित कर्मन् (हर्य्यतिः प्रेप्साकर्म्मा निरु० ।७। १७)	हे निष्काम कर्म करने वाले
अमित्रान्	शत्रून्	शत्रुओं को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुरः	पुराणि	गढ़ों को
दृष्णासि	प्रहरसि (आ०को०)	प्रहार करते हो
परुऽहूत	हे बहुभिराहूत !	हे बहुतों से बुलाये गए
पूर्वीः	प्रभूतानि (पूर्वसवर्णदीर्घः)	बहुत

संस्कृतार्थः।

हे ऽप्रेप्सितकर्म्मन्! बहुभिराहूतेन्द्र ! यदा (त्वम्) विविध गमन युक्तावश्वौ (स्तोतारं प्रति) आगमयसि (तदा) स्तोता तव हस्तयोर्वज्रं धारयति येन (त्वम्) शत्रून् (तेषाम्) प्रभूतानि पुराणि (च) प्रहरसि ॥ २॥

भाषार्थः।

हे निष्काम कर्म्म करने वाले बहुतों से बुलाए गए इन्द्र ! जब आप अनेक रस्ते चलने वाले दोनों घोड़ों को (स्तोता की ओर) लाते हैं (तब) स्तोता आपके दोनों हाथों में बज्र को रखता है जिस से आप शत्रुओं(और उनके) बहुत गढों पर प्रहार करते हैं॥२॥

इन्द्रोदेवता निचृत्त्रिष्टुप्छन्दः।११।१०।११।११।

त्वंसत्यइन्द्रधृष्णुरेतान् त्व-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋभुक्षानर्य्यस्त्वंषाट् । त्वंशुष्णं वृजनेपृक्षआणौ यूनेकुत्सायद्युमते सचाहन् ।३।

त्वम्	त्वम्	तू
सत्यः	सत्यस्वरूपः	सत्यरूप
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
धृष्णुः	धर्षयिता	दबाने वाला
एतान्	एतान्	इन को
त्वम्	त्वम्	तू
ऋभुक्षाः	महान् (निघं०३।३)	महान
नर्य्यः	नृभ्योहितः	मनुष्यों के लिये हितकारी
त्वम्	त्वम्	तू

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

षाट्	अभिभविता	जयशाली
त्वम	त्वम्	तूने
१ शुष्णम्	शुष्णम्	शुष्ण को
वृजने	वर्जनंहिंसनं तेन युक्ते	हिंसायुक्त में
पृत्ने	सम्पृक्त वीरवति	जुटेहुएवीरोंवालेमें
आणौ	संग्रामे (निघ०२।१०)	युद्ध में
यूने	यूने	युवा के लिये
१ कुत्साय	कुत्साय	कुत्स के लिये
द्युऽमते	दीप्तिमते	दीप्तमानकेलिये
सचा	सहायः (भूत्वा)	सहायक(होकर)
अहन्	हतवान्	नाश किया

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र ! सत्यस्वरूपस्त्वमेतान् (शत्रून्प्रति) धर्षयिता (असि) त्वं महान्(असि) त्वंनृभ्योहितकारी त्वमभिभविता (चाऽसि) त्वं हिंसायुक्ते सम्पृक्तवी-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रवति संग्रामे दीप्तिमते यूने कुत्साय सहायः (भूत्वा) शुष्णं हतवान् ॥ ३ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र ! सत्य रूप आप इन (शत्रुओं) को दबाने वाले (हैं) आप महान (हैं)आप मनुष्यों के लिये हितकारी (और)जय शाली (हैं) हिंसा युक्त जुटे हुए वीरों वाले युद्ध में दीप्ति वाले युवा कुत्स के लिये सहायक (हो कर) आपने शुष्ण को मारा ॥ ३ ॥

(१) शुष्ण और कुत्स के लिये देखो पृ० १२६५ ॥

इन्द्रो देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११।

त्वंहत्यदिन्द्रचोदीःसखा वृत्रंयद्-

वज्रिन्वृषकर्म्मन्नभ्नाः । यद्वशूर-

वृषमणःपराचै विदस्यूँर्योनावकृतो-

वृथाषाट् । ४ ।

त्वम् | त्वम् | तूने

पुस्तकालय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ह	खलु	सचमुच
त्यत्	तत् (सखित्वम्)	उस (मित्रता) को
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
चोदीः	प्रवर्तितवान् (आ०को०) (अडभावः)	निभाया
सखा	सखा	मित्र
वृत्रम्	वृत्रम्	वृत्र को
यत्	यदा	जब
वज्रिन्	हे वज्रिन् !	हे वज्रधारी
वृषऽकर्म्मन्	हे विक्रान्त कर्मन्	हे वीरकर्मों वाले
उभ्नाः	अतुभ्नाः, अहिंसीः (तुभहिंसायाम्, तलोपश्छान्दसोऽडभावश्च)	तूने मारा
यत्	यदा	जब
ह	खलु	सचमुच

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शूर	हे शूर !	हे शूरबीर
वृषऽमनः	(कामानाम्)अभिवर्षकं मनोयस्य-तत्सम्बुद्धौ	हे (कामनाओं के) बर्साने वाले मन से युक्त
पराचैः	दूरे (निघं०३।२९)	दूर
वि	वि +	–
१दस्यून्	दस्यून्	दस्युओं को
१योनौ	गृहे निघं०३।४)	घरमें
अकृतः	वि+अकृतः विच्छेदितवान् (कृतीछेदने)	छिन्न भिन्नकिया
वृथाषाट्	अनायासेनाऽभिभविता	सहज से जीतने वाला

संस्कृतार्थः ।

हे विक्रान्तकर्म्मन् ! वज्रिन्निन्द्र ! त्वं खलु-सखा (भूत्वा) तत् (सखित्वम्) प्रवर्तितवान् यदा वृत्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

महिंसीः, यदा (च) खलु हे शूर ! हे वृषमणः ! अनायासेनाऽभिभविता (त्वम्) दूरे (गत्वा)दस्यून् (तेषाम्) गृहे विच्छेदितवान्।। ४॥

भाषार्थः ।

हे वीर कर्मों वाले ! हे वज्रधारी इन्द्र ! आपने मित्र (हो कर) उस (मित्रता) को निभाया, जब बृत्र को मारा (और) जब हे शूरबीर! हे (कामनाओं के) बरसाने वाले मन से युक्त ! सहज से जीतने वाले आप ने सचमुच दूर(जाकर) दस्युओं को (उन के) घर में छिन्न भिन्न किया ॥ ४ ॥

(१) दस्यु, आर्य्यों के अनार्य्य शत्रु और उन का घर जहां वे उत्पन्न हुए ॥

इन्द्रोदेवता निचृत्त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।१०।११

त्वंहत्यदिन्द्राऽरिषण्यन् हृळ्हस्यचिन्मर्त्तानामजुष्टौ । व्य१स्मदाकाष्ठाअर्वतेव घ्नेववज्रिञ्छ्नथिह्यमित्रान् ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वम्	त्वम्	तू
ह	खलु	सच मुच
त्यत्	सः (सुपामितिसोर्लुक्)	वह
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
१ अरिषण्यन्	अहिंस्योभवन् (आ०को०)	पीडित न होता हुआ
१ दृळ्हस्य	दृढस्य	दृढ़ के
चित्	अपि	भी
मर्त्तानाम्	मनुष्याणाम् (मध्ये)	मनुष्यों (के बीच)
अजुष्टौ	अप्रीतौ	अप्रसन्न होने पर
वि	वि +	–
अस्मत्	अस्माकम् (षष्ठ्यालुक्)	हमारी
आ	समन्तात्	चारों ओर से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ काष्ठाः	दिशः	दिशाओं को
२ अर्वते	अश्वाय	घोडे के लिये
२ वः	वि+वः,विवृताः-कुरु,प्रतिरोधरहिता विधेहीत्यर्थः	रुकावट से रहित करो
घनाऽइव	घनेनकठिनेन (लगुडेन) इव (विभक्तेरात्वम्)	जैसे कठिन(सोटे) से
न्	हे वज्रिन् !	हे वज्रधारी
प्रनथिहि	जहि (अथहिंसायां रस्यनत्व छान्दसम्)	मारो
अमित्रान्	शत्रून्	शत्रुओं को

संस्कृतार्थः।

हे इन्द्र ! स त्वं खलु मनुष्याणाम् (मध्ये) दृढस्याऽप्यप्रीतावहिंस्यो भवन् (वर्तसे) हे वज्रिन् ! अस्माकमश्वाय दिशः प्रतिरोधरहिता विधेहि, (अस्माकम्)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri:Funding: MIDF

शत्रन् कठिनेन(लगुडेन)यथा (भवतितथा) मारय॥५॥

भाषार्थः

हे इन्द्र ! वह आप सचमुच मनुष्यों में दृढ़ के भी अप्रसन्न होने पर पीडित नहीं (होते),हे वज्र धारी! हमारे घोड़े के लिये रुकावट से रहित दिशाओं को करो (और हमारे) शत्रुओं को ऐसे मारो जैसे कठिन (सोटे) से (कोई मारता हो) ॥५॥

(१) मनुष्यों में कैसा भी दृढ अर्थात बलवान मनुष्य हो उस को अप्रसन्नता इन्द्र का कुछ नहीं बिगाड़ सकती ॥

(२) हमारे घोड़े को रोकने वाला किसी दिशा में कोई शत्रु न हो ॥

इन्द्रोदेवता त्रिष्टुप्छन्दः ।१।१।१।१।१

त्वांहत्यदिन्द्राऽर्णसातौ स्वर्मा-

ळ्हेनरआजाहवन्ते। तवस्वधावहु-

यमासमर्य्य ऊतिर्वाजेष्वतसाय्या-

भूत् ॥ ६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वाम्	त्वाम्	तुझको
ह	खलु	सचमुच
त्यत्	तम् (सुपामितिद्वितीयायालुक्)	उसको
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
अर्णऽसातौ	अर्णसउदकस्य सातिर्लाभोयत्र (सलोपश्छान्दसः)	जलकीप्राप्ति वाले में
स्वःऽमीळ्हे	ज्योतिषोऽर्थं संग्रामे (मीळ्हइतिसंग्राम नाम निघं० २ । १७)	प्रकाश के लिये युद्ध में
नरः	मनुष्याः	मनुष्य
आजा	संग्रामे (निघं०२।१७) (सप्तम्याडादेशः)	युद्धमें
हवन्ते	आह्वयन्ति	पुकारते हैं
तव	तव	तेरी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वधाऽवः	हे स्वेच्छावन् ! (आ०को०	हेस्वतंत्रइच्छावाले
इयम्	इयम्	यह
आ	खलु (आ०को०)	सच मुच
सऽमर्य्ये	संग्रामे (निघं० २।१७	युद्ध में
ऊतिः	रक्षा	रक्षा
वाजेषु	बलकर्मसु	बलके कामों में
अतसाय्या	निरन्तरंप्राप्तव्या (अतसातत्यगमने, अस्माद्दौणादिक आय्यप्रत्ययोऽसुगागमश्च	निरन्तर प्राप्त होने के योग्य
भूत्	अभूत् (अडभावश्छान्दसः)	हुई है

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र ! उदकस्य प्राप्त्यवसरे ज्योतिषोऽर्थम् (कृते) संग्रामे (शत्रुसम्बन्धिनि) संग्रामे (च) मनुष्यास्तं त्वां खल्वाऽह्वयन्ति, हे स्वेच्छावन् ! संग्रामे बल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर्मसु (च) इयंत्वदीया रक्षा निरन्तरं खलु प्राप्त व्याऽभूत् ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र ! जल की प्राप्ति के अवसर पर ज्योति के लिये (किये गए) युद्ध में और (शत्रु के साथ) संग्राम में मनुष्य सचमुच उस आप को बुलाते हैं, हे स्वतंत्र इच्छा वाले ! युद्ध में (और) बल के कर्मों में यह आप की रक्षा सचमुच निरंतर प्राप्त होने के योग्य रही है ॥ ६ ॥

वर्षा की प्राप्ति के लिये प्रकाश की प्राप्ति के लिये और युद्ध में सहायता के लिये मनुष्य इन्द्र को बुलाते हैं, इन्द्र की रक्षा सदा प्राप्त होने के योग्य रही है उस की अप्राप्तिमें वह विजय जो आर्य्य जाति को सदा रही है कदापि नहीं हो सकती थी ॥

इन्द्रोदेवता निचृत्त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।१०।११॥

त्वं ह त्यदिन्द्र सप्तयुध्यन् पुरो-
वज्रिन्पुरुकुत्सायदर्दः । बर्हिर्नयत्स-
दासेह्यथाव गंहोराजन्वरिवः पूर-
वेकः ॥ ७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वम्	त्वम्	तूने
ह	खलु	सच मुच
त्यत्	सः (सुपामितिविभक्तेर्लुक्)	वह
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
सप्त	सप्त	सातों को
युध्यन्	युद्धं कुर्वन्	युद्ध करता हुआ
पुरः	पुराणि	गढ़ों को
वज्रिन्	हे वज्रिन् !	हे वज्रधारी
१ पुरुऽकुत्साय	पुरुकुत्साय	पुरुकुत्स के लिये
दर्दः०	विदारितवान् (दृविदारणे, अस्माद्यङ्लुङन्ताल्लङि सिपिशपोलुक्हलादिशेषाभावोऽडभावश्च)	छिन्न भिन्न किया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बर्हिः	बर्हिः	कुशा
न	इव	की न्याईं
यत्	यः (सुपामितिसोर्लुक्)	जिसने
१ सुऽदासे	सुदासनाम्नेराज्ञे	राजा सुदास के लिये
वृथा	अनायासेन	सहज से
वर्क्	अवृणक्, छेदितवान् (लङिसिपिविकरणस्य लुक्, अडभावश्च)	काटा
२ अंहोः	दारिद्र्यात् (ऋ०२।२६।४)	दरिद्रता से
राजन्	हे राजन्!	हे राजा
२ वरिवः	धनम् (निघं०।२।१०)	धन को
१ पूरवे	पूरवे	पूरु के लिये
कः०	कृतवान् (डुकृञ्करणे,लुङिसिपिच्लेर्लुक्,अडभावश्च)	किया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे वज्रिन्निन्द्र! सत्वं खलु पुरुकुत्साय युद्धं कुर्वन् सप्त पुराणि विदारितवान् यः (त्वम्) सुदासे बर्हिरिवाऽनायासेन (शत्रून्) छेदितवान् हे राजन् ! (त्वम्) पूरवे दारिद्र्याद् धनं कृतवान् ॥ ७ ॥

भाषार्थः ।

हे वज्र धारी इन्द्र ! सच मुच पुरुकुत्स के लिये युद्ध करते हुए उस आपने सात गढों को छिन्नाभन्न किया और जिस आपने सुदास के लिये कुशा की न्याईं (शत्रुओं को) काट डाला, हे राजा आपने पूरु के लिये दरिद्रता से धन को किया ।७।

(१) पुरुकुत्स, सुदास और पूरु ये प्राचीनआर्य्यराजा हैं जिनके अनार्य शत्रुओं को इन्द्र ने नाश किया था ॥

(२) दरिद्रता से धन को किया, अर्थात दरिद्रता मिटा कर धनी बनाया ॥

इन्द्रोदेवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११

त्वंत्यांनइन्द्रदेवचित्रा मिषमापो-

नपीपयःपरिज्मन् । ययाशूरप्रत्य-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्मभ्यंयंसि त्मनमूर्जंनविष्ठवधत्त-
रध्यै॥८॥

त्वम्	त्वम्	तू
त्याम्	ताम्	उसको
नः	अस्मभ्यम्	हमारे लिये
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
देव	हेदेव !	हे देव
चित्राम्	विविधरूपम्	नानारूप वाले को
इषम्	अन्नम्	अन्नको
आपः	आपः	जल
न	इव	की न्याईं
पीपयः	प्रवर्धय (प्यायीवृद्धौ ण्यन्ता-ल्लोडर्थेलुङिव्यत्ययेन पीभावोऽडभावश्च)	बढाओ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिऽज्मन्	परितोगच्छन् (जमतिर्गतिकर्मा निघं०२।१४)	चारों ओर जाता हुआ
यया	येन	जिससे
शूर	हेशूर !	हे शूरबीर
प्रति	प्रति +	–
अस्मभ्यम्	अस्मभ्यम्	हमारे ताईं
यंसि	प्रति + यंसि, प्रयच्छसि	देते हो
त्मनम्	जीवनम् (आकार लोपः, उपधादीर्घाभावश्च)	जीवन को
ऊर्जम्	बलम्	बल को
न	इव	की न्याईं
विश्वध	विश्वतः (पृषोदरादित्वात्साधुः)	सब ओर
क्षरध्यै	क्षरितुम् (तुमर्थेऽध्यैन्प्रत्ययः)	बहनेकेलिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

हे इन्द्र ! हे देव ! त्वं परितो गच्छन्नस्मभ्यं विविध रूपं तमन्नं जलामव प्रवर्धय येन हे शूर ! अस्मभ्यं सर्वतो क्षरितुमिव जीवनं बलम् (च) प्रयच्छसि ॥ ८ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र ! हे देव ! चारों ओर जाते हुए आप हमारे लिये नानारूप वाले उस अन्नको जलकी न्याईं बढाओ जिससे हे शूरवीर! आप हमारे ताईं सब ओर बहने की न्याईं जीवन (और) बलको देते हो ॥८॥

हमारीरक्षा के लिये चारों ओर फिरते हुए इन्द्र देव हमारे लिये नाना प्रकार के अन्न को जलकी बाढ की न्याई बढावें जिस से हमारा बल इतना बढे और जीवन ऐसी उमंगो वाला हो कि हम से उझल कर दूसरों के दुःख को निवारण करने वाला होसके ॥

इन्द्रोदेवता विराट् त्रिष्टुप्छन्दः ।१०।११।१०।११॥

अकारितइन्द्रगोतमेभि ब्रह्माणयो-

क्तानमसाहरिभ्याम् । सुपेशसंवाज-

माभरानः प्रातर्मचूधियावसुर्जग-

म्यात् ॥ ९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अकारि	कृताः (वचनव्यत्ययः)	की गई
ते	तुभ्यम्	तेरे लिये
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
गोतमेभिः	गोतमवंशीयैः	गोतमवंशियों से
ब्रह्माणि	मन्त्ररूपाःस्तुतयः	मन्त्ररूपस्तुतियां
आऽउक्ता	यावदुक्तानि (शेर्लोपः)	जहां तक उच्चारण किये गये
नमसा	नमस्कारेण	नमस्कार पूर्वक
हरिऽभ्याम्	अश्वाभ्याम्	घोड़ों के लिये
सुऽपेशसम्	सुरूपम्	सुन्दर रूप वाले को
वाजम्	धनम् (आ०को०)	धन को
आ	आ+	—
भर	आ + भर,आहर	ले आओ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नः	अस्मभ्यम्	हमारे लिये
प्रातः	प्रातः	प्रातःकाल में
मक्षु	शीघ्रम्	शीघ्र
धियाऽवसुः	ध्यानेन धनवान्	ध्यानसे धन वाला
जगम्यात्	आगच्छतु	आवे

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र ! गोतम वंशीयैस्त्वदर्थं मन्त्ररूपाः स्तुतयः कृताः यावत् (त्वदीय-) अश्वाभ्यां नमस्कारेण (सह) वचनानि (कृतानि) (सत्वम्) सुरूपं धनमस्मभ्यंदेहि ध्यानेन धनवान् (भवानत्र) शीघ्रंप्रातरागच्छतु ॥९॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र ! गोतम वंशियों ने आप के लिये मन्त्र रूप स्तुतियां की हैं साथ ही (आप के) घोड़ों के लिये नमस्कार के साथ वचन (उच्चारण किये हैं) (वह) आप हमें सुन्दर रूप वाले धनको दें (और) ध्यान द्वारा धन वाले(आप) शीघ्र प्रातःकाल में (यहां) आवें॥ ९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नोधा ऋषि जो गोतम वंशी हैं कहते हैं कि हमने इन्द्र की मंत्रों से स्तुति की है साथ ही इन्द्र के घोड़ों के लिये नमस्कार युक्त वचनों को कहा है वह हमें सुन्दर रूप वाले धन को दें और शीघ्र हमारे पास नित्य प्रातः काल में आवें॥

इतित्रिषष्टितमं सूक्तम्।

ऋ० मं० १ सू० ६४

मरुतोदेवता नोधाऋषिः

विनियोग–सत्र के २४ वें दिन आग्निमारुत शस्त्र में (आ० श्रौ० सू० उ० १। ४। १३) और अभिप्लव षडह के पांचवें दिन में यह सूक्त पढा जाता है (आ० श्रौ० सू० उ० १।७।८)

"पिन्वन्त्यपः-" यह छठा मन्त्र मरुत्वतीय शस्त्र में धाय्या है। (आ० श्रौ० सू० ५।१४।७)

"नूष्ठिरंमरुतः-" यह १५ वां मन्त्र पशुयाग संबन्धी मरुतों की याज्या है (आ० श्रौ० सू० ३।७।१२)

इस सूक्त में मरुतों की स्तुति है, मरुत वीर्य्यवान, भली-प्रकार पूजने योग्य,मेधावी, महान, सेचन समर्थ,बलवान, जीवन की चेष्टाओं से युक्त, रुद्र के कुमार, पाप से रहित, पवित्र करने वाले, सूर्य्यों की न्याईं दीप्तिमान, वृष्टि की बूंदों से युक्त, भूतगणों की न्याईं भयंकर रूप वाले, जवान, भयानक, बुढापे से रहित, केवल अपना पेट पालनेवालों को मारने वाले, न रुकने वाली गति से युक्त,पर्वतों की न्याईं महत्त्व को प्राप्त हुए २, सब को अपने बल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से कंपाने वाले,नाना प्रकार के अलंकारों से भूषित, छाती पर सोने के हार पहिनने वाले, कंधों पर अस्त्रों से सजे हुए, अपनी इच्छा द्वारा आकाश से प्रकट होने वाले, स्तोता को ऐश्वर्य्य से युक्त करने वाले, शत्रुओं क कंपाने वाले और उन को भक्षण करने वाले, अपने बल से वायु और बिजली को उत्पन्न करने वाले, सब ओर जाने वाले, आकाश के स्तनों को दोहने वाले, और दोहे हुए दूध से पृथिवी को सींचने वाले, कल्याण के देने वाले,यज्ञ में पुष्टि युक्त बहुतायत को बरसाने वाले, वेगयुक्त मेघ को घोडे की न्याईं सींचनेके लिये प्रेरण करने वाले,क्षय रहित मेघरूपी कूप को दोहने वाले, बुद्धि से युक्त,विचित्र दीप्ति वाले, पर्वतों की न्याईं स्वयं बढे हुए, हलके दौड़ने वाले, अग्नि के साथ मिल कर जंगली हाथियों की न्याईं बनों को उजाड़ने वाले, सिंहों की न्याईं गरजने वाले, उत्तम ज्ञान वाले,चितकबरे हरिणों की न्याईं सुन्दर रूप वाले,संपूर्ण धन वाले, विचित्र हथियारों से जल को प्रेरण करने वाले, प्रजा के सताने वालों को नाश करने वाले, द्यौ और पृथिवी को गुंजाने वाले, गण रूप से चलने वाले, मनुष्यों पर उपकार करने वाले, शूर वीर,नाश करने वाले क्रोधसे युक्त, संपत्तियों के साथ इकट्ठे रहने वाले, बलों से संयुक्त, अस्त्रों के फैंकने वाले, अनन्त बल वाले, शूर बीरों के कंगन पहिनने वाले, हाथों में बाण को धारण करने वाले जलों के बढाने वाले, शीघ्र गति से युक्त, स्वयं चलने वाले, निश्चलों के गिराने वाले,अपनेको न रुकने वाले बनाते हुए,चमकते हुए अस्त्रों वाले, रथ के सुवर्ण मय पहियों से बादलों को ऊपर उठाने वाले, शत्रुओं के रगड़ने वाले, मनुष्यों को प्यार करने वाले, बहुत काम करने वाले,रुद्र के पुत्र,धूलि को उठाने वाले, बहुत बढे हुए और शीघ्रता से सामने आने वाले हैं, ऐसे मरुत हम लोगों में बीरों से युक्त,आक्रमण को हटाने वाले,हजार गुने और सौ गुने बढ़ने वाले स्थिर धन को शीघ्र स्थापन करें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२

वृष्णे शर्धाय सुमखाय वेधसे

नोधः सुवृक्तिं प्रभरा मरुद्भ्यः । अ-

पो न धीरो मनसा सुहस्त्यो गिरः

समञ्जे विदथेष्वा भुवः ॥ १ ॥

वृष्णे	वीर्य्यवते	वीर्य्यवानके लिये
शर्धाय	गणाय	समूह के लिये
सुऽमखाय	सुपूजनीयाय	अलीप्रकार पूजने योग्य के लिये
वेधसे	मेधाविने (निघं०।१।१५)	मेधावी के लिये
१ नोधः	हे नोधः !	हे नोधा
सुऽवृक्तिम्	सुष्ठ्वाकर्षकम् (स्तोत्रम्)	खूबआकर्षणकरने वाले (स्तोत्र) को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्र	प्र+	–
भर	प्र+भर, अर्पय	अर्पण कर
मरुत्ऽभ्यः	मरुद्भ्यः	मरुतों के लिये
अपः	अपः	जलों को
न	इव	जैसे
धीरः	प्रशान्तः	शान्त
मनसा	मनसा	मन से
सऽहस्त्यः	कर्म कुशलः	कर्म में चतुर
गिरः	स्तुतीः	स्तुतियों को
२ सम्	सम्+	–
२ अञ्जे	सम्–अञ्जे, सज्जी करोमि	मैं सजाता हूं
विदथेषु	यज्ञेषु	यज्ञों में
आऽभुवः	सप्रभावाः (आ०कौ०)	प्रभाव वालों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे नोधः ! वीर्यवते सुपूजनीयाय मेधाविने मरुद्-गणाय सुष्ठ्वाकर्षकम् (स्तोत्रम्) अर्पय, यथा मनसाप्रशान्तः कर्मकुशलः (च पुरुषः)यज्ञेषु सप्रभावा अपः (सज्जी-) करोति तथाऽहम्) स्तुतीः सज्जी-करोमि ॥ १ ॥

भाषार्थः

हे नोधा वीर्य्यवान भली प्रकार पूजने योग्य (और)मेधावी मरुद्गण के लिये खूब आकर्षण करने वाले (स्तोत्र) को अर्पण कर, जैसे मन से शान्त (और) कर्म में चतुर (पुरुष) यज्ञों में प्रभाव वाले जलों को (सजाता है वैसे)मैं स्तुतियों को सजाता हूं ॥ १ ॥

(१) मंत्र के पूर्वार्द्ध में नोधा ऋषि अपने आप को सम्बोधन करते हैं ।

(२) ऋषि कहते हैं कि मैं मरुद्गण के लिये स्तुतियों को ऐसे सजाता हूं जैसे यज्ञ में ऋत्विज लोग जलों को प्रोक्षणी आदि पात्रों में भर कर सजाते हैं ।

मरुतोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२॥

तेजज्ञिरेदिवऋष्वासउक्षणो

रुद्रस्यमर्त्याअसुराअरेपसः । पाव-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कासःशुचयःसूर्याइव सत्वानोन-
ट्रप्सिनोघोरवर्पसः ।२।

ते	ते	वे
जज्ञिरे	प्रादुर्बभूवुः	प्रकट हुए
दिवः	आकाशात्	आकाश से
ऋष्वासः	महान्तः (निघं०।३।३)	महान
उक्षणः	सेक्तारः (उक्षसेचने, दीर्घाभावश्छान्दसः)	सेचन करने वाले
रुद्रस्य	रुद्रस्य	रुद्र के
१ मर्याः	कुमाराः (आ०को०)	कुमार
२ असुराः	प्राणवन्तः	प्राण वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपसः	रेपःपापंतद्रहिताः	पाप से रहित
पावकासः	पावकाः (जसोऽसुगागमः)	पवित्र करने वाले
शुचयः	दीप्ताः	दीप्तिमान
३ सूर्याःऽइव	सूर्य्याइव	सूर्य्यों की न्याईं
४ सत्वानः	भूतगणाः (तै०सं०४।५।१)	भूतगण
न	इव	की न्याईं
द्रप्सिनः	बिन्दुभिर्युक्ताः	बूंदों वाले
घोरऽवर्पसः	भयङ्कर रूपाः (वर्पइतिरूपनाम, निघं०३।७)	भयानक रूप वाले

संस्कृतार्थः।

ते महान्तः सेक्तारो रुद्रस्य कुमाराः प्राणवन्तः पापरहिताः पावकाः सूर्य्याइव दीप्तिमन्तो भूतगणा इव भयङ्कर रूपाः (वृष्टि-) बिन्दुभिर्युक्ताः (मरुतः) आकाशात्प्रादुर्बभूवुः ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

वे महान, सेचन समर्थ, रुद्रके कुमार, प्राण वाले, पाप से रहित, पवित्र करने वाले, सूर्यों की न्याईं दीप्ति मान, भूतगणों की न्याईं भयानक रूप वाले, (वृष्टिकी) बूंदों से युक्त (मरुत) आकाश से प्रकट हुए हैं ॥ २ ॥

(१) आकाश की भयानक अवस्थाके अभिमानी रुद्रदेवता हैं, और ऐसी दशा में प्रकट होन से मरुत उनके पुत्र हैं।

(२) प्राण वाले अर्थात बलवान जीवन की चेष्टाओं से युक्त।

(३) सूर्य्य अनेक हैं यद्यपि हमारी पृथिवी के स्वामी एक-ही हैं।

(४) भूतगण जो रोग की अवस्था में मनुष्य को अनेक भयानक रूप में दीखते हैं।

मरुतोदेवता जगतीछन्दः।१२।१२।१२।१२॥

युवानोरुद्राअजराअभोग्घनो व-

वक्षुरध्रिगावःपर्वताइव। दृळ्हाचिद्

विश्वाभुवनानिपार्थिवा प्रच्यावय-

न्तिदिव्यानिमज्मना॥ ३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

युवानः	युवानः	जवान
रुद्राः	घोराः	भयानक
अजराः	जरा रहिताः	बुढ़ापे से रहित
अभीक्ऽहनः	ये (अन्यान्) न भोजयन्ति तेषां हन्तारः (हन्तेः क्विप्	जो (दूसरों को) भोजन नहीं कराते उनके मारने वाले
ववक्षुः	महत्त्वं प्रापुः (ववक्षिथेतिमहन्नाम) (निघं०२।३)	महत्व को प्राप्त हुए २
अधृष्टगावः	अधृतगमनाः, अप्रतिहतगतय- इत्यर्थः	न रुकने वाली गति से युक्त
पर्वताःऽइव	पर्वता इव	पर्वतोंकी न्याईं
दृळ्हा	दृढानि (शेर्लोपः)	दृढ
चित्	अपि	भी
विश्वा	सर्वाणि (शेर्लोपः)	सब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भुवनानि	भूतानि (आ०को०)	प्राणियों को
२ पार्थिवा	पृथिव्यांभवनि	पृथिवी में होने वालों को
प्र	प्र+	–
च्यावयन्ति	प्र + च्यावयन्ति, कम्पयन्ति	कंपाते हैं
२ दिव्यानि	दिवि भवानि	आकाश में होने वालों को
मज्मना	बलेन (निघं०२।९)	बलसे

संस्कृतार्थः ।

युवानो घोरा जरारहिता अभोजयितॄणांहन्तारोऽप्रतिहतगतयः (मरुतः)पर्वताइव महत्त्वं प्रापुः, (ते) पृथिव्यां दिवि(च)भवानि दृढान्यपि सर्वाणि भूतानि (निज-) बलेन कम्पयन्ति ॥ ३ ॥

भाषार्थः ।

जवान, भयानक, बुढापे से रहित, भोजन न कराने वालों के मारने वाले, न रुकने वाली गति से युक्त (मरुत) पर्वतों की न्याईं महत्त्व को प्राप्त हुए हैं, (वे) पृथिवी (और) आकाश में होने वाले सम्पूर्ण दृढ़ प्राणियों को भी (अपने-) बल से कंपाते हैं ॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) जो दूसरों को नहीं खिलाते और केवल अपना पेट पालते ऐसे अनार्य पुरुषों के मारने वाले।

(२) पृथिवीमें होने वाले दृढ प्राणी वृक्षआदि और आकाशमें होने वाले श्येन आदि हैं॥

मरुतोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२॥

चित्रैरञ्जिभिर्वपुषे व्यञ्जते वक्षः सुक्रमाँ अधि येतिरे शुभे । अंसेष्वेषां निमिमृक्षुर्ऋष्टयः साकं जज्ञिरे स्वधया दिवो नरः ॥ ४ ॥

चित्रैः	नानाविधैः	नानाप्रकार वालों से
अञ्जिऽभिः	अलङ्कारैः	अलङ्कारों से
वपुषे	रूपार्थम् (निघं०१।७)	रूप के लिये
वि	वि +	–

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अञ्जते	वि+अञ्जते, भूषयन्ति	सिंगारते हैं
वक्षःऽसु	वक्षस्सु	छातियों पर
रुक्मान्	स्वर्णभूषणानि (आ०को०)	सोने के भूषणों को
अधि	अधि +	–
येतिरे	अधि + येतिरे, धृतवन्तः (यतीप्रयत्ने)	धारण किया है
शुभे	शोभार्थम् (भावेक्विप्)	शोभा के लिये
अंसेषु	स्कन्धेषु	कंधों में
एषाम्	एषाम्	इन के
नि	नि+	–
मिमृक्षुः	नि+मिमृक्षुः, सज्जिताबभूवुः (आ०को०)	सजे हैं
ऋष्टयः	आयुधानि	अस्त्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साकम्	सह	साथ
जज्ञिरे	प्रादुर्बभूवुः	प्रकट हुए हैं
स्वधया	स्वेच्छया (आ०को०)	अपनी इच्छासे
दिवः	आकाशात्	आकाश से
नरः	नराः	नर

संस्कृतार्थः ।

(मरुतः) रूपाऽर्थं नानाविधैरलङ्कारैः (आत्मानम्) भूषयन्ति, (एते) शोभाऽर्थंवक्षस्सु स्वर्णभूषणानि धृतवन्तः एषां स्कन्धेष्वायुधानि सज्जितानि बभूवुः (एते) नरा स्वेच्छ ाऽऽआकात्प्रादुर्बभूवुः ॥४॥

भाषार्थः ।

रूप के लिये (मरुत) नाना प्रकार के अलङ्कारों से (अपने को) सिंगारते हैं इन्होंने) शोभा के लिये छातियों पर सोने के भूषणों को धारण किया है इन के कंधों पर अस्त्र सजे हुए हैं (ये) नर अपनी इच्छा द्वारा आकाश से प्रकट हुए हैं ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विद्युत और मेरुज्योति (Aurora polaris) मरुद्गण के नाना अलंकार, छातियों के हार और बर्छी आदि अनेक रूप में प्रकट होते हैं, इन से युक्त हुए २ ये वीर अपनी इच्छा से आकाश में से निकल पड़ते हैं।

मरुतोदेवता जगतीछन्दः।१२।१२।१२।१२॥

ईशानकृतोधुनयोरिशादसो वा-
तान्विद्युतस्तविषीभिरक्रत । दुह-
न्त्यूधर्दिव्यानिधूतयो भूमिंपिन्व-
न्तिपयसापरिज्रयः ॥ ५ ॥

ईशानऽकृतः	ऐश्वर्य्ययुक्तं कुर्वाणाः	ऐश्वर्य्य से युक्त करते हुए
धुनयः	कम्पयितारः	कंपानेवाले
रिशादसः	रिशान्तहिंसन्ती-ति रिशाः शत्रव-स्तेषामत्तारः (रिशहिंसायाम्, अदभ-क्षणे, असुन्प्रत्ययः)	शत्रुओं के भक्षण करने वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वातान्	वायून्	वायुओं को
विऽद्युतः	विद्युतः	बिजलिओं को
तविषीभिः	बलैः	बलों से
अक्रत	उत्पादितवन्तः	उत्पन्न किया है
दुहन्ति	दुहन्ति	दोहते हैं
१ ऊधः	ऊधांसि (सुपामिति जसःसुः)	स्तनों को
दिव्यानि	आकाशेभवानि	आकाश म होने वालों को
धूतयः	कम्पयितारः	कंपाने वाले
भूमिम्	पृथिवीम्	पृथिवी को
पिन्वन्ति	सिञ्चन्ति (पिविसेचने)	सींचते हैं
पयसा	पयसा	दूध से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिऽज्रयः	परितोगन्तारः (ज्रयतिर्गतिकर्मा निघं०२।१४)	सबओरजाने वाले

संस्कृतार्थः।

(स्तोतारम्) ऐश्वर्य्ययुक्तं कुर्वाणाः शत्रूणां कम्पयितारोऽत्तारः (च मरुतोनिज-) बलै र्वायून् विद्युतः (च) उत्पादितवन्तः, परितोगन्तारः कम्पयितारः (च ते) आकाशे भवान्यूधासि दुहन्ति (ततो दुग्धेन-) पयसा पृथिवीं सिञ्चन्ति ॥ ५ ॥

भाषार्थः।

(स्तोता को) ऐश्वर्य्यसे युक्त करनेवाले, शत्रुओंको कंपाने (और) भक्षण करने वाले (मरुतों ने अपने) बलोंसे वायु (और) बिजलियों को उत्पन्न किया है, सब ओर जाने वाले (और) कंपाने वाले (वे) आकाश में होने वाले स्तनों को दोहते हैं (और दोहे हुए) दूध से पृथिवी को सींचते हैं ॥ ५ ॥

१) आकाश में होने वाले स्तन बादल हैं, जिन को मरुत दोहन करके पृथिवी को सींचते हैं।

मरुतोदेवता जगतीछन्दः।१२।१२।१२।१२।

पिन्वन्त्यपोमरुतःसुदानवः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पयोघृतवद्विदथेष्वाभुवः । अत्यंन-
मिहेविनयन्तिवाजिन मुत्संदुह-
न्तिस्तनयन्तमक्षितम् । ६ ।

पिन्वन्ति	सिञ्चन्ति (पिविसेचने)	सींचते हैं
अपः	अपः	जलों को
मरुतः	मरुतः	मरुत
सुऽदानवः	कल्याणदानाः (यास्कः)	कल्याण के देने वाले
१ पयः	क्षीरम्	दूध को
१ घृतऽवत्	घृत युक्तम्	घृत से युक्त को
१ विदथेषु	यज्ञेषु	यज्ञों में
आऽभुवः	सप्रभावाः (आ०को०)	प्रभाव वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अत्यम्	अश्वम् (निघं०।१।१४)	घोड़े को
न	इव	जैसे
२ मिहे	सेचनार्थम् (मिहसेचने,भावेक्विप्)	सींचने के लिये
वि	वि +	–
नयन्ति	वि+नयन्ति, प्रेरयन्ति	प्रेरण करते हैं
२ वाजिनम्	वेगवन्तम्	बेग वाले को
३ उत्सम्	कूपम् (निघं०।३।२३)	कूए को
दुहन्ति	दुहन्ति	दोहते हैं
स्तनयन्तम्	गर्जन्तम्	गर्जते हुए को
अक्षितम्	अक्षीणम्	क्षय रहित को

संस्कृतार्थः ।

कल्याण दाना मरुतोऽपः सिञ्चन्ति सप्रभावाः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(ते) यज्ञेषु घृत युक्तं क्षीरं (वर्षयन्ति ते) वेगवन्तं (मेघम्) अश्वमिव सेचनार्थं प्रेरयन्ति, गर्जन्तमक्षीणं कूपम् (च) दुहन्ति ॥ ६ ॥

भाषार्थः।

कल्याण के देने वाले मरुत जलों को सींचते हैं, प्रभावशाली (वे) यज्ञों में घृत से युक्त दूध को (बरसाते हैं; वे) वेगवाले (मेघ) को घोड़े की न्याईं सींचने के लिये प्रेरण करते हैं, (और) गर्जते हुए क्षय रहित कूप को दोहते हैं ॥ ६ ॥

(१) घृत से युक्त दूध को अर्थात पुष्टि युक्त बहुतायत को यज मान के ताईं देते हैं।

(२) जैसे लोक में वेग वाले सांढ घोडे को वीर्य दान के लिये प्रेरण करते हैं इस प्रकार मरुत अन्तरिक्ष में मेघ को जल सींचने के लिये प्रेरण करते हैं।

(३) जैसे मनुष्य खेत को पानी देने के लिये चरस भर भर कर कूए को दोहते हैं इस प्रकार मरुत कूप रूपी मेघ से जल निकाल कर पृथिवी पर सींचते हैं।

मरुतोदेवता निचृज्जगतीछन्दः।१२।१२।१२।१२।

म॒हि॒षासो॑मा॒यिन॑श्चि॒त्रभान-

वो गि॒रयो॒नस्वत॑वसोरघ॒ष्यदः। मृ-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गाइवहस्तिनःखादथावना यदारु-
णीषुतविषीरयुग्ध्वम् ।७।

महिषासः	महान्तः (नि०३।३,जसोऽसुगागमः)	बड़े
मायिनः	प्रज्ञायुक्ताः (मायेतिप्रज्ञानाम,निघं० ३।९)	बुद्धि से युक्त
चित्रऽभानवः	विचित्र दीप्तयः	नाना प्रकार की दीप्ति वाले
गिरयः	पर्वताः	पर्वत
न	इव	की न्याईं
स्वऽतवसः	स्वतोवृद्धाः (तवतिर्वृद्ध्यर्थः)	स्वयं बढ़े हुए
रघुऽस्यदः	लघुधावन युक्ताः (लस्यरत्वम्,स्यन्द-धावने आ०को०)	हलकेदौड़ने वाले
मृगाःऽइव	वन्याइव (आ० को०)	जंगलियोंकी न्याईं
हस्तिनः	गजाः	हाथी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

खादथ	भक्षयथ	खाते हो
वना	वनानि (शेर्लोपः)	बनों को
यत्	यदा	जब
आरुणीषु	अरुणवर्णासु	लालरंगवालियोंमें
तवीषीः	बलानि	बलों को
अयुग्ध्वम्	संयोजयथ (लडर्थेलुङ्)	मिलाते हो

संस्कृतार्थः ।

(हे मरुतः !) महान्तःप्रज्ञायुक्ता विचित्रदीप्तयः पर्वता इव स्वतो वृद्धा लघुधावनयुक्ताः (यूयम्) वन्या-गजा इव वनानि भक्षयथ, यदा (यूयम्) अरुणवर्णासु (अग्नेर्ज्वालासु निज-)बलानि संयोजयथ ॥ ७ ॥

भाषार्थः ।

(हे मरुतो)महान बुद्धिसे युक्त,नाना प्रकार की दीप्ति वाले, पर्वतों की न्याईं स्वयं बढे हुए, हलके दौड़ने वाले आप जंगली हाथियों की न्याईं बनों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को खाते हो जब आप लाल रंग वाली (अग्नि की लाटों) में (अपने) बलों को मिलाते हो ॥ ७ ॥

जैसे सांढ बैल गौओं में अपने बलों को मिलाकर घासके खेतों को उजाड़ते हैं वैसे मरुत लाल रंग वाली अग्नि की ज्वालाओं में अपने बलोंको मिलाकर मस्त हाथियोंको न्याईं बनों को उजाड़ते हैं।

मरुतोदेवता जगतीछन्दः१२।१२।१२।१२॥

सिंहाइवनानदतिप्रचेतसः पिशाइवसुपिशोविश्ववेदसः। क्षपोजिन्वन्तःपृषतीभिर्ऋष्टिभिः समित्सबाधःशवसाहिमन्यवः। ८।

सिंहाःऽइव	सिंहाइव	सिंहों की न्याईं
नानदति	भृशं नर्दन्ति	अत्यन्त गर्जते हैं
प्रऽचेतसः	प्रकृष्टज्ञानाः	उत्तम ज्ञान वाले
पिशाःऽइव	रुरुमृगा इव (पिशइतिरुरुनाम सा०भा०)	चितकबरे हरिणों की न्याईं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुऽपिशः	सुरूपाः	सुन्दर रूप वाले
विश्ववेदसः	सम्पूर्णधन युक्ताः	संपूर्ण धन वाले
क्षपः	उदकम् (निघं०।१।१२)	जल को
जिन्वन्तः	प्रेरयन्तः	प्रेरण करते हुए
पृषतीभिः	चित्रैः (आ०को०)	विचित्रों से
ऋष्टिऽभिः	आयुधैः	हथियारों से
सम्	सम्यक्	पूरे से
इत्	(पूरणः)	–
सऽबाधः	बाधयासह वर्त्तमानान्, प्रजापीडका नित्यर्थः	प्रजा के सताने वालों को
शवसा	बलेन	बल से
अहिऽमन्यवः	अहिराहन्ता मन्युःक्रोधो येषांते	नाश करने वाले क्रोध से युक्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

(मरुतः) प्रकृष्टज्ञाना रुरुमृगा इव सुरूपाः सम्पूर्ण धन युक्ता श्चित्रैरायुधैरुदकं प्रेरयन्तः (प्रजा-) पीडकान् (प्रति) सम्यग् बलेनाऽऽहन्तृक्रोधयुक्ताः (सन्तः) सिंहाइव भृशं नर्दन्ति ॥ ८ ॥

भाषार्थः।

(मरुत) उत्तम ज्ञान वाले, चितकबरे हरिणों की न्याईं सुन्दर रूप वाले, संपूर्ण धन वाले, विचित्र हथियारों से जल को प्रेरण करने वाले (प्रजा को) सताने वालों के (प्रति) पूरे बलसे नाश करने वाले क्रोध से युक्त हुए २ सिंहों की न्याईं अत्यन्त गरजते हैं ॥८॥

(१) धूलि युक्त आंधी में वर्षा की बूंदें पड़ने से मरुत चितकबरे हरिणों की न्याईं सुन्दर प्रतीत होते हैं।

मरुतोदेवता निचृज्जगती छन्दः।११।१२।१२।१२।

रोदसीआवदतागणश्रियो नृषाचःशूराःशवसाहिमन्यवः। आवन्धुरेष्वमतिर्नदर्शता विद्युन्नत-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्थौमरुतोरथेषुवः । ९ ।

रोदसी०	द्यावा पृथिव्यौ	द्यौ(और)पृथिवीको
आ	आ+	–
वदत	आ+वदत,शब्दयत (अन्तर्भावितण्यर्थः)	गुँजाओ
गणऽश्रियः	हे गणरूपेण गच्छन्तः !	हे गणरूप से चलने वालो
नृऽसाचः	नॄन्मनुष्यान् सेवमानाः	मनुष्योंपर उपकार करने वाले
शूराः	हे शूराः !	हे शूरबीरो
शवसा	बलेन	बल से
अहिऽमन्यवः	आहन्तृक्रोधयुक्ताः	नाश करने वाले क्रोध से युक्त
आ	आ+	–
वन्धुरेषु	रमणीयेषु (आ०को०)	सुन्दरों में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अमतिः	चन्द्रः (आ०को०)	चन्द्रमा
न	इव	की न्याईं
दर्शता	दर्शनीया	सुन्दर
विऽद्युत्	विद्युत्	बिजली
न	इव	की न्याईं
तस्थौ	आ+तस्थौ,	चढ़ी हुई है
मरुतः	हे मरुतः !	हे मरुतो
रथेषु	रथेषु	रथों में
वः	युष्माकम्	आपके

संस्कृतार्थः ।

हे गणरूपेण गच्छन्तः । हे शूराः! मनुष्यान्सेवमानाः (शत्रुभ्यश्च) आहन्तृक्रोधयुक्ताः (यूयं निज-) बलेन द्यावापृथिव्यौ शब्दयत, हे मरुतः ! युष्माकं रमणीयेषु रथेषु चन्द्रइव, दर्शनीया विद्युदिव (काचिद्देवी) आतस्थौ ।। ९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हे गणरूप से चलने वालो ! हे शूरबीरो ! मनुष्यों पर उपकार करने वाले, (और शत्रुओं के ताईं) नाश करने वाले क्रोध से युक्त (आप अपने) बल से द्यौ (और) पृथिवी को गुंजाओ, हे मरुतो ! आपके सुन्दर रथों में चन्द्रमा की न्याईं सुन्दर विद्युत जैसी (कोई देवी) चढ़ी हुई है ॥९॥

"विद्युत जैसी कोई देवी" यातो विद्युत है या मेरुज्योति जो अनेक रूप में प्रकट होती है ।

मरुतोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२।

विश्ववेदसोरयिभिःसमोकसः

सम्मिश्लासस्तविषीभिर्विरप्शिनः।

अस्तारइषुंदधिरेगभस्त्यो रनन्त-

शुष्मावृषखादयोनरः ॥ १० ॥

विश्वऽवेदसः| सम्पूर्णधनयुक्ताः| सम्पूर्णधनोंवाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रयिऽभिः	श्रीभिः	सम्पत्तियों से
सम्ऽओकसः	समानस्थानाः (उचसमवाये)	इकट्ठे रहने वाले
सम्ऽमिश्लासः	संमिश्राः संयुक्ता इत्यर्थः (जसोऽसुगागमः, रस्यलत्वञ्च)	संयुक्त
तविषीभिः	बलैः	बलों से
विऽरप्शिनः	महान्तः (निघं०३।३)	महान
अस्तारः	प्रक्षेप्तारः (असक्षेपणे, तान्छीलिक स्तृन, इडभावश्छान्दसः)	फेंकने वाले
इषुम्	बाणम्	बाण को
दधिरे	धृतवन्तः	धारण किया है
गभस्त्योः	हस्तयोः	दोनों हाथों में
अनन्तऽशुष्माः	अनन्तबलाः	अनन्त बल वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृषऽखादयः	वृषाणां शूराणां सम्बन्धि खादिः कङ्कणं येषां ते (आ०को०)	शूरबीरों के कंगन पहिनने वाले
नरः	नराः	नरों ने

संस्कृतार्थः।

सम्पूर्ण धनयुक्ताः श्रीभिः समानस्थाना बलैः संयुक्ता महान्तः (अस्त्राणाम्-) प्रक्षेप्तारोऽनन्त-बलाः शूरसम्बन्धि कङ्कण धारिणो नरा हस्तयोर्बाणं धृतवन्तः ॥ १० ॥

भाषार्थः।

संपूर्ण धनों वाले, सम्पत्तियों के साथ इकट्ठे रहने वाले, बलों से संयुक्त, महान, (अस्त्रों के) फेंकने वाले, अनन्त बलवाले, शूरबीरों के कंगन पहिननेवाले नरों ने दोनों हाथोंमें बाण को धारण किया है ॥ १० ॥

(१) जैसे कोई २ राजपूत एक पैर में कड़ा पहनते हैं, अथवा दुलहा एक हाथ में कंगन डोरा पहनता है अथवा कोई २ भुजा में अनन्त पहनते हैं ये सब शूरबीरता के चिन्ह हैं, जो आर्य जाति में अब तक लुप्त नहीं हुए हैं ॥

मरुतोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२॥

हिरण्ययेभिः पविभिः पयोवृध उ-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्जिघ्नन्तआपथ्योइनपर्वतान् । म-
खाअयासःस्वसृतोध्रुवच्युतो दुध्र-
कृतोमरुतोभ्राजदृष्टयः ॥११॥

हिरण्ययेभिः	सुवर्णमयैः	सोनेवालों से
पविऽभिः	(रथ-) चक्रैः	पहियों से
पयःऽवृधः	जलानांवर्धयितारः (क्विप्)	जलों के बढाने वाल
उत्	उत्+	-
जिघ्नन्ते	उत्+जिघ्नन्ते ऊर्ध्वंगमयन्ति (हन्तेर्व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम्,शपःश्लुश्छान्दसः)	ऊपर उठाते हैं
१ आऽपथ्यः	पथिभवः (रथः)	रस्तेमेंचलनेवाला (रथ)
न	इव	की न्यांई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पर्वतान्	मेघान्	मेघों को
मखाः	पूजनीयाः (आ०को०)	पूजने योग्य
अयासः	क्षिप्रगतयः (आ०को०)	शीघ्रगति वाले
स्वऽसृतः	स्वयंसरणशीलाः (क्विप्)	स्वयं चलने वाले
ध्रुवऽच्युतः	ध्रुवाणांनिश्चलानाम् (वृक्षादीनाम्) च्यावयितारः	निश्चलों को गिराने वाले
दुध्रऽकृतः	(आत्मानम्)दुर्धरं कुर्वाणाः	(अपने को) न रुकने वाले बनाते हुए
मरुतः	मरुतः	मरुत
भ्राजतऽऋष्टयः	दीप्यमानाऽऽयुधाः	चमकतेहुए अस्त्रों से युक्त

संस्कृतार्थः ।

जलानां वर्धयितारः, पूजनीयाः, क्षिप्रगतयः, स्वयं सरण शीला निश्चलानां च्यावयितारः, (आत्मानम्)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दुर्धरं कुर्वाणा दीप्यमानाऽऽयुधा मरुतः सुवर्णमयै रथ-चक्रैः पथिभवः (रथः) इव मेघानूर्द्ध्वं गमयन्ति ॥११॥

भाषार्थः ।

जलों के बढानेवाले, पूजनीय, शीघ्र गति से युक्त, स्वयं चलने वाले निश्चलों को गिराने वाले, (अपने-को) न रुकने वाले बनाते हुए, चमकते हुए अस्त्रों वाले मरुत, सोने के पहियों से रस्ते में चलने वाले (रथ) की न्याईं बादलों को ऊपर उठाते हैं ॥११॥

(१) जैसे रस्ते में चलता हुआ रथ धूली को ऊपर उठाता है इस प्रकार मरुत अपने सुनहरी रथ के पहियों से बादलों को ऊपर उठाते हैं, जहां आकाश की ठंडक लगने से वे बरस पड़ते हैं

मरुतोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२॥

घृषुंपावकंवनिनंविचर्षणिं रुद्र-स्यसूनुंहवसागृणीमसि । रजस्तुरं-तवसंमारुतंगणं मृजीषिणंवृषणंस-प्रचतश्रियं ॥ १२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घृषुम्	(शत्रूणाम्)घर्षकम्	(शत्रुओं के) रगड़ने वाले को
पावकम्	पावकम्	पवित्र करनेवालेको
वनिनम्	कामयमानम्	प्रेम करनेवालेको
विऽचर्षणिम्	कर्म्मिष्ठम् (आ०को०)	बहुत काम करने वाले को
रुद्रस्य	रुद्रस्य	रुद्रके
सूनुम्	पुत्रम्	पुत्र को
हवसा	आह्वानेन	पुकार कर
गृणीमसि	स्तुमः (गृशब्दे मसइकारागमः)	हमस्तुति करते हैं
रजःऽतुरम्	रजसःपांसोस्तुरं त्वरयितारं प्रेरकमित्यर्थः (तुरत्वरणे,क्विप्)	धूलि के उठाने वाले को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तवसम्	प्रवृद्धम्	बहुतबढ़े हुए को
मारुतम्	मरुत्सम्बन्धिनम्	मरुत्सम्बन्धीको
गणम्	गणम्	गणको
ऋजीषिणम्	शीघ्रमागन्तारम् (आ०को०)	शीघ्रता से सामने आने वाले को
वृषणम्	वीर्य्यवन्तम्	वीर्य्यवान को
सञ्चत	गच्छत (निघं०२।१४)	जाओ
श्रिये	सम्पत्त्यर्थम्	संपत्ति के लिये

संस्कृतार्थः ।

(वयं शत्रूणाम्) घर्षकम् (मनुष्याणाम्) पावकं कर्म्मिष्ठं रुद्रस्य पुत्रं स्तुमः, (तम्) पांसोःप्रेरकं प्रवृद्धं शीघ्रमागन्तारं वीर्य्यवन्तं मारुतंगणम्(प्रति) सम्पत्त्यर्थं गच्छत ॥ १२ ॥

भाषार्थः ।

हम (शत्रुओं के) रगड़ने वाले, (मनुष्यों के) पवित्र करने वाले (और) बहुत काम करने वाले, रुद्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के पुत्र की स्तुति करते हैं (उस) धूलि के उठाने वाले, बहुत बढे हुए, शीघ्रता से सामने आने वाले (और) वीर्य्यवान मरुद्गण के पास संपत्ति के लिये जाओ ॥ १२ ॥

(१) रुद्र का पुत्र मरुद्गण ।

मरुतोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२।

प्रनूसमर्तःशवसाजनाँअति तस्थौ-
वऊतीमरुतोयमावत । अर्वाञ्चि जं-
भरतेधनानृभि रापृच्छ्यक्रतुमा-
तिपुष्यति ।१३।

प्र	प्र+	–
नु	क्षिप्रम्	शीघ्र
सः	सः	वह
मर्तः	मनुष्यः	मनुष्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शवसा	बलेन	बलसे
जनान्	मनुष्यान्	मनुष्यों को
अति	अतीत्य	लांघकर
तस्थौ	प्र+तस्थौ, प्रतिष्ठितो बभूव	प्रतिष्ठित हुआ
वः	युष्माकम्	आपकी
ऊती	रक्षणेन (तृतीयायाःपूर्वसवर्णदीर्घत्वम्)	रक्षा से
मरुतः	हे मरुतः !	हे मरुतो
यम्	यम्	जिस को
आवत	अरक्षत	रक्षित किया
१ अर्वत्ऽभिः	अश्वैः	घोड़ों से
१ वाजम्	अन्नम्	अन्न को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भरते	सम्पादयति	संपादन करता है
धना	धनानि (शेर्लोपः)	धनों को
नृऽभिः	मनुष्यैः	मनुष्यों से
२आऽपृच्छ्यम्	आप्रष्टव्यम्	पूछने के योग्य को
क्रतुम्	ज्ञानम् (आ०को०)	ज्ञान को
आ	आ+	–
क्षेति	आ+क्षेति, प्राप्नोति (क्षिगतौ)	प्राप्त होता है
पुष्यति	पुष्टोभवति	पुष्ट होता है

संस्कृतार्थः ।

हे मरुतः! स मनुष्यः क्षिप्रं बलेन मनुष्यानतीत्य प्रतिष्ठितोबभूव यम् (निज) रक्षणेन (यूयम्) अरक्षत, (सः) अश्वैरन्नं मनुष्यैर्धनानि (च) सम्पादयति (सः) आप्रष्टव्यं ज्ञानं प्राप्नोति, पुष्टः (च) भवति ।१३

भाषार्थः ।

हे मरुतो वह मनष्य शीघ्र बल द्वारा सब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनुष्यों से बढ़ कर प्रतिष्ठित हुआ है जिस को आपने (अपनी) रक्षा से रक्षित किया है, वह घोड़ों द्वारा अन्न को (और) मनुष्यों द्वारा धनोंको संपादन करता है वह पूछने योग्य ज्ञान को प्राप्त करता है (और) पुष्ट होता है ॥ १३॥

(१) वह घोड़ों द्वारा अन्न को, अर्थात शत्रु के अन्न को और मनुष्यों द्वारा अर्थात सेना द्वारा शत्रु के धनों को प्राप्त करता है।

(२) पूछने योग्य ज्ञान, अर्थात असाधारण ज्ञान; जिसको पूछने के लिये लोग आकांक्षा करें।

मरुतोदेवता जगती छन्दः ।१२।१२।१२।१२।

चर्कृत्यंमरुतःपृत्सुदुष्टरं द्युमन्तं शुष्मंमघवत्सुधत्तन। धनस्पृतमुक्थ्यं विश्वचर्षणिं तोकंपुष्येमतनयंशतं-हिमाः । १४ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चर्कृत्यम्	कर्मसमर्थम् (यङ्लुगन्तात्करोतेः क्यष्,तुगागमश्च)	काम करने में समर्थ को
मरुतः	हे मरुतः !	हे मरुतो
पृत्ऽसु	संग्रामेषु	युद्धों में
दुस्तरम्	दुःखेन तरितव्यम् अजेयमित्यर्थः	न जीते जाने वाल को
द्युऽमन्तम्	दीप्तिमन्तम्	प्रकाश वाले को
शुष्मम्	बलम्	बल को
मघवत्ऽसु	धनवत्सु (मघमितिधननाम, निघं०२।१०)	धनवानों में
धत्तन	स्थापयत (तस्यतनादेशः)	स्थापन करो
धनऽस्पृतम्	धनैः प्रीतम्	धनों से प्रसन्न को
उक्थ्यम्	प्रशस्यम् (निघं० ३।८	प्रशंसाकेयोग्य का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विश्वऽचर्षणिम्	सर्वदर्शिनम्	सर्वदर्शी को
तोकम्	पुत्रम्	पुत्र को
पुष्येम	पोषयेम	हम पालते रहें
तनयम्	सन्ततिम्	सन्तान को
शतम्	शतम्	सौ
हिमाः	हेमन्तर्तूपलक्षितान् (संवत्सरान्)	वर्षों पर्य्यन्त

संस्कृतार्थः ।

हे मरुतः ! (अस्मदीयेषु) धनवत्सु कर्मसमर्थं संग्रामेष्वजेयं दीप्तिमन्तम् (च)बलं स्थापयत(वयम्) धनैः प्रीतं प्रशस्यं सर्वदर्शिनं पुत्रं (तस्य) सन्ततिम् (च) शतवर्षपर्य्यन्तं पोषयेम ॥ १४ ॥

भाषार्थः ।

हे मरुतो ! (हमारे) धनवानों में काम करने में समर्थ,युद्धों में न जीते जाने वाले, (और) दीप्ति-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मान, बल को स्थापन करो, (हम) धनों से प्रसन्न, प्रशंसा योग्य, सर्वदर्शी पुत्रको (और उसकी) सन्तान को सौ वर्ष पर्य्यन्त पालते रहें ॥ १४ ॥

मरुतोदेवता निचृत्त्रिष्टुप्छन्दः ।१०।११।११।११॥

नू ष्ठिरं मरुतो वीरवन्त मृतीषाहं रयिमस्मासधत्त। सहस्रिणं शतिनं शूशुवांसं प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ॥ १५ ॥

नु	क्षिप्रम्	शीघ्र
स्थिरम्	स्थिरम्	स्थिर को
मरुतः	हे मरुतः !	हे मरुतो
वीरऽवन्तम्	वीरैर्युक्तम्	बीरों से युक्त को
ऋतिऽसहम्	आक्रमणनिवारकम	आक्रमण के हटाने वाले को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रयिम्	धनम्	धन को
अस्मासु	अस्मासु	हम में
धत्त	स्थापयत	स्थापन करो
सहस्रिणम्	सहस्र गुणम्	हजार गुणे को
शतिनम्	शत गुणम्	सौ गुणे को
शशुऽवांसम्	वर्धमानम्	बढ़ने वाले को
प्रातः	प्रातः	प्रात काल में
मक्षु	शीघ्रम्	शीघ्र
धियाऽवसुः	ध्यानेन धनवान्	ध्यानद्वाराधनवान
जगम्यात्	आगच्छतु	आवे

संस्कृतार्थः।

हे मरुतः ! (यूयम्) अस्मासु वीरोपेतमाक्रमण-निवारकं सहस्रगुणं शतगुणम् (च) वर्धमानं स्थिरं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धनं स्थापयत, ध्यानंन धनवान् (भवद्गणः) शीघ्रं प्रातरागच्छतु ॥ १५ ॥

भाषार्थः ।

हे मरुतो ! आप हम में बीरों से युक्त, आक्रमण को हटाने वाले, हजार गुणे (और) सौ गुणे, बढने वाले, स्थिर धन को शीघ्र स्थापन करो, ध्यान द्वारा धनवान (आपका गण) शीघ्र प्रातःकाल में आवे ॥ १५ ॥

हम में मरुत ऐसा धन स्थापन करें कि जिसके द्वारा हम वीरों का पालन करके उन से युक्त हों और जिस के द्वारा हम शत्रुओं के आक्रमण को निवारण करसकें, जो धन शत्रु के धन से हजार गुना और सौ गुना हो, जो धन बढने वाला हो और जो धन हमारे पास स्थिरता से रहे।

इति चतुःषष्टितमं सूक्तम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं०१ सू०६५

अग्निर्देवता, पराशरऋषिः

(वसिष्ठस्य सुतः शक्तिः शक्तेः पुत्रः पराशरः)

विनियोग-सत्रयाग के दसवें दिन वैश्वदेव शस्त्र में पहिले यह सूक्त पढ़ा जाता है (आ०श्रौ०सू०उ० २।१२।२४)

इस और अगले पांच सूक्तों का द्विपदा विराट छन्द है, अर्थ के लिये दो दो मन्त्र जुडे हुए लिखे हैं परन्तु पढे अलग अलग जाते हैं, ७० सूक्तके अन्तिम मंत्र का कोई जोडा नहीं है।

इन सूक्तों में अग्नि के अप्रत्यक्ष रूप का वर्णन है प्रथम में अग्नि को सारी चेतन सृष्टि का बीजरूप वर्णन कियाहै, जल जो प्राणियों के जीवनके हेतु हैं, और जिन के बिना लोक मृत के समान है, उनके गर्भ में भी अग्नि ही हैं जो जलों को प्राणियों के जीवन का हेतु बनाते हैं।

जब इन्द्र के पौरुष से इस पृथिवी पर समुद्र सरित और स्रोत रूप में जल स्थित होगए तब देवता जीवसृष्टि की रचना करने के निमित्त अग्नि को जो सृष्टिरचना रूपी यज्ञ को लेकर जलोंकी गुफा में छिपे हुए थे खोजने लगे,जैसे मनुष्य पशु को चुराकर ले जाते हुए चोर को पैरके खोज द्वारा ढूंढते हैं, अग्नि के पैर का खोज ऋत के व्रत अर्थात सृष्टि के नियम थे जिन के पीछे२ देवता गए, वहां पर देवताओं की बडी भारी सभा हुई, और उन्होंने देखा कि जलों के गर्भमें अग्नि ही प्रथम जीव रूपसे उत्पन्न हुए हैं और उन की माता स्तात्रों द्वारा उनको बढा रही हैं(इस प्रथम सूक्ष्मजीव (cell) से ही सब वृक्ष, पशु,मनुष्यों की क्रमशः उत्पति हुई) यही अग्नि,वायु द्वारा वृक्षोंकी रगड से प्रकट होकर दावाग्नि रूपमें बनों-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को खातेहैं यही जीव रूप में ऐसे श्वास लेतेहैं जैसे जलोंमें बैठा हुआ हंस (क्योंकि सूक्ष्म जीव के शरीर की बनावट जल की न्याईं द्रव है और वृक्ष, पशु,मनुष्य आदि के शरीर इन्हीं सूक्ष्म जीवों cells के पुञ्ज हैं) यही जीव रूप में सवेरे जाग कर मनुष्यों को निद्रा से चेत कराते हैं यही सोम की न्याईं शरीर को रचने वालेहैं (क्योंकि जीव जगत की सामग्री से स्वयं ही अपना शरीर रच लेता है, माता के गर्भ में माता के शरीर की सामग्री से और जन्म हुए पीछे बाह्य सामग्री से)

अग्निर्देवता द्विपदाविराट् छन्दः।१०।१०

पशुवानतायुंगुहाचतन्तं नमोयु-

जानंनमोवहन्तम् (१)। सजोषाधी-

राःपदैरनुग्मन्नुपत्वासीदन्विश्वे-

यजत्राः (२)। १।

पशुवा	पशुना	पशुके साथ
न	इव	जैसे
तायुम्	चौरम् (निघं०३।२४)	चोर का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गुहा	गुहायाम् (सुपामितिसप्तम्यालुक्)	गुफा में
चतन्तम्	गच्छन्तम् (निघं०२।१४)	जाते हुएको
१ नमः	यज्ञम् (आ०को०)	यज्ञ को
१ यजानम्	धारयन्तम्	धारणकरतेहुएको
१ नमः	यज्ञम्	यज्ञ को
१ वहन्तम्	वहन्तम्	लेजाते हुए को
सऽजोषाः	सङ्गताः (आ०को०)	इकट्ठे हुए २
धीराः	मेधाविनः	मेधावी
१ पदैः	पादचिन्हैः	पैर के चिन्हों से
अनु	अनु+	–
गमन्	अनु+गमन्, अन्वगमन् (गमेर्लुङ्च्छान्दसश्च्लेर्लुक्)	पीछे २ गए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उप	उप+	–
त्वा	त्वाम्	तुझ को
सीदन्	उप+सीदन्, उपनिषेदुः	पास बैठे
विश्वे	सर्वे	सब
यजत्राः	यष्टव्याः	पूजनीय

संस्कृतार्थः ।

(हे अग्ने!) यज्ञं धारयन्तं यज्ञं वहन्तम् (च त्वाम्) सङ्गता मेधाविनः (देवाः) पशुनासह गुहायां गच्छन्तं चौरमिव पादचिन्हैरन्वगमन् (पुनः) यष्टव्याः (ते) सर्वे त्वामुपनिषेदुः ॥१॥

भाषार्थः ।

(हे अग्नि) यज्ञ को धारण करते हुए (और) यज्ञ को ले जाते हुए(आप)को इकट्ठे हुए २मेधावी (देवता) पैर के चिन्हों से पीछे २ गए, जैसे पशु के साथ गुफा में जाते हुए चोर(के पीछे२ मनुष्य जाते हैं, फिर) पूजनीय (वे) सब आप के पास बैठे ॥१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) अग्नि के पैर के चिन्ह ऋत के नियम हैं जैसे अगले मंत्रसे प्रतीत होता है ॥

अग्निर्देवता द्विपदाविराट् छन्दः ।१०।१०

ऋतस्यदेवाअनुव्रतागु र्भवत्परि-
ष्टिद्यौर्नभूम (३)। वर्धन्तीमापःप-
न्वासुशिश्विव मृतस्ययोनागर्भेसु-
जातम् (४)। २।

२ ऋतस्य	ऋतस्य	ऋत के
देवाः	देवाः	देवता
२ अनु	अनु+	–
२ व्रता	व्रतानि (शेर्लोपः)	नियमों को
२ गुः	अनु+गुः, अनु-गतवन्तः (अडभावः)	पीछे २ गए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भुवत्	अभवत् (अडभावः, उवङादेशश्छान्दसः)	हुई
परिष्टिः	परिषद् (ऋ०७।१९।७)	सभा।
द्यौः	द्यौः	द्यौ
न	इव	की न्याईं
भूम	महती (ह्रस्वश्छान्दसः)	बड़ी
वर्धन्ति	वर्धयन्ति (अन्तर्भावितण्यर्थः, व्यत्ययेनपरस्मैपदम्)	बढाते हैं
ईम्	(पूरणः)	–
आपः	आपः	जल
१ पन्वा	स्तोत्रेण (पनस्तुतौ, भावेउप्रत्ययः)	स्तोत्र से
सऽशिश्रिवम्	सुष्ठुवर्धमानम् (श्विवृद्धौ; किः प्रत्ययो द्वित्वञ्च)	सुन्दररूप से बढते हुए को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋतस्य	जलस्य (निघं०१।१२)	जल के
योना	योनौ (सुपामितिषष्ठ्याडाऽऽदेशः)	योनि में
गर्भे	मध्ये	बीच में
सुऽजातम्	सुष्ठुजातम्	भलीप्रकार जन्मे-हुए को

संस्कृतार्थः।

देवा ऋतस्य व्रतान्यनुगतवन्तः, (तेषाम्) द्यौरिव-महती परिषदभवत् जलस्य योनौ मध्ये सुष्ठु जातं सुष्ठु वर्धमानम्(च शिशुम्)आपःस्तोत्रेण वर्धयन्ति।२।

भाषार्थः।

देवता ऋत के नियमों के पीछे २ गए उनकी द्यौ जैसा बड़ी सभा हुई जल की योनि के मध्य में भली प्रकार जन्मे हुए (और) बढते हुए (बालक) को जल स्तोत्रों द्वारा बढाते हैं॥

(१) जब इस पृथिवी पर अग्नि ने प्रथम जीवरूप से जलों के गर्भ में जन्म लिया तो उनको माता ने उन को स्तुतियों से बढाया इसलिये अब भी जीव स्तुति से बढते हैं और झिडकने से घटते हैं॥

(२)इससे यह भी भविष्य अर्थ निकल सकता है कि जीवन का रहस्य ढूंढनेके लिये विद्वानोंकी बडी२ सभाएं होंगी और वे अन्वेषण करके यह निश्चय करेंगे कि जीवन का व्यवहार जीव रहित सृष्टि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के व्यवहार से भिन्न नहीं है, यहां भी वही ऋत काम करता है जो निर्जीव सृष्टि में करता है और उसी ऋत का अनुगमन करने से जीवन का रहस्य खुल जायगा ॥

अग्निर्देवता द्विपदाविराट् छन्दः ।१०।१०

पुष्टिर्नरण्वाक्षितिर्नपृथ्वी गिरिर्नभुज्मक्षोदोनशम्भु (५)। अत्योनाऽज्मन्त्सर्गप्रतक्तः सिन्धुर्नक्षोदःकङ्वरातो (६) ।३।

पुष्टिः	पुष्टिः	पुष्टि
न	इव	की न्याईं
रण्वा	रमणीया (सा०भा०)	रमणीय
क्षितिः	पृथिवी (निघं०१।१)	पृथिवी
न	इव	की न्याईं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पृथ्वी	विस्तीर्णा	विस्तार वाली
गिरिः	मेघः (निघं०१।१०)	मेघ
न	इव	की न्याईं
भुज्म	भोजयिता (सुपामितिसोर्लुक्)	भोजन देने वाला
चोदः	उदकम् (निघं०१।१२)	जल
न	इव	की न्याईं
शम्ऽभु	शान्तिप्रदम्	शांति देने वाला
अत्यः	अश्वः	घोड़ा
न	इव	की न्याईं
अज्मन्	संग्रामे (निघं०२।१७सप्तम्यालुक्)	युद्ध में
सर्गऽप्रतक्तः	अभिक्रमणार्थं प्रयातः [सर्गोऽभिक्रमणम् (आ०को०)तकतिर्गतिकर्मानिघं०२।१४]	धावे के लियेआगे बढ़ा हुआ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिन्धुः	समुद्रः	समुद्र
न	इव	की न्याईं
क्षोदः	क्षोभयुक्तः (आ०को०)	क्षोभयुक्त
कः	कः	कौन
ईम्	एनम्	इस को
वराते	वारयेत (वृञ्वरणे,अन्तर्भावितण्यर्थादस्माल्लेटयाडागमः)	रोके

संस्कृतार्थः

(अग्निः) रमणीया पुष्टिरिव, विस्तीर्णा भूमिरिव, भोजयिता मेघ इव, शान्तिप्रदमुदकमिव, संग्राम आक्रमणार्थं प्रयातोऽश्वइव,क्षोभयुक्तःसमुद्र इव(अस्ति) एनं को वारयेत ॥३॥

भाषार्थः ।

(अग्नि) रमणीय पुष्टि की न्याईं, विस्तारवाली पृथिवी की न्याईं भोजन देने वाले मेघ की न्याईं, शान्ति देने वाले जलकी न्याईं, युद्ध में धावे के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आगे बढे हुए घोडे की न्याईं (और) क्षोभयुक्त समुद्र की न्याईं (हैं) इनको कौन रोके ॥३॥

जैसे पुष्टि सुहावनी है जैसे विस्तृत भूमि निवासस्थान के देनेवाली है जैसे मेघ वर्षा द्वारा भोजन को देता है, जैसे जल शान्ति को देने वाले हैं इसी प्रकार अग्नि अपने उपासक को सुख देने वाले हैं। शत्रुके आक्रमण के लिये अग्निदेव ऐसे हैं जैसे युद्ध में धावे के लिये आगे बढ़ा हुआ घोड़ा और जैसे क्षोभ युक्त समुद्र, इन के आक्रमण को कोई नहीं रोक सकता ॥

अग्निर्देवता द्विपदाविराट्छन्दः ।१०।१०

जामिःसिन्धूनांभ्रातेवस्वस्रा मि-
भ्यान्नराजावनान्यत्ति (७) । यद्वा-
तजूतोवनाव्यस्थादग्निर्हदातिरो-
मापृथिव्याः (८) ।४।

जामिः	बन्धुः	बन्धु
सिन्धूनाम्	स्यन्दनशीलानाम् (अपाम्)	जलों का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भ्राताऽइव	भ्रातेव	भ्राता की न्याईं
स्वस्रॉम्	स्वसॄणाम् (नुडभावश्छान्दसः)	बहनों का
इभ्यान्	धनिनः	धनवानों को
न	इव	जैसे
राजा	राजा	राजा
वनानि	वनानि	बनों को
अत्ति	भक्षयति	खाता है
यत्	यदा	जब
वातऽजूतः	वातेनवेगंप्राप्तः	वायु के द्वारा वेग को प्राप्त हुआ २
वना	वनानि (शेर्लोपः)	बनोंको
वि	वि+	–

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अस्थात्	वि+अस्थात्, प्रसरति (लङर्थेलुङ्)	फैलता है
अग्निः	अग्निः	अग्नि
ह	खलु	सचमुच
दाति	छिनत्ति (दाप्लवने)	कतरता है
रोम	रोमाणि (शेर्लेपः)	बालों को
पृथिव्याः	पृथिव्याः	पृथिवी के

संस्कृतार्थः।

अग्निः स्वसॄणांभ्रातेवाऽपांबन्धुः (अस्ति सः) राजा धनिन इव वनानि भक्षयति यदा (च) वायुना वेगं प्राप्तः (सन्) वनानि प्रसरति (तदा) खलु पृथिव्याः रोमाणि च्छिनत्ति ॥ ४ ॥

भाषार्थः।

अग्नि बहनों के भाई की न्याईं जलोंके बन्धु (हैं) और बनों को ऐसे खाते हैं जैसे राजा धनवानों को, (और) जब वायु के द्वारा बेग को प्राप्त होकर बनों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में फैलते हैं (तब) सचमुच पृथिवी के बालों को कतरते हैं ॥४॥

अग्नि जलों के बीच में ऐसे रहते हैं जैसे बहनों के बीच में भाई, और बनोंको इस प्रकार खाजाते हैं जैसे धनवानोंको अन्यायी राजा, जब अग्नि वायु की सहायता से बनों में फैलतेहैं तो उनको ऐसे अनायास से साफ कर डालते हैं जैसे नापित बालों को ॥

अग्निर्देवता द्विपदाविराट्छन्दः ।१०।१०

श्वसित्यप्सु हंसो नसीदन् क्रत्वा चेतिष्ठो विशामुषर्भुत् (९)। सोमो न वेधाऋतप्रजातः पशुर्न शिश्वा विभुर्दूरेभाः (१०) ।५।

श्वसिति	श्वसिति	श्वास लेता है
अप्सु	अप्सु	जलों में
हंसः	हंसः	हंस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न	इव	की न्याईं
सीदन्	उपविशन्	बैठता हुआ
क्रत्वा	ज्ञानेन (नाभावाऽभावः)	ज्ञान से
चेतिष्ठः	चेतयितृतमः (चितीसंज्ञाने)	अत्यन्त चेत कराने वाला
विशाम्	मनुष्याणाम् (निघं०२।३)	मनुष्यों का
उषःऽभुत्	उषसिप्रबुद्धः (क्विप्प्रत्ययोबस्यभत्वम्)	उषाकाल में जागा हुआ
१ सोमः	सोमः	सोम
न	इव	की न्याईं
वेधाः	रचयिता	रचने वाला
ऋतऽप्रजातः	जलादुत्पन्नः	जल से उत्पन्न-हुआ २
पशुः	पशुः	पशु
न	इव	की न्याईं
शिश्वा	शिशुना (नाभावाऽभावः)	बालक के साथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विऽभुः	प्रबलः	प्रबल
दूरेऽभाः	दूरेभाःप्रकाशो यस्यसः (बहुलवचनादलुक्)	दूर से दीप्तिवाला

संस्कृतार्थः।

(अग्निः) अप्सुहंसइवोपविशन् श्वसिति, (सः) उषसि प्रबुद्धः (सन्) ज्ञानेन प्रजानां चेतयितृतमः (अस्ति) जलात् प्रादुर्भूतः (सः) सोम इव (शरीरस्य) रचयिता (अस्ति) शिशुना (सहवर्तमानः) पशुरिव प्रबलः दूरतः प्रकाशितः (च) अस्ति ॥५॥

भाषार्थः।

(अग्नि) जलों में हंस की न्याईं बैठते हुए श्वास लेते हैं (वह) उषाकाल में जागकर ज्ञान द्वारा प्रजाओं के अत्यन्त चेत करानेवाले हैं, जल से उत्पन्नहुए२ (वह) सोम की न्याईं शरीर के रचने वाले हैं (और) बालक के साथ होने वाले पशु की न्याईं प्रबल(और) दूर से दीप्ति वाले हैं ॥५॥

(१) अग्निदेवजल से उत्पन्न हुए २ अर्थात जीव रूप में इस प्रकार शरीर को रचलेते हैं जैसे सोम अर्थात् औषधि और वनस्पतियोंके अन्तर्गत रस उनके शरीरों को रचताहै क्योंकि रसके द्वारा ही वृक्ष आदि जीव बढते हैं और रस के सूकने से मर जाते हैं ॥

इति पञ्चषष्टितमं सूक्तम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ०मं०१ सू०६६।

अग्निर्देवता, पराशरऋषिः

विनियोग—इस सूक्त का किसी कर्म विशेष में विनियोग नहीं है ।

अग्नि हमारे लिये रमणीय धन की न्याईं, देखने वाले सूर्य्य की न्याईं, प्राणरूप जीवन की न्याईं नित्य संबंध वाले पुत्र की न्याईं, शीघ्रगामी घोडे की न्याईं और दूध वाली गौ की न्याई हैं, वह रमणीय घर को न्याईं और पके हुए जो की न्याईं सुख को देने वाले हैं, वह स्तुति शील ऋषि की न्याईं प्रशंसा के योग्य और प्रसन्न घोडे की न्याईं बल को धारण करने वाले हैं,वह असह्य तेज वाले, और नित्य किये जाने वाले यज्ञ की न्याईं पाप को दूर करने वाले हैं, वह घर में रहने वाली सब को पालने में समर्थ स्त्री की न्याईं हैं,उज्वल होकर दहकते हुए वह प्रजाओंमें सूर्य्य का काम देते हैं जैसे सुवर्ण से मढा हुआ तीव्र रथ युद्ध में उपयोगी होता है वैसे अग्नि मनुष्यों में हैं,वह युद्ध में छोडी हुई सेना की न्याईं भय को धारण करने वालेहैं-शत्रु के लिये वह ऐसेहैं जैसे चमकीले मुख वाला अस्त्र, जो कुछ उत्पन्न हुआ है और जो होगा वह अग्नि हैं, ऐसे अग्नि देव को पूजते हुए हम उनकी सालोक्यता को प्राप्त होवें और इस लोक ओर परलोक दोनों को जीतें ॥

अग्निर्देवता द्विपदाविराट्छन्दः ।१०।१०।

रयिर्नचित्रासूरोनसन्दृग गायुर्न-

प्राणोनित्योनसूनुः (१) । तक्वान-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भूर्णिर्वनासिषक्ति पयोनधेनुः शुचि-
विभावा ॥ १ ॥

रयिः	धनम्	धन
न	इव	की न्याईं
चित्रा	रमणीयम् (आ०को०)	रमणीय
सूरः	सूर्य्यः	सूर्य्य
न	इव	की न्याईं
सम्ऽदृक्	सम्यग्द्रष्टा	भलीभान्तिदेखने वाला
आयुः	जीवनम्	जीवन
न	इव	की न्याईं
प्राणः	प्राण रूपम्	प्राण रूप
नित्यः	नित्य सम्बन्धी	नत्य सम्बन्ध वाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न	इव	की न्याईं
सनुः	पुत्रः	पुत्र
तक्वा	अश्वः (आ० को०)	घोड़ा
न	इव	की न्याईं
भूर्णिः	शीघ्रगामी	शीघ्र चलने वाला
वना	वनानि	बनों को
सिसक्ति	सेवते	सेवन करता है
पयः	पयस्वती (छान्दसोमतुपोलुक्)	दूध वाली
न	इव	की न्याईं
धेनुः	गौः	गौ
शुचिः	विशुद्धः	पवित्र
विभाऽवा	अतिदीप्तिमान्	अत्यन्त दीप्ति वाला

संस्कृतार्थः ।

(अग्निः)रमणीयंधनमिव, सम्यग्द्रष्टा सूर्य्यइव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्राणरूपं जीवनमिव, नित्यसम्बन्धी पुत्र इव, शीघ्रगाम्यश्व इव, पयस्वती गौरिव (अस्ति) विशुद्धोऽतिदीप्तिमान् (च सः) वनानि सेवते ॥१॥

भाषार्थः ।

(अग्नि) रमणीय धन की न्याईं, देखनेवाले सूर्य्य की न्याईं, प्राणरूप जीवनकी न्याईं, नित्य संबंध वाले पुत्र की न्याईं, शीघ्र चलने वाले घोड़ेकी न्याईं और दूध वाली गौ की न्याईं (हैं) पवित्र (और) अत्यन्त दीप्ति वाले (वह) बनों को सेवन करते हैं॥१॥

अग्निर्देवता द्विपदाविराट् छन्दः ।१०।१०।

दाधारक्षेममोकोनरण्वो यवोनपक्वोजेताजनानाम् (३) । ऋषिर्नस्तुभ्वाविक्षुप्रशस्तो वाजीनप्रीतो वयोदधाति (४) ।२।

दाधार	धारयति (लडर्थेलिट्)	धारण करता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्षेमम्	सुखम्	सुख को
ओकः	गृहम्	घर
न	इव	की न्याईं
रण्वः	रमणीयः	रमणीय
यवः	यवः	जौ
न	इव	की न्याईं
पक्वः	पक्वः	पका हुआ
जेता	जेता	जीतने वाला
जनानाम्	मनुष्याणाम्	मनुष्यों के
ऋषिः	ऋषिः	ऋषि
न	इव	की न्याईं
स्तुभ्वा	स्तुतिकर्ता (स्तुभ-स्तुतौक्वनिप्प्रत्ययः)	स्तुति करने वाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विक्षु	मनुष्येषु	मनुष्यों में
प्रऽशस्तः	प्रशस्तः	प्रशंसाकिया गया
वाजी	अश्वः	घोड़ा
न	इव	की न्याईं
प्रीतः	प्रीतः	प्रसन्न हुआ २
वयः	बलम् (आ०को०)	बल को
दधाति	धारयति	धारण करता है

संस्कृतार्थः ।

मनुष्याणां जेता अग्निः) रमणीयं गृहमिव,पक्वो यवइव (च) सुखं धारयति (सः) स्तुतिकर्ता ऋषिरिव मनुष्येषु प्रशस्तः (अस्ति सः) प्रीताऽश्वइव बलं धारयति ॥२॥

भाषार्थः ।

मनुष्यों के जीतने वाले (अग्नि) रमणीय घरकी न्याईं (और) पके हुए जौ की न्याईं सुख को धारण करते हैं (वह) स्तुति करने वाले ऋषि की न्याईं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनुष्यों में प्रशंसा किए गए हैं, (वह) प्रसन्न घोड़े की न्याईं बल को धारण करते हैं ॥२॥

अग्निर्देवता द्विपदाविराट्छन्दः ।१०।१०।

दुरोकशोचिःक्रतुर्नित्यो जायेवयोनावरं विश्वस्मै (५)। चिचोयदभ्राट्श्वेतोनविक्षुरथोनरुक्मीत्वेषः समत्सु (६)॥ ३ ॥

दुरोकऽशोचिः	दुरोकं दुस्सेवं शोचिस्तेजोयस्यसः (सा०भा०)	कष्ट से सहारे जाने वाले तेज से युक्त
क्रतुः	यज्ञः	यज्ञ
न	इव	की न्याईं
नित्यः	नित्यंविहितः	नित्य किये जाने वाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जायाऽइव	जायेव	स्त्री की न्याईं
योनौ	गृहे (निघं०३।४)	घर में
अरम्	(भरणे) समर्था	पालन में समर्थ
विश्वस्मै	सर्वस्मै	सब के लिये
चित्रः	उज्ज्वलः (आ०को०)	उज्ज्वल
यत्	यदा	जब
अभ्राट्	भ्राजते (भ्राजृदीप्तौ, लडर्थेलङ् व्यत्ययेन परस्मैपदं छान्दसश्चशपोलुक्)	दहकता है
श्वेतः	शुभ्रवर्णः (सूर्यः) (सा०भा०)	श्वेत रंग वाला (सूर्य)
न	इव	की न्याईं
विक्षु	प्रजासु	प्रजाओं में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MiDF

रथः	रथः	रथ
न	इव	की न्याईं
रुक्मी	स्वर्णवेष्टितः	सोने से मंढा हुआ
त्वेषः	तीव्रः (त्विडितितीव्रतानाम आ०को०)	तीव्र
समत्सु	संग्रामेषु (निघं०२।१७)	युद्धों में

संस्कृतार्थः।

(अग्निः) दुस्सेवतेजाः, नित्यंविहितो यज्ञ इव (चाऽस्ति,सः) गृहे (वर्तमाना) (भरण-: समर्था जायेव (अस्ति) यदा (सः) उज्ज्वलः सन्) भ्राजते (तदा) प्रजासु शुभ्रवर्णः सूर्य्य इव (भवति) सः संग्रामेषु तीव्रः स्वर्ण वेष्टितो रथइव (चाऽस्ति) ॥३॥

भाषार्थः।

(अग्नि) कष्ट से सहारे जाने वाले तेज से युक्त (और) नित्य किय जाने वाले यज्ञ की न्याईं हैं (वह) घर में रहनेवाली सब को (पालन में)समर्थ स्त्री की न्याईं (हैं) जब(वह) उज्ज्वल होकर दहकते हैं (तब) प्रजाओं में श्वेत रंग वाले सूर्य्य की न्याईं (होजाते हैं,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वह) युद्धों में तीव्र (और) सोने से मंढे हुए रथ की न्याईं (हैं) ॥ ३ ॥

अग्निर्देवता द्विपदाविराट्छन्दः ।१०।१०।

सेनेवसृष्टाऽमंदधात्य स्तुर्नद्युत्त्वेषप्रतीका (७) । यमोहजातोयमोजनित्वं जारःकनीनांपतिर्जनीनाम् (८) ॥ ४ ॥

सेनाऽइव	सेनेव	सेना की न्याईं
सृष्टा	सृष्टा	छोड़ी हुई
अमम्	भयम् (निघं० १०।२१)	भय को
दधाति	धारयति	धारण करता है
अस्तुः	(अस्त्राणाम्)क्षेप्तुः (असुक्षेपणे)	(अस्त्र) चलाने वाले के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न	इव	की न्याईं
द्यु॒त्	आयुधम्	अस्त्र
त्वे॒षऽप्र॑तीका	दीप्तमुखम्	चमकीले मुख वाला
१ य॒मः	(इन्द्रस्य)यमजः (इन्द्राऽग्न्योर्युगपदुत्पन्नत्वात्)	(इन्द्रका) जोड़ला
ह	एव	ही
जा॒तः	उत्पन्नः(भूतसङ्घः)	उत्पन्न हुए २ (प्राणी)
य॒मः	यमजः	जोड़ला
जनि॑ऽत्वम्	उत्पत्स्यमानम् (भूतजातम्)	उत्पन्न होने वाले (जीव)
२ जा॒रः	जरयिता कन्यात्वस्य निवर्तयितेत्य	कन्यापन को तोड़ने वाला
२ क॒नीना॑म्	कन्यान	कन्याओं के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३ पतिः	पतिः (तृतीयोअग्निष्ठेपतिः, ऋ०सं०।१०।८५।४०।)	पति
२ जनीनाम्	जायानाम्	विवाहिता स्त्रियों का

संस्कृतार्थः।

(अग्निः) सृष्टा सेनेव भयं धारयति, (सः) (अस्त्राणाम्) क्षेप्तुर्दीप्तमुखमायुधमिव (अस्ति), उत्पन्नः (भूतसङ्घः) यमजः (अग्निः) एव, उत्पत्स्यमानम् (भूत जातञ्च) यमजः (अग्निरेव) (सः) कन्यानां कन्यात्वनिवर्त्तकः (कृतविवाहानाम्) जायानां पतिः (चाऽस्ति) ॥ ४ ॥

भाषार्थः।

(अग्नि) छोड़ी हुई सेना की न्याईं भय को धारण करते हैं (वह अस्त्रों के) चलाने वाले के चमकीले मुख वाले अस्त्र की न्याईं (हैं) (जो कुछ) उत्पन्न हुआ है वह जोड़ले (अग्नि) ही (हैं) (और जो) उत्पन्न होगा (वह भी) जोड़ले (अग्नि ही हैं) (वह) कन्याओं के कन्यापनको तोड़ने वाले (और) विवाहिता स्त्रियों के पति (हैं) ॥ ४ ॥

(१) विद्युत के साथ सदा इकट्ठे उत्पन्न होने से अग्नि इन्द्र के यमज (जोडले भाई) कहे जाते हैं जो कुछ उत्पन्न हुआ है वा होगा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वह सब अग्नि हैं क्योंकि यही सब के जीवन हैं जैसे ६५ सूक्त में कहा गया है।

(२) कन्याओं का विवाह उन के कन्याभाव को नष्ट करता है और वह विवाह अग्नि के द्वारा ही होता है इसलिये अग्नि कन्याओं के जार कहे गये हैं।

विवाहिता स्त्री अग्नि को घर में स्थापन करके पति के साथ नित्य पूजन करती है और गृहपति कह कर उसकी स्तुति करती है इस लिये अग्नि विवाहिता स्त्रियों के भी पति हैं॥

अग्निर्देवता द्विपदाविराट्छन्दः ।१०।१०।

तंवश्चराथावयंवसत्या ऽस्तंनगा-

वोनक्षन्तद्वम् (९)। सिन्धुर्नक्षोदः

प्रनीचीरैनो न्नवन्तगावःस्व१र्दृशी-

के (१०)॥५॥

तम्	तम्	उसको
वः	युष्मान्, स्वामित्यर्थः(आदरार्थं बहुवचनम्)	तुझ को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ चराथा	चरन्त्या (जङ्गम-रूपया पश्वा-हुत्या) (निरु०१०।२१) (विभक्तेरात्वम्)	चलने वाले (पशु की आहुति) से
वयम्	वयम्	हम
१ वसत्या	निवसन्त्या (स्थावर रूपया औषधाहुत्या) (निरु०१०।२१)	स्थावर (अन्न की आहुति) से
अस्तम्	गृहम् (निघं०३।४)	घर को
न	इव	जैसे
गावः	गावः	गौएं
नक्षन्ते	प्राप्नुवन्ति (व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम्)	प्राप्त होती हैं
द्रुह्वम्	प्रदीप्तम्	दीप्तिमान को
२ सिन्धुः	स्यन्दन शीलम्	बहने वाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न	इव	की न्याईं
२ क्षोदः	उदकम् (निघं०१।१२)	जल
प्र	प्र +	–
२ नीचीः	नीचैः (ऋ०५।४४।४)	नीचे
ऐनोत्	प्र+ऐनोत् प्राप्नोति (इण्गतौ-लडर्थे लिट् व्यत्ययेन श्नुप्रत्ययः)	प्राप्त होता है
२ नवन्त	प्राप्नुवन्ति (नवतिर्गतिकर्म्मा, निघं०।२।१४ लडर्थे लङ्,अडभावश्छान्दसः)	पहुंचती हैं
२ गावः	किरणाः (निघं०१।५)	किरणें
२ स्वः	नभसि	ऊपरके आकाशमें
दृशीके	दर्शनीये	दर्शनीय में

संस्कृतार्थः।

(हे अग्ने! वयम्) पश्वाहुत्या,औषधाऽऽहुत्या (च)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रदीप्तं त्वां (प्राप्नुवाम) यथा गावः गृहं प्राप्नुवन्ति, (सोऽग्निः) स्यन्दनशीलमुदकमिव नीचैः प्राप्नोति (तस्य) किरणा दर्शनीये नभसि प्राप्नुवन्ति ॥५॥

भाषार्थः ।

(हे अग्नि) पशु की आहुति से (और) अन्न की आहुति से दीप्तिमान आपको हम (प्राप्त होवें) जैसे गौएं घर को प्राप्त होती हैं, (वह अग्नि) बहते हुए जल की न्याईं नीचे को प्राप्त होते हैं उनकी किरणें दर्शनीय ऊपर के आकाश में पहुंचती हैं ॥५॥

(१) नित्य जो अन्न से आहुति दी जाती है और बडे बडे सोम आदि यज्ञों में जो कभी कभी पशु के हृदय से आहुति दी जाती है इन के द्वारा हम अग्नि की सालोक्यता को प्राप्त करें जैसे गौएं सायंकाल में घर को प्राप्त होती हैं ।

(२) जैसे अग्निदेव नीचे की ओर भी जाते हैं और ऊपर के लोक में भी फैलते हैं इसी प्रकार हम अग्नि की सालोक्यता से इस नीचे के लोक और परलोक दोनों को जीतें ॥

इति षट्षष्टितमं सूक्तम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ०मं०१ सू० ६७

अग्निर्देवता पराशरऋषिः।

विनियोग—लैङ्गिक,

अग्निदेव वनों में जयशील, मनुष्यों के मित्र, शीघ्रकारी-को चाहने वाले, सुन्दर अभिप्राय को रखने वाले, कुशल की न्याईं अनुकूल और ज्ञान की न्याईं कल्याण रूप हैं, यह सब वीर्यों को हाथ में लिये हुए मनुष्य के हृदय रूपी गुफा में बैठे हैं और सब देवता इन से डरते हैं, जो पुरुष हृदय से रचे हुए मन्त्रों से स्तुति करते हैं वे इस आत्मरूपी अग्नि को जानते हैं, अग्नि ने परमात्मरूप में सत्य संकल्पों द्वारा अन्तरिक्ष और द्युलोक को ठैराया हुआ है। और वही प्रत्येक मनुष्य के हृदय में आत्मरूप से विद्यमान हैं। जो पुरुष अग्नि को हृदयस्थ आत्मा के रूप में जानकर ऋत की धारा में बैठा है और जो अग्नि को प्रदीप्त कर उस में यज्ञ करते हैं वे सब कल्याणों को प्राप्त करते हैं। जो अग्नि जलों के बीच में सर्वायु रूप से विद्यमान हैं, जो ओषधि रूप से उगते हैं और जो प्रसूतिका स्त्रियों में मनुष्य रूप से प्रकट होते हैं, धीर पुरुषों ने उसी को घर की न्याईं अपना आश्रय स्थान बनाया है।

अग्निर्देवता द्विपदाविराट् छन्दः ।१०।१०

वनेषुजायुर्मर्तेषुमित्रो वृणीतेश्रुष्टिं राजेवाजुर्य्यम् (१)। क्षेमोनसाधुः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्रतुर्नभद्रो भुवत्स्वाधीर्होताहव्य-
वाट् (२) ॥ १ ॥

१ वनेषु	वनेषु	बनों में
१ जायुः	जयशीलः (जिजयेअस्मादुण्प्रत्ययः)	जयशील
मर्तेषु	मनुष्येषु	मनुष्यों में
मित्रः	मित्ररूपः (लिङ्गव्यत्ययः)	मित्र रूप
वृणीते	सम्भजते, स्वीकरोतीत्यर्थः	स्वीकार करता है
श्रुष्टिम्	क्षिप्रकारिणम् (श्रुष्टीतिक्षिप्रनाम निरु०६।१२)	शीघ्रकारी को
राजाऽइव	राजेव	राजा की न्याईं
अजुर्य्यम्	जरा रहितम् (जृषवयोहानौभावेण्यत् वृद्धौ कृतायामात्वस्योत्वंछान्दसम्)	बुढ़ापे से रहित को
क्षेमः	कुशलम्	कुशल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न	इव	की न्याईं
साधुः	अनुकूलः (आ०को०)	अनुकूल
क्रतुः	ज्ञानम्	ज्ञान
न	इव	की न्याईं
भद्रः	कल्याणरूपः	कल्याण रूप
भुवत्	अभवत् (भवतेर्लङ्युवङादेशोऽडभावश्चछान्दसः)	हुआ
सुऽआधीः	शोभनाभिप्राय-युक्तः	सुन्दर अभिप्राय वाला
होता	होता	होता
हव्यऽवाट्	हव्यवाहनः	हवियों को पहुंचाने वाला

संस्कृतार्थः ।

वनेषु जयशीलो मनुष्येषु मित्ररूपः (चाऽयमग्निः) राजा युवानमिव क्षिप्रकारिणं स्वीकरोति, शोभनाऽ-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भिप्राययुक्तो हव्यवाहनः (सः) होता कुशलमिवाऽनुकूलो ज्ञानमिव कल्याण रूपः (च) अभवत् ॥ १ ॥

भाषार्थः।

बनों में जयशील (और) मनुष्यों में मित्र रूप (यह अग्नि) शीघ्रता से कार्य्य करने वाले को स्वीकार करते हैं जैसे राजा जवान को, सुन्दर अभिप्राय वाले, हवियों को पहुंचाने वाले (वह) होता, कुशल की न्याईं अनुकूल (और) ज्ञान की न्याईं कल्याण रूप हुए ॥ १ ॥

बनों में जब अग्नि लगती है तो कोई उस को बुझा नहीं सकता इस लिये अग्नि बनों में जयशील है ॥

अग्निर्देवता द्विपदा विराट् छन्दः।१०।१०

हस्तेदधानोनृम्णाविश्वा न्यमदेवान्धाद्गुहानिषीदन (३)। विदन्तीमत्नरोधियंधा हृदायत्तष्टान्मन्चाँअशंसन् (४) ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हस्ते	हस्ते	हाथ में
दधानः	धारयन्	धारण करता हुआ
नम्णा	पौरुषाणि	पौरुषों को
विश्वानि	सर्वाणि	सब को
अभे	भये	भय में
देवान्	देवान्	देवताओं को
धात्	धारितवान् (अडभावः)	रक्खा
गुहा	गुहायाम् (सप्तम्यालुक्)	गुफा में
निऽसीदन्	निषीदन्	बैठता हुआ
विदन्ति	जानन्ति	जानते हैं
इम्	एनम्	इसको
अत्र	अस्याम्	इसमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नरः	पुरुषाः	पुरुष
धियम्ऽधाः	बुद्धीनां धारयितारः (बहुलवचनाद्द्वितीयायाअप्यलुक्)	बुद्धिमान
हृदा	हृदयेन	हृदय से
यत्	यदा	जब
तष्टान्	निर्म्मितान्	रचे हुओं को
मन्त्रान्	मन्त्रान्	मन्त्रों को
अशंसन्	स्तुतिरूपेणोच्चारयन्ति (लडर्थेलङ्)	स्तुतिरूपसे उच्चारण करते हैं

संस्कृतार्थः।

सर्वाणि पौरुषाणि हस्तेधारयन् गुहायां निषीदन् (अयमग्निः) देवान्भयेधारितवान् बुद्धीनां धारयितारः पुरुषा यदा हृदयेन निर्म्मितान् मन्त्रान्स्तुतिरूपेणोच्चारयन्ति (तदा) अस्याम् (गुहायाम्) एनम् (अग्निम्)जानन्ति ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

सब पौरुषों को हाथ में धारण करते हुए गुफा में बैठते हुए (इस अग्नि ने) देवताओं को भय में रक्खा, बुद्धिमान पुरुष जब हृदय से रचे हुए मंत्रों को स्तुति रूप से उच्चारण करते हैं (तब) इस (गुफा) में इस (अग्नि) को जानते हैं॥ २॥

अग्नि आत्मरूप होने से सब बलों को धारण किए हुए मनुष्य के हृदय रूपी गुफा में बैठे हैं इसीलिये सब बलों का मूल स्थान मनुष्य का अपना आत्मा है दूसरे देवता जो मनुष्य के शरीर की रक्षा करते हैं जैसे दस इन्द्रियां, मन, बुद्धि अहङ्कार इत्यादि सब इस गुफा में बैठे हुए देवता से डरते हैं, इस देवता के जानने का उपाय हृदय से रचे हुए मंत्रों द्वारा स्तुति करना है, जो बुद्धिमान ऐसा करते हैं वे उस को जानते हैं और सब बल उनके हस्तगत होजाते हैं॥

अग्निर्देवता द्विपदाविराट्छन्दः ।१०।१०।

अजोनक्षांदाधारपृथिवीं तस्तम्भद्यामन्त्रेभिःसत्यैः (५)। प्रियापदानिपश्वोनिपाहि विश्वायुरग्ने गुहागुहंगाः (६)॥ ३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अजः	अजतिगच्छतीत्यजःसूर्य्यः (सा०भा०)	सूर्य्य
न	इव	की न्याईं
क्षाम्	पृथिवाम् (निघं०।१।२)	पृथिवी को
१ दाधार	धारितवान्	धारण किया है
१ पृथिवीम्	अन्तरिक्षम् (निघं०१।३)	अन्तरिक्ष को
तस्तम्भ	स्तम्भितवान्	थांभा हुआ है
१ द्याम्	द्युलोकम्	द्युलोक को
१ मन्त्रेभिः	सङ्कल्पैः (भिसऐसभावश्छान्दसः)	संकल्पों से
२ सत्यैः	सत्यैः	सत्यों से
प्रिया	प्रियाणि (शेर्लोपः)	प्रिय
३ पदानि	स्थानानि	स्थानों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ पशुवः	पशुजातेः	पशु जाति के
नि	नि +	–
३ पाहि	नि + पाहि, नितरांरक्ष	खूब रक्षा करो
४ विश्वऽआयुः	सर्वस्यायूरूपः	सब का आयु रूप
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
४ गुहा	गुहायाः (सुपामितिपञ्चम्या आजादेशः)	गुफा से
४ गुहम्	गुहाम् (ह्रस्वच्छान्दसः)	गुफा को
गाः	गतवानसि (अडभावः)	तू गया है

संस्कृतार्थः ।

(अग्निः) सूर्य्यः पृथिवीमिवाऽन्तरिक्षं धारितवान् (सः) सत्यसङ्कल्पैर्द्युलोकं स्तम्भितवान् हे अग्ने! (त्वम्) पशुजातेः प्रियाणि स्थानानि नितरां रक्ष सर्वस्यऽऽयूरूपः (त्वमेव) गुहाया गुहां गतवानसि ॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

(अग्नि ने) अन्तरिक्ष को धारण किया हुआ है। जसे सूर्य्य ने पृथिवी को, (उस ने) सत्यसंकल्पों से द्युलोक को थांभा हुआ है, हे अग्नि आप पशु जाति के प्रिय स्थानोंकी खूब रक्षा करें,सब के आयु रूप (आप ही) गुफा से गुफा में गए हैं ॥ ३॥

(१) अग्नि प्रत्यगात्माही नहीं किन्तु परमात्मा भी हैं। जैसे सूर्य्य ने पृथिवी को धारण किया हुआ है ऐसे ही अग्नि ने अन्तरिक्ष को, और सूर्य्य के निवास स्थान द्युलोक को थांभा हुआ है।

(२) यह जगत परमात्मा के सत्य संकल्पों द्वारा ठैरा हुआ है मनुष्य भी जितना सत्य का चिन्तन करता है उतना सृष्टि की स्थिति में सहायता करता है।

(३) इस से ऋषि का आशय यही है कि द्यौ और पृथिवी को धारण करने वाले जो परमात्मरूप में अग्नि हैं वह यही हैं जो साक्षात में बनों को जला रहे हैं, इस लिये प्रार्थना है कि अग्निदेव हमारी गौओं के चरने के सुन्दर स्थानों की रक्षा करें, उन को न जलावें।

(४) सब के आयुरूप यह एक ही अग्नि हैं जो एक हृदय से दूसरे हृदय में गए हैं अर्थात जो सब मनुष्यों के हृदय रूप गुफा में बिराजमान हैं ॥

अग्निर्देवता द्विपदाविराट्छन्दः ।१०।१०।

यद्वृचिकेतगहाभवन्त मायःससाद-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धारामृतस्य (७)। वियेचृतन्त्यृता-
सपन्त आदिद्वसूनिप्रववाचास्मै(८)
॥४॥

यः	यः	जिसने
ईम्	एनम्	इस को
चिकेत	ज्ञातवान्	जाना
गुहा	गुहायाम् (सप्तम्यालुक्)	गुफा में
भवन्तम्	विद्यमानम्	विद्यमान को
आ	आ +	–
यः	यः	जो
ससाद	आ+ससाद,	बैठा
१ धाराम्	धाराम्	धारा को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ ऋतस्य	ऋतस्य	ऋत के
वि	वि+	–
ये	ये	जो
चृतन्ति	वि+चृतन्ति, दीपयन्ति (गुणाभावश्छान्दसः)	प्रदीप्त करते हैं
ऋता	यज्ञान् (शेर्लोपः)	यज्ञों को
सपन्तः	समवयन्तः, सम्पादयन्तइत्यर्थः	सम्पादन करते हुए
आत्	अनन्तरम्, क्षिप्रमित्यर्थः	शीघ्र
इत्	एव	ही
२ वसूनि	धनानि	धनों को
प्र	प्र+	--
ववाच	प्र+ववाच, प्रयच्छति (लडर्थेलिट्)	देता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अस्मै	तस्मै (तलोपश्छान्दसः)	उसके ताईं

संस्कृतार्थः ।

यः (पुमान्) गुहायां विद्यमानम् (अग्निम्)ज्ञातवान् यः (च) ऋतस्य धारामाससाद, ये (च) यज्ञान् सम्पादयन्तः (एनम्) दीपयन्ति क्षिप्रमेव (अयमग्निः)तस्मै (यजमानवृन्दाय) धनानिप्रयच्छति ॥४॥

भाषार्थः ।

जिस (पुरुष ने) गुफा में विद्यमान (अग्नि) को जाना है (और) जो ऋत की धारा में बैठा है (और) जो यज्ञों को सम्पादन करते हुए (अग्नि को) प्रदीप्त करते हैं शीघ्र ही (यह अग्नि) उन (यजमानों) के ताईं धनों को देते हैं ॥ ४ ॥

(१) "ऋत की धारा में बैठा है" अर्थात परमात्मा की इच्छा के अधीन अपनी इच्छा को कर दिया है। जैसे नदी की धारा में बैठने से जल का कण समुद्र को पहुंच जाता है ऐसे ही ऋत की धारा में बैठने से मनुष्य परमात्मा को प्राप्त होता है।

(२) वसु नाम भद्र का भी है इसलिये, वसूनि, से सब प्रकार के कल्याण जिनमें धन मुख्य है समझने चाहियें।

अग्निर्देवता द्विपदाविराट्छन्दः ।१०।१०।

वियोवीरुत्सुरोधन्महित्वो त-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रजाउतप्रसूष्वन्तः (९)। चित्तिर-पांदमेविश्वायुः सद्मेवधीराःसम्मायचक्रुः (१०)॥५॥

वि	वि+	–
यः	यः	जो
वीरुत्ऽसु	ओषधीषु (निरु०६।३)	ओषधियों में
रोधत्	वि+रोधत्, व्यरुहत् (हस्यधत्वम्)	उगा है
महिऽत्वा	महत्त्वेन	महत्व से
उत	अपिच	और
प्रऽजाः	प्रजासु (विभक्तिव्यत्ययः)	प्रजाओं में
उत	(पूरणः)	–
प्रऽसूषु	प्रसूतिकासु	प्रसूतिका स्त्रियों में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अन्तः०	मध्ये	बीच में
चित्तिः	ज्ञानवान् (चिती संज्ञाने)	ज्ञानवान
अपाम्	अपाम्	जलों के
दमे	गृहे, मध्यइत्यर्थः	बीच में
विश्वऽआयुः	सर्वस्याऽऽयूरूपः	सब का आयु रूप
सद्मऽइव	गृहमिव	घर की न्याईं
धीराः	दृढनिश्चयाः	दृढ़ निश्चयवालों ने
सम्ऽमाय	सम्पूज्य	भली भांति पूजन करके
चक्रुः	चक्रुः	किया है

संस्कृतार्थः।

यः (अग्निर्निज-) महत्त्वेनौषधीषु व्यरुहत्, अपिच प्रजासु प्रसूतिकासु (च) मध्ये (व्यरुहत् सः) ज्ञानवान् जलानां मध्ये सर्वस्याऽऽयूरूपः (सन् विद्यते तम) धीराःसम्पूज्य गृह मिव (आश्रय रूपम्) चक्रुः ॥५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

जो (अग्नि अपने) महत्त्व से ओषधियों में उगे हैं और जो प्रजाओं में (और) प्रसूतिका स्त्रियों में (उत्पन्न हुए हैं, वह) ज्ञानवान, जलों के बीच में सब के आयु रूप (होकर, विद्यमान हैं, उन को) दृढ निश्चय वाले पुरुषों) ने भली भांति पूज कर घर की (न्याईं आश्रय रूप) बनाया है ॥ ५ ॥

इति सप्त षष्टितमं सूक्तम् ।

ऋ०मं० १ सू० ६८ ।

अग्निर्देवता पराशरऋषिः ।

विनियोग—लैङ्गिक,

अग्निदेव सूर्य्यरूप में स्थावर और जङ्गम को पकाते हुए रात्रिओं को अन्धकार से रहित करते हैं। यह देव अपनी महिमा से सब देवताओं में बढे हुए हैं। जब सूके काष्ठ से अरणि द्वारा मथन किए जाकर यह प्रकट होते हैं तभी सब देवता यज्ञ को पाते हैं और इस के अनुगामी होकर ऋत को सेवन करते हुए देवत्व को प्राप्त होते हैं । जो कर्म प्राणी समुदाय करते हैं वे ऋत की प्रेरणाएं हैं, और जो जीवन समूह है वह ऋत की भावना है। जो अग्नि के निमित्त देता है वा जिस को उस का ज्ञान है उस को अग्निदेव जानते हैं और धन से पूर्ण करते हैं। जो अग्नि हमारे होम के साधन हैं वही प्रजाओं के और सब धनों के स्वामी हैं, उन्हीं से वीर्य्य की इच्छा करनी चाहिए जिस से हमारा बुद्धि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बल बढे और हम उस को जान सकें। जैसे पुत्र पिता की आज्ञा को मानता है वैसे जो अग्नि की आज्ञा सुन कर शीघ्र उस के अनुसार कर्म करता है,उस के लिये अग्निदेव धनके द्वार खोल देते हैं,अग्नि का जानना तब होता है कि घर में स्थापित अग्नि को और नक्षत्रों द्वारा आकाश के भूषित करने वाले परमात्मा को एकजाने।

अग्निर्देवता द्विपदाविराट्छन्दः १०।१०।

श्रीणन्नुपस्थाद्दिवंभुरण्युः स्थातु-
श्चरथमक्तून्व्यूर्णोत् (१)। परियदे-
षामेकोविश्वेषां भुवद्देवोदेवानांम-
हित्वा (२)॥ १॥

१ श्रीणन्	पचन् (श्रीञपाके)	पकाता हुआ
उप	उप+	–
स्थात्	उप+स्थात्,उप-तस्थौ (अडभावः)	प्राप्त हुआ है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिवम्	द्युलोकम्	द्युलोक को
भुरण्युः	क्षिप्रकारी (निघं०२।१५)	शीघ्रकारी
स्थातुः	स्थावरम् (कर्मणिषष्ठी)	स्थावर को
चरथम्	जङ्गमम्	जङ्गम को
अक्तून्	रात्रीः	रात्रियों को
वि	वि+	–
ऊर्णोत्	वि+ऊर्णोत्,विगताऽऽच्छादनंकृतवान् (ऊर्णुञ् आच्छादने)	(अन्धकार रूपी) आच्छादन से रहित किया
परि	परि+	–
यत्	यः (विभक्तेर्लुक्)	जो
एषाम्	एतान् (कर्मणि षष्ठी)	इनको
एकः	एकः	एक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विश्वेषाम्	सर्वान् (कर्मणिषष्ठी)	सबको
भुवत्	परि+भुवत्, अतिचक्राम	आगे बढ़ गया
देवः	देवः	देव
देवानाम्	देवान् (कर्मणिषष्ठी)	देवताओं को
महिऽत्वा	महिम्ना (सुपामितितृतीयाया आत्वम्)	महिमा से

संस्कृतार्थः।

(सः) क्षिप्रकारी (अग्निः सूर्य्य रूपेण) स्थावरं जङ्गमम् (च) पचन् (सन्) द्युलोक मुपतस्थौ (तत्रस्थित्वा) रात्रीर्विगताच्छादनं कृतवान्, य एको देव एतान्सर्वान् देवान् महिम्नाऽतिचक्राम ॥१॥

भाषार्थः।

(वह) शीघ्र कारी (अग्नि सूर्य्य रूप से) स्थावर और जंगम को पकाते हुए द्युलोक को प्राप्त हुए (वहां स्थित होकर) रात्रियों को अन्धकार से रहित किया, जो एक देव इन सब देवताओं से महिमा द्वारा बढ गए ॥१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) जैसे अग्नि सूर्य्यरूप में ओषधियों को पकाते हैं, वैसे जङ्गम अर्थात् मनुष्य और पशुको भी बढने के लिये सूर्य्य की आवश्यकता है, जैसे अग्नि वा सूर्य्य की उष्णता और प्रकाश के न होने से ओषधियां मर जाती हैं वैसे पशु और मनुष्य भी ॥

अग्निर्देवता द्विपदाविराट्छन्दः ।१०।१०

आदित्ते विश्वे क्रतुं जुषन्त शुष्का-
द्यद्देव जीवो जनिष्ठाः (३) । भजन्त-
विश्वे देवत्वं नाम ऋतं सपन्तो अमृत-
मेवैः (४) ॥२॥

आत्	अनन्तरम्	अनन्तर
इत्	एव	ही
ते	ते	उन्हों ने
विश्वे	सर्वे	सब
क्रतुम्	यज्ञम्	यज्ञ को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जुषन्त	प्राप्तवन्तः (लङ्यडभावः)	प्राप्त किया
शुष्कात्	शुष्कात्(काष्ठात्)	सूके (काष्ठ) से
यत्	यदा	जब
देव	हे देव !	हे देव
जीवः	जीवनयुक्तः(सन्)	जीता हुआ
जनिष्ठाः	प्रादुरभवः (अडभावः)	तू प्रकट हुआ
भजन्त	प्राप्नुवन् (अडभावः)	प्राप्त किया
विश्वे	सर्वे	सबने
देवऽत्वम्	देवत्वम्	देवत्व को
नाम	खलु (आ०को०)	सच मुच
ऋतम्	ऋतम्	ऋत को
सपन्तः	सेवमानाः	सेवन करते हुए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अमृतम्	मरण रहितम्	मरण से रहित को
एवैः	गमनैः	गमनों से

(आ०को०)

संस्कृतार्थः।

हे देव! यदा (त्वम्, अरणिरूपात्) शुष्कात् (काष्ठाद्मथनेन) जीवन युक्तः (सन्) प्रादुरभवस्तदनन्तरमेव ते सर्वे (देवाः) यज्ञं प्राप्तवन्तः, सर्वे मरणरहितं (त्वामनुसृत्य-) गमनैः (च) ऋतं सेवमाना देवत्वं खलु प्राप्नुवन् ॥२॥

भाषार्थः।

हे देव! जब आप (अरणीरूप) सूके (काष्ठ) से (मथन द्वारा) जाते हुए प्रकट हुए तिस के अनन्तर ही उन सब (देवताओं) ने यज्ञ को प्राप्त किया (और) मरण रहित (आप के पीछे) चलने से ऋत को सेवन करते हुए सब ने सच मुच देवपन को पाया ॥२॥

देवता ऋत के मार्ग में चलने से देवत्व को प्राप्त हुए हैं, ऐसे ही मनुष्य भी ऋत का अनुसरण करने से देव पदवी को पहुंच सकता है ॥

अग्निर्देवता द्विपदाविराट् छन्दः ।१०।१०

ऋतस्यप्रेषाऋतस्यधीति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विश्वायुर्विश्वेअपांसिचक्रुः (५) ।
यस्तुभ्यंदाशाद्योवातेशिक्षात्तस्मै-
चिकित्वान्रयिंदयस्व (६) ॥ ३ ॥

१ ऋतस्य	ऋतस्य	ऋतकी
१ प्रेषाः	प्रेरणानि (आ०को०)	प्रेरणाएं
२ ऋतस्य	ऋतस्य	ऋतकी
२ धीतिः	भावना (आ०को०)	भावना
२ विश्वऽआयुः	जीवन समूहः	जीवन समूह.
विश्वे	सर्वे	सब
१ अपांसि	कर्म्माणि (निघं०२।१)	कर्म्मों को
१ चक्रुः	कुर्वन्ति (लडर्थेलिट्)	करते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यः	यः	जो
तुभ्यम्	तुभ्यम्	तेरे ताईं
दाशात्	दद्यात् (दाशृदानेलेट्याडागमः)	देवे
यः	यः	जो
वा	वा	अथवा
ते	तव	तेरे
शिक्षात्	ज्ञानं प्राप्नुयात् (आ०को०, लेट्याडागमः)	ज्ञानको प्राप्त करे
तस्मै	तस्मै	उसके ताईं
चिकित्वान्	जानन् (कितज्ञाने, लिटःक्वसुः)	जानता हुआ
रयिम्	धनम्	धन को
दयस्व	देहि (दयदाने)	तू दे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

सर्वे (जीवा यानि)कर्म्माणि कुर्वन्ति (तानि)ऋतस्य प्रेरणानि (यः)जीवन समूहः(सः) ऋतस्य भावना, (हे अग्ने !) यस्तुभ्यं दद्याद् यो वा तव ज्ञानं प्राप्नुयात् तस्मै जानन् (त्वम्) धनं देहि ॥३॥

भाषार्थः ।

सब (जीव जिन) कर्मों को करते हैं (वे) ऋत की प्रेरणाएं (हैं जो) जीवन समूह (है वह) ऋतकी भावना (है) (हे अग्नि) जो आप के ताईं देवे अथवा जो आप के ज्ञान को प्राप्त करे उस के ताईं जानते हुए आप धन को देवें ॥३॥

(१) सब जीव जिन कर्मों को करते हैं अर्थात् जो मनुष्यसमुदाय के कर्मों का परिणाम है वह ऋत की प्रेरणा से होता है, जैसे नदी के जलसमुदाय का परिणाम समुद्र की प्राप्ति है इसी प्रकार मनुष्यसमुदाय के कर्मों का परिणाम किसी विशेष अवस्था की प्राप्ति है जो उनके हित के लिये है इसके अनुकूल कर्म करना सृष्टि क्रम में सहायक बनना है यही यज्ञ कर्म है इससे अन्यत्र कर्म बंधन का हेतु है ॥

(२) सब प्राणियों का जीवन समूह है वह ऋत की भावना है जो केवल एक जीव के अर्थ अर्थात अपने स्वार्थ का ही चिंतनहै वह ऋत की भावना से बाहर है, उस मनुष्य का जीवन निष्फल है जो ऋत की भावना से बाहर है,ऋत की भावना के भीतर उसी का जीवन है जो सब के अर्थ चिंतन करता है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निर्देवता द्विपदाविराट्छन्दः ।१०।१०

होतानिषत्तोमनोरपत्ये सचि-
न्वासापतीरयीणाम् (७)। इच्छन्त-
रेतोमिथस्तनूषु सञ्जानतस्वैर्दचै-
रमूराः (८) ॥ ४ ॥

होता	होता	होता
निऽसत्तः	निषण्णः	बैठा हुआ
मनोः	मनोः	मनु की
अपत्ये	प्रजायाम्	प्रजा में
सः	सः	वह
चित्	एव	ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नु	खलु	सचमुच
आसाम्	आसाम्	इन का
पतिः	स्वामी	स्वामी
रयीणाम्	धनानाम्	धनों का
इच्छन्त	ऐच्छन् (व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम्)	इच्छा की
रेतः	वीर्य्यम्	वीर्य्य को
मिथः	अन्योऽन्यस्य	एक दूसरे के
तनूषु	शरीरेषु	शरीरों में
सम्	सम् +	–
जानत	सम् + जानत, संयुक्ताबभूवुः (अडभावः)	संयुक्त हुए
स्वैः	स्वकीयैः	अपनों से
दक्षैः	समर्थैः (पुत्रैः)	समर्थ (पुत्रों) से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अमूराः	सिद्धार्थाः	अर्थ सिद्धि को प्राप्त हुए२

संस्कृतार्थः ।

(हे अग्ने !) मनोः प्रजायां होतृ रूपेण निषण्णः सः (त्वम्) एवाऽऽसाम् (प्रजानाम्) धनानाम् (च) स्वामी (असि) (इमाः प्रजाः) अन्योन्यंशरीरेषु वीर्य्यमैच्छन् सिद्धार्थाः (सत्यश्च) समर्थैर्निज (पुत्रैः) संयुक्ता बभूवु ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

(हे अग्नि) मनुकी प्रजा में होता रूप से बिराजे हुए वह (आप) ही इन (प्रजाओं और) धनों के स्वामी (हैं) (इन प्रजाओं ने) एक दूसरे के शरीरों में वीर्य्य की इच्छा की और अर्थ सिद्धि को प्राप्त होकर सामर्थ्य वाले निज (पुत्रों) से युक्त हुए ॥ ४ ॥

जो अग्नि हमारे होम के साधन हैं उन को न जानने के कारण ही हम किसी मनुष्य विशेष को प्रजाओं और धन का स्वामी मान कर उस से अपनी उन्नति की आशा करते हैं, वास्तव में सबके राजा और सब धनके स्वामी अग्नि हैं। वही संतान की इच्छा होने पर वीर्य रूप से शरीरों में प्रवेश करके प्रजा को बलवान और सपुत्रों से युक्त करते हैं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निर्देवता द्विपदाविराट् छन्दः १०।१०

पितुर्नपुत्राःक्रतुंजुषन्त श्रोषन्ये-
अस्यशासंतरासः(९)। विरायगौ-
र्णोह्वरःपुरुक्षुः पिपेशनाकंस्तृभिर्द-
मूनाः (१०) ॥ ५ ॥

पितुः	पितुः	पिता की
न	इव	जैसे
पुत्राः	पुत्राः	पुत्र
क्रतुम्	कर्म्म	कर्म्म को
जुषन्त	असेवन्त (अडभावः)	सेवन किया
श्रोषन्	अशृण्वन् (अडभावः)	सुना
ये	ये	जिन्हों ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अस्य	अस्य	इसकी
शासम्	शासनम्	आज्ञा को
तुरासः	त्वरमाणाः	शीघ्रता से युक्त हुए २
वि	वि+	–
रायः	धनस्य	धन के
और्णोत्	वि+और्णोत्, उद्घाटितवान्	खोल दिया
दुरः	द्वाराणि	द्वारों को
पुरुऽक्षुः	बहुन्नयुक्तः (क्षुरित्यन्ननाम, निघं०२।७)	बहुत अन्नवालेने
पिपेश	भूषितवान् (आ०को०)	सजाया
नाकम्	द्विवम् (निघं०१।४)	आकाश को
स्तृऽभिः	नक्षत्रैः (निघं०३।२९)	तारागणों से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ दमूनाः	गृहासक्तमनाः (नि०४।१)	घर में आसक्त मन वाला।

संस्कृतार्थः।

ये (मनुष्याः) अस्य (अग्नेः) शासनं पुत्राः पितुरिवाऽशृण्वन् (श्रुत्वा च) त्वरमाणाः कर्माऽसेवन्त (तेभ्यः) वह्वन्नयुक्तः (अग्निः) धनस्य द्वाराण्युद्घाटितवान् गृहासक्तमनाः (अयमग्निरेव) नक्षत्रैर्दिवं भूषितवान् ॥५॥

भाषार्थः।

जिन (मनुष्यों) ने इस (अग्नि) की आज्ञा को सुना जैसे पुत्र पिता की (सुनते हैं) (और सुनकर) शीघ्रता से कर्म्म को सेवन किया (उन के लिये) बहुत अन्न से युक्त (अग्नि ने) धन के द्वारों को खोल दिया, घर में आसक्त मन वाले (इस अग्नि ने ही) नक्षत्रों से आकाश को भूषित किया है ॥५॥

(१) "घर में" अर्थात यजमान के घर में आसक्त मन वाले अग्नि जो उस की हवि की कामना करते हैं, वह और नक्षत्रों से आकाश को भूषित करने वाले परमात्मा एक ही हैं

इत्यष्टषष्टितमंसूक्तम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं०१ सू०६९।

अग्निर्देवता पराशर ऋषिः।

विनयोग—लैङ्गिक,

इस सूक्त में भी अग्नि की स्तुति है अग्निदेव सूर्य्य रूप में अपने प्रकाशद्वारा द्यावापृथिवी को पूर्ण करते हैं,वह सृष्टि में प्रकट होकर अपने बल द्वारा सब देवताओं से बढ़ गये हैं, यद्यपि वह देवताओं से उत्पन्न होने के कारण उन के पुत्र हैं परन्तु सृष्टि की आदि में सब देवताओंके पूर्वज होने सेउनके पिता भी हैं,वह बुद्धिमान,अहंकार से रहित,अन्न के स्वाद को खूब जानने वाले, धनकी न्याई कामना के योग्य हैं, और घर में स्थापन किये जाकर आनन्द के देने वाले हैं जैसे घर में उत्पन्न हुआ पुत्र आनन्द को देता है, और दुःखों से पार लंघाते हैं जैसे तृप्त हुआ२ घोड़ा रस्ते से पार लंघाता है। जब यज्ञमें नाना देवताओं को बुलाया जाता है तब अग्नि ही उस उस रूप को धारण करके हवि को ग्रहण करते हैं,जब आर्य्य सुखी थे तब अग्नि के व्रतों का लोप नहीं करते थे और अग्निदेव भी सब देवताओं के साथ मिल कर उनके पापों को मार कर दूर भगाते थे।

अग्निर्देवता द्विपदाविराट् छन्दः। १०। १०

शुक्रःशुशुक्वाँउषोनजारः पप्रा

समीचीदिवोनज्योतिः (१)। परि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रजातः क्रत्वा बभूथ भुवो देवानां पिता पुत्रः सन् (२)।१।

शुक्रः	शुभ्रवर्णः	उज्ज्वल रंगवाला
शुशुक्वान्	दीप्तिमान् (शुच दीप्तौ, लिटः क्वसुः, व्यत्ययेन कुत्वम्)	दीप्ति से युक्त
१ उषः	उषसः (सुपामितिषष्ठ्याः सुः)	उषाके
न	इव	की न्याईं
१ जारः	जरयिता	जीर्ण करने वाला
पप्रा	पूरयिता (पॄ+णिः, डादेशः)	पूर्ण करने वाला
२ समऽईचो०	सङ्गतयोः (द्यावा-पृथिव्योः) (विभक्तेर्लुक्)	मिलेहुए (द्यावा-पृथिवी) का
दिवः	दिवः	द्यौ के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न	इव	की न्याईं
ज्योतिः	ज्योतिः	प्रकाश
परि	परि+	–
प्रऽजातः	प्रादुर्भूतः	प्रकटहुआ २
क्रत्वा	बलेन (नाभावाऽभावः)	बल से
बभूथ	परि+बभूथ, अतिक्रान्तवानसि (निपातनादिडभावः)	तू बढ़गया है
भुवः	अभवः (उवङादेशश्छान्दसः, अडभावश्च)	तू हुआ
देवानाम्	देवानाम्	देवताओं का
३ पिता	पिता	पिता
१ पुत्रः	पुत्रः	पुत्र
सन्	सन्	हुआ २

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

(हे अग्ने !) उषसोजरयितेव शुभ्रवर्णो दीप्तिमान् (च त्वम्) दिवो ज्योतिरिव सङ्गतयोः (द्यावापृथिव्योः) पूरयिता (असि त्वम्) प्रादुर्भूतः (सन्) बलेन (सर्वान्) अतिक्रान्तवानसि, (त्वम्) देवानां पुत्रः सन् पिताऽभवः ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

(हेअग्नि) उषा के जीर्ण करने वाले की न्याईं उज्ज्वल रंग वाले (और) दीप्तिमान (आप) द्यौ के प्रकाश की न्याईं जुड़े हुए (द्यावा पृथिवी) को पूर्ण करने वाले (हैं) आप प्रकट होकर बल द्वारा (सब से) बढ़ गये हैं आप देवताओं के पुत्र होकर पिता बने हैं ॥१॥

(१) उषा को जीर्ण करने वाले सूर्य्य हैं जिन के समीप आने से उषा जीर्ण होकर नष्ट होजाती है ॥

(२) "जुड़े हुए द्यावा पृथिवी" जैसे क्षितिज में दीखते हैं। और वास्तव में भी आकाश द्वारा जुडे हुए हैं इसी कारण से सूर्य्य का प्रकाश पृथिवी तक पहुंच जाता है ॥

(३) अग्नि-देवताओं के पुत्र इस लिये हैं कि वह इस पृथिवी पर वन में वायु द्वारा वनस्पतियों की रगड़ से उत्पन्न हुए हैं और [illegible] इस लिये हैं कि सब देवताओं का पूर्व रूप [illegible] में [illegible] अग्नि ही हैं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निर्देवता द्विपदाविराट् छन्दः । १० । १० ॥

वेधाअहृप्तोअग्निर्विजानन्नूधर्न-
गोनांस्वाद्मापितूनाम् (३) । जनेनशे-
वआहूर्यःसन् मध्येनिषत्तोरण्वो-
दुरोणे (४) । २ ।

१ वेधाः	मेधावी (निघं० ३ ।१५)	बुद्धिमान
१ अहृप्तः	दर्प रहितः	अहंकार से रहित
अग्निः	अग्निः	अग्नि
विऽजानन्	विशेषेण जानन्	खूब जानता हुआ
२ ऊधः	स्तनः	थन
न	इव	की न्याई
२ गोनाम्	गवाम् (नुदात्तमध्यछन्दसः)	गौओं के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ स्वाद्म	स्वादम् (भावेमनिन् प्रत्ययःसोर्लुक् च)	स्वाद को
२ पितूनाम्	अन्नानाम् (निघं० २।७)	अन्नों के
जने	प्रजायाम्	मनुष्यों में
न	इव	की न्याईं
शेवः	धनम् (आ० को०)	धन
आऽहूर्यः	आह्वातव्यः	बुलाने योग्य
सन्	सन्	हुआ २
मध्ये	मध्ये	बीच में
निऽसत्तः	निषण्णः	बैठा हुआ
रणवः	रमणीयः	आनन्द देनेवाला
दुरोणे	गृहे (निघं ३।४)	घर में

[संस्कृतार्थः।

मेधावी दर्परहितः (च)अग्निर्गवांस्तनइवाऽन्नानां स्वादं विजानन् प्रजासुधनमिवाऽऽह्वातव्यःसन् गृह-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मध्ये रमणीयः (भूत्वा) निषण्णः (अस्ति) ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

बुद्धिमान और अहंकार से रहित अग्नि गौओं के थन की न्याईं अन्नों के स्वादको खूब जानते हुए प्रजाओं में धनकी न्याईं बुलाने योग्य होकर घर के बीचमें आनन्द देते हुए बैठे (हैं) ॥ २ ॥

(१) बुद्धिमान होकर अहंकार से रहित होना देवगुण है।

(२) जिस प्रकार गो का स्तन तृण में से मीठे रस को जान कर निकाल लेता है इसी प्रकार जठराग्नि अन्नों के स्वाद को जानते हुए शरीर में पुष्टिकारक रस को लेकर शेष को फेंक देते हैं।

अग्निर्देवता द्विपदाविराट् छन्दः । १० । १०

पुचोनजातोरणवोदुरोणे वा-

जीनप्रोतोविशोवितारीत् (५)।

विशोयदह्वेनृभिःसनोळा अग्निर्दे-

वत्वाविश्वान्यश्याः (६)। ३।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुत्रः	पुत्रः	पुत्र
न	इव	की न्याईं
जातः	उत्पन्नः	उत्पन्न हुआ २
रणवः	आनन्ददायकः	आनन्द देनेवाला
दुरोणे	गृहे (निघं ३ । ४)	घर में
वाजी	अश्वः	घोड़ा
न	इव	जैसे
प्रीतः	तृप्तः	तृप्त हुआ२
विशः	मनुष्यान्	मनुष्यों को
वि	वि+	–
तारीत्	वि+तारीत्, वितारयति (लडर्थेलुङ्वडभावः)	पार लंघाता है
विशः	विश्वान् देवान् (श०ब्रा०१।७।३।१६)	विश्वेदेवों की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यत्	यदा	जब
अह्वे	आह्वयामि	मैं बुलाता हूं
नृऽभिः	मनुष्यैः सह	मनुष्यों के साथ
सऽनीळाः	समान स्थानान	इकट्ठे रहने वालों को
अग्निः	अग्निः	अग्नि
देवऽत्वा	देवत्वानि	देव भावों को
१ विश्वानि	सर्वाणि	सब को
२ अश्नुयाः	अश्नुते प्राप्नोति (लिङिव्यत्ययेन परस्मैपद मध्यमौ विकरणस्यश्छान्दसोलुक्)	प्राप्त होजाता है

संस्कृतार्थः ।

गृह उत्पन्नः पुत्रइवाऽऽनन्द दायकः (अग्निः) तृप्तोऽश्वइव मनुष्यान्वितारयति, यदा (अहम्) मनुष्यैः सह (यज्ञे) समानस्थानान्विश्वान्देवानाऽऽह्वयामि (तदा) अग्निः (एव) सर्वाणि देवत्वानि प्राप्नोति ।३।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

घर में उत्पन्न हुए पुत्र की न्याईं आनन्द देने वाले अग्नि तृप्त हुए घोड़े की न्याईं मनुष्यों को पार लंघाते हैं, जब मैं मनुष्यों के साथ (यज्ञ में) इकट्ठे रहने वाले विश्वे देवों को बुलाता हूं (तब) अग्नि(ही) सम्पूर्ण देव-भावों को प्राप्त होजाते हैं ॥ ३ ॥

जब यज्ञ में अनेक देवताओं का आवाहन किया जाता है तो सब देवताओंके गुणों को धारण करने वाले अग्नि ही वह वह देवता बन-जाते हैं क्योंकि वास्तव में सारे देवता अग्निके ही रूपान्तर हैं ।

अग्निर्देवता द्विपदाविराट् छन्दः । १० । १०
भुरिग् द्विपदा विराट् छन्दः । ११ । १०

नकिष्टएताव्रतामिनन्ति नृभ्यो यदेभ्यःश्रुष्टिंचकर्थ (७)। तत्तुतेदं-सोयदहन्त्समानै र्नृभिर्यद्युक्तोविवे-रपांसि (८)। ४।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नकिः	नहि	नहीं
ते	तव	तेरे
एता	एतानि (शेर्लोपः)	इनको
१ व्रता	व्रतानि (शेर्लोपः)	नियमों को
१ मिनन्ति	लोपयन्ति	लोप करते हैं
नृऽभ्यः	मनुष्येभ्यः	मनुष्यों के लिये
यत्	यतः	क्योंकि
एभ्यः	एभ्यः	इनके लिये
शुष्टिम्	सुखम् (निघं० ४।३)	सुख को
चकर्थ	कृतवानसि	तूने किया है
तत्	तत्	वह
तु	एव (आ०को०)	ही
ते	तव	तेरा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दंसः	कर्म्म (निघं० २।१)	कर्म्म को
यत्	यत्	जो
अहन्	हतवान्	मारा
२ समानैः	समानैःसह	तुल्यों के साथ
२ नृऽभिः	नरैः	नरों से
यत्	यत्	जो
युक्तः	युक्तः	मिल कर
विवेः	गमयितवान् (अन्तर्मायितण्यर्थो वेर्त्तिगतिकर्म्मा निघं० २।१४)	निकाल दिया
रपांसि	पापानि	पापों को

संस्कृतार्थः

(हे अग्ने !) यतः (त्वम्) एभ्यः (आर्य्य-) मनुष्येभ्यः सुखं कृतवानसि (अतस्ते) तवैतानि व्रतान न लोपयन्ति तत्तवैव कर्म्म यत् समानै नरैर्युक्तः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(त्वम्) पापानि हतवान् (हत्वाच दूरम्) गमयितवान् ।४।

भाषार्थः ।

(हेअग्नि) जिस से आपने इन (आर्य्य) मनुष्यों के लिये सुख को किया है (इस लिये ये) आप के इन नियमों को नहीं तोड़ते यह आपका ही काम (है) जो आपने समान नरों के साथ मिल कर पापों को मारा (और मार कर दूर) निकाल दिया ॥ ४ ॥

(१) जब आर्य्य सुखी थे तब अग्नि के व्रतों को लोप नहीं करते थे उस समय—

समान नरों अर्थात् विश्वेदेवों के साथ मिलकर अग्नि ने आर्यों के पापों को मार कर दूर देशों में भगा दिया था।

अग्निर्देवता द्विपदाविराट् छन्दः ।१०।१०

उषोनजारोविभावोस्रः संज्ञा-

तरूपश्चिकेतदस्मै (९) । त्मना

वहन्तोदुरोव्यृणवन्नवन्तविश्वेस्व-

र्दृशीके (१०) । ५ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उषः	उषसः (सुपामितिषष्ठ्याःसुः)	उषा के
न	इव	की न्याईं
जारः	जरयिता	जीर्ण करने वाला
विभाऽवा	सौन्दर्य्ययुक्तः (आ०को०)	सौन्दर्य्य वाला
उस्रः	दीप्तः (आ० को०)	दीप्ति वाला
संज्ञातऽरूपः	प्रसिद्ध रूपः	प्रसिद्ध रूप वाला
१ चिकेतत्	जानातु (लेटिरूपम्)	जाने
१ अस्मै	अस्मै	इसके लिये
२ त्मना	आत्मना (मन्त्रेष्वित्याकार लोपः)	अपने आप से
वहन्तः	वहन्तः	लेचलने वालों ने
दुरः	द्वारा। ये	द्वारों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वि	वि+	–
ऋ॒ण॒व॒न्	वि+ऋण्वन् उद्घाटितवन्तः (ऋणुगतौ, अडभावः)	खोल दिया
नव॑न्त	अगच्छन् (नवतिर्गतिकर्म्मा निघं०२।१४)	पहुंच गए
विश्वे॑	विश्वे-(देवाः)	विश्वे (देवों) ने
स्वः	नभसि	ऊपरके आकाशमें
दृशी॑के	दर्शनीये	सुन्दर में

संस्कृतार्थः।

उषसो जरयितेव सौन्दर्य्यं युक्तो दीप्तः (च) प्रसिद्धरूपः (अग्निः) अस्मै (मह्यम्) जानातु, आत्मना वहन्तो विश्वे-(देवाः) द्वाराण्युद्घाटितवन्तः (उद्घाटय च) दर्शनीये नभसि प्राप्नुवन् ॥ ५ ॥

भाषार्थः।

उषा के जीर्ण करने वाले की न्याईं सौन्दर्य्ययुक्त (और) दीप्तिमान प्रसिद्ध रूप वाले (अग्नि) इस (मुझ) को जानें, अपने को आपसे लेचलते हुए विश्वे (देवों) ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्वारों को खोला (और खोलकर) ऊपर के सुन्दर आकाश में पहुंच गए ॥ ५ ॥

(१) जैसे कोई साधारण मनुष्य जिसमें राजा की भक्ति हो यह चाहता है कि राजा मुझे जाने इसी प्रकार ऋषि इच्छा करते हैं कि सूर्य्य की न्याईं सुन्दर और दीप्तिमान अग्नि मुझ को जानें।

सायं काल के समय जब सूर्य्य की किरणें सूर्य्य में लीन होजाती हैं उस घटना को ऋषि ऐसे देखतेहैं कि मानो सारे देवता (किरणों के विश्वेदेव होने के विषय में देखो पृष्ट ३१०)बिना किसी वाहन के अपनी निज शक्तिसे ऊपर चढते हुए आकाश के द्वारों को खोल कर ऊपर के आकाश में पहुंच गए।

इत्येकोन सप्ततितमं सूक्तम्।

ऋ० मं०१ सू०७०

अग्निर्देवता पराशर ऋषिः

विनियोग--लैङ्गिक।

सुन्दर दीप्ति वाले अग्नि देवताओं के नियमों को और मनुष्यों की सृष्टि को पूर्ण रूप से जानते हुए सब में व्याप्त हैं। यह जल स्थल स्थावर और जंगम सब के बीच में वर्तमान हैं, यह मृत्यु से रहित, सुन्दर चिन्तन से युक्त, और मनुष्यों की आत्मा के तुल्य हैं, यह रात्रि के स्वामी हैं, और पर्य्याप्त (काफी) स्तुति करने वाले के ताईं धनों के देने वाले हैं। यह स्थावर और जंगम् के लिये आनन्द के हेतु, सृष्टि के मूल कारण जलों से उत्पन्न और यजमान के सब कर्मों को सफल करने वाले हैं,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नक्षत्र और किरणें जो हमारे लिये ज्योतिरूप भेट को लाते हैं, उन के महत्व का कारण अग्नि ही हैं, मनुष्यों ने अनेक कालों में नाना रूप से अग्नि की सेवा की है और उस से धन को पाया है जैसे बुड्ढे पिता से पुत्र पाते हैं, अग्नि परोपकारी की न्याईं कामना से युक्त, योधा की न्याईं शूरवीर, दण्ड देने वाले की न्याईं भयंकर और युद्ध में तेज रूप हैं।

अग्निर्देवता द्विपदाविराट्छन्दः ।१०।१०

वनेमपूर्वीरर्य्योमनीषा अग्नि.

सुशोकोविश्वान्यश्याः (१) । आदे-

व्यानिव्रताचिकित्वा नामानुषस्य

जनस्यजन्म (२) । १ ।

वनेम	कामयेमहि	हम कामना करें
पूर्वीः	प्रभूताः(इषः)	बहुत(अन्नों) को
अर्य्यः	आर्य्य-(प्रजाः) (सुपामितिजसःसुः)	आर्य्य-(प्रजा)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनीषा	स्तुत्या (आ० को० तृतीयाया लुक्)	स्तुति से
अग्निः	अग्निः	अग्नि
सुऽशोकः	चारुदीप्तियुक्तः (शुचदीप्तौ घञ्)	मनोहर दीप्ति वाला
१ विश्वानि	सर्वाणि	सब को
१ अश्याः	व्याप्तवान् (अशुङ्व्याप्तौव्यत्ययेन परस्मैपद मध्यमौ)	व्याप्त है
आ	समन्तात्	चारोंओरसे
दैव्यानि	देवसम्बन्धीनि	देव संबंधियों को
व्रता	व्रतानि (शेर्लोपः)	नियमों को
चिकित्वान्	जानन्	जानता हुआ
आ	(पूरणः)	–
मानुषस्य	मानुषस्य+	–

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जनस्य	मानुषस्य+जनस्य मनुष्यसमूहस्य	मनुष्यसमूहकी
जन्म	सृष्टिम् (आ०को०)	सृष्टिको

संस्कृतार्थः

आर्य्य (प्रजा वयम्) स्तुत्या प्रभूताः (इषः) कामयेमहि, चारुदीप्तियुक्तोऽग्निर्देव्यानि व्रतानि मनुष्यसमूहस्य सृष्टिम् (च) समन्ताज्जानन (सन्) सर्वाणि व्याप्तवान्।१।

भाषार्थः।

आर्य्य (प्रजा) हम स्तुतिद्वारा बहुत (अन्नों) की कामना करें, सुन्दर दीप्तिवाले अग्नि देवताओं के नियमों को (और) मनुष्यों की सृष्टि को पूर्ण रूप से जानते हुए सब में व्याप्त हैं।१।

अग्नि देवताओं के नियमों को और मनुष्यों को खूब जानते हैं क्योंकि वह सब देव और मनुष्य सृष्टि में व्याप्त हैं।

अग्निर्देवता द्विपदाविराट्छन्दः।१०।१०

गर्भोयोअपांगर्भोवनानां गर्भश्चस्थातांगर्भश्चरथाम् (३)। अद्रौ-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चिदस्माअन्तर्दुरोणे विशांनविश्वो

अमृतःस्वाधीः(४) ॥ २ ॥

गर्भः	मध्येवर्त्तमानः	बीचमें रहने वाला
यः	यः	जो
अपाम्	अपाम्	जलों के
गर्भः	मध्येवर्त्तमानः	बीचमें रहने वाला
वनानाम्	वनानाम्	बनों के
गर्भः	मध्येवर्त्तमानः	बीचमेंरहनेवाला
च	च	और
स्थाताम्	स्थातॄणाम् (ऋकारलोपेन नुडागमाऽभावश्छान्दसः)	स्थावरों के
गर्भः	मध्येवर्त्तमानः	बीचमें रहने वाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चरथाम्	जङ्गमानाम् (नुडभावश्छान्दसः)	जंगमों के
अद्रौ	पर्वते	पर्वत में
चित्	अपि	भी
अस्मै	तस्मै (तलोपश्छान्दसः)	उसकेलिये
अन्तः	मध्ये	बीचमें
दुरोणे	गृहे	घर में
विशाम्	प्रजानाम्	प्रजाओं का
न	इव	की न्याईं
विश्वः	आत्मा (आ०को०)	आत्मा
अमृतः	मरणरहितः	मरण से रहित
सुऽआधीः	शोभनध्यानयुक्तः	सुन्दरध्यान से युक्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः

अपां मध्ये वनानां मध्ये स्थावराणां मध्ये जङ्गमानां च मध्ये वर्त्तमानो मरणरहितः शोभन ध्यानेन-युक्तो यः(अग्निः)प्रजानामात्मेव(अस्ति)तस्मै गृहमध्ये पर्वते ऽपि (च हविर्दीयते) ॥२॥

भाषार्थः।

जो (अग्नि देव) जलों के बीच बनों के बीच स्थावरों के बीच और जंगमों के बीच वर्त्तमान, मरण से रहित सुन्दर ध्यान से युक्त (और) प्रजाओं के आत्मा की न्याईं (हैं) उनके लिये घर (और) पर्बत में भी (हवि दी जाती है) ॥ २ ॥

जैसे अग्नि को घर में यजमान अन्न आदि की हवि देते हैं वैसे पर्बत में मातरिश्वा (वायु) वृक्षों की हवि देते हैं इस लिये ग्रीष्म ऋतु में कई पर्वत दिन में धूम्र युक्त और रात्रि में जलते हुए दीख पड़ते हैं।

अग्निर्देवता द्विपदाविराट् छन्दः।१०।१०

सहि॒चि॒पावाँ॑अ॒ग्नीरय॒ीणां दाश॒-

द्वोअस्मा॒अरं॑सतः(५)। ए॒ताचि॑कि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वोभमानिपाहि देवानांजन्मभर्ता-

प्रचविद्वान् (६) । ३ ।

सः	सः	वह
हि	एव	ही
क्षपाऽवान्	रात्रिमान्, रात्रि-पतिरित्यर्थः	रात्रि का स्वामी
अग्निः	अग्निः	अग्नि
रयीणाम्	धनानि (द्वितीयार्थेषष्ठी)	धनों को
दाशत्	ददाति (दाशृदानेलेटयडागमः)	देता है
यः	यः	जो
अस्मै	अस्मै	इस के लिये
अरम्	पर्य्याप्तम्	पर्य्याप्त
रऽउक्तैः	सुष्ठूक्तैः	सुन्दरवाणियों से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एता	एतानि (शेर्लोपः)	इनको
चिकित्वः	हे चेतनावन् ! (निरु०२।११)	हे चेतन
भूम	भूतानि (आ०को०)(शेर्लोपः)	जीवों को
नि	नि+	–
पाहि	नि+पाहि, नितरां रक्ष	खूबरक्षा करो
देवानाम्	देवानाम्	देवताओं की
जन्म	सृष्टिम्	सृष्टि को
मर्तान्	मनुष्यान्	मनुष्यों को
च	च	और
विद्वान्	जानन्	जानता हुआ

संस्कृतार्थः ।

स एव रात्रिपतिरग्निः (तस्मै) धनानि ददाति योऽस्मै सुष्ठूक्तैः पर्य्याप्तम् (स्तौति), हे चेतनावन् !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देवानां सृष्टिं मनुष्यांश्च जानन् (त्वम्) एतानि भूतानि नितरां पाहि । ३ ।

भाषार्थः ।

वह रात्रि के स्वामी अग्नि (उसके ताईं) धनों को देते हैं जो इन के लिये सुन्दर बाणियों से पर्य्याप्त (स्तुति करता है) हे चेतन ! देवताओं की सृष्टि को और मनुष्यों को जानते हुए आप इन जीवों की खूब रक्षा करें । ३ ।

(१) जैसे सूर्य्य दिन के स्वामी हैं वैसे ही सूर्य्य के अभाव में ताप और प्रकाश के हेतु होनेसे अग्नि रात्रिके स्वामी हैं,उत्तर देशों की लम्बी रात्रियों में तो बिना अग्नि के ताप और प्रकाश के जीवन ही असम्भव जैसा है ।

अग्निर्देवता द्विपदाविराट् छन्दः ॥ १० । १०

वर्धान्यंपूर्वीःक्षपोविरूपाः स्था-

तुश्चरथमृतप्रवीतम्(७)। अराधिहो-

तास्व१र्निषत्तः कृण्वन्विश्वान्यपां-

सिसत्या(८) । ४ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वर्धान्	वर्धयन्ति (ण्यन्ताद्वृधेर्लेटयाडागमोणिलोपश्च)	बढाते हैं
यम्	यम्	जिसका
पूर्वीः	बह्वयः (पूर्वसवर्णदीर्घः)	बहुत
क्षपः	रात्र्यः	रात्रियां
१ विऽरूपाः	विविधरूपाः	नानारूपवालीं
स्थातुः	स्थावरस्य	स्थावर के
च	च(जङ्गमस्य)	और(जंगमके)
रथम्	आनन्दहेतुम् (आ०को०)	आनन्दके हेतु को
२ ऋतऽप्रवीतम्	ऋतात् प्रविमुक्तम् (वीगतौ)	ऋत से निकले हुए को
३ अराधि	आराधितोऽभूत (कर्त्तरिलुङिव्यत्ययेन श्लेश्चिण्)	प्रसन्न किया गया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होता	होता	होता
स्वः	ज्योतिषि (अव्ययम्)	ज्योति में
निऽसत्तः	निषण्णः	बैठा हुआ
कृण्वन्	कुर्वन् (कृविकरणे)	करता हुआ
विश्वानि	सर्वाणि	सबको
अपांसि	कर्म्माणि (निघं० २।१)	कर्मों को
सत्या	सत्यानि, अमोघानीत्यर्थः (शेलोपः)	सत्य अर्थात सफल

संस्कृतार्थः।

ऋतात् प्रविमुक्तं स्थावरस्य (जङ्गमस्य) चाऽऽनन्दहेतुं वम् (अग्निम्) नाना रूपा बह्व्यो राज्यो वर्धयन्ति (सः) ज्योतिषि निषण्णो होता सर्वाणि कर्म्माण्यमोघानिकुर्वन् (अस्माभिः) आराधितोऽभूत् ॥ ४ ॥

भाषार्थः।

ऋत से निकले हुए स्थावर और (जंगम) के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आनन्द के हेतु जिस (अग्नि) को नाना रूप वाली अनेक रात्रियां बढाती हैं (वह) सम्पूर्ण कर्म्मों को सफल करते हुए ज्योति में बैठे हुए होता (हमसे) प्रसन्न किए गए। ४।

(१) रात्रियां विरूपा इसलिये हैं कि कोई लम्बी और कोई छोटी होती है, कोई काली और कोई उज्वल होती है, कोई उष्ण और कोई ठंडी होती है।

(२) ऋत से निकले हुए को अर्थात सृष्टि के मूल कारण जलों से उत्पन्न हुए को।

जब अग्नि में घृत की आहुति देने से ज्वाला उठती है तो ऐसा प्रतीत होता है कि ज्योति में बैठे हुए देवहोता अग्निदेव प्रसन्न हो गये हैं।

अग्निर्देवता भुरिग्द्विपदाविराट् छन्दः ।१०।११

गोषुप्रशस्तिंवनेषुधिषे भरन्त विश्वेबलिंस्वर्णः(९)। वित्वानरःपुरुत्रासपर्यन्पितुर्नजिव्रेर्विवेदोभरन्त (१०)॥५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गोषु	नक्षत्रेषु (आ०को०)	नक्षत्रों में
१ प्रऽशस्तिम्	उत्कर्षम्	महत्व को
वनेषु	किरणेषु (निघं१।५)	किरणों में
१ धिषे	स्थापितवानसि (द्वित्वाभावश्छान्दसः)	तूने स्थापन किया है
भरन्त	आहरन (हृञ्हरणे, हस्यभत्वम्। डभावउपसर्गलोपश्च)	लाएहैं
विश्वे	सर्वे	सब
बलिम्	बलिम्	भेटको
स्वः	ज्योतीरूपम्	प्रकाशरूपको
नः	अस्मभ्यम्	हमारे ताईं
वि	वि+	–
त्वा	त्वाम्	तुझको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नरः	मनुष्याः	मनुष्य
पुरुऽत्रा	बहुषु (कालेषु) (सप्तम्यर्थेत्राप्रत्ययः)	बहुत (कालों) में
सपर्यन्	वि+सपर्यन्,विविधंपूजितवन्तः (सपरपूजायाम्, लङ्यडभावः)	नानाप्रकार से पूजा की है
पितः	पितुः	पिता से
न	इव	जैसे
जिब्रेः	वृद्धात् (जृष वयोहानौछान्दसंरूपम्	बूढ़े स
वि	वि+	–
वेदः	धनम्	धनको
भरन्त	वि+भरन्त, प्राप्तवन्तः (अडभावः)	प्राप्त किया है

संस्कृतार्थः।

(हे अग्ने ! त्वम) नक्षत्रेषु किरणेषु (च) उत्कष स्थापितवानसि(ते)सर्व अस्मभ्यं ज्योतीरूपं बलिमा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हरन् मनुष्या बहुषु (कालेषु) त्वां विविधं पूजितवन्तः, वृद्धात् पितुरिव (त्वत्तः) धनम् (च) प्राप्तवन्तः । ५ ।

भाषार्थः ।

(हे अग्नि) आप ने नक्षत्रों (और) किरणों में महत्व को स्थापन किया है, (वे) सब हमारे लिये प्रकाश रूप भेट को लाए हैं मनुष्यों ने बहुत (कालों) में नाना प्रकार से आप की पूजा की है (और) (आप से) धन को पाया है जैसे (पुत्र) बूढे पिता से (पाते हैं) । ५ ।

नक्षत्र और सूर्य की किरणों में प्रकाश के हेतु अग्नि ही हैं, नक्षत्रों के अत्यन्त दूर होने से उनकी उष्णता हम तक नहीं पहुंचती केवल थोडा सा प्रकाश पहुंचता है ।

अग्निर्देवता द्विपदाविराट् छन्दः । १० । १०

साधुर्नगध्नुरस्तेवशूरो यातेव-

भीमस्त्वेषः समत्सु (११) । ६ ।

१ साधुः	परोपकारी (यः पर कार्य्याणि साध्नोति)	परोपकारी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न	इव	की न्याईं
गृध्नुः	आकाङ्क्षायुक्तः (गृधु-अभिकाङ्क्षायाम्, क्नुःप्रत्ययः)	कामना से युक्त
अस्ताऽइव	(इषूणाम्)क्षेप्तेव	(बाणोंके) फैंकने वाले की न्याईं
शूरः	शूरः	शूरबीर
याताऽइव	दण्डयितेव	दंड देने वाले की न्याईं
भीमः	भयङ्करः	भयानक
त्वेषः	तेजोरूपः	तेजरूप
समत्ऽसु	संग्रामेषु	युद्धों में

संस्कृतार्थः ।

अग्निः परोपकारीवाऽऽकाङ्क्षायुक्तः, (इषूणाम्) क्षेप्तेव शूरः, दण्डयितेव भयङ्करः, सङ्ग्रामे तेजोरूपः (चाऽस्ति) ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

(अग्नि) परोपकारी की न्याईं कामना से युक्त,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(बाणों के) फैंकने वाले की न्याईं शूरबीर, दंड देने वाले की न्याईं भयानक, (और) युद्ध में तेज रूप हैं। ६।

(१) परोपकारीको विद्या मेल जोल और धन आदि पदार्थों की कामना होती है जिससे वह दूसरों के उपकार करने में समर्थ हो, जो इन कामनाओं से रहित है वह त्यागी हो सकता है परोपकारी नहीं।

इति सप्ततितमं सूक्तम्।

ऋ० मं० १ सू० ७१

अग्निर्देवता शक्तिपुत्रः पराशरऋषिः

विनियोग—यह सूक्त प्रातरनुवाक के आग्नेय क्रतुमें पढा जाता है (आ० श्रौ० सू० ४।१३।७) और आश्विन शस्त्र में भी।

जो अग्नि का सेवन करता है उस के हृदय में अग्निदेव शनैः शनैः उषा की न्याईं प्रकाश को उत्पन्न करते हैं, इन्हीं की स्तुति द्वारा हमारे आदि पितर अङ्गिराओं ने देवताओं को अंधकार के दूर करने और प्रकाश को प्राप्त करने में और ऋत को धारण करने में सहायता दी। इन्हीं ने अग्नि के उपासना रूपी धन को आर्य्य जाति में स्थापन किया जिस से यह जाति विषय भोग की तृष्णा को छोड कर संसार भरके उपकार के लिये देवताओं के बल को बढाने में तत्पर रही है। जब मातरिश्वा ने बनमें वृक्षों की रगड से अग्नि को मथन किया और वह घर घर में स्थापन किये गए, तभी से आर्य्य मनुष्यों के अधिकारों की रक्षा के लिये अग्निदेव दूत बन कर देवताओं की राजसभा में रहने लगे हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्युलोक के वीर्य्य का कारण भी अग्निदेव हैं जिस वीर्य्य के भय से अंधकार, चोर की न्याईं खिसक गया और जिसके पीछे अग्नि ने सूर्य्य के किरण रूपी अस्त्र को फेंका, तब द्युलोक ने भी अपना तेज अपनी पुत्री उषा में धारण किया। ऐसे अग्निदेव को जो अपने घर में प्रदीप्त करके अन्न की हवि देता है उस का बल बढता है और वह युद्ध के लिये प्रेरित होकर शत्रु के धन को प्राप्त करता है; जब अग्निदेव मनुष्यों के लिये अन्न को उत्पन्न करने की कामना करते-हैं, तब वह द्यौ के गर्भ में मरुतों को उत्पन्न करके उनको वृष्टि के लिये प्रेरण करते हैं, अग्निदेव सूर्य्य रूप में सब धन संपत्ति के स्वामी हैं और राजा मित्र और वरुण नक्षत्रों के बीच में मनुष्य के लिये इस धन के कोश की रक्षा करते हैं, ऐसे अग्निदेव हमारे पूर्वजों की मित्रता को स्मरण करते हुए बुढापे से पहले हमारी सुध लेवें और हमारे समीप प्राप्त होकर अपनी भक्ति प्रदान करें॥

अग्निर्देवता त्रिष्टप्छन्दः ।११।११।११।११

उपप्रजिन्वन्नुशतीरुशन्तं पतिं-
ननित्यंजनयःसनीळाः । स्वसारः-
श्यावीमरुषीमजुष्रञ्चित्रमच्छन्ती
मुषसंनगावः ॥१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उप	(पूजने) (आ०को०)	पूजा से
प्र	भृशम्	अत्यन्त
जिन्वन्	प्रीणयन्ति (जिविप्रीणने लडर्थे-लङ्यडभावः)	प्रसन्न करती हैं
उशतीः	कामयमानाः (पूर्वसवर्णदीर्घः)	प्रेम से भरी हुई
उशन्तम्	कामयमानम्	कामना करतेहुए को
पतिम्	पतिम्	पति को
न	इव	जैसे
नित्यम्	नित्यम्	सदा
जनयः	जायाः	स्त्रियां
सऽनीळाः	समानस्थानाः	इकट्ठी रहने वालीं
स्वसारः	अङ्गुलयः (निघं०२।५)	अंगुलियों ने
श्यावीम्	कृष्णपीतवर्णाम्	काले पीले रंग वाली को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अरुषीम्	ईषद्रक्तवर्णाम् (अरुषइतीषद्रक्तनाम, आ०को०)	थोड़े लाल रंग वाली को
अजुषन्	सेवन्ते (जुषीप्रीतिसेवनयोः-लडर्थेलङिव्यत्ययेन-परस्मैपदंरुडागमश्च)	सेवन करती हैं
चित्रम्	चित्रम् +	–
उच्छन्तीम्	चित्रम्+उच्छन्तीम्,प्रकाशेनाऽऽविर्भवन्तीम्	प्रकाश के साथ फूटने वाली को
उषसम्	उषसम्	उषा को
न	इव	जैसे
गावः	रश्मयः	किरणें

संस्कृतार्थः।

समानस्थाना अङ्गुलयः कामयमाना जायाः कामयमानं पतिमिव (अग्निम्) नित्यं पूजनेन भृशं प्रीणयन्ति सेवन्ते (च), यथा रश्मयः कृष्ण-पीत वर्णाम् (पुनः) ईषद्रक्त वर्णाम् (पुनः) प्रकाशेनाऽऽविर्भवन्तीमषसम् (सेवन्ते) ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

इकट्ठी रहने वाली अंगुलियां सदा (अग्नि को) पूजन से अत्यन्त प्रसन्न करती हैं जैसे प्रेम भरी स्त्रियां कामना करने वाले पति को (प्रसन्न करती हैं) और इस प्रकार उसको) सेवन करती हैं जैसे काले पीले रंग वाली, (फिर) थोडे लालरंग वाली (फिर) प्रकाश के साथ फूटने वाली उषा को किरणें (सेवन-करती हैं)। १।

दूसरी उपमा का यह प्रयोजन है कि अग्निदेव भी सेवन किये जाने से उषा की न्याईं उपासक पर खिल जाते हैं, परन्तु तत्काल नहीं शनैः शनै खिलते हैं जैसे उषा पहिले काले पीले रंग वाली होती है फिर लाल रंग वाली और फिर पूर्ण प्रकाश के साथ खिलती है। अग्नि के खिलने से यह तात्पर्य्य है कि वह उपासक के हृदय को प्रकाशित कर सदा के लिये आनन्द से पूर्ण कर देते हैं।

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११॥

वीळुचिद्दृळ्हा पितरोनउक्थै
रद्रिरुजन्नङ्गिरसोरवेण । चक्रुर्दिवो
बृहतोगातुमस्मे अहःस्वर्विदुःके-
तुमुस्राः ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वीळु	बल युक्तानि (वीळुइति बलना, मनि घं०२।९।विभक्तेर्लुक्)	बल वालों को
चित्	अपि	भी
दृळ्हा	दुर्गाणि (आ० को,०शेर्लोपः)	गढों को
पितरः	पितरः	पितरों ने
नः	अस्माकम्	हमारे
उक्थैः	शस्त्रैः	स्तोत्रों से
अद्रिम्	पर्वतम्	पर्वत को
रुजन्	भञ्जितवन्तः (रुजोभङ्गे, अडभावः)	तोड़ दिया
आङ्गिरसः	अङ्गिरसः	अङ्गिराओं ने
रवेण	नादेन	नाद से
चक्रुः	कृतवन्तः	बनाया
दिवः	द्युलोकस्य	द्युलोक के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बृहतः	महतः	महान के
गातुम्	मार्गम्	रस्ते को
अस्मे०	अस्मभ्यम्	हमारे लिये
अहः०	दिनम्	दिन को
स्वः	ज्योतिः	ज्योति को
विविदुः	लब्धवन्तः (विदलृलाभे)	प्राप्त किया
केतुम्	ध्वज रूपम्	ध्वज रूप को
उरु ।ः	रश्मीन् (निघं० १।५)	किरणों को

संस्कृतार्थः ।

अस्माकं पितरोऽङ्गिरसः स्तोत्रैर्बलयुक्तान्यपि दुर्गाणि,नादेन (तमो रूपम्)पर्वतम्(च) भञ्जितवन्तः (तेन) अस्मभ्यं महतो द्युलोकस्य मार्गं कृतवन्तः, दिनं ज्योतिर्ध्वज रूपम्(सूर्य्यम्)किरणान्(च)लब्धवन्तः।२।

भाषार्थः ।

हमारे पितर अंगिराओं ने स्तोत्रों से बल वाले भी गढों को (और) नाद से (अंधकार रूपी) पर्वत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को तोड़ दिया (उससे) हमारे लिये द्युलोक के मार्ग को बनाया (और) दिन, ज्योति, ध्वज रूप सूर्य्य (और) किरणों को प्राप्त किया ॥ २ ॥

अग्नि देवता का इस मंत्र के साथ यह संबंध है कि हमारे पितर अङ्गिरा अग्नि को स्थापन करके उन्हीं की स्तुति करते थे, मंत्र द्वारा उच्च नाद से स्तुति करके आर्य जाति के पितरों ने सब मनुष्यों के लिये अन्धकार को दूर कर द्युलोक का रास्ता प्रकट किया, और उनके लिये सूर्य्य की किरणों को प्राप्त किया जो कि जीवन का हेतु हैं। आशय यह है कि अङ्गिराओं ने स्तुति से देवताओं का बल बढाया जिससे वे ऊपर कहे हुए कर्म को करने में समर्थ हुए (देखो० पृ० १५६४)

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः । ।११।११।११।११

दधन्नतं धनयन्नस्य धीति मादि-
त्यैर्दिधष्वो३विभृत्राः । अतृष्य-
न्तीरपसो यन्त्यच्छा देवाञ्जन्म-
प्रयसावर्धयन्तीः ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ दधन्	अधारयन् (दधधारणे, लङ्व्यत्ययेनपरस्मैपदमडभावश्च)	धारण किया
१ ऋतम्	ऋतम्	ऋत को
धनयन्	धनमकुर्वन् (धनशब्दाच्चत्करोतीति णिच्, लङ्यडभावः)	धन को बनाया
अस्य	अस्य	इस की
धीतिम्	भक्तिम् (आ०को०)	भक्ति को
आत्	अनन्तरम्	पीछे
इत्	एव	ही
३ आर्य्यः	आर्य्य (प्रजाः) (सुपामितिजसःसुः)	आर्य्य (प्रजाएं)
दिधिष्वः	धारयन्त्यः (निपातनात्साधुः)	स्थापन करतीहुई
विऽभृत्राः	पालयन्त्यः (भृञ्भरणे, विपूर्वादस्मादाणादिकस्त्रन्प्रत्ययः)	पालन करती हुई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अतृष्यन्तीः	तृष्णारहिताः (पूर्वसवर्णदीर्घः)	तृष्णा से रहित हुई २
अपसः	कर्म्म (कर्म्मणिषष्ठी)	कर्म्म को
यन्ति	गच्छन्ति	चलती हैं
अच्छ	अभिलक्ष्य	लक्ष रख कर
देवान्	देवानाम् (षष्ठ्यर्थेद्वितीया)	देवताओं की
जन्म	जातिम्	जाति को
प्रयसा	अन्नेन	अन्न से
वर्धयन्तीः	वर्धयन्त्यः (पूर्वसवर्णदीर्घः)	बढाती हुई

संस्कृतार्थः।

(अङ्गिरसः) ऋतमधारयन्नस्य (अग्नेः) भक्तिम् (च) धनरूपामकुर्वन्, अनन्तरमेवाऽऽर्य्यं- (प्रजाः) (अग्निम्) धारयन्त्यः पालयन्त्यः (च) तृष्णा रहिताः (सत्यः) (हवीरूपेण) अन्नेन देवजातिं वर्धयन्त्यः कर्म्माऽभिलक्ष्य गच्छन्ति। ३।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

(अंगिराओं ने) ऋत को धारण किया (और) इस(अग्नि)की भक्तिको धनरूपबनाया(इसके)अनन्तर ही आर्य्य(प्रजाएं)(अग्नि को) स्थापन करती हुईं (और) पालन करती हुईं तृष्णा से रहित हुईं २ (हविरूप) अन्न से देवजाति को बढाती हुईं कर्म्म को लक्ष रख कर चलती हैं॥ ३॥

(१) ऋत को धारण किया अर्थात स्तुतिद्वारा सृष्टि क्रम में देवताओं की सहायता की।

(२) अङ्गिराओं ने ही आर्य्यजाति को अग्नि का स्थापन और रक्षा करना सिखाया तभी से आर्य्यसन्तान विषय भोग की तृष्णा से रहित हुई २ कर्म द्वारा देवजाति के बल को बढाने में तत्पर रही है जिस से देवता असुरों (पाप की शक्तियों) को जीत कर संसार में धर्म और सुख की बहुलता करने में समर्थ रहे हैं।

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११॥

मथीद्यदीं विभृतो मातरिश्वा गृहे-
गृहे श्येतो जेन्यो भूत् । आदीं राज्ञे न-
सहीयसे सचा सन्ना दूत्यं१ भृगवाणो
विवाय ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मथीत्	मथितवान् (अडभावः)	मथन किया
यत्	यदा	जब
ईम्	एनम्	इस को
विऽभृतः	व्याप्तः	फैले हुए ने
मातरिश्वा	मातरिश्वा	मातरिश्वा ने
गृहेऽगृहे	गृहे गृहे	घर २ में
श्येतः	शुभ्रवर्णः	उज्वल रंग वाला
जेन्यः	प्रादुर्भूतः (जनीप्रादुर्भावे,अस्मादौणादिकएन्यप्रत्ययः)	प्रकट
भूत्	अभूत् (अडभावः)	हुआ
आत्	अनन्तरम्	पीछे
ईम्	एनम्	इस को
राज्ञे	राज्ञे	राजा के ताईं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न	इव	जैसे
सहीयसे	अधिकबलाय	अधिक बल वाले के ताईं
सचा	सहचरः	साथी
सन्	सन्	हुआ २
आ	(पूरणः)	–
दत्यम्	दूतकर्म्मणे (चतुर्थ्यर्थेद्वितीया)	दूत कर्म्म के लिये
भृगवाणः	भृगुरिवाऽऽचरन् (व्यत्ययेनशानच्)	भृगुकी न्याईं आचरण करते हुए ने
विवाय	प्रेषयामास (वीगतौअन्तर्भावितण्यर्थाल्लिट्)	भेजा

संस्कृतार्थः ।

व्याप्तो मातरिश्वा यदेनम् (अग्निम्) मथितवान् (तदा) शुभ्रवर्णः (अयम्) गृहेगृहे प्रादुरभूत्, (तद्-) अनन्तरं भृगुरिवाऽऽचरन् (आर्य्यसमूहः) एनं दूत कर्म्मणे प्रेषयामास यथा (कश्चिद्राजा) सहचरः सन्नधिक बलाय राज्ञे (दूतंप्रेषयति) । ४ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

फैले हुए मातरिश्वा ने जब इस (अग्नि) को मथन किया (तब) उज्वल रंग वाले (यह) घर घर में प्रकट होने लगे (इसके) अनन्तर भृगु की न्याईं आचरण करते हुए (आर्यों ने) इस (अग्नि) को दूत कर्म्म के लिये भेजा जैसे (कोई राजा) साथी होकर अधिक बल वाले राजाके ताईं (दूत को भेजता है) ।४।

फैले हुए मातरिश्वा अर्थात् वायु ने जब बन में वृक्षों की रगड़ से अग्नि को मथन किया और आर्य्य मनुष्यों ने इस को अपने २ घरों में स्थापन किया तब इन को देवताओं के साथ इतनी पहुंच हो गई कि उन की राजसभा में अग्नि इन के दूत बनकर रहने लगे जिस से इन के अधिकार का संरक्षण कर सकें ।

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११

म॒हेयत्पि॒त्रेदू॑र॒संदि॒वेक॑ रवत्स॒-

रत्पृश॒न्यश्चि॑कि॒त्वान् । सृ॒जद॒-

स्ताधृ॑ष॒तादि॒द्युमस्मै॒ स्वायां॑दे॒वोदु॒-

ह्ये॒तरि॒त्विषि॑धात् । ५ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

म॒हे	महते	महान के लिये
यत्	यदा	जब
पि॒त्रे	पित्रे	पिता के लिये
ई॒म्	(पूरणः)	–
रस॑म्	वीर्य्यम् (आ० को०)	वीर्य्य को
दि॒वे	द्योतमानाय	दीप्तिमानकेलिये
कः	अकरोत् (लुङिच्लेर्लुक्, अडभावश्च)	किया
अव॑	अव +	–
त्स॒र॒त्	अव + त्सरत् अपचक्राम (त्सरच्छद्मगतौ)	चोरीसेनिकलगया
पृ॒श॒न्यः	स्प्रष्टेवाऽचरतीति (स्पृशतेः सलोपश्छान्दसः, तदेवाऽऽचरतीतिक्यच)	स्पर्श करने वाले की न्याईं आचरण करने वाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चिकित्वान्	जानन्	जानता हुआ
सृजत्	विसृष्टवान् (अडभावः)	छोड़ा
अस्ता	(इषूणाम्) क्षेप्ता धनुर्धरइत्यर्थः	धनुर्धारीने
धृषता	धृष्टतया	बेधडक होकर
दिद्युम्	प्रदीप्तमस्त्रम् (आ० को०)	प्रदीप्त अस्त्र को
अस्मै	अस्मै	इस के ताई
स्वायाम्	स्वकीयायाम्	अपनी म
देवः	देवः	देवने
दुहितरि	दुहितरि	पुत्री में
त्विषिम्	दीप्तिम्	दीप्ति को
धात्	धारितवान् (अडभावः)	धारण किया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

यदा (अग्निः) महते द्योतमानाय पित्रे वीर्य्यमकरोत् (तदा) स्प्रष्टेवाऽऽ चरन् (अन्धकारः) जानन् (सन्)अपचक्राम धनुर्धरः (अग्निः) अस्मै (अपक्रमते) धृष्टतया प्रदीप्तमस्त्रं विसृष्टवान् देवः (च) स्वकीयायां दुहितरि दीप्तिं धारितवान् ।५ ।

भाषार्थः ।

जब (अग्निने) महान दीप्ति वाले पिता के लिये वीर्य्य को संपादन किया (तब) स्पर्श करने वाला (अन्धकार) जानता हुआ चोरी से निकल गया धनुर्धारी(अग्नि)ने इस चलते हुए के ताईं बेधडक होकर प्रदीप्त अस्त्र को छोडा (और) (द्यु) देव ने अपनी पुत्री में तेज को धारण किया । ५ ।

जब अग्नि ने सूर्य्य रूप में पिता द्यौ के ताईं तेज रूप वीर्य्य को दिया तब अन्धकार जो अत्यन्त गाढा होने से स्पर्श करता सा प्रतीत होता था चोर की न्याईं निकल गया, उस पर अग्नि ने सूर्य्य की किरण रूप अस्त्र को छोडा और पिता द्यौ ने तेज रूप वीर्य्य को अपनी पुत्री उषा में स्थापन किया । आशय यह है कि द्युलोक के तेज और उषा की दीप्ति का कारण अग्निदेव ही हैं ॥

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११ ११।११

स्वआयस्तुभ्यंदमआविभाति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नमोवादाशादुशतोअनुद्यून्। वर्धो अग्नेवयोअस्यद्विबर्हा यासद्रायास्-रथंयंजुनासि। ६।

स्वे	स्वकीये	अपने में
आ	(पूरणः)	–
यः	यः	जो
तुभ्यम्	त्वाम् (द्वितीयार्थे चतुर्थी)	तुझ को
दरे	गृहे	घर में
आ	आ +	–
विऽभाति	आ+विभाति प्रज्वलयति (अन्तर्भावितण्यर्थः)	प्रदीप्त करता है
नमः	(हवीरूपम्) अन्नम् (निघं २।७)	(हवि रूप) अन्न को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वा	वा	अथवा
दशात्	ददाति (लेट्याडागमः)	देता है
उशतः	कामयमानम् (कर्मणि षष्ठी)	कामना करने वाले को
अनु	अनु	–
द्यून्	अनु+द्यून्, अनु-दिनम्	प्रति दिन
वर्धो०	वर्धय (वर्ध,उइतिपादपूरणः, णेर्लोपः)	बढाओ
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
वयः	बलम् (आ०को०)	बल को
अस्य	अस्य	इसके
द्विऽबर्हाः	द्विगुण बलयुक्तः (आ० को०)	दुगने बल वाला
यासत्	सङ्गच्छते (याप्रापणेलेटिसिपदौ)	संयुक्त होता हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ राया	धनेन	धन से
सऽरथम्	रथेनसहितम्	रथवाले को
यम्	यम्	जिस को
जुनासि	प्रेरयसि (जु इतिगत्यर्थः सौत्रो धातुरस्मादुव्यत्ययेनश्ना)	प्रेरण करते हो

संस्कृतार्थः।

हे अग्ने ! यस्त्वां स्वकीये गृहे प्रज्वलयति, अथवा कामयमानाय(तुभ्यम्)प्रतिदिनम् (हवीरूपम्) अन्नं ददाति, द्विगुण बलयुक्तः (त्वम्) तस्य बलं वर्धय,(त्वम्)रथेन सहितं यम् (सङ्ग्रामे)प्रेरयसि(सः) धनेन सङ्गच्छते। ६।

भाषार्थः।

हे अग्नि जो आप को अपने घर में प्रदीप्त करता है अथवा कामना करने वाले आपके ताईं (हवि रूप) अन्न को देता है द्विगुण बल वाले आप उस के बल को बढावें,आप जिस रथी को (युद्धमें) प्रेरण करते हो (वह) धन से युक्त होता है। ६।

धन से युक्त होता है, अर्थात शत्रु को जीत कर उसका धन हरण करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११

अग्निंविश्वाअभिपृक्षः सचन्ते समुद्रंनस्रवतःसप्तयह्वीः । नजामिभिर्विचिकितेवयोनो विदादेवेषुप्रमतिंचिकित्वान् । ७ ।

अग्निम्	अग्निम्	अग्निको
विश्वाः	सर्वाः	सब
अभि	अभि +	–
पृक्षः	(हवीरूपाणि) अन्नानि (निघं० २।७)	(हविरूप) अन्न
सचन्ते	अभि+सचन्ते सर्वतःप्राप्नुवन्ति	सब ओरसे प्राप्त होते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समुद्रम्	समुद्रम्	समुद्र को
न	इव	जैसे
स्रवतः	स्तवन्त्यः	बहने वालीं
सप्त	सप्त	सात
यह्वीः	नद्यः (आ०को० (पूर्वसवर्णदीर्घः)	नदियां
न	न	नहीं
जामिऽभिः	बन्धुभिः	बंधुओंसे
वि	वि +	–
चिकिते	वि+चिकिते विज्ञायते	जाना जाता है
वयः	अन्नम् (निघं० २.७)	अन्न
नः	अस्मदीयम्	हमारा
विदाः	प्रापय (अन्तर्भावितण्यर्थाद् विदेर्लेटिरूपम्)	प्राप्त कराओ
देवेषु	देवेषु	देवताओं में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रऽमतिम्	अनुग्रहकर्तारम् (ऋ० १।३१।९)	अनुग्रह करने वाले को
चिकित्वान्	विद्वान्	विद्वान्

संस्कृतार्थः।

अग्निं सर्वाणि (हवीरूपाणि) अन्नानि स्रवन्त्यः सप्त नद्यः समुद्रमिव सर्वतः प्राप्नुवन्ति (हे अग्ने !) अस्मदीयमन्नं बन्धुभिर्न विज्ञायते विद्वान् (त्वम्) देवेषु (अस्माकम्) अनुग्रह कर्त्तारं प्रापय ॥ ७ ॥

भाषार्थः।

अग्नि को सम्पूर्ण (हवि रूप) अन्न प्राप्त होते हैं जैसे बहनेवालीं सात नदियां समुद्रको (प्राप्त होती हैं) (हे अग्नि) हमारा अन्न सम्बन्धियों से नहीं जाना जाता, विद्वान् आप देवताओं में (हम पर) कृपा करने वाला प्राप्त करावें ॥ ७ ॥

(१) बहने वालीं सात नदियां अर्थात् शतद्रु, विपासा, परुष्णी असिक्नी, वितस्ता सिन्धु और सरस्वती।

(२) हमारा अन्न संबंधियों से नहीं जाना जाता अर्थात् इतना कम है कि हमारा अपना निर्वाह भी कठिनता से होता है, इस लिये प्रार्थना है कि अग्निदेव देवताओं में कोई हम पर कृपा करने वाला खडा करें जो हम को इतना पुष्फल अन्न और धन दे जिस में से हम अपने संबंधियों और दूसरे दीनों को भी दे सकें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११॥

आयदिषेनृपतिंतेजआनट् शुचिरेतोनिषिक्तंद्यौरभीके । अग्निः शर्धमनवद्यंयुवानं स्वाध्यंजनयत्सूदयच्च ॥ ८ ॥

आ	खलु (आ०को०)	सचमुच
यत्	यदा	जब
इषे	अन्नाय	अन्न के लिये
नृऽपतिम्	नराणांपतिम् (अग्निम्)	नरों के स्वामी (अग्नि) को
तेजः	तेजः	तेज
आनट्	व्याप्नोत् (अशूङ्व्याप्तौ, लङिव्यत्ययेनपरस्मैपदम्)	व्याप्त हुआ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शुचि	शुद्धम्	स्वच्छ
रेतः	वीर्य्यम्	वीर्य्य
निऽसिक्तम्	सिञ्चितम्	डाला गया
द्यौः	दिवि (सुपामितिविभक्तेःसुः)	द्यौ में
अभीके	अभिप्राप्ते	समीप प्राप्त में
अग्निः	अग्निः	अग्नि
गर्धम्	(मारुतम्) गणम्	(मरुद्) गण को
अनवद्यम्	अनिन्द्यम्	निन्दा रहित को
युवानम्	युवानम्	जवान को
सुऽआध्यम्	शोभनकर्म्माणम्	सुकर्म्मा को
जनयत्	उत्पादितवान् (लङ्यडभावः)	उत्पन्न किया
सूदयत्	प्रेरितवान् (लङ्यडभावः)	प्रेरण किया
च	च	और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

यदा खलु नराणां पतिम् (अग्निम्) अन्नार्थं तेजो व्याप्नोत् (तदा तेन) आभप्राप्ते दिवि रेतः सिञ्चितम् (एवम्) अनिन्द्यं युवानं शोभन कर्म्माणम् (मारुतम्) गणमग्निरुत्पादितवान् (वृष्टयर्थम्) च प्रेरितवान् ॥ ८ ॥

भाषार्थः।

सचमुच जब नरों के स्वामी (अग्नि) को अन्न के लिये तेज व्याप्त हुआ (तब उसने) समीप आई हुई द्यौ में बीज को डाला (इस प्रकार) अग्नि ने निन्दा रहित, जवान, सुकर्म्मा (मरुत) गण को उत्पन्न किया और (वृष्टि के लिये) प्रेरण किया ॥ ८ ॥

जब अग्नि को मनुष्यों के लिये अन्न उत्पन्न करने की कामना होती है तब वह आकाश के गर्भ से मरुद्गण को उत्पन्न करते हैं और वह ही उनको समुद्र से बादलों को लाकर जल बरसाने के लिये प्रेरण करते हैं। रुद्र भी अग्नि का नामान्तर है जो मरुतों के पिता कहे जाते हैं।

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः । ११।११।११।११

मनोनयोऽध्वनःसद्यएत्येकःस-

चासूरोवस्वईशे। राजानामित्रावा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रणासुपाणी गोषुप्रियममृतंरक्ष-
माणा ॥९॥

मनः	मनः	मन
न	इव	की न्याईं
यः	यः	जो
अध्वनः	मार्गान्	रस्तों को
सद्यः	शीघ्रम्	शीघ्र
एति	गच्छति	चलता है
एकः	एकः	अकेला
सचा	सत्यम् (निघं० ३।१०)	सचमुच
सूरः	मेधावी	बुद्धिमान
१ वस्वः	धनम् (कर्मणि षष्ठी)	धन को
ईशे	ईष्टे	ईशन करता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राजाना	राजानौ	दोनों राजा
मित्रावरुणा	मित्रावरुणौ	मित्र (और) वरुण
ऽसुपाणी०	शोभन हस्तौ	सुन्दर हाथोंवाले
गोषु	नक्षत्रेषु (आ०को०)	नक्षत्रों में
प्रियम्	प्रियम्	प्रिय को
अमृतम्	मरण रहितम्	मरण रहित को
रक्षमाणा	रक्षन्तौ (विभक्तेरात्वम्)	रक्षित करते हुए

संस्कृतार्थः।

यो मन इव शीघ्रं मार्गान् गच्छति (सः) मेधावी सत्यमेव धनस्यैकाकी राजा (वर्तते), शोभनहस्तौ राजानौ मित्रावरुणौ नक्षत्रेषु मरणरहितं प्रियम् (सूर्य्यम्) रक्षन्तौ (विद्येते) ॥ ९ ॥

भाषार्थः।

जो मन की न्याईं शीघ्र यात्रा करते हैं (वह) बुद्धि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मान सचमुच धन के अकेले राजा (हैं) सुन्दर हाथों वाले दोनों राजा मित्र (और) वरुण नक्षत्रों में मरण रहित प्रिय (सूर्य्य) की रक्षा करते (हैं)।९।

(१) पृथिवी में सब धनका हेतु अग्नि वा सूर्य्य है जिसकी अत्यन्त शीघ्र गति है।

(२) राजा मित्र और वरुण नक्षत्रों के बीच सूर्य्य की निरन्तर रक्षा करते हैं, इसीलिये वह किसी दूसरे नक्षत्र से टकरा कर नष्ट नहीं होता॥

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः।११।११।११।११

मानोअग्नेसख्यापित्र्याणि प्रमर्षिष्ठाअभिविदुष्कविःसन्। नभोनरूपंजरिमामिनाति पुरातस्याअभिशस्तेरधीहि॥१०॥

मा	मा	मत
नः	अस्मभ्यम्	हमारे लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
सख्या	सख्यानि (शेर्लोपः)	मित्रताओं को
पित्र्याणि	पितृसम्बन्धीनि (यत्प्रत्ययः)	पितृसम्बन्धियोंको
प्र	प्र +	–
मर्षिष्ठाः	प्र+मर्षिष्ठाः, विस्मर (आ०को०) (लोडर्थेलुङ्यडभावः)	भूलो
अभि	अभितः	सब ओर से
विदुः	ज्ञाता (विदज्ञानेउसिःप्रत्ययः)	जाननेवाला
कविः	मेधावी	बुद्धिमान
सन्	सन्	हुआ २
नभः	कूहा (आ०को०)	कोहर
न	इव	की न्याईं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रूपम्	रूपम्	रूप को
जरिमा	जरा (भावे-इमनिच्प्रत्ययः	बुढापा
मिनाति	हिनस्ति क्षीणी-करोतीत्यर्थः (मीञ् हिंसायाम्)	छिजाता है
पुरा	पूर्वम्	पहिले
तस्याः	तस्याः	उसके
अभिऽशस्तेः	हिंसाहेतुरूपायाः (शसुहिंसायाम्, अभि-शस्यते हिंस्यतेऽन-येति करणेक्तिन्)	हिंसा की कारण रूप के
अधि	अधि+	–
इहि	अधि+इहि, समीपंप्राप्नुहि	तू समीप प्राप्तहो

संस्कृतार्थः।

हे अग्ने! मेधावीसन् सर्वतो ज्ञाता (त्वम्) अस्मभ्यं पितृसम्बन्धीनि सख्यानि मा विस्मर जरा कूहेव रूपं हिनस्ति (अतस्त्वम्) हिंसा हेतु रूपायास्तस्याः (आगमनात्) पूर्वम् (एव) समीपं प्राप्नुहि। १०।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हे अग्नि सब ओर से जानने वाले (और) बुद्धिमान होकर आप हमारे लिये पितृ सम्बन्धी मित्रताओं को न भूलें बुढापा काहर की न्याईं रूप को छिजाता है, (इस लिये) उस हिंसा के हेतु के (आने से) पहिले (हो) आप समीप प्राप्त हों ॥१०॥

पितृ संबन्धी मित्रता जो हमारे पितर अंगिरा भृगु आदि के साथ अग्नि को थी उस को वह न भुलावें और बुढापे की विपत्ति के आने से पहले हमारे हृदयमें प्राप्त होकर हमें भी अपनी मित्रता और भक्ति प्रदान करें ॥

इत्येक सप्ततितमं सूक्तम्

ऋ० मं० १ सू० ७२

पराशर ऋषिः ।

विनियोग-यह सूक्त प्रातरनुवाक के आग्नेय क्रतु में पढा जाता है (आ० श्रौ० सू० ४ । १३ । ७) और आश्विन शस्त्र में भी ।

इस में अग्नि की परमात्मा से एकता और उसका मनुष्यों पर नाना प्रकार से उपकार दर्शाया है। अग्निदेव विधाताके कर्म विपाक नियम का अनादर करते हुए मनुष्यों के लिये हित कारी अर्थको ही संपादन करते हैं। वह सब रमणीय धनोंके रचने वाले और स्वामी हैं यद्यपि वह हमारे हृदय में रहते हैं परन्तु मन और इन्द्रिय आदि देवता उस को नहीं जानते, उस के जानने का उपाय अनेक प्रकार का श्रम और चिंतन है। मरुद्गण भी उस को नहीं जानते थे परन्तु जब उन्होंने तीन वर्ष तक स ।द्र से जल ढोकर इस जल रूपी घृत से अग्नि का पूजन किया औ : अपने सापं सापं शब्द से अग्नि की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्तुति करके द्यावापृथिवी को गुंजा दिया और पृथक पृथक गणरूप से अग्नि के जानने की उत्कंठा की तब उन्होंने आकाश के उच्चस्थान में सूर्य्य रूप से विराजमान अग्नि को पाया और मरण धर्म को छोड़ कर देवता बने। दूसरे देवता भी। पत्नियों सहित अग्नि का पूजन करते हैं और उसको प्रसन्न करने के लिये उसकी मनुष्य प्रजा के निमित्त अपने शरीरों को सुकाते हैं, यही मनुष्यों के लिये अग्नि में स्थापित २१ गूढ़ पदों द्वारा अमृत की रक्षा करते हैं जिन पदों द्वारा मनुष्य देवपदवी को भी प्राप्त होसकता है, उदार चित्त अग्नि-मनुष्य और देवता दोनों की आवश्यकताओं को जानते हुए मनुष्यों के लिए अन्न और देवताओं के लिए हवि पहुंचाने का प्रबन्ध करतेहैं। हमारे पूर्व ऋषि जो शुभ चिंतन से युक्त और सृष्टि नियमको खूब समझते थे जानते थे कि अन्नादि धन का द्वार नदियों की न्याईं आकाश से गिरने वाली सात रंग की किरणें हैं इन्हीं को सरमाने देवता और ऋषियों की प्रेरणासे अन्धकार रूपी वल के गोष्ठमें से खोज कर निकाला था, वास्तवमें हमारे पूर्वऋषियों जैसे महानुभाव पुत्रों के द्वारा ही यह पृथिवी यश के साथ ठैरी हुई है वे लोग दूसरों के उपकार के लिये ही कर्म करते थे और उन्हीं के श्रम से हमारे लिये देवपदवी तक पहुंचने का शास्त्र रूप मार्ग बना हुआ है वे धन्य हैं और देवता धन्य हैं जिन्हों ने आकाश के यह दो नेत्र बनाकर स्थापन किए जो धारा की न्याईं दिन रात किरण रूपी धन को आकाश से गिराते रहते हैं॥

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः। ११।११।११।११

निकाव्यावेधसःशश्वतस्कर्ह-

स्तेदधानोनर्यापुरूणि। अग्निर्भुवद्र-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यिपतीरयीणां सचाचक्राणोअमृता-

निविश्वा । १ ।

नि	नि+	–
काव्या	ज्ञानम् (आ०को०)	ज्ञान को
वेधसः	विधातुः	विधाता के
शश्वतः	नित्यस्य	नित्य के
कः	नि+कः निकृतवान्, अवज्ञातवानित्यर्थः	निरादर किया
हस्ते	हस्ते	हाथ में
दधानः	धारयन्	धारण करताहुआ
नर्या	नृभ्योहितानि (शेलोंपः)	मनुष्यों के लिये हित करनेवालोंको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुरूणि	बहूनि	बहुतों को
अग्निः	अग्निः	अग्नि
भुवत्	अभवत्	हुआ है
रयिऽपतिः	धनानां पतिः	धनों का स्वामी
रयीणाम्	धनानाम्	धनों के
सचा	सत्यम् (निघं० ३।१०)	सच मुच
चक्राणः	कुर्वन् (विकरणस्यश्लुश्छान्दसः)	बनाता हुआ
अमृतानि	रमणीयानि (आ०को०)	रमणीयों को
विश्वा	सर्वाणि (शेर्लोपः)	सब को

संस्कृतार्थः ।

नृभ्योहितानि बहूनि (वस्तूनि) हस्ते धारयन्नग्निः शाश्वतस्य विधातुर्ज्ञानमवज्ञातवान् (सः)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सत्यमेवसर्वाणि (धनानि) रचयन् धनानां धनपतिरभवत् ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

मनुष्यों के ताईं हितकरने वाले बहुत (वस्तुओं) को हाथ में धारण करते हुए अग्नि ने अनादि विधाता के ज्ञान का निरादर किया है, वह सचमुच सब रमणीय (धनों) को बनाते हुए धनों के धनपति बने हैं ॥ १ ॥

कर्म के अनुसार फल देने वाले विधाता ने जो किसी मनुष्य जाति वा व्यक्ति के लिये कर्म के फल का भोग भुगाना सोचा हुआ है अग्निदेव उसका अनादर कर हितअर्थों को ही संपादन करते हैं, तात्पर्य यह है कि परमात्मा मनुष्यों के अत्यन्त हित कारी हैं और पापी पर भी दया करते हैं, जो लोग पृथिवी पर दुःख देख कर परमात्मा को बुराते हैं वे विचार शील नहीं हैं, दुःख का शिक्षा रूपी दण्ड हमें सब अवस्थाओं को जीतने के योग्य बना कर अमर बनाने के लिये अत्यन्त आवश्यक है, कर्म के फल भोगने के क्रूर नियम को भी परमात्मा मनुष्यों के हित के लिये अत्यन्त दया के साथ बर्तते हैं जैसे माता बालक को कड़वी ओषधी बहुत प्यार के साथ बहुत कम दुःख देती हुई पिलाती है ॥

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११॥

अस्मेवत्संपरिषन्तंनविन्द न्नि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

च्छन्तोविप्रवेअमृताअमूराः । अम-
युवःपदव्योधियंधा स्तस्थुःपदेपर-
मेचार्वग्नेः । २ ।

अस्मे०	अस्मासु (सुपामितिसप्तम्या-शेआदेशः)	हम में
वत्सम्	प्रियम् (आ० को०)	प्यारे को
परि	परि +	–
सन्तम्	वर्त्तमानम्	वर्तमान को
न	न	नहीं
विन्दन्	परि+विन्दन् या-थार्थ्येनज्ञातवन्तः (परिवेदोयथार्थंज्ञानम्) (आ०को०) अडभावः	यथार्थ जान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इच्छन्तः	इच्छन्तः	इच्छा करते हुए
विश्वे	सर्वे	सब
अमृताः	मरणरहिताः	मरण से रहित
अमूराः	अमूढाः	मूर्खता से रहित
श्रमऽयुवः	श्रान्ताः (श्रमेण यूयन्तइति, युमिश्रणे, श्रमपूर्वादस्मात् क्विप्)	थकेहुए
पदऽव्यः	पादैर्गच्छन्तः (पादैश्चरणैर्वियन्तिगच्छन्तीति, वीगतौ क्विप् प्रत्ययः)	पैदल जाते हुए
धियम्ऽधाः	ध्यानंधारयन्तः (द्वितीयायाअलुक्)	ध्यान लगाए हुए
तस्थुः	स्थितवन्तः	ठहरे
पदे	पदे	पदमें
परमे	उत्तमे	उत्तममें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चारु	चारुणि (सुपामितिसप्तम्या लुक्)	सुन्दर में
अग्नेः	अग्नेः	अग्नि के

संस्कृतार्थः

अस्मासु वर्तमानं प्रियम्(अग्निम्)इच्छन्तोमरण-रहिताअमूढाःसर्वे(देवाः)याथार्थ्येन न ज्ञातवन्तः(तदा) पादैर्गच्छन्तःश्रान्ता ध्यानंधारयन्तः(च ते)अग्नेरुत्तमे चारुणि पदे तस्थुः ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

हम में रहने वाले प्यारे(अग्नि)को इच्छा करते हुए मरण(और)मूर्खता से रहित सब(देवताओं) ने यथार्थ न समझा (तब)पैरों से चलते हुए थके हुए (और) ध्यान लगाए हुए(वे सब) अग्नि के सुन्दर उत्तम पद में पहुंचे ॥ २ ॥

यहांपर अग्निसे परमात्मा के रूप का और देवताओं से इन्द्रिय और मन का वर्णन है,यद्यपि परमात्मा हमारे भीतर निवास करते हैं परन्तु इन्द्रियां और मन इन को नहीं जानते, मंत्र के उत्तरार्द्ध में पर-मात्मा की प्राप्ति का उपाय बतलाया है वह यह है कि जब इन्द्रिय और मन उस को जानने की इच्छा से अनेक प्रकार से श्रम कर के थक जाते हैं और निरन्तर उस में ध्यान लगाए रहते हैं तब उत्तम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पद अर्थात हृदयाकाश में परमात्मा का ज्ञान और दर्शन होता है। पैरों से चलना श्रम करने का उपलक्षण है ॥

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११

तिस्रोयदग्नेशरदस्त्वामि च्छुचिंघतेनशुचयःसपर्यान्। नामानिचिद्दधिरेयज्ञियान्य सूदयन्ततन्वः सुजाताः ।३।

तिस्रः	तिस्रः	तीन
यत्	यदा	जब
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
शरदः	शरदुपलक्षितानि-वर्षाणि	वर्ष
त्वाम्	त्वाम्	तुझको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इत्	(पूरणः)	—
शुचिम्	पवित्रम्	पवित्र को
घृतेन	घृतेन	घी से
शुचयः	शुद्धाः	पवित्रों ने
सपर्य्यान्	पूजितवन्तः (सपरपूजायां,लेट्या-(डागमः)	पूजन किया
नामानि	नामानि	नामों को
चित्	च (आ०को०)	और
दधिरे	धृतवन्तः	धारण किया
यज्ञियानि	यज्ञार्हाणि	यज्ञ में योग्यों को
असूदयन्त	त्यक्तवन्तः	छोड़ दिया
तन्वः	शरीराणि	शरीरों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुऽजाताः | उत्कर्षेणोत्पन्नाः | उच्चउत्पन्नहुए२

संस्कृतार्थः।

हे अग्ने! यदा शुद्धाः (मरुतः) पवित्रं त्वां वर्षत्रयपर्य्यन्तं घृतेन पूजितवन्तः(तदा ते) यज्ञार्हाणि नामानि धृतवन्तः, उत्कर्षेणोत्पन्नाः (सन्तश्च) (मर्त्यानि) शरीराणि त्यक्तवन्तः ॥ ३ ॥

भाषार्थः।

हे अग्नि जब पवित्र (मरुतों)ने पवित्र आप को तीन वर्ष पर्यन्त घी से पूजा (तब उन्होंने) यज्ञ में योग्य नामों को धारण किया(और)उच्च (देवजातिमें) उत्पन्न होकर (मर्त्य)शरीरों को छोड़ दिया ॥ ३ ॥

इस मंत्रसे यह प्रतीत होता है कि मरुतों की पूजा आदिकाल में आर्य्यजाति में नहीं थी आर्य्यों के प्राचीन निवास स्थान अर्थात उत्तर मेरु के समीप गरमी के अधिक न पड़नेसे (देखो पृ० ३८) घोर आंधियों का भी अभाव था, जब ऋषि लोग आर्य्यावर्त में आकर बसे तब उनको ये नए देवता सरीखे प्रतीत हुए,परन्तु गर्मीके चार महीने के पश्चात शान्त होजाने से वे मरणधर्मी समझे गए, जब लगातार तीनवर्ष तक प्रत्येक चौमासेमें मरुतों का दर्शन होने लगा तब ऋषियों ने निश्चय किया कि यह भी ऋतके अनुगामी मरण रहित देवता हैं और उनको यज्ञ में भाग देने लगे (देखो अगले मंत्र की व्याख्या)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११॥

आरोदसीबृहतीवेविदानाः प्ररुद्रियाजभिरेयज्ञियासः । विदन्मर्तो नेमधिताचिकित्वा नग्निंपदेपरमेतस्थिवांसम् ॥ ४ ॥

आ	आ+	–
१ रोदसी०	द्यावापृथिव्यौ	द्यौ(और) पृथ्वीको
१ बृहती०	महत्यौ	महान को
१ वेविदानाः	आ + वेविदानाः, अत्यर्थंज्ञापयन्तः	अत्यन्त ज्ञान कराते हुए
प्र	प्र+	–
रुद्रिया	रुद्रोऽग्निस्तदर्हाणि (स्तोत्राणि) (रुद्रस्याऽग्नित्वं तै०सं०१।५।१ उक्तम्)	अग्नि के योग्य-(स्तोत्रों) को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जभ्रिरे	प्र + जभ्रिरे, प्रजह्रिरे, अर्पितवन्तः (आ०को०)	अर्पण किया
यज्ञियासः	यज्ञार्हाः (मरुतः) (जसोऽसुगागमः)	पूजा के योग्य (मरुतों) ने
विदत्	लब्धवान् (अडभावः)	प्राप्त किया
२ मर्तः	मरण धर्मा	मरण धर्माने
३ नेमऽधिता	विभक्तेन (गणेन) (आ०को०)	विभक्त (गण) के द्वारा
चिकित्वान्	इच्छन् (आ०को०)	इच्छा करते हुए ने
अग्निम्	अग्निम्	अग्नि को
पदे	पदे	पद में
परमे	उत्कृष्टे	उच्च में
तस्थिऽवांसम्	स्थितवन्तम्	ठैरे हुए को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

महत्यौद्यावा पृथिव्यावत्यर्थं ज्ञापयन्तो यज्ञार्हाः (मरुतः) अग्नेर्योग्यानि (स्तोत्राणि) अर्पितवन्तः (तदा-ऽयम्) मरणधर्मा विभक्तेन (गणेन) इच्छन् (सन्) उत्तमे पदे स्थितवन्तमग्निं लब्धवान् ।४।

भाषार्थः ।

महान द्यौ (और) पृथिवी का अत्यन्तज्ञान कराते हुए पूजा के योग्य (मरुतों) ने अग्नि के योग्य (स्तोत्रों) को अर्पण किया (तब) विभक्त (गण) द्वारा इच्छा करते हुए (इस) मरण धर्मा ने उत्तम स्थान में ठैरे हुए अग्नि को प्राप्त किया ॥ ४ ॥

(१) अत्यन्त ज्ञान कराते हुए अर्थात द्यावापृथिवी को अग्नि के स्तोत्रों से गुंजाते हुए जैसे उन के साएं साएं शब्द से मनुष्य भी जानते हैं ।

(२) मरुद्गण मरण धर्मा इसलिये थे कि ग्रीष्म और वर्षा के चार महीने रहते थे फिर शरद में नष्ट होजाते थे ॥

(३) मरुतों ने गणरूप में विभक्त होकर अग्नि को जानने की इच्छा की, और उस को आकाश के उत्तम पद अर्थात सूर्य्य रूप में जानकर अमर होगए ॥

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११

संजानानाउपसीदन्नभिज्ञु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पत्नीवन्तोनमस्यंनमस्यन्। रिरि-
क्वांसस्तन्वःकृण्वतस्वाः सखास-
ख्युर्निमिषिरक्षमाणाः। ५।

समऽजाना नाः	एकचित्ताः सन्तः (आ०को०)	एक चित्त हुए २
उप	समीपे	पास में
सीदन्	निषेदुः	बैठे
१ अभिऽज्ञु	अभिगतजानु-यथास्यात्तथा	जानु आगे करके
१पत्नीऽवन्तः	सपत्नीकाःसन्तः	पत्नियों से युक्त हुए २
नमस्यम्	पूज्यम्	पूजने योग्य को
१ नमस्यन्०	पूजितवन्तः (पूजार्थेक्यच्,अड-भावः)	पूजन किया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ रिरिक्वांसः	रिक्तानि शोषितानीत्यर्थः (रिचिर् विरेचने)	सुकाए हुए
तन्वः	शरीराणि	शरीरों को
२ कृणवत	अकुर्वन् (अडभावः)	किया
स्वाः	स्वकीयानि	अपनों को
२ सखा	सखायः (सुपामिति जसःसुः)	मित्र
२ सख्युः	सख्युः	मित्र की
२ निऽमिषि	दृष्टौ (भावेक्विप्)	दृष्टि में
रक्षमाणाः	रक्षन्तः (व्यत्ययेनात्मनेपदम्)	रक्षा करते हुए

संस्कृतार्थः ।

एकचित्ताःसन्तः (देवाअग्नि-) समीपेऽभिगतजानु निषेदुः,पूज्यम् (च तम्) सपत्नीकाःसन्तोऽपूजयन्(पुनः)सखायः(ते)सख्युः (तस्य)दृष्टौ स्वकीयानि शरीराणि रक्षन्तः(सन्तः) शोषितान्यकुर्वन् ।५।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

(देवता) एकचित्त होकर (अग्नि के) समीप जानुके बल बैठे (और) पूजनीय (उस) को पत्नियों सहित पूजा (फिर) मित्रों ने (उस) मित्र की दृष्टि में अपने शरीरों को रक्षा करते हुए सुकाया ॥ ५ ॥

(१) सारी जड़सृष्टि जो पुरुष और स्त्रीके भेदसे विभाग की हुई है मोन होकर परमात्मा को पूज रही है।

(२) जैसे मनुष्य मित्र के लिये अपने शरीर से कष्ट उठाना और उसको सुकाना आनन्द का हेतु मानते हैं इसी प्रकार देवता सब के मित्र परमात्मा को प्रसन्न करने के लिये मनुष्यों के हितार्थ अपने शरीरों को सुका रहे हैं, सूर्य्य प्रतिदिन दुबले हो रहे हैं प्रकाश भी छीज रहा है, चन्द्रमा अपना सर्वस्व त्याग कर अत्यंत शुष्क होगए हैं, समुद्र के जल सूक रहे हैं और एक दिन यह पृथिवी चंद्र की न्याईं निर्जल और उष्णतासे रहित होजायगी, कोई २ देव सदृश मनुष्य भी दूसरों की रक्षा के लिये अपने शरीरों को कष्ट में डाल कर सुकाते हैं।

अग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः ।११।११।११।११।

त्रिः सप्तयद्गुह्यानित्वेद्वृत् पदा-

विदन्निहितायज्ञियासः। तेभोरक्ष-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न्तेअमृतंसजोषाः पशूञ्चस्थात्-

ञ्चरथंचपाहि ॥ ६ ॥

त्रिः	त्रिः+	–
सप्त	त्रिः+सप्त, एकविंशनि संख्याकानि	इक्कीसों को
यत्	यानि (विभक्तेर्लुक्)	जिन को
गुह्यानि	गूढानि	गूढों को
त्वे०	त्वयि	तुझ में
इत्	एव	ही
पदा	पदानि (शेर्लोपः)	पदों को
अविदन्	अलभन्त	प्राप्त किया
निऽहिता	निहितानि (शेर्लोपः)	स्थापन किए हुओं को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यज्ञियासः	यज्ञार्हाः	पूजनीयों ने
तेभिः	तैः	उन से
रक्षन्ते	रक्षन्ति (व्यत्ययेनात्मनेपदम्)	रक्षा करते हैं
अमृतम्	अमृतम्	अमृत को
सऽजोषाः	सङ्गताः (आ० को०)	इकट्ठे हुए २
पशून्	पशून्	पशुओं को
च	(पूरणः)	–
स्थातॄन्	स्थावराणि	स्थावरों को
चरथम्	जङ्गमम्	जंगम को
च	च	और
पाहि	पाहि	रक्षा करो

संस्कृतार्थः ।

(हे अग्ने !) त्वय्येवनिहितानि यान्येकविंशति-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संख्याकानि गूढानि पदानि यज्ञार्हाः (देवाः) अलभन्त, सङ्गताः (ते) तैरमृतं रक्षन्ति (हेअग्ने! त्वम्) पशून्स्थावराणि जङ्गमम् (प्राणिजातम्) च पाहि।६।

भाषार्थः।

(हेअग्नि)आपमें स्थापन किए हुए जिन इक्कीस गूढ़ पदों को देवताओं ने प्राप्त किया है, इकट्ठे हुए २ (वे) उन से अमृत की रक्षा करते हैं (हेअग्नि) आप पशुओंकी स्थावरोंकी और चलने वाले(प्राणियों) की रक्षा करें ॥ ६ ॥

अग्नि के २१आधियज्ञिक पद (पैडो) जिन से मनुष्य अमृतत्व पर चढ़ता है ये हैं ॥

७ पाकयज्ञ	७ हविर्यज्ञ	७ सोमयज्ञ
१ औपासनहोम	१ अग्न्याधान	१ अग्निष्टोम
२ वैश्वदेव	२ अग्निहोत्र	२ अत्यग्निष्टोम
३ पाक्षिकस्थालीपाक	३ दर्शपौर्णमास	३ उक्थ्य
४ श्रवणाकर्म	४ पिण्डपितृयज्ञ	४ षोडशी
५ आश्वयुजी	५ आग्रयण	५ वाजपेय
६ आग्रहायणी	६ चातुर्मास्य	६ अतिरात्र
७ अष्टका	७ पशुबन्ध	७ अप्तोर्याम

इसी प्रकार २१ आधिदैविक पैडो बाह्य सृष्टि के नियमों का अन्वेषण और २१ आध्यात्मिक पैडो अध्यात्मिक विद्या का अन्वेषण हो सकता है, इनसे देवता मनुष्यों के लिये अमृत की (अर्थात मनुष्यों को अमर बनाने के उपाय की) रक्षा करते हैं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११

विद्वाँअग्नेवयुनानिक्षितीनां व्या-
नुषक्शुरुधोजीवसेधाः। अन्तर्विद्वाँ-
अध्वनोदेवयाना नतन्द्रोदूतोअभवो-
हविर्वाट्।७।

विद्वान्	जानन्	जानता हुआ
अग्ने	हे अग्ने!	हे अग्नि
वयुनानि	व्यवहारान् (आ० को०)	व्यवहारों को
क्षितीनाम्	मनुष्याणाम्	मनुष्यों के
वि	वि+	–
आनुषक्	सततम्	निरन्तर
शुरुधः	अन्नानि (आ०भा०)	अन्नों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जीवसे	जीवनाय	जीवन के लिये
धाः	ाव+धाः,स्थापित-वानसि (अडभावः)	तूनेस्थापनकियाहै
अन्तःविद्वान्	अन्तरे जानन्	भीतर से जानता हुआ
२ अध्वनः	मार्गान्	रस्तों को
२देवऽयानान्	देवैर्गन्तव्यान्	देवताओंसे गमन कियेजानेवालोंको
अतन्द्रः	आलस्य रहितः	आलस्य से रहित
दूतः	दूतः	दूत
अभवः	अभवः	तू हुआ है
हविःऽवाट्	हविषांवोढा	हवियोंको पहुंचा-ने वाला

संस्कृतार्थः।

हेअग्ने ! मनुष्याणां व्यवहारान् जानन् (त्वम्) सततं जीवनायाऽन्नानि स्थापितवानसि, देवैर्गन्त-व्यान्मार्गान् (च) अन्तरे जानन् (त्वम्) आलस्य रहितोहविषां वोढा दूतोऽभवः ॥ ७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हेअग्नि ! मनुष्यों के व्यवहारों को जानते हुए आपने निरन्तर जीवन के लिये अन्नों को स्थापन किया है (और) देवताओं के गमन करने के रस्तों को भीतर से जानतेहुए आप आलस्य से रहित हुए २ हवि को पहुंचाने वाले दूत बने हैं ॥ ७ ॥

अग्निदेव मनुष्य और देवता दोनों पर उपकार करने वाले हैं वह मनुष्यों के व्यवहार जानते हुए उन के लिये अन्न उत्पन्न करते हैं (अन्न सूर्य्य रश्मि रूप अग्नि और रश्मियों से उत्पादित वर्षा द्वारा उत्पन्न होता है) और देवताओं के नियमों को जानते हुए उन को हवि पहुंचाते हैं,आधिदेविक पक्ष में पृथिवी,वायु,सूर्य्य बनस्पति जल सब देवताओं के जीवन के हेतु अग्नि (Heat)हैं आध्यात्मिक पक्ष में भी इन्द्रिय और मन सब की स्थिति के हेतु प्राणरूप में अग्नि ही हैं ॥

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११

स्वाध्योदिवआसप्तयह्वी रायो-
दुरोव्यृतस्यप्रजानन् । विदद्गव्यंसर-
माहृळ्हमूर्वं येनानुकंमानुषीभोजते
विट् । ८ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुऽआध्यः	शोभनध्यानयुक्ताः	शुभचिन्तनसेयुक्त
दिवः	द्युलोकात्	द्युलोक से
आ	आगच्छन्तीः	आने वालियों को
१ सप्त	सप्त	सात को
१ यह्वीः	नदीः (आ० को०	नदीयों को
१ रायः	धनस्य	धन के
दुरः	द्वाराणि	द्वारों को
वि	वि+	–
ऋतऽज्ञाः	ऋतस्य ज्ञातारः	सृष्टि नियम के जाननेवालों ने
अजानन्	वि+अजानन्, विज्ञातवन्तः	भली प्रकार जाना
विदत्	लब्धवती (अडभावः)	ढूंढ लिया
२ गव्यम्	गोसम्बन्धिनम्	गौ संबंधी को
सरमा	सरमा	सरमाने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ दृ॒ळ्हम्	दृढम्	दृढ को
ऊ॒र्वम्	गोष्ठम् (आ० को०)	गोष्ठ को
येन	येन	जिस से
नु	खलु (आ०को०	सच मुच
क॒म्	(पूरणः)	–
मानु॑षी	मानुषी	मनुष्यों की
भोजते	पुष्यति	पलती है
विट्	प्रजा	प्रजा

संस्कृतार्थः ।

(हे अग्ने !) शोभनध्यानयुक्ता ऋतस्यज्ञातारः (पूर्वऋषयः) द्युलोकाद्यागच्छन्तीःसप्तनदीर्घनस्यद्वार भूता विज्ञातवन्तः,सरमा(च) गो सम्बन्धिनंदृढगोष्ठं लब्धवती येन खलु मानुषी प्रजा पुष्यति ॥ ८ ॥

भाषार्थः ।

(हे अग्नि) सुन्दर ध्यान से युक्त सृष्टि निगम के जानने वाले (पूर्व ऋषियों ने)द्युलोक से आने वाली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सात नदियों को धन के द्वाररूप समझा (और) सरमाने गौओं के दृढ गोष्ठ को ढूंढ लिया जिससे सचमुच मनुष्यों की प्रजा पलती है ॥ ८ ॥

(१) यहां पर सात नदियां सूर्य्य के प्रकाश की धारा हैं, जो भिन्न २ सात रंग वाली होने पर भी पृथिवी पर मिश्रित होकर श्वेत धारा रूप से गिरती हैं। इन को पूर्व ऋषियों ने धन के द्वार जाना था। जैसे आजकल भी विद्वान् जानते हैं।

(२) गौओं का दृढ गोष्ठ तम है (तमआसीत् तमसागूढमग्रे) जो सौर ब्रह्माण्डों के बाहर अब भी राज्य करता है, और सूर्य्य की दृष्टि के सामने न होने पर पृथिवी को भी आच्छादन कर लेता है, इस तम रूपी गोष्ठ से किरण रूप गोओं को खोजकर सरमा ने इन्द्र को निवेदन किया था (देखो पृ० १५९३) इन्हीं किरणों से प्रजा का पालन होता है। यदि देवता मनुष्यों के हित के लिये उद्योग न करते तो यहां पर तम, शीत और मृत्यु का राज्य होता। पूर्व ऋषियों का भी आर्य जाति पर परम उपकार है जो उसको ऐसे देश में लाकर बसाया जहां प्रकाश की कमी नहीं है क्योंकि वह जानते थे कि यही धन है।

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११

आयेविश्वास्वपत्यानितस्थुः

कृण्वानासोअमृतत्वायगातुम् । म-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ह्वामहङ्गिःपृथिवीवितस्थे मातापुत्रे-
रदितिर्धायसेवेः । ९ ।

आ	आ+	–
ये	ये	जिन्हों ने
विश्वा	विश्वानि (शेर्लोपः)	सबको
सुऽअपत्यानि	शोभनानि अपतनहेतुभूतानि (कर्म्माणि)	उत्तम कर्म्मों को
तस्थुः	आ+तस्थुः, आचरितवन्तः (आ० को०)	आचरण किया
कृण्वानासः	कुर्वाणाः (व्यत्ययेनात्मनेपदम्, जसोऽसुगागमः)	करते हुए
अमृतऽत्वाय	अमरणत्वसिद्धये	अमरहोने के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गातुम्	मार्गम्	रस्ते को
मह्ना	महिम्ना (वर्णलोपश्छान्दसः)	महिमा से
महत्ऽभिः	महानुभावैः	महानुभावों के द्वारा
पृथिवी	पृथिवी	पृथिवी
वि	वि +	–
तस्थे	वि+तस्थे, स्थितवती	ठैरी है
माता	माता	माता
पुत्रैः	पुत्रैः	पुत्रों के साथ
अदितिः	अदितिः	अदिति
धायसे	धारणाय (दधातेर्भावेऽसुनि युगागमः)	धारणकरने के लिये
२ वेः०	पक्षिणः	पक्षि के

संस्कृतार्थः ।

(हे अग्ने!) अमृतत्वाय मार्गं कुर्वाणा ये सर्वाणि शोभनानि कर्म्माण्याचरितवन्तः (तैरेव) महानुभावैः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(इयम्) पृथिवी महिम्ना स्थितवती (यथा)पक्षिणो-धारणाय माताऽदितिः पुत्रैः (सह स्थितवती)।९।

भाषार्थः।

(हे अग्नि) अमर होने के मार्ग को बनाते हुए जिन्हों ने सम्पूर्ण उत्तम कर्म्मों का आचरण किया-हे (उन्हीं) महानुभावों के द्वारा यह पृथिवी महिमा पूर्वक ठैरी हुई है,(जैसे) पक्षी के धारण करनेके लिये पुत्रों के साथ माता अदिति (ठैरी हुई है) ॥ ९ ॥

(१) हमारे पूर्वज ऋषि आने वाली प्रजा के अमर होने का रस्ता बनाने के लिये निष्काम होकर शुभ कर्म करते थे, इसी लिये यह पृथिवी ठहरी हुई है नहीं तो मर्य्यादा न रहने से मनुष्य स्वार्थ वश होकर एक दूसरे को मार देते, और यह न जानते कि एक दूसरे की सहायता करना ही अमर होने का मार्ग है।

(२) पक्षी से यहां सूर्य्य का तात्पर्य्य है। जिस की रक्षा करने के लिये अदिति माता अपने दूसरे ब्रह्माण्ड रूपी पुत्रों के साथ ठैरी हुई है यदि अदिति धारणशक्ति को शिथिल कर दे तो न जाने सूर्य्य भगवान परिवार सहित कहां टकरा कर नष्ट होजावें।

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः।११।११।११।११।

अधिश्रियंनिदधुश्चारुमस्मिन्

दिवीयदक्षीअमृताअकृण्वन्। अ-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धच्चरन्तिसिन्धवोनसृष्टाः प्रनीची

रग्नेअरुषीरजानन् । १० ।

अधि	अधि +	–
श्रियम्	श्रियम्	शोभा को
नि	नि +	–
दधुः	अधि+नि+दधुः, स्थापितवन्तः	स्थापन किया
चारुम्	शोभनाम्	सुन्दर को
अस्मिन्	अस्मिन्	इस में
दिवः	द्युलोकस्य	द्युलोक की
यत्	यत्	जो
१ अक्षी०	चक्षषी	दो नेत्रों को
अमृताः	मरणरहिताः	मरण रहितों ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अक्रुवन्	कृतवन्तः	किया
अध	अथ, अनन्तरम् (थस्य धत्वं छान्दसम्)	इस के अनन्तर
क्षरन्ति	क्षरन्ति	बहती हैं
सिन्धवः	नद्यः	नदियां
न	इव	जैसे
सृष्टाः	विसृष्टाः	छोड़ी हुई
प्र	प्र+	–
नीचीः	नीचैरागच्छन्तीः	नीचे आती हुइयों को
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
२ अरुषीः	उषसः (निघं० १।८)	उषाओं को
अजानन्	प्र+अजानन् प्रज्ञातवन्तः	भली प्रकार जाना

संस्कृतार्थः ।

अमृता अस्मिन् (लोके) शोभनां श्रियं स्थापितवन्तः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यद् द्युलोकस्य चक्षुषीकृतवन्तः हे अग्ने! (तद्)अनन्तरम् (एव मनुष्याः)नीचैरागच्छन्तीरुषसः प्रज्ञातवन्तः (याः) विसृष्टा नद्य इव (द्युलोकात्) क्षरन्ति ॥ १० ॥

भाषार्थः ।

देवताओं ने इस (लोक) में सुन्दर शोभा को स्थापन किया जो द्युलोक के दो नेत्रों को बनाया हे अग्नि(इस के)अनन्तर (ही मनुष्यों ने) नीचे आती हुई उषाओं को जाना जो छोडी हुई नदियों की न्याईं (आकाश से) गिरती हैं ॥ १० ॥

(१) द्युलोक के दो नेत्र सूर्य्य और चन्द्रमा हैं जो पृथिवी की शोभा हैं ।

(२) नीचे आती हुई उषाएं अर्थात सूर्य्य की प्रथम आने वाली किरणें जो छोड़ी हुई नदियों की न्याईं आकाशसे गिरती हैं।

इति द्विसप्ततितमं सूक्तम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं० १ सू० ७३।

अग्निर्देवता पराशर ऋषिः

विनियोग—७२ सूक्त की न्याईं है।

इस सूक्त में अग्नि को घर में स्थापन करके उस की उपासना करने की आवश्यकता दिखलाई है, उस अग्नि का रूप केवल वही नहीं है जो कुण्ड में दीखता है परन्तु वह है जो सारे भुवन के साथ छाया की न्याईं रहता है और पृथिवी अन्तरिक्ष और द्यौ को भरे हुए है (देखो मंत्र० ८)। अग्निदेव पिता से पाए हुए धन की न्याईं अन्न आदि से पालन करने वाले, विद्वान के उपदेश की न्याईं अच्छे रस्तेचलाने वाले, सुखी अतिथि की न्याईं प्रीति करने वाले और ऋत्विज की न्याईं यजमान के घर की वृद्धि करने वाले हैं। वह सविता की न्याईं सत्य के चिन्तक और सब वीर्य सम्बन्धी कर्मों के रक्षक हैं, वह रूप की न्याईं सत्य, और आत्मा की न्याईं सुख रूप हैं इसलिये उन को घर में अवश्य स्थापन करना चाहिये। वह हितकारी मित्रों से घिरे हुए राजा की न्याईं पृथिवी पर निवास करते हैं, वह उपासक को घर में उपस्थित वीर पुत्रों की न्याईं सहायता देने वाले और पति से प्रीति को हुई निन्दा रहित नारी की न्याईं सुख के देने वाले हैं—जिस प्रकार थन भरी गौओं की न्याईं दूध देने की अत्यन्त कामना करने वाले बादल और पहाड़ के बीच से निकल कर बहने वाली नदियों ने सदा मनुष्योंके उपकार के लिये इच्छा की है इसी प्रकार देवताओं ने मनुष्यों के कल्याण की बुद्धि से अग्नि में यश को स्थापन किया है और दिन और रात्रि को अलग करके रात्रि की कालस में उषा की लाली को मिलाया है, ऐसे अग्निदेव हम को और हमारे धनवानों को धन के लिये प्रेरण करें। उन की रक्षा से युक्त होकर हम युद्ध में शत्रुओं को हनन करें हमारे स्तोता सौ वर्ष की आयु को भोगें और हम यश को धारण करते हुए अग्नि के धन से भरे हुए रथ को रोकने में समर्थ होवें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११

रयिर्नयःपितृवित्तोवयोधाः सुप्रणीतिश्चिकितुषोनशासुः । स्योनशोरतिथिर्नप्रीणानो होतेवसद्मविधतोवितारीत् ॥ १ ॥

रयिः	धनम्	धन
न	इव	की न्याईं
यः	यः	जो
पितृऽवित्तः	पितुःसकाशाल्लब्धम् (विदृलृलाभे)	पिता से पाया हुआ
वयःऽधाः	अन्नस्यदाता (आ०को०)	अन्नके देने वाला
सुऽप्रनीतिः	सुष्ठुप्रणेता	अच्छेरस्ते ले जाने वाला
चिकितुषः	विदुषः	विद्वान के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न	इव	की न्याईं
शासुः	शासनम् (बाहुलकादुःप्रत्ययः)	शासन
स्योनऽशीः	सुखेनशयानः (स्योनमितिसुखनाम-निघं०३।६	सुख के साथ शयन करानेवाला
अतिथिः	अतिथिः	अतिथि
न	इव	की न्याईं
प्रीणानः	प्रीतिंकुर्वाणः	प्रीति करने वाला
१ होताऽइव	होतेव	होता की न्याईं
सद्म	गृहम्	घर को
१ विधतः	कुर्वतः(यजमानस्य) (विधविधाने)	यजमान के
वि	वि+	–
१ तारीत्	वि+तारीत्, प्रवर्धयति (लडर्थेलुङ्)	बढाता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

यः पितुः सकाशाल्लब्धं धनमिवाऽन्नस्यदाता विदुषः शासनमिव सुष्ठुप्रणेता सुखेन शयानोऽतिथिरिव प्रीतिकर्वाणः(चाऽस्ति, सोऽग्निः) होतेव यजमानस्य गृहं प्रवर्धयति ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

जो पिता से पाए हुए धन की न्याईं अन्न के देने वाले, विद्वान के शासन की न्याईं अच्छे रस्ते लेजाने वाले (और)सुख से शयन करने वाले अतिथि की न्याईं प्रीति करने वाले (हैं वह अग्नि) होता की न्याईं यजमान के घर को बढ़ाते हैं ॥ १ ॥

(१) जैसे होता ऋत्विज यजमान के यज्ञ में देवताओं को बुला कर उसके घर को बढाता है अर्थात ऐश्वर्य्य की वृद्धि करता है इसी प्रकार अग्नि यजमान के घर को बढाते हैं ।

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।१।१।१।१।१।१

देवोनयःसविताससत्यमन्मा क्रत्वानिपातिवृजनानिविश्वा। पुरुप्रशस्तोअमतिर्नसत्य आत्मेवशेवोदिधिषाय्योभूत् ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देवः	देवः	देव
१ न	इव	की न्याईं
यः	यः	जो
१ सविता	सविता	सविता
सत्यऽमन्मा	सत्य चिन्तकः (मनिन् प्रत्ययः)	सत्य को चिंतन करनेवाला
क्रत्वा	बुद्ध्या (नाभावाऽभावः)	बुद्धि से
निऽपाति	नितरां रक्षति	अत्यन्त रक्षा करता है
वृजनानि	पौंस्यानि (निघं०२।९)	वीर्यसंबंधी(कर्मों) को
विश्वा	सर्वाणि	सब को
पुरुऽप्रशस्तः	बहुभिःप्रशस्तः	बहुतों से प्रशंसा किया हुआ
२ अमतिः	रूपम् (निघं० ३।७)	रूप
न	इव	की न्याईं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ सत्यः	सत्यः	सत्य
३ आत्माऽइव	आत्मेव	आत्मा की न्याईं
१ शेवः	सुख रूपः (शेवमितिसुखनाम निघं० ३।६)	सुख रूप
४ दिधिषाय्यः	स्थापनीयः (दधातेःसाय्यप्रत्ययः)	स्थापनकरने योग्य
भूत्	भवति (लडर्थेलुङ्यडभावः)	है

संस्कृतार्थः ।

यः सवितृदेवइवसत्यचिन्तकः (सन्) बुद्ध्या सर्वाणि पौंस्यानि नितरां रक्षति(सः) बहुभिः प्रशस्तः रूपमिव सत्यः, आत्मेवसुख रूपः (चाऽग्निर्मनुष्यैः) स्थापनीयो भवति ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

सवितादेव की न्याईं सत्यको चिन्तन करनेवाले जो बुद्धिद्वारा सम्पूर्ण वीर्य संबंधी कर्मों की अत्यन्त रक्षा करते हैं, बहुतों से प्रशंसा किये हुए रूप की न्याईं सत्य, (और) आत्मा की न्याईं सुख रूप (वह अग्नि मनुष्यों से) स्थापन करने योग्य हैं ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) अग्नि,सविता अर्थात परमात्मा की प्रेरक शक्ति की न्याईं सत्य चिन्तक हैं, कभी असत्य को मन में नहीं आने देते, इसी लिये वह संपूर्ण वल के कर्मों की रक्षा करने में समर्थ हैं यदि मनुष्य भी परमात्मा की प्रेरणा मांग कर केवल सत्य का चिंतक होजावे तो उस के लिये कोई भी कठिन कर्म दुष्कर नहीं है।

(२) रूप की न्याईं सत्य अर्थात जैसे जगत में मनुष्य, पशु, वृक्ष,आदि अनेक रूप प्रत्यक्ष में सत्य हैं उन के सत्य होने में किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं, ऐसे ही अग्निदेव भी सत्य हैं।

(३) आत्मा सुख रूप इस लिये है कि जो सुख मनुष्य को होता है वह आत्मा से ही होता है, बाह्य पदार्थ अर्थात धन आदि सुख के निमित्त मात्र हैं, अग्नि भी आत्मा की न्याईं सुख रूप हैं धन आदि की न्याईं नहीं।

(४) ऐसे गुणों से युक्त अग्नि को स्थापन करके अवश्य ही अपना इष्ट देव बनाना चाहिये ॥

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११

देवोनयःपृथिवींविश्वधाया उप-
क्षेतिहितमित्रोनराजा । पुरःसदः-
शर्म्मसदोनवीरा अनवद्यापतिजुष्टे-
वनारी॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देवः	देवः	देव
न	इव	की न्याईं
यः	यः	जो
पृथिवीम्	पृथिव्याम् (सप्तम्यर्थे द्वितीया)	पृथिवी में
विश्वऽधायाः	सर्वस्य धारकः (दधातेरसुन्प्रत्ययो-युगागमश्च)	सब के धारण करने वाला
उपऽक्षेति	निवसति	निवास करता है
१हितऽमित्रः	हितानिमित्राणि-यस्य सः	हितकारी मित्रों वाला
न	इव	जैसे
१ राजा	राजा	राजा
२ पुरःऽसदः	पुरस्तादुपविशन्तः	आगे बैठते हुए
२शर्म्मऽसदः	शर्म्मणि गृहे वर्तमानाः (शर्म्मेति गृहनाम-निघं० ३।४)	घर में रहने वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न	इव	जैसे
वीराः	पुत्राः (सा० भा०)	पुत्र
२ अनवद्या	अनिन्दिता	निन्दा से रहित
२ पतिजुष्टा ऽइव	पतिना प्रीतेव	पति से प्रीति की हुई की न्याईं
३ नारी	नारी	स्त्री

संस्कृतार्थः ।

(सूर्य्य) देव इव सर्वस्य धारको यः (अग्निः) हित मित्रो राजेव पृथिव्यां निवसति (सः)पुरस्तादुपपविशन्तो गृहे वर्त्तमानाः पुत्राइव पतिना प्रीता अनिन्दिता नारीव (चाऽस्ति) ॥ ३ ॥

भाषार्थः

(सूर्य्य) देव की न्याईं सब को धारण करनेवाले जो (अग्नि)हितकारी मित्रों से युक्त राजा की न्याईं पृथिवी में निवास करते हैं (वह) आगे बैठते हुए घर में रहनेवाले पुत्रों की न्याईं (और) पति से प्रीति की हुई निन्दा रहित स्त्री की न्याईं हैं ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) जैसे राजा को राज्य का हित चाहने वाले मित्र चारों ओर घेरे रहते हैं तभी उस का राज्य निर्विघ्न चलता है, इसी प्रकार अग्नि इस पृथिवी पर हितकारी देवाताओं से घिरे हुए राजा बन कर निवास करते हैं।

(२) जैसे अपने घर में रहने वाले बीर पुत्र पिता के सामने बैठते हैं तब उस को अनेक प्रकार की सहायता मिलती है इसी प्रकार अग्नि के स्थापन करने से प्रत्येक काम में दैवी सहायता मिलती है।

(३) जैसे पति से प्रीति की हुई निन्दा रहित स्त्री पति को सुख देती है इसी प्रकार स्थापित किये हुए अग्निदेव मनुष्य को सुख देते हैं॥

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११।

तंत्वानरोदमआनित्यमिद्ध मग्ने-

सचन्तक्षितिषुध्रुवासु। अधिद्यम्नं-

निदधुर्भूर्यस्मिन् भवाविश्वायुर्धरु-

णोरयीणाम् ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri:Funding: MIDF

तम्	तम्	उस को
त्वा	त्वाम्	तुझ को
नरः	मनष्याः	मनुष्य
दमे	दमे+आ,गृहे	घर में
आ	आ+	–
नित्यम्	नित्यम्	सदा
इद्धम्	प्रदीप्तम्	प्रदीप्त को
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
सचन्त	सेवन्ते (लडर्थेलङ्चडभावः)	सेवा करते हैं
क्षितिषु	क्षितिषु +	–
ध्रुवासु	ध्रुवासु+क्षितिष निरुपद्रवेषुनगरेषु (सा०भा०)	उपद्रव रहित नगरों में
अधि	अधि+	–

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्युम्नम्	तेजः	तेज को
नि	नि+	–
दधुः	अधि+नि+दधुः स्थापितवन्तः	स्थापन किया है
भूरि	प्रभूतम्	बहुत को
अस्मिन्	अस्मिन्	इस में
भव	भव	तू हो
विश्वऽआयुः	सर्वस्यजीवनरूपः	सबकाजीवनरूप
धरुणः	धारकः	धारण करनेवाला
रयीणाम्	धनानाम्	धनों के

संस्कृतार्थः।

हे अग्ने! मनुष्या निरुपद्रवेषु नगरेषु गृहे दीप्तं तं त्वां नित्यं सेवन्ते, अस्मिन् (त्वयिदेवाः) प्रभूतं तेजः स्थापितवन्तः (अतः) सर्वस्य जीवन रूपः (त्वमस्म भ्यम्) धनानां धारको भव ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हेअग्नि! मनुष्य उपद्रव रहित नगरों में घर में प्रदीप्त उस आपकी नित्य सेवा करते हैं इस (आप) में (देवताओंने) बहुत तेज को स्थापन किया है (इसलिये) सब के जीवन रूप आप (हमारे लिये) धनों के धारण करने वाले होवें ॥ ४ ॥

आग्नर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।१।१।१।१।१।

विपृक्षोअग्नेमघवानोअश्यु र्विसू-
रयोददतोविश्वमायुः । सनेमवाजं-
समिथेष्वर्यो भागंदेवेषुश्रवसेद-
धानाः ॥ ५ ॥

वि	वि +	–
पृक्षः	अन्नम् (निघं०२।१२ सुपा-मिति द्वितीयायाःसुः)	अन्न को
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ मघऽवानः	धनवन्तः (मघमिति धन नाम, निघं०२।१०)	धनवान
अश्युः	वि + अश्युः, भुञ्जताम् (व्यत्ययेनपरस्मैपदम् विकरणस्य लुक्च)	भोगें
वि	वि + (अश्युः) भुञ्जताम्	भोगें
२ सूरयः	स्तोतारः (निघं० ३।१६)	स्तोता
२ ददतः	दातारः	देने वाले
विश्वम्	सर्वम्	सम्पूर्ण
आयुः	आयुः	आयुको
सनेम	सम्भजेमहि	हम भोगें
वाजम्	अन्नम्	अन्न को
समऽइथेषु	संग्रामेषु (निघं० २।१७	युद्धोंमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्य्यः	अरेः (गुणाभावेयणादेशः)	शत्रु के
भागम्	(हविः-)भागम्	(हविके) भाग को
देवेषु	देवेषु	देवताओंमें
श्रवसे	यशसे	यश के लिये
दधानाः	स्थापयन्तः	स्थापनकरतेहुए

संस्कृतार्थः।

हे अग्ने ! (अस्माकम्) धनवन्तोऽन्नंभुञ्जताम् (हविषः) दातारः स्तोतारः (च) सर्वमायुर्भुञ्जताम् यशसे देवेषु (हविषः) भागंस्थापयन्तः (वयम्) संग्रामेषु शत्रोरन्नं सम्भजेमहि ॥ ५ ॥

भाषार्थः।

हे अग्नि (हमारे) धनवान अन्नको भोगें (हविके) देने वाले (और) स्तोता सम्पूर्ण आयु को भोगें (और) हम यशके लिये देवताओं में (हविके) भाग को स्थापन करते हुए युद्धों में शत्रु के अन्न को भोगें ॥ ५ ॥

(१) देश के धनवान उस की उन्नति और रक्षा के हेतु हैं-इस लिये वे कभी निर्धन न हों यहां पर अन्न सब धनों का उपलक्षण है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) जो स्तुति शील हैं और जो देवभक्त हैं वे पूर्ण आयु को प्राप्त करें, जिस से सदा हमारी जाति में धर्म की स्थिति रहे।

(३) जो निन्दा शील, स्वार्थी अराति (न देने वाले) हमारे शत्रु हैं अर्थात हम से द्वेष रखते हैं उनके धन को देवताओं में भाग देते हुए हम भोगें।

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११

ऋतस्य हि धेनवो वावशाना स्मदूधनीः पीपयन्त द्युभक्ताः। परावतः समतिं भिक्षमाणा विसिन्धवः समयास स्रुरद्रिम् ॥ ६ ॥

१ ऋतस्य	ऋतस्य	ऋत की
हि	खलु	सचमुच
१ धेनवः	धेनवः	गौएं
वावशानाः	पुनःपुनःकामयमानाः (यङन्ताच्छानच्)	बार२कामना करती हुईं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्मत्ऽऊ-धनीः	स्मत् नित्यमूधां-सिस्तनायासांताः (सा०भा०)	सदा थनों वाली
पीपयन्त	स्फीतवत्यः (अडभावः)	भरी हैं
द्युऽभक्ताः	दिवाभक्ताः	द्यौ से बांटी हुई
परऽवतः	दूरदेशात्	दूरदेशसे
२ सुऽमतिम्	कल्याणात्मिकां-बुद्धिम्	कल्याण वाली बुद्धि को
२ भिक्षमाणाः	याचमानाः	मांगती हुई
वि	वि +	–
सिन्धवः	नद्यः (निघं०)	नदियां
समया	समया	–
सस्रुः	वि + सस्रुः प्रावहन्	बही हैं
अद्रिम्	अद्रिम् + समया पर्वतमध्यात्	पर्वत के बीच में से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

नित्यंस्तनैर्युक्ताः पुनःपुनः कामयमाना दिवा भक्ताऋतस्य खलुधेनवः (पयसा) स्फीतवत्यः, कल्याणात्मिकां बुद्धिं याचमाना नद्यः (च) पर्वतमध्यात् प्रावहन् ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

नित्य थनों वालीं बार बार कामना करती हुईं धौ से बांटीहुईं सचमुच ऋत की गौएं (दूधसे) भरी हैं (और) कल्याण की बुद्धि मांगती हुईं नदियां पर्वत के बीच से बह निकली हैं ।६।

(१) ऋत की गौएं बादल हैं जिन के थन जल रूपी दूध से मोटे हुए २ हैं ।

(२) नदियां दूसरों के कल्याण की इच्छा करती हुईं पर्वतों के बीच से बह निकली हैं इस में कुछ उनका अपना प्रयोजन नहीं सिद्ध होता, मनुष्य भी नदियों की न्याईं कल्याण वाली बुद्धि के लिये प्रार्थना करने से ही देवसदृश होसकता है ।

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११।

त्वेअग्नेसुमतिंभिक्षमाणा दिवि-

श्रवोदधिरेयज्ञियासः । नक्षाचच-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्रुरुषसाविरुपे कृष्णंचवर्णमरुणं-

चसन्धुः ॥ ७ ॥

त्वे०	त्वाय (सुपामितिसप्तम्या-शेआदेशः)	तुझ में
अग्ने	हे अग्न !	हेअग्नि
सऽमतिम्	कल्याणात्मिकां-बुद्धिम्	कल्याणकी बुद्धि को
भिक्षमाणाः	याचमानाः	मांगते हुए
दिवि	द्योतमाने	दीप्तिमान में
श्रवः	यशः	यश को
१ दधिरे	स्थापितवन्तः	स्थापन किया है
१ यज्ञियासः	यज्ञार्हाः(देवाः)	पूजनीय (देवताओं)ने
नक्ता	रात्रिम् (द्वितीयायाडादेशः)	रात्रिको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

च	च	और
चक्रुः	चक्रुः	बनाया
उषसा	उषसम् (द्वितीयायारात्वम्)	उषा को
विऽरूपे०	भिन्नरूपे	भिन्नरूपवालियों को
कृष्णम्	कृष्णम्	कालेको
च	च	और
वर्णम्	वर्णम्	रंग को
अरुणम्	रक्तम्	लाल को
च	च	और
सम्	सम् +	–
धुः०	सम् + धुः, एकत्रकृतवन्तः	इकट्ठा किया है

संस्कृतार्थः।

हेअग्ने ! कल्याणात्मिकां बुद्धिंयाचमाना यज्ञार्हाः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(देवाः) द्योतमाने त्वयि यशः स्थापितवन्तः,रात्र्युषसौ (च)विरूपेकृतवन्तःकृष्णंरक्तञ्चवर्णमेकत्रकृतवन्तः।७।

भाषार्थ।

हे अग्नि कल्याण की बुद्धि को मांगते हुए पूजनीय (देवताओं)ने दीप्तिमानआपमें यश को स्थापन किया है रात्रि(और)उषाको भिन्नरूपवालेबनाया-है (और) काले (और)लाल रंग को इकट्ठा किया है।७।

(१) केवल नदियां ही नहीं किन्तु सब देवता प्राणियों के कल्याण की बुद्धि को मांगते हैं इस लिये उन्हों ने मनुष्यों में रहने वाले देवताअग्नि को यशस्वी बनाया जिससे मनुष्यों का पूर्ण रूप से उपकार हो, दिन और रात्रि को भिन्न किया जिससे प्राणी दिन में काम करके रात्रि में विश्राम कर सकें।

(२) रात्रिके काले रंग और उषाके लाल रंग को एकत्र किया॥

आग्नदेवता निचृत्त्रिष्टुप्छन्दः १०।११।११।११

यान्रायेमतांन्त्सुषूदोअग्ने तेस्या-

ममघवानोवयंच। छायेवविश्वंभुव-

नंसिसक्ष्या ऽऽपप्रिवान्रोदसीअन्त-

रिक्षम्॥८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यान्	यान्	जिन को
राये	धनार्थम्	धन के लिये
मर्तान्	मनुष्यान्	मनुष्यों को
सुसूदः	प्रेरयसि (षूदप्रेरणे लेट्यडागमः, शपः श्लुश्छान्दसः)	प्रेरण करते हो
अग्ने	हे अग्ने!	हे अग्नि
ते	ते	वे
स्याम	स्याम	होवें
१मघऽवानः	धनिनः	धनी
१वयम्	वयम्	हम
च	च	और
२छायाऽइव	छायेव	छाया की न्याइं
विश्वम्	सर्वम्	सम्पूर्ण को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भुवनम्	भुवनम्	भुवन को
सिसक्षि	समवैषि (षचसमवायेशपःश्लु-इछान्दसः)	तूसाथ२ रहता है
आपप्रिडवान्	आपूरितवान्	चारों ओर से पूर्ण-किया है
रोदसी०	द्यावापृथिव्यौ	द्यौ (और) पृथिवी-को
अन्तरिक्षम्	अन्तरिक्षम्	अन्तरिक्षको

संस्कृतार्थः।

हे अग्ने! (त्वम्) यान् मनुष्यान् धनार्थं प्रेरयसि ते वयं स्याम (अस्माकम्) धनिनः (च स्युः) (त्वम्) सर्वं भुवनं छायेव समवैषि द्यावापृथिव्यावन्तरिक्षम् (च त्वमेव) आपूरितवान् (असि) ॥ ८ ॥

भाषार्थः।

हेअग्नि आप जिन मनुष्यों को धन के लिये प्रेरणा करते हो वे हम हों (और) हमारे धनिक (होवें) आप छाया की न्याईं सारे भुवनके साथ२ रहते हो (और आपने) द्यौ पृथिवी (और) अन्तरिक्ष का चारों ओर से पूर्ण किया हुआ है॥ ८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) अग्निदेव हमको और हमारे देश के धनियों को धन के लिये प्रेरण करें, जिस से हमारे शत्रु दबे रहें।

(२) यदि अग्निदेव सारे संसार के साथ सदैव छाया की न्याईं न रहें तो इस का तुरन्त ही अन्त हो जावे॥

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११।

अर्वद्भिरग्ने अर्वतो नृभिर्नॄन् वीरै-
र्वीरान्वनुयामा त्वोताः । ईशानासः
पितृवित्तस्य रायो विसूरयः स्यतहि-
मानो अश्युः ॥ ९ ॥

अर्वत्ऽभिः	अश्वैः	घोड़ों से
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
अर्वतः	अश्वान्	घोड़ों को
नृऽभिः	नरैः	नरों से
नॄन्	नरान्	नरों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वीरैः	वीरैः	बीरों से
वीरान्	वीरान्	बीरों को
वनुयाम	निराकरवाम (वनुष्यतिर्व्युदासे निघं०४।२)	हम हटावें
त्वाऽऊताः	त्वयारक्षिताः	तुझसेरक्षाकियेहुए
ईशानासः	स्वामिनः (सन्तः) (असुगागमः)	स्वामी हुए २
पितऽवित्तस्य	पितुःसकाशाल्लब्धस्य	पितासेपाएहुएके
रायः	धनस्य	धन के
वि	वि+	–
सूरयः	स्तोतारः (निघं३।१६)	स्तोता
शतऽहिमाः	शतसँवत्सरान्	सौ वर्ष पर्य्यन्त
नः	अस्मदायाः	हमारे
अश्नुयुः	वि+अश्नुयुः,भुञ्जताम्	भोगें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने! त्वया रक्षिता वयं पितृसकाशाल्लब्धस्य धनस्यस्वामिनः(सन्तोनिज-)अश्वैः(शत्रूणाम्)अश्वान् नरैर्नरान् वीरैर्वीरान् निराकरवाम, अस्मदीयाः स्तोतारः(च) शत सँवत्सरात्मकम्(आयुः) भुञ्जताम्॥९॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि आप से रक्षा किये हुए हम पिता से पाए हुए धन के स्वामी (हुए २) (अपने) घोड़ों से (शत्रुओंके) घोड़ों को नरों से नरोंको (और) बीरों से बीरों को हटावें (और) हमारे स्तोता सौ वर्ष की (आयु) को भोगें ॥ ९ ॥

(१) जैसे जाति की उन्नति और रक्षा के लिये धनियों की आवश्यकता है इसी प्रकार स्तुति करने वाले ऋषि तुल्य धर्मात्मा विप्रों की आवश्यकता भी है इसलिये प्रार्थना है कि वे सौ वर्ष की आयु को भोगें ॥

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११॥

एतातेअग्नउचथानिवेधोजुष्टा-

निमन्तुमनसेहृदेच । शकेमरायः-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुधुरोयमंतेऽधिश्रवोदेवभक्तंदधानाः ॥ १० ॥

एता	एतानि (शेर्लोपः)	ये
ते	तव	तेरे
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
उचथानि	स्तोत्राणि	स्तोत्र
वेधः	हेमेधाविन् ! (निघं० ३।१५)	हे बुद्धिमान
जुष्टानि	प्रियाणि	प्रीतिवाले
सन्तु	सन्तु	हों
मनसे	मनसे	मनकेताईं
हृदे	हृदयाय	हृदय के ताईं
च	च	और
शकेम	शक्ताभवेम	हम समर्थ होवें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ रायः	धनस्य	धनके
१ सुऽधुरः	शोभनधूर्युक्तस्य-(रथस्य)	सुन्दर धुरे वाले-(रथ) के
१ यमम्	नियमनम्(कर्त्तुम्)	रोकने को
ते	तव	तेरे
अधि	अधि +	–
श्रवः	यशः	यश को
देवऽभक्तम्	देवैर्भक्तम्	देवताओंसे बांटे-हुए को
दधानाः	अधि + दधानाः, धारयन्तः	धारणकरतेहुए

संस्कृतार्थः ।

हेमेधाविन्नग्ने! एतानि स्तोत्राणि तवमनसे हृदयाय च प्रियाणि सन्तु देवैर्भक्तंयशोधारयन्तः (च वयम्) तवधनसम्बधिनः शोभनधूर्युक्तस्य (रथस्य) नियमने शक्ताभवेम ॥ १० ॥

भाषार्थः ।

हे बुद्धिमान अग्नि ! ये स्तोत्र आप के मन और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हृदय के ताईं प्रिय होवें (और) देवताओं से बांटे हुए यश को धारण करते हुए हम आप के धन संबंधी सुन्दर धुरे वाले (रथ) को रोकने में समर्थ होवें ॥१०॥

(१) जिस से वह धन हमारे घर वा जाति में रहे शत्रुओं की ओर धन का रथ न जावे ॥

इति त्रिसप्ततितमंसूक्तम् ।

ऋ० मं० १ सू० ७४

अग्निर्देवता, रहूगणस्य पुत्रो गोतम ऋषिः ।

विनियोग—(१) यह और अगला सूक्त दोनों प्रातरनुवाक के आग्नेय क्रतु में पढे जाते हैं—(आ० सू० ४ । १३ । ७) और आश्विन शस्त्र में भी पढे जाते हैं ।

(२) पृष्ठ्य षडह के प्रथम दिन में यह सूक्त आज्य शस्त्र है (आ० सू० ७।१०।३)

(३) "उपप्रयन्तः-" यह पहला मंत्र अग्निहोत्र संबंधी सायंकाल के उपस्थान में पढा जाता है (यजु० ३।११)

(४) "उतब्रुवन्तु-" यह तीसरा मंत्र वैश्वदेवादि चातुर्मास्य में अग्नि मन्थन कर्म में जब अध्वर्यु "जातायानुब्रू३हि" ऐसा प्रैष देता है तब पढ़ा जाता है (आ० सू० २।१६।७)

(५) साकमेध में कीळी मरुतों की इष्टि में यही तीसरा मंत्र प्रथम आज्यभाग की अनुवाक्या है (आ०सू०२।१८।१५)

जो दूर से भी हम को सुनते हैं उस स्थापन किये हुए अग्नि के समीप जाते हुए हम मंत्र को उच्चारण करें, जिस ने प्रजा में उपद्रव के समय यजमान के घर की रक्षाकी है उस अग्नि को मथन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करके सब बोलें कि शत्रु के नाश करने वाले और प्रत्येक युद्धमें धनों के जीतने वाले उत्पन्न होगए हैं—यह अग्नि जिस यजमान के दूत बनते हैं उस के यज्ञ को देवताओं से कामना करने योग्य बना देते हैं और उसी मनुष्य को लोग सुहव्य सुदेव और सुबर्हि कहते हैं, जब अग्निदेव दूत कर्म के लिये जाते हैं तब न तो उन के घोड़ों का और न रथ का शब्द सुनाई देता है—जो अग्नि का हवि से पूजन करता है वह बलवान और साहसी होकर पिछले यजमानों से भी बढ़ जाता है और अग्निदेव उस के लिये तेज से युक्त महान बल को देवताओं से लाकर पहुंचाते हैं।

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रंवोचेमा-

ऽग्नये। आरे अस्मे च शृण्वते ॥१॥

उपप्रयन्तः	समीपेप्राप्नुवन्तः	समीप प्राप्त होते हुए
अध्वरम्	यज्ञम्	यज्ञ को
मन्त्रम्	मन्त्रम्	मंत्र को
वोचेम	उच्चारयेम	हम उच्चारण करें
अग्नये	अग्नये	अग्नि के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आरे	दूरे	दूर में
अस्मे०	अस्मान् (विभक्तेःशेआदेशः)	हम को
च	अपि (सा०भा०)	भी
शृण्वते	शृण्वते	सुनने वाले के लिये

संस्कृतार्थः ।

यज्ञसमीपे प्राप्नुवन्तः (वयम्) दूरेऽप्यस्मान् शृण्वतेऽग्नये मन्त्रमुच्चारयेम ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

हम यज्ञ के समीप प्राप्त होते हुए दूर से भी हम को सुनने वाले अग्नि के लिये मन्त्र को उच्चारण करें ॥१ ॥

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

यःस्नीहितीषुपूर्व्यः संजग्मानासुक्षुष्टिषु । अरक्षद्दाशुषेगयम् ।२।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यः	यः	जिस ने
स्नीहितीषु	हननकारिणीषु (स्नेह्यतहिंस्यते-आभिः। स्नेहयतिर्हिंसाकर्म्मा निघं०२।१९)	हनन करने वालियों में
पूर्व्यः	पुरातनः	प्राचीन ने
समऽजगमानासु	सङ्गतासु	इकट्ठीहुइयों में
कृष्टिषु	प्रजासु	प्रजाओं में
अरक्षत्	अरक्षत्	रक्षा की है
दाशुषे	दत्तवते	देने वाले के ताईं
गयम्	गृहम् (निघं०३।४)	घर को

संस्कृतार्थः।

पुरातनो यो दत्तवते (यजमानाय)हननकारिणीषु प्रजासुसङ्गतास (तस्य) गृहं रक्षितवान् ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

जिस प्राचीनने देने वाले (यजमान) के ताईं हनन करने वाली प्रजाओं के इकट्ठे होने पर (उसके) घर की रक्षा की है ॥ २ ॥

जब देश में कोई उपद्रव होजाता है और प्रजा राजा के हनन के लिये इकट्ठी होकर लूटमार करने लगती हैं तब अग्निदेव हवि देने वाले यजमान के घर की रक्षा करते हैं, ऐसा पूर्व काल में भी हुआ है।

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८

उतब्रुवन्तुजन्तव उदग्निर्वृत्रहाजनि। धनञ्जयोरणोरणे ।३।

उत	अपिच	और
ब्रुवन्तु	ब्रुवन्तु	बोलें
जन्तवः	मनुष्याः	मनुष्य
उत्	उत्+	–
अग्निः	अग्निः	अग्नि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृत्रऽहा	वृत्रस्य हन्ता	वृत्रके मारनेवाला
अजनि	उत्+अजनि, प्रादुरभूत्	प्रकट हुआ है
धनम्ऽजयः	धनानांजेता	धनों के जीतने वाला
रणेऽरणे	युद्धे युद्धे	प्रत्येक युद्ध में

संस्कृतार्थः।

अपिच मनुष्याब्रुवन्तु (यत्) वृत्रस्य हन्ता युद्धे-युद्धे धनस्यजेता ऽग्निः प्रादुरभूत् ॥ ३ ॥

भाषार्थः।

और मनुष्य बोलें (कि) वृत्र को मारने वाले प्रत्येक युद्ध में धन को जीतने वाले अग्निदेव प्रकट होगए हैं ॥ ३ ॥

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

यस्यदूतोअसिक्षये वेषिहव्या-

निवीतये । दस्मत्कृणोष्यध्वरम् ।४।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यस्य	यस्य	जिस का
दूतः	दूतः	दूत
असि	असि	तू है
क्षये	गृहे	घर में
वेषि	प्रापयसि (वीगतौ, अन्तर्भावित ण्यर्थः)	पहुंचाता है
हव्यानि	हवींषि	हवियों को
वीतये	भक्षणार्थम्	भक्षणकरनेकेलिये
दस्मत्	काम्यम् (ओ०को०)	कामना के योग्य को
कृणोषि	करोषि	तू करता है
अध्वरम्	यज्ञम्	यज्ञ को

संस्कृतार्थः ॥

(हेअग्ने! त्वम्) यस्य गृहे दूतोभवसि (देवानाम्) भक्षणाऽर्थं हवींषि (च) प्रापयसि (तस्य) यज्ञं काम्यं करोषि ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

(हे अग्नि)आप जिसके घरमें दूत बनते हो (और देवताओं के) भक्षण करनेके लिये हवियों को पहुंचाते हो उसके यज्ञ को कामना के योग्य करते हो ॥४॥

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८

तमित्सुहव्यमङ्गिरः सुदेवंसहसोयहो । जनाआहुःसुबर्हिषम् ।५।

तम्	तम्	उस को
इत्	एव	ही
सुऽहव्यम्	शोभन हविष्कम्	सुन्दरहविवालेको
१ अङ्गिरः	हे अङ्गिरः !	हेअङ्गिरानामवाले
सुऽदेवम्	शोभनदैवतम्	सुन्दर देवता वाले को
सहसः	सहसः	बल के
यहो०	सूनो ! (निघं०२।२)	हे पुत्र
जनाः	मनुष्याः	मनुष्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आहुः	आहुः	कहते हैं
२सुऽबर्हिषम्	शोभन बर्हिषम्	सुन्दरबर्हिवालेको

संस्कृतार्थः ।

हे अङ्गिरः ! हे बलस्य पुत्र ! तमेव (यजमानम्) जनाः शोभन हविष्कं शोभनदैवतं शोभनबर्हिषम् (च) आहुः॥ ५ ॥

भाषार्थः ।

हे अङ्गिरा ! हे बल के पुत्र ! उसी (यजमान) को मनुष्य सुन्दर हवि वाला सुन्दर देवता वाला (और) सुन्दर बर्हि वाला कहते हैं ॥ ५॥

(१) अङ्गिरा के लिये देखो पृ० ४६ ।

(२) "बर्हि" काटी हुई कुशा जो वेदी में विछाई जाती है और जिस पर घृत और हवि रखी जाती हैं ॥

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८

आ च वहासि ताँइह देवाँउप प्रश-
स्तये । हव्या सुश्चन्द्र वीतये॥ ६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आ	आ +	–
च	(पूरणः)	–
वहासि	आ+वहासि,आवह (लेट्याडागमः)	लेआओ
तान्	तान्	उनको
इह	इह	यहां
देवान्	देवान्	देवताओंको
उप	समीपे	समीप
प्रऽशस्तये	प्रकर्षेणशंसनाय	खूबस्तुति के लिये
हव्या	हव्यानाम् (विभक्तेरात्यम्)	हवियों के
सुऽचन्द्र	हे अत्यन्ताऽऽह्लादक !	हे अत्यन्तआनन्द देने वाले
वीतये	भक्षणाय	भक्षण करने के लिये

संस्कृतार्थः।

हे अत्यन्ताऽऽह्लादक! (त्वम्) तान् देवान् प्रकर्षेण शंसनाय हविषांभक्षणाय (च) इह समीपमावह ॥६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

हे अत्यन्त आनन्द देने वाले आप उन देवताओं को खूब स्तुति के लिये (और) हवियों के भक्षण करने के निमित्त यहां पास लेआओ ॥ ६ ॥

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८

नयोरुपब्दिरप्रुव्यः शृणवेरथस्य-

कच्चन। यदग्नेयासिदूत्यम् ॥७॥

न	न	नहीं
योः	गच्छतः (याप्रापणे,औणादिकः कुप्रत्ययः)	चलते हुए का
उपब्दिः	शब्दः (निघं१।११)	शब्द
अप्रुव्यः	अश्वैरुत्पादितः	घोड़ों से उत्पन्न हुआ २
शृणवे	श्रूयते (कर्म्मणिलटिव्यत्ययेन-इनुःशृभावश्च)	सुना जाता है
रथस्य	रथस्य	रथका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कत्	कदा	कभी
चन	अपि	भी
यत्	यदा	जब
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
यासि	गच्छसि	जाते हो
दूत्यम्	दूत्यार्थम्	दूत कर्म के लिये

संस्कृतार्थः।

हेअग्ने ! यदा (त्वम्) दूत्यार्थं गच्छसि (तदा) गच्छतः(तत्र) अश्वैरुत्पादितः शब्दो रथस्य[शब्दश्च] कदापि न श्रूयते ॥७॥

भाषार्थः।

हे अग्नि ! जब आप दूत कर्म के लिये जाते हैं [तब] चलते हुए [आपके] घोड़ों का शब्द (और) रथ का [शब्द] कभी नहीं सुनाई देता ॥ ७ ॥

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः।८।८।८

त्वोतोवाज्यक्रयोऽभिपूर्वस्माद-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परः। प्रदाश्वाँअग्नेअस्थात् ॥ ८॥

त्वाऽऊतः	त्वयारक्षितः	तुझसेरक्षाकिया-हुआ
वाजी	बलवान्	बलवान्
अक्रयः	साहसिकः (आ०को)	साहसकरने वाला
अभि	अभि+	–
पूर्वस्मात्	पूर्वस्मात्	पहले से
अपरः	अपरः	पिछला
प्र	प्र+	–
दाश्वान्	दाता	देने वाला
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
अस्थात्	प्र + अस्थात् अग्रेतिष्ठति, उत्कृष्टोभवतीत्यर्थः (लडर्थेलुङ्)	बढ़ जाता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! (हविषः) दाताऽपरः (यजमानः) त्वया रक्षितः(सन्) बलवान्साहसिकः (च भूत्वा) पूर्वस्मादुत्कृष्टो भवति ॥ ८॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि (हविके)देने वाला पिछला (यजमान) आपसे रक्षा किया हुआ बलवान (और) साहसी होकर पहले से बढ़ जाता है ॥८॥

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८

उतद्युमत्सवीर्य्यं बृहदग्नेविवासासि । देवेभ्योदेवदाशुषे ॥ ९॥

उत	अपिच	और भी
द्युऽमत्	दीप्तियुक्तम्	दीप्ति वाले को
सुऽवीर्य्यम्	शोभनंबलम्	सुन्दर बल को
बृहत्	महत्	महान को
अग्ने	हे अग्ने!	हे अग्नि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विवाससि	प्रापयसि (वीगतौ-अन्तर्भावितण्यर्थः)	पहुंचाते हो
देवेभ्यः	देवेभ्यः	देवताओं से
देव	हे देव !	हे देव
दाशुषे	दत्तवते	देने वालेकेताईं

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! हे देव ! अपिच(हविः)दत्तवते(यजमानाय) दीप्तियुक्तं शोभनं महद्बलं देवेभ्यः (आहृत्य) प्रापयसि ॥ ९ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि ! हे देव ! और आप (हवि) देने वाले (यजमान) के ताईं तेज युक्तसुन्दर महान बल को देवताओं से (लाकर) पहुंचाते हो ॥ ९ ॥

इति चतुःसप्ततितमं सूक्तम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं० १ सू० ७५

अग्निर्देवता–गोतम ऋषिः ।

विनियोग–पिछले सूक्त की न्याईं प्रातरनुवाक में और आश्विन शस्त्र में।

जिस अग्नि में हम हवि देते हैं और जिस की स्तुति में मंत्र उच्चारण करते हैं–वह वास्तव में कौन हैं और किस पर आश्रित हैं ?–मनुष्यों में कौन महानुभाव उस को बन्धु की न्याईं प्यार करता है और कौन उसके अनुरूप पूजा देता है ? अग्नि देव सब के बन्धु और प्रीति करने वाले रक्षक हैं, जो उस में मित्र भाव रखते हैं उन के वह सखा हैं। ऐसे अग्नि हमारे लिये मित्र और वरुण को पूजें, देवताओं को पूजें और महान ऋत को जो अग्नि का निज निवास स्थान है पूजें।

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८

जुषस्वसप्रथस्तमं वचोदेवप्सर-स्तमम् । हव्याजुह्वानआसनि ॥१॥

जषस्व	अङ्गीकुरु	अङ्गीकार करो
१सप्रथःऽ-तमम्	अतिशयेनप्रख्या-तम् (आ० को०)	बहुत प्रसिद्ध को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वचः	वचः	बचन को
देवप्सरःऽतमम्	अतिशयेन देवानांप्रीणयितारम् देवान्तिस्पृणोतिप्रीणयति स्पृप्रीतौ,सकारपकारःयोस्थानविपर्य्ययः)	देवताओं के अत्यन्त प्रसन्न-करने वाले को
हव्या	हव्यानि (शेर्लोपः)	हवियों को
जुह्वानः	अर्पयन् (जुहोतेर्व्यत्ययेनशानच्)	अर्पणकरताहुआ
आसनि	आस्ये ("पदन्नस्"-इत्यादिनाऽऽस्यशब्दस्याऽऽसन्नादेशः)	मुख में

संस्कृतार्थः ।

(हे अग्ने ! निज-) आस्ये हव्यान्यर्पयन् (त्वम्) देवानामतिप्रीणयितारमतिशयेन प्रख्यातम् (अस्मद्-) वचनमङ्गीकुरु । १ ।

भाषार्थः ।

(हे अग्नि अपने) मुख में हवियों को अर्पण करते हुए आप देवताओं के अत्यन्त प्रसन्न करने वाले बहुत प्रसिद्ध (हमारे) वचन को अङ्गीकार करें । १ ।

बहुत प्रसिद्ध इसलिये कि वेद मंत्र परमात्मा से प्रेरित और सब मनुष्यों के लिये हैं, केवल मंत्र द्रष्टा ऋषियों के लिये नहीं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८

अथातेअङ्गिरस्तमाऽग्नेवेधस्तम

प्रियम्। वोचेमब्रह्मसानसि। २।

अथ	अनन्तरम्	अनन्तर
ते	तुभ्यम्	तेरे लिये
आङ्गिरःऽतम	हेअङ्गिरसांवरिष्ठ	हेआंगराओंमें श्रेष्ठ
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
वेधःऽतम	हेअतिमेधाविन्!	हेअत्यन्त बुद्धिमान
प्रियम्	प्रियम्	प्रीति वाले को
वोचेम	कथयाम	हम उच्चारणकर
ब्रह्म	मन्त्ररूपंस्तोत्रम्	मंत्ररूपस्तोत्र को
सानसि	आदरणीयम् (आ०को० असिच् प्रत्ययान्तो निपात्यते	आदर करने-योग्य को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे अङ्गिरसांवरिष्ठ! अतिमेधाविन्! अग्ने! अनन्तरं तुभ्यं प्रियमादरणीयम् (च) मन्त्ररूपंस्तोत्रं कथयाम । २ ।

भाषार्थः ।

हे अङ्गिराओं में श्रेष्ठ अत्यन्त बुद्धिमान अग्नि! (इसके) अनन्तर हम आपके लिये प्रीतियुक्त (और) आदर करने योग्य मंत्ररूप स्तोत्र को उच्चारण करें । २ ।

अग्निर्देवता निचृद्गायत्रीछन्दः।७।८।८

कस्ते जामिर्जनाना मग्ने को दाश्वध्वरः। को ह कस्मिन्नसि श्रितः ॥३॥

१ कः	कः	कौन
१ ते	तव	तेरा
१ जामिः	बन्धुः	बंधु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जनानाम्	मनुष्याणाम् (मध्ये)	मनुष्योंके(बीचमें)
अग्ने	हे अग्ने!	हे अग्नि
कः	कः	कौन
दाशुऽअध्वरः	दाशुर्दत्तो ऽध्वरो-यज्ञो येन सः,	पूजा देने वाला
२ कः	कः	कौन
ह	खलु	सचमुच
२ कस्मिन्	कस्मिन्	किस में
असि	असि	तू है
२ श्रितः	श्रितः	आश्रित

संस्कृतार्थः।

हे अग्ने! मनुष्याणाम् (मध्ये) कस्तवबन्धुः कः (तवाऽनुरूपः) यष्टा (अस्ति) (त्वम्) कः (असि) कस्मिन् खल्वाश्रितोऽसि। ३।

भाषार्थः।

हे अग्नि मनुष्यों के (बीचमें) कौन आप का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बंधु (है) कौन (आप के योग्य) पूजा देने वाला (है) सचमुच आप कौन (हैं और) किस पर आश्रित हैं। ३।

(१) अग्निदेव तो सब के बन्धु हैं (देखो अगला मंत्र), परन्तु अग्नि के बन्धु अर्थात् जो बन्धु की न्याईं अग्नि को प्यार करते हैं बहुत कम हैं, इसलिये उपासक का प्रश्न है।

(२) अग्नि वास्तव में क्या हैं यह तो पदार्थ विद्या के विद्वान वैज्ञानिक भी नहीं बता सकते और न यह बता सकते हैं कि वह किस पर आश्रित हैं।

अग्निर्देवता निचृद्गायत्रीछन्दः ।८।८।८

त्वंजामिर्जनाना मग्नेमित्रोअसि-
प्रियः। सखासखिभ्यइड्यः ॥ ४ ॥

त्वम्	त्वम्	तू
जामिः	बन्धुः	बन्धु
जनानाम्	मनुष्याणाम्	मनुष्योंका
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मित्रः	त्रायकः (यास्कः)	रक्षा करने वाला
असि	असि	तू है
प्रियः	प्रियः	प्रीति करने वाला
सखा	सखा	मित्र
सखिऽभ्यः	सखिभ्यः	मित्रों के ताईं
ईड्यः	स्तुत्यः	स्तुति के योग्य

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! त्वं मनुष्याणां बन्धुः प्रियस्त्रायकः (चाऽसि) स्तुत्यः (त्वम्) सखिभ्यः सखाऽसि । ४ ।

भाषार्थः ।

हे अग्नि आप मनुष्यों के बंधु (और) प्रीति करने वाले रक्षक (हैं) स्तुति के योग्य आप मित्रों के ताईं मित्र हैं । ४ ।

वैसे तो अग्नि मनुष्य मात्र के मित्र हैं जैसे परोपकारी सत्-पुरुष होते हैं, परन्तु उन की मित्रता का सुख वे ही भोगते हैं जो उन को अपना मित्र जानते हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं०१ सू०७५मं०५ (१८८०)

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८

यजानोमित्रावरुणा यजादेवाँऋतं बृहत्। अग्नेयक्षिस्वंदमम् ॥ ५ ॥

यज	पूजय	पूजो
नः	अस्मभ्यम्	हमारेलिये
१मित्रावरुणा	मित्रावरुणौ	मित्र(और)वरुण-को
यज	पूजय	पूजो
देवान्	देवान्	देवताओं को
२ ऋतम्	ऋतम्	सृष्टिनियम को
बृहत्	महत्	महान को
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
यक्षि	पूजय (शपोलुक)	पूजो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३ स्वम्	स्वकीयम्	अपने
३ दमम्	गृहम्	घर को

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! (त्वम्) अस्मदर्थं मित्रावरुणौ पूजय देवान् पूजय महदृतरूपं गृहम् (च) पूजय ॥ ५ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि आप हमारे लिये मित्र (और) वरुण को पूजो देवताओं को पूजो (और) अपने महान ऋत रूप घर को पूजो । ५ ।

(१) मित्र और वरुण परमात्मा को सर्वाच्छादक और दया पूर्वक नियंत्रित करने वाली शक्तिके अभिमानी(Personification)होनेसे सबसे पहिलेपूजने योग्य हैं क्योंकि सृष्टि नियम के स्तम्भक वही हैं, और बिना नियमके सृष्टि और देवता कोई भी नहीं ठैर सकते।

(२) महान "ऋत" वा नियम जिस से यह सब सृष्टि, उत्पन्न और स्थित होती है–यही अग्नि का घर है इसी में इस को स्थिति है, अग्नि देव इस ऋत को भी मनुष्य और देवताओं के निमित्त पूजें–जिस से दोनों को परोपकार के लिये शक्ति मिले ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं० १ सू० ७६

अग्निर्देवता गोतम ऋषिः

विनियोग–यह और अगला सूक्त दोनों प्रातरनुवाक के आग्नेय क्रतु में पढे जाते हैं (आ० श्रौ० सू० ४।१३।७)

और आश्विन शस्त्र में भी।

हम किस प्रकार अग्निरूप परमात्मा के पास जावें, कौन सी स्तुति करें और हवि से पूजन करते हुए किस संकल्प को मन में रखें, ये सब हम नहीं जानते अग्निदेव ही हमें बतलावें, मनुष्यों में तो अग्नि के बल के अनुरूप पूजा करने में कोई भी समर्थ नहीं है। अग्निदेव ही यज्ञ में हमारे होता बन कर बैठें और प्रत्येक कर्म में हमारे अगवैया बनें, तभी देवताओं का प्रसाद हम पर हो सकता है। अग्निदेव ही राक्षस आदि हमारे शत्रुओं को जलाकर हमें निर्विघ्नता से देवपूजन करने में समर्थ करते हैं, वही इन्द्र जैसे दानी को हमारा अतिथि बनाते हैं। हम अपने मुख से और अपनी सन्तान की वाणी से अग्नि को बुलाते हैं, जिससे धन के उत्पन्न करने वाले और धन के देने वाले वह हमें जानें। जिस प्रकार अग्नि ने पूर्व समय में ऋषियों के साथ बैठ कर हमारे आदि पिता मनु की हवियों से देवताओं का पूजन किया था उसी प्रकार हमारे लिये भी हर्ष देने वाली जुहू से देवताओं को पूजें।

अग्निर्देवता निचृत् त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।१०

कात उपेतिर्मनसो वराय भुवदग्ने-

शन्तमा काम्नीषा । को वा यज्ञैः परि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दक्षंतआप॒ केनवात॒मनसादाशेमा॥१॥

का	कीदृशी	कैसी
ते॒	तव	तेरे
उपऽइतिः	उपगति (इणगतउपोपूर्वादस्माद् भावेक्तिन्)	समीप प्राप्ति
मनसः	मनसः	मनके
१ वराय	वरणार्थम्	वरने के लिये
भुवत्	भवेत् (लेट्यडागमः)	हो
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
शम्ऽतमा	अतिसुख करी	अत्यन्त सुख देने वाला
का	कीदृशी	कैसी
मनीषा	स्तुतिः (आ०को०)	स्तुति
कः	कः	क न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वा	(समुच्चये)	और
यज्ञैः	यज्ञैः	यज्ञों से
परि	परि +	–
२ दक्षम्	बलम् (निघं०२।९)	बल को
ते	तव	
आप	परि + आप अनुरूपोऽभवत्	योग्य हुआ है
३ केन	केन	किस से
वा	(समुच्चये)	और
ते	तुभ्यम्	तेरेताईं
३ मनसा	मनसा	मनसे
दाशेम	(हवि) प्रयच्छाम (दाशृदाने)	(हवि) दें

संस्कृतार्थः।

हे अग्ने ! तवमनसो वरणार्थं कीदृश्युपगतिः (भवेत्) कीदृशी स्तुतिः (तव) अतिसुखकारी (अस्ति)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कश्च यज्ञस्तवबलानुरूपोऽभवत् (वयम्) च केन मनसा तुभ्यम् (हविः) प्रयच्छाम । १ ।

भावार्थः ।

हे अग्नि ! आपके मन को बरने के लिये किस प्रकार (हम आप के) समीप आवें कौन सी स्तुति (आप को) अत्यन्त सुखदेनेवाली (है) और किस ने आप के बल के योग्य यज्ञ किये हैं और हम किस मन से आप के ताईं (हवि को) देवें । १ ।

(१) यद्यपि हम यज्ञ आदि कर्म करते हैं परन्तु अग्नि का मन हमारी ओर नहीं है, इसलिये प्रश्न है कि हम अग्नि के मन को बरने के लिये किस प्रकार उस की उपासना करें, और कौन सी स्तुति करें जिस से वह हम पर प्रसन्न हों ।

(२) जैसे अग्निदेव का बल और महत्त्व है उसके अनुरूप कौन यज्ञ कर सकता है? अर्थात कोई नहीं । केवल अग्नि की दया से ही उसकी प्राप्ति हो सकती है ।

(३) हमको यह भी ज्ञान नहीं है कि हमारा कल्याण किस में है, इसलिये प्रश्न है कि हम किस संकल्प से अग्नि को हवि देवें यह भी हम को आत्मा द्वारा अग्निदेव ही बतलावें ।

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छदः ।११।११।११।११

एह्यग्नइहहोतानिषीदाऽदब्धः-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुपुरएताभवानः । अवतांत्वारोद-
सोविश्वमिन्वे यजामहेसौमनसा-
यदेवान् ॥ २ ॥

आ	आ +	–
इहि	आ+इहि, एहि	आओ
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
इह	इह	यहां
होता	होता	होता
नि	नि+	–
सीद	नि+सीद, उपविश	बैठो
१ अदब्धः	अहिंस्यः	पीडित न होने वाला
सु	सुष्ठु	सुन्दर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ पुरःऽएता	पुरतोगन्ता (विभक्तेरात्वम्)	अगवैया
भव	भव	तू हो
नः	अस्माकम्	हमारा
२ अवताम्	रक्षताम्	दोनों रक्षा करें
त्वा	त्वाम्	तुझ को
२ रोदसी०	द्यावा पृथिव्यौ	द्यौ(और)पृथिवी
विश्वमऽइन्वे०	सर्वंव्याप्नुवन्त्यौ	सबको व्याप्त करती हुई
३ यज	पूजय	पूजो
महे	महते	महान के लिये
सौमनसाय	सौमनस्याय	प्रसाद के लिये
३ देवान्	देवान्	देवताओं को

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! एहि, इह (यज्ञे) होता (सन्) उपविश,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अहिंस्यः (त्वम्) सुष्ठ्वस्माकं पुरतो गन्ता भव, सर्वं व्याप्नुवन्त्यौद्यावापृथिव्यौत्वांरक्षताम् (त्वमस्मासु) महते सौमनस्याय देवान् यज । २ ।

भाषार्थः ।

हे अग्नि आओ यहां (यज्ञ) में होता (बनकर) बैठो, पीडित न होने वाले आप भली प्रकार हमारे सुन्दर अगवैया बनो सबको व्याप्त करती हुई द्यौ (और) पृथिवी आप की रक्षा करें आप (हम पर) महान प्रसाद के लिये देवताओं को पूजो ॥ २ ॥

(१) जिसको कोई पीड़ा नहीं देसकता—ऐसे अग्निदेव हमारे सुन्दर अगवैया (Leader) बनें, वह आत्मा (Conscience) के द्वारा हमें जो आज्ञा देवही कर्म हम करें, उसी में हमारा कल्याण है, जो हमारी बुद्धि रक्षा के मिष से आत्मा के विरुद्ध हमें करने को कहे—उस को हम कदापि न करें।

(२) द्यावापृथिवी जो सब को घेरे हुए हैं अग्नि की रक्षा करें, यह प्रार्थना भक्त के औत्सुक्य को दिखाती है वैसे तो अग्निदेव स्वयं अपनी और सब दूसरों की रक्षा करने में समर्थ हैं।

(३) अग्नि हमारे पुरोहित भी हैं वह हमारे लिये देवताओं को पूजकर उन का प्रसाद हम पर कराते हैं।

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११।

प्रसुविश्वान्नसोधत्यग्ने भवा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यज्ञानामभिशस्तिपावा। अथावह-

सोमपतिंहरिभ्या मातिष्ठयमस्मैच-

क्षमासुदाग्ने ॥ ३ ॥

प्र	प्र+	–
सु	सु+	–
१ विश्वान्	सर्वान्	सब को
१ रक्षसः	राक्षसान्	राक्षसों को
धक्षि	प्र+सु+धक्षि, प्रकर्षेण दह (दहतेःशपोलुक्)	खूब जलाओ
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
भव	भव	तू हो
यज्ञानाम्	यज्ञानाम्	यज्ञों का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अभिशस्ति	अभिशस्तिर्हिंसा-तस्याःसकाशात्-	हिंसा से बचाने वाला
ऽपावा	पावा रक्षिता (शसुहिंसायाम्,अभि पूर्वादस्मात क्तिन् पा-रक्षणे-अस्मादुवनिप्)	
अथ	अनन्तरम्	अनंतर
आ	आ+	–
वह	आ+वह	लाओ
सोमऽपतिम्	सोमस्यस्वामिनम्	सोमके स्वामी को
हरिऽभ्याम्	अश्वाभ्याम्	दोनों घोडों से
२ आतिथ्यम्	अतिथ्यर्हम् (सत्कारम्)	अतिथि के योग्य-(सत्कार) को
अस्मै	तस्मै (तलोपश्छान्दसः)	उस के लिये
चकृम	करवाम (लोडर्थेलिट्)	हम करें
सुऽदान्ने	अतिदानिने	अत्यन्त दानी के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! (त्वम्) सर्वान् राक्षसान् प्रकर्षेणदह हिंसाया यज्ञानां रक्षिता (च) भव, अनन्तरं सोमस्य-पतिम् (इन्द्रं तदीय-) अश्वाभ्याम् (अत्र) आवह (यद्वयम्) अतिदानिने तस्मा आतिथ्यं करवाम । ३ ।

भाषार्थः ।

हे अग्नि आप सब राक्षसों को खूब जलाओ (और) हिंसा से यज्ञों की रक्षा करो, (इसके-) अनन्तर सोम के स्वामी (इन्द्र) को (उसके) दोनों घोड़ों से (यहां) लाओ, (जो) हम उस अत्यन्त दानी का आतिथ्य करें । ३ ।

(१) अग्नि राक्षसों के सच्चे नाशक हैं—रोग आदि को उत्पन्न करने वाले जीवों के नाशक तो प्रत्यक्ष ही हैं—परन्तु स्तुति और चिन्तन किये जाने से पाप की ओर लेजाने वाली मानसिक शक्तियों और हमारे शत्रुओं के भी नाशक हैं ।

(२) अग्निदेव इन्द्र जैसे अतिथि को हमारे घर पर लाते हैं इतने बडे दानी से सम्बन्ध होने पर मनुष्य की कौनसी कामना अपूर्ण रह सकी है ।

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११।

प्र॒जाव॑ता॒वच॑सा॒वङ्गि॑रा॒सा ऽऽच-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हुवेनिचसत्सीहदेवैः। वेषिहोत्रमु-
तपोत्रंयजत्र बोधिप्रयन्तर्जनितर्व-
सूनाम् ॥ ४ ॥

प्रजाऽवता	प्रजायुक्तेन	प्रजायुक्त से
वचसा	वचसा	वचन से
वह्निः	नेतारम् (सुपामितिविभक्तेःसुः)	अगवैये को
आसा	आस्येन ("पदन्नस्-"इत्यादिनाऽऽसन्नादेशेकृते-सुपामितितृतीयायाडादेशः)	मुख से
आ	आ+	–
च	(पूरणः)	–
हुवे	आ+हुवे, आह्वयामि	बुलाता हूं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नि	नि+	–
च	(पूरणः)	–
सत्सि	नि+सत्सि, निषीद (लोडर्थेलट्)	बैठो
इह	इह	यहां
देवैः	देवैः	देवताओं के साथ
वेषि	गच्छसि	तू जाता है
२होत्रम्	होतृकर्मार्थम्	होताकेकर्मकेलिये
उत	च	और
२ पोत्रम्	पोतृकर्मार्थम्	पोताकेकर्मकेलिये
यजत्र	हे यजनीय !	हे पूजनकरनेयोग्य
३ बोधि	बुध्यस्व	जानो
प्रऽयन्तः	हे दातः !	हे देने वाले
जनितः	हे जनयितः !	हे उत्पन्न करने वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वसूनाम्	धनानाम्	धनों के

संस्कृतार्थः ।

नेतारम् (त्वाम्) प्रजा युक्तेन वचसा (स्वकीयेन) आस्येन (च) आह्वयामि (त्वम्) देवैः सहेह निषीद, हे यजनाय (त्वम्) होतुःपोतुश्च कर्मार्थं गच्छसि हे धनानां जनयितः ! हे (धनानाम्) दातः ! (साम्) बुद्ध्यस्व । ४ ।

भाषार्थः ।

आप नेता को प्रजा युक्त वचन से (और) अपने मुख से मैं बुलाता हूं आप देवताओं के साथ यहां बैठें, हे पूजनीय आप होता और पोता के कर्म्म के लिये जाते हैं, हे धनों को उत्पन्न करने वाले (और धनों के) देने वाले (आप मुझे) जानें । ४ ।

(१) प्रजायुक्त वचन से अर्थात ऐसी वाणी से जो मेरी और मेरी सन्तान दोनों की ओर से है ।

(२) अग्निदेव होता इसलिये हैं कि देवताओं को बुलाते हैं– और पोता इस लिये कि सब के पवित्र करने वाले हैं, यज्ञ में पोता ब्रह्मा का द्वितीय सहायक है और सात होता ऋत्विजों में भी पोता एक है ।

(३) जानें–जिससे मैं भी धन के दान का भागी बनूं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।१।१।१।१।१।

यथाविप्रस्यमनुषोहविर्भिर्देवाँ-
अयजःकविभिःकविःसन्। एवाहो-
तःसत्यतरत्वमद्या ऽग्नेमन्द्रयाजु-
ह्वायजस्व ॥ ५ ॥

यथा	यथा	जैसे
विप्रस्य	मेधाविनः	बुद्धिमान के
१ मनुषः	मनोः	मनु के
हविःऽभिः	हविर्भिः	हवियों से
देवान्	देवान्	देवताओं को
अयजः	पूजितवानसि	तूने पूजन किया
कविऽभिः	ऋषिभिः	ऋषियों के साथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कविः	ऋषिः	ऋषि
सन्	सन्	होकर
एव	एवम्	वैसे ही
होतः०	हे होतः !	हे होता
सत्यऽतर	हेअतिसत्यात्मन् !	हे अत्यन्त सच्चे
त्वम्	त्वम्	तू
अद्य	अद्य	आज
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
२ मन्द्रया	हर्षयित्र्या	हर्ष देने वाली से
२ जुह्वा	जुह्वा	जहू से
यजस्व	यजस्व	यजन करो

संस्कृतार्थः ।

हे अतिसत्यात्मन् ! होतः ! अग्ने ! यथा त्वम् ऋषिभिः(सह) ऋषिर्भूत्वा मेधाविनो मनोः हविर्भिर्दे-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वान् पूजितवान तथाऽद्य (अपि) हर्षयित्र्या जुह्वा यजस्व । ५ ।

भाषार्थः ।

हे अत्यन्त सच्चे होता अग्नि ! जैसे आपने ऋषियों के साथ ऋषि बन कर बुद्धिमान मनु की हवियों से देवताओं का पूजन किया था वैसे ही आज (भी) हर्ष देने वाली जुहू से यजन करो । ५ ।

(१) अग्निहोत्र और अग्नि द्वारा परमात्मपजन आदि पिता मनु के साथ हमारा सम्बन्ध कराते हैं ।

(२) जुहू वह पात्र है, कि जिससे यज्ञमें आहुति दी जाती हैं । यह हर्ष दिलाने वाली इसलिये है कि इस को उठाते देखकर देवताओंको हर्ष होताहै—जैसे भोजनके थालको देख कर मनुष्य को ॥

इति षट् सप्ततितमं सूक्तम ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ०मं०१ सू० ७७

अग्निर्देवता राहूगणो गोतम ऋषिः

विनियोग पिछल सूक्त की न्याईं है।

देवताओं के लिये यज्ञ करने वाले और मरणधर्मी मनुष्यों में मरण रहित अग्नि के लिये हम किस प्रकार हवि देवें और कौन सी स्तुति कहें जो देवताओं को प्रिय हो। जो अग्नि देवताओं के समीप जाते हैं उन को जानते हैं और मन से उन का पूजन करतेहैं जो यज्ञ में अत्यन्त सुख के देने वाले हैं और ऋत के अनुकल चलने वाले हैं उन को हम नमस्कारों से अपने सम्मुख करें। जो अग्नि यज्ञ रूप हैं जो यजमान रूप हैं जो कार्यसाधक हैं जो मित्र की न्याईं अद्भुत धनों के देने वाले हैं उन को देवभक्त आर्य्यलोग सब से पहले बुलाते हैं। वह शत्रुओं को नाश करनेवाले नरोत्तम अग्नि उत्कण्ठाके साथ हमारी स्तुति और भक्ति की कामना करें और हमारे धनवान अपने धन को देवताओं की स्तुति के श्रवण करने में लगावें। इस प्रकार गोतम कुल वाले ऋषि उत्पन्न मात्र को जानने वाले अग्नि की स्तुति करते थे और इसी कारण उन की कीर्ति धन और पुष्टि बढे हुए थे॥

अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११

कथादाशेमाऽग्नयेकाऽस्मैदेव-

जुष्टोच्यतेभामिनेगोः। योमर्त्येष्व-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मृतच्चृतावा होतायजिष्ठ इत्क्रणो-

तिदेवान्।१।

कथा	कथम्	किस प्रकार
दाशेम	ददाम	हम देवें
अग्नये	अग्नये	अग्नि के ताईं
का	का	कौन
अस्मै	अस्मै	इस के ताईं
देवऽजुष्टा	देवानांप्रिया	देवताओं को प्रिय
उच्यते	उच्यते	कही जाए
भामिने	दीप्तिमते (भादीप्तौ-मनिप्रत्ययेसतिमत्वर्थीयइनिः)	दीप्तिमानके ताईं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गीः	स्तुतिः	स्तुति
यः	यः	जो
मर्त्येषु	मर्त्येषु	मरणधर्मियों में
अमृतः	मरण रहितः	मरण से रहित
ऋतऽवा	ऋतवान् (मत्वर्थीयोवनिप्)	ऋत से युक्त
होता	होता	होता
यजिष्ठः	अतिशयेनयष्टा	अत्यन्त पूजन करने वाला
इत्	(पूरणः)	–
कृणोति	करोति	करता है
देवान्	देवानामर्थम् (चतुर्थ्यर्थे द्वितीया	देवताओं के लिये

संस्कृतार्थः ।

(वयम्) अग्नये कथम् (हविः) ददाम, अस्मै दीप्तिमते देवप्रिया का स्ततिरुच्यते यो मर्त्येषु मरण रहितो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होता ऋतेनयुक्तोऽअतिशयेन यष्टा देवानामर्थम् (यज्ञम्) करोति ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

हम अग्नि के ताईं किस प्रकार से (हवि) देवें इस दीप्ति मान के ताईं देवताओं को प्रिय कौनसी स्तुति कही जाए जो मरण धर्मियों में मरण रहित होता ऋत से युक्त सब से उत्तम यजन करने वाले (और) देवताओं के लिये (यज्ञ) करते हैं ॥ १ ॥

अग्नि के लिये क्या हवि दीजाए वा कौन स्तोत्र उन की स्तुति में पढे जांए इस प्रकार ऋषियों की उत्कंठा पूर्वक प्रार्थना करने से अग्निदेव ने ही यज्ञ की विधि उन के हृदय में प्रकट की हैं ॥

अग्निर्देवता विराट्त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।९।११

यो अध्वरेषु शन्तमऋतावा होतातमूनमोभिराकृणुध्वम् । अग्निर्यद्वेमेर्तायदेवान् त्सचाबोधातिमनसायजाति । २ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यः	यः	जो
अध्वरेषु	यज्ञेषु	यज्ञों में
शम्ऽतमः	अतिसुखप्रदः	अत्यन्त सुख के देने वाला
ऋतऽवा	ऋतवान्	ऋत से युक्त
होता	होता	होता
तम्	तम्	उस को
ऊम्०	(पूरणः)	–
नमःऽभिः	नमस्कारैः	नमस्कारों से
आ	आ +	–
कृणुध्वम्	आ + कृणुध्वम्, अभिमुखीकुरुत	सामने करो
अग्निः	अग्निः	अग्नि
यत्	यत्	जो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वेः	वेतिगच्छतीत्यर्थः (वीगतौ,लडर्थेलङि-पुरुषव्यत्ययः)	जाता है
मर्ताय	मनुष्याय	मनुष्यकेलिये
देवान्	देवान्	देवताओं को
सः	सः	वह
च	खलु (आ०को०)	सच मुच
बोधाति	जानाति (लेटयाडागमः)	जानता है
मनसा	मनसा	मन से
यजाति	पूजयति (लेटयाडागमः)	पूजन करता है

संस्कृतार्थः ।

(हे सखायः!) योयज्ञेष्वतिसुखप्रद ऋतवान् होता (अस्ति) तं नमस्कारै रभिमुखंकुरुत,अग्निर्यन्मनुष्याय देवान् (प्रति) गच्छति सः खलु (तान्) जानाति मनसा (च) पूजयति ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

(हे मित्रो!) जो यज्ञों में अत्यन्त सुख देने वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋत से युक्त होता (है) उस को नमस्कारों से सामने करो, अग्नि जो मनुष्य के लिये देवताओं के पास जाते हैं सचमुच वह (उनको) जानते हैं (और मन से (उनका) पूजन करते हैं ॥ २॥

देवताओं से मित्रता करने के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम उन के पास जाने वाले उन को जानने वाले और उन को मन से (अर्थात दिल से) पूजने वाले अग्नि को बारंबार नमस्कार द्वारा अपने सम्मुख करें ॥

अग्निर्देवता निचृत्त्रिष्टुप्छन्दः ।१०।११।११।११

सहिक्रतुःसमर्य्यःससाधुर्मित्रो-
नभदद्भुतस्यरथोः। तंमेधेषुप्रथमंदे-
वयन्तो विश उपब्रुवतदस्ममारोः।३।

सः	सः	वह
हि	एव	ही
क्रतुः	यज्ञः	यज्ञ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सः	सः	वह
मर्त्यः	मनुष्यः,यजमान इत्यर्थः	यजमान
सः	सः	वह
साधुः	(पर कार्य्याणाम् साधकः	(दसरोंके काम)-सिद्धकरनेवाला
मित्रः	मित्रम् लिङ्व्यत्ययश्छान्दसः)	मित्र
न	इव	कीन्याईं
भत्	अभूत् (अडभावः)	हुआ है
अद्भुतस्य	अद्भुतस्य(धनस्य)	अद्भुत(धन) के
रथोः	प्रापयिता	प्राप्तकराने वाला
तम्	तम्	उसको
मेधेषु	यज्ञेषु	यज्ञों में
प्रथमम्	पूर्वम्	पहिले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देवऽयन्तीः	देवानात्मनइच्छन्त्यः (पूर्वसवर्णदीर्घः)	देवताओंकीकामना करती हुई
विशः	+ विशः	–
उप	उप +	–
ब्रुवते	उप+ब्रुवते सम्बोधयन्ति	बुलाते हैं
दस्मम्	अद्भुतम्	आश्चर्य्यरूप को
आरीः	आरीः + विशः आर्य्यप्रजाः	आर्य्यप्रजाएं

संस्कृतार्थः ।

सः (अग्निः) एव यज्ञः स यजमानः सोऽद्भुतस्य (धनस्य) प्रापयिता सुहृदिव (परार्थानाम्) साधकः (चाऽस्ति, अतः) देवान्कामयमाना आर्य्य प्रजा यज्ञेषु तमद्भुतरूपं पूर्वं सम्बोधयन्ति ॥ ३ ॥

भाषार्थः ।

वह (अग्नि) ही यज्ञ (हैं) वही यजमान (हैं) वह अद्भुत (धन) के प्राप्त कराने वाले (और) मित्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की न्याईं (दूसरों के काम) सिद्ध करने वाले (हैं इस लिये) देवताओं की कामना करने वाले आर्य्य लोग यज्ञों में उस आश्चर्य्यरूप को पहिले बुलाते हैं ॥३॥

यज्ञ रूप प्रजापति (परमात्मा) अग्नि हैं और यजमानरूप जीवात्मा भी अग्नि हैं धन के देने वाले और सब के मित्र अग्नि हैं इसी लिये आर्यलोग यज्ञों में पहिले अग्नि की स्तुति करते हैं।

अग्निर्देवता निचृत्त्रिष्टुप्छन्दः १०।११।११।११।

सनोनृणांनृतमोरिशादा अग्निर्गिरोऽवसावेतुधीतिम्। तनाचयेमघवानःशविष्ठा वाजप्रसूताइषयन्तमन्म ।४।

सः	सः	वह
नः	अस्माकम्	हमारी
नणाम्	नराणाम् (मध्ये)	नरों के (बीच)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नृऽतमः	नरोत्तमः	नरोत्तम
रिशादाः	रिशाःशत्रवस्तेषामत्ता	शत्रुओं को भक्षण-करने वाला
अग्निः	अग्निः	अग्नि
गिरः	स्तुतीः	स्तुतियों को
अवसा	स्पृहया (आ०को०)	इच्छा के साथ
१ वेत	कामयताम्	कामना करे
धीतिम्	भक्तिम् (आ०को)	भक्ति को
तना	धनेन (निघं२।१)विभक्तेरात्वम्	धन से
च	च	और
य	ये	जो
मघऽवानः	धनवन्तः	धनवान
शविष्ठाः	प्रबलाः	प्रबल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ वाजऽ प्र सूताः	धनेन प्रेरिताः	धन से प्रेरितहुए२
इषयन्त	इच्छन्तु (इषइच्छायांलोड-र्थेलङ्लघूपध गुणा-भावश्च)	इच्छा करें
मन्म	स्तोत्रम् (आ०को०)	स्तोत्र को

संस्कृतार्थः ।

नराणाम् (मध्ये) नरोत्तमः शत्रूणामत्ता (च) सो ऽग्निरस्मत्कृताः स्तुतीर्भक्तिम् (च) स्पृहया कामयताम्, ये च धनेन प्रबला धनवन्तः (सन्ति ते) धनेन प्रेरिताः (सन्तः) स्तोत्रमिच्छन्तु ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

नरों में नरोत्तम (और) शत्रुओं के भक्षण करने वाले वह अग्नि हमारी स्तुतियों को (और) भक्ति को इच्छा के साथ कामना करें, और जो धन के द्वारा प्रबल हुए धनवान (हैं वे) धन से प्रेरित होकर स्तोत्र की इच्छा करें ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) अग्नि से हमारी गाढ प्रीति तभी हो सकती है कि जिस प्रकार हम उन को मित्रता की कामना करते हैं वह भी उत्कंठा पूर्वक हमारी स्तुति और भक्ति की कामना करें।

(२) हमारी जाति के धनवानों को उनका धन अग्नि के स्तोत्र सुनने के लिये प्रेरणा करे दुर्व्यसनों की ओर प्रेरण न करे।

अग्निर्देवता निचृत्त्रिष्टुप्छन्दः ।११।१०।११।११

एवाऽग्निर्गोतमेभिर्ऋतावा विप्रेभिरस्तोष्टजातवेदाः । सएषुद्युम्नंपीपयत्सवाजं सपुष्टिंयातिजोषमाचिकित्वान् । ५ ।

एव	एवम्	इस प्रकार
अग्निः	अग्निः	अग्नि
गोतमेभिः	गोतमवंशीयैः	गोतमवंशियों से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋतऽवा	ऋतवान्	ऋत से युक्त
विप्रेभिः	ऋषिभिः	ऋषियों से
अस्तोष्ट	स्तुतोऽभूत् (कर्म्मणिलुङ्)	स्तुतिकिया गया
जातऽवेदाः	जातानांवेदिता	उत्पन्न हुओंको-जाननवाला
सः	सः	उसने
एषु	एषु	इन में
द्युम्नम्	यशः (निघं० ४।२)	यश को
पीपयत्	वर्धितवान् (अडभावः)	बढ़ाया
सः	सः	उसने
वाजम्	धनम् (ओ०को)	धन को
सः	सः	उसने
पुष्टिम्	पुष्टिम्	पुष्टि को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ याति	प्राप्नोति	प्राप्त होता है
१ जोषम्	प्रीतिम्	प्रीति को
आ	समन्तात्	चारों ओर से
चिकित्वान	जानन्	जानता हुआ

संस्कृतार्थः ।

एवमृतवानग्निर्गोतमवंशीयैर्ऋषिभिः स्तुतोऽभूत,जातानांवेदिता सएषु यशः सधनंस (एव) पुष्टिं वर्धितवान्(सः)समन्ताज्जानन्(सन्)प्रीतिंप्राप्नोति।५।

भाषार्थः ।

इस प्रकार ऋत से युक्त अग्नि गोतम वंशी ऋषियों से स्तुति किये गए हैं उत्पन्न हुओं के जानने वाले उसने इनमें कीर्ति को उस ने धन को (और) उसी ने पुष्टि को बढाया है (वह) सब ओर से जानते हुए प्रीति को प्राप्त होते हैं॥ ५॥

(१) मनुष्यों के मन की वृत्तियों को जानने वाले अग्निदेव भक्त को जानते हैं और उस से प्रीति को प्राप्त होते हैं।

इति सप्त सप्ततितमं सूक्तम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं० १ सू० ७८

अग्निर्देवता राहूगणो गोतम ऋषिः

विनियोग लैङ्गिक।

जिस अग्नि को गोतम कुल वाले बाणी द्वारा सम्मुख करते थे, धन की कामना वाला गोतम ऋषि बाणी से जिसकी पूजा करता था जिस बहुत अन्न देने वाले को अङ्गिरा कुल के ऋषि बुलाते थे जिस वृत्र के अत्यन्त हनन करने वाले और आर्य शत्रुओं के कंपाने वाले के ताईं रहूगणवंशी मीठा बचन उच्चारण करते थे उस अग्नि की हम भी प्रकाश देने वाले मंत्रों द्वारा बार बार अत्यन्त स्तुति करें।

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः। ८। ८। ८

अभित्वा गोतमा गिरा जातवेदो विचर्षणे। द्युम्नैरभि प्र णोनुमः।१।

अभि	अभिमुखम्	सामने
त्वा	त्वाम	तुझ को
गोतमाः	गोतमाः	गोतम कुलवाले
गिरा	वाचा	बाणी से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जातऽवेदः	हे जातानांवेदितः!	हे उत्पन्न हुओं के जानने वाले
विऽचर्षणे	हे विशेष दृष्टि युक्त!	हे विशेष दृष्टि वाले
द्युम्नैः	द्योतमानैः(मन्त्रैः) (सा०भा०)	प्रकाश युक्तः मंत्र से
अभि	अत्यन्तम् (आ०को०)	अत्यन्त
प्र	प्र+	-
नोनुमः	प्र+नोनुमः, पुनः पुनः स्तुमः	हम वार २ स्तुति करते हैं

संस्कृतार्थः।

हे जातानां वेदितः! हे विशेष दृष्टि युक्त! (वयम्) गोतमास्त्वांवाचाऽभिमुखम् (कुर्मः) द्योतमानैः (मन्त्रैश्च) पुनः पुनरत्यन्तं स्तुमः। १।

भाषार्थः।

हे उत्पन्न हुओंके जाननेवाले! हे विशेष दृष्टिवाले! गोतम कुल वाले हम आप को वाणी द्वारा सामने (करते हैं और) प्रकाश युक्त (मंत्रों) द्वारा वार २ अत्यन्त स्तुति करते हैं। १।

(१) प्रकाश युक्त मंत्र अर्थात जिन से हृदय में प्रकाश उत्पन्न हो और अश्रद्धा और अविद्या रूपी अंधकार दूर हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

तमु त्वा गोतमो गिरा रायस्का-
मो दुवस्यति । द्युम्नैरभि प्रणोनुमः ।२।

तम्	तम्	उसको
ऊम् ०	खलु	सचमुच
त्वा	त्वाम्	तुझ को
गोतमः	गोतमः	गोतम
गिरा	वाचा	वाणी से
रायःऽकामः	धनकामः	धन की कामना वाला
दुवस्यति	परिचरति	पूजता है
द्युम्नैः	द्योतमानैः (मन्त्रैः)	प्रकाश युक्त (मन्त्रों) से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अभि	अत्यन्तम्	अत्यन्त
प्र	प्र+	–
नोनुमः	प्र+नोनुमः,पुनः पुनः स्तुमः	हम बार २ स्तुति करते हैं

संस्कृतार्थः ।

तं त्वां धनकामो गोतमः वाचा खलु परिचरति (वयमपि) द्योतमानैः (मन्त्रैः) पुनः पुनरत्यन्तं स्तुमः।२।

भाषार्थः ।

उस आप को धन की कामना वाला गोतम सच मुच बाणी से पूजता है (और) हम(भी) प्रकाश युक्त (मंत्रों) से वार २ अत्यन्त स्तुति करते हैं । २ ।

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८

तमुत्वावाजसातम मङ्गिरस्व द्वामहे । द्युम्नैरभिप्रणोनुमः । ३ ।

तम्	तम्	उस को
ऊम्०	खलु	सच मुच

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वा	त्वाम्	तुझ को
वाजऽसातमम्	अतिशयेनाऽन्नस्य दातारम्	अत्यन्त अन्न के देने वाले को
अङ्गिरस्वत्	अङ्गिरस इव	अंगिराओं की न्याईं
हवामहे	आह्वयामः	हम बुलाते हैं
द्युम्नैः	द्योतमानैः (मन्त्रैः)	प्रकाश युक्त (मन्त्रों) से
अभि	अत्यन्तम्	अत्यन्त
प्र	प्र +	–
नोनुमः	प्र + नोनुमः पुनः पुनः स्तुमः	हम बार २ स्तुति करते हैं

संस्कृतार्थः ।

अतिशयेनाऽन्नस्यदातारं तंत्वामङ्गिरस इव (वयम्) खल्वाऽऽह्वयामः, द्योतमानैः (मन्त्रैश्च) पुनः पुनरत्यन्तं स्मतुः ।३।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

अत्यन्त अन्न के देने वाले उस आप को सच मुच हम अंगिराओं की न्याईं बुलाते हैं (और) प्रकाश युक्त (मंत्रों) से बार २ अत्यन्त स्तुति करते हैं । ३ ।

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

तमुत्वावृत्रहन्तमं योदस्यूँरव-
धूनषे । द्युम्नैरभिप्रणोनुमः ।४।

तम्	तम्	उसको
ऊम्०	खलु	सचमुच
त्वा	त्वाम्	तुझ को
वृत्रहन्ऽतमम्	वृत्रस्याऽतिशयेन हन्तारम्	वृत्र के खूब मारने वाले को
यः	यः	जो
दस्यून्	आर्य्यशत्रून्	आर्य्यों के शत्रुओं को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अवऽधूनुषे	कम्पयसि	कंपाते हो
द्युम्नैः	द्योतमानैः(मन्त्रैः	प्रकाश युक्त (मन्त्रों) से
अभि	अत्यन्तम्	अत्यन्त
प्र	प्र+	–
नोनुमः	प्र+नोनुमः,पुनः पुनः स्तुमः	हम बार२ स्तुति करते हैं

संस्कृतार्थः।

यः (त्वम्) आर्य्यशत्रून् कम्पयसि वृत्रस्याऽतिशयेन हन्तारं तं त्वां खलु द्योतमानैः(मन्त्रैः) पुनः पुनरत्यन्तं स्तुमः। ४।

भाषार्थः।

जो आप आर्य्यों के शत्रुओं को कंपाते हो वृत्र क अत्यन्त नाश करने वाले उस आप की हम सचमुच बार २ अत्यन्त स्तुति करते हैं। ४।

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८

अवोचामरहूगणा अग्नयेमधुम-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्वचः । द्युम्नैरभिप्रणोनुमः ।५।

अवोचाम	अवादिष्म	हमने कहा है
रहूगणाः	रहूगण वंशीयाः	रहूगणवंशियों ने
अग्नये	अग्नये	अग्नि के ताईं
मधुऽमत्	माधुर्य्योपेतम्	मिठास वाले को
वचः	वचः	वचन को
द्युम्नैः	द्योतमानैः (मन्त्रैः)	प्रकाश युक्त (मन्त्रों) से
अभि	अत्यन्तम्	अत्यन्त
प्र	प्र+	--
नोनुमः	प्र+नोनुमः, पुनः पुनः स्तुमः	हम बार २ स्तुति करते हैं

संस्कृतार्थः ।

रहूगण वंशीयाः (वयम्) अग्नये माधुर्य्योपेतं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वचोऽत्रादिष्म तं (वयम्) द्योतमानैः (मन्त्रैः) पुनः पुनरत्यन्तं स्तुमः ।५।

भाषार्थः ।

रहूगणवंशी हमने अग्नि के ताईं मिठास वाले वचन को कहा है (उस की हम) प्रकाश युक्त(मंत्रों) से बार २ अत्यन्त स्तुति करते हैं। ५।

इत्यष्ट सप्ततितमं सूक्तम।

ऋ०मं० १ सू० ७९।

राहूगणो गौतम ऋषिः।

विनियोग—पहले तीन मंत्र प्रातरनुवाक में आग्नेय क्रतु के त्रिष्टुप्छन्द में पढे जाते हैं (आ०श्रौ० सू० ४।१३।७) और आश्विन शस्त्र में भी।

पहले दो मंत्र वर्षा की इच्छा से की हुई कारीरी इष्टि की याज्यानुवाक्या भी हैं (आ०श्रौ० सू०२।१३।७)

चौथा पांचवां और छठा मन्त्र आग्नेय क्रतु के उष्णिक्छन्द में पढे जाते हैं (आ०श्रौ० सू०४।१३।७ और आश्विन शस्त्र में भी।

सातवें से बारवें मंत्र तक आग्नेय क्रतु के गायत्रीछन्द में पढे जाते हैं (आ०श्रौ० सू०४।१३।७) और आश्विन शस्त्र में भी।

इस सूक्त के पहिले तीन मंत्रों में यह उपदेश है कि विद्युत जिस के द्वारा वर्षा होती है अग्नि का ही रूपान्तर है और यज्ञ द्वारा वर्षाके उत्पन्न होने में विद्युत की स्तुति,वर्षा के क्रम का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋत्विजों द्वारा चिन्तन (जैसे दूसरे मंत्र में है) और देवताओं की प्रसन्नता ये तीनों कारण हैं। अगले मंत्रों में धन, यश, पाप की शक्तियों और शत्रुओं के नाश, रक्षा, युद्ध में विजय, सुख, दीर्घायु स्तुतिशीलता, आक्रमण करने वाले के पतन और विघ्न के निवारण के लिये प्रार्थना है।

मध्यमस्थानोवैद्यतोऽग्निर्देवता निचृत्त्रिष्टुप्
छन्दः ११।११।१०।११।

हिरण्यकेशो रजसो विसारे ऽहिर्धुनिर्वातइव ध्रजीमान्। शुचिभ्राजा उषसो नवेदा यशस्वतीरप स्युवोनसत्याः। १।

हिरण्यऽकेशः	हिरण्यकेशः	सुनहरी बालों वाला
रजसः	आकाशस्य	आकाश के
विऽसारे	विस्तारे (आ०को०)	विस्तारमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अहिः	सर्पः	सर्प
धुनिः	कम्पन युक्तः	कांपने वाला
वातःऽइव	वायुरत्र	वायु की न्याईं
व्रजीमान्	अतिशीघ्रगति-युक्तः (व्रजगतौ भावइनि सतिमतुप्)	अत्यन्त शीघ्र चलने वाला
शुचिऽ-भ्राजाः	शुद्धदीप्ति युक्तः	स्वच्छ प्रकाश वाला
उषसः	उषसः	उषा के
नवेदाः	मेधावी, ज्ञातेत्यर्थः (निघं०३।१५।)	जानने वाला
यशस्वतीः	यशस्वत्यः (पूर्वसवर्ण दीर्घः)	यश वालीं
अपस्युवः	कर्मोत्सुकाः	कर्मको प्रेम करने वाला
न	इव	जैसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सत्याः | सत्ययुक्ताः | सच्ची

संस्कृतार्थः ।

(अग्निः) आकाशस्य विस्तारे हिरण्यकेशयुक्तः कम्पनयुक्तः सर्परूपो वायुरिवाऽतिशीघ्रगतियुक्तः (चाऽस्ति) शुद्ध दीप्तियुक्त उषसो ज्ञाता (सः) कर्मो-त्तुकायशस्वत्यः सत्ययुक्ताः(स्त्रियः) इव (अस्ति) ।१।

भाषार्थः ।

(अग्नि) आकाश के विस्तार में सुनहरी बालों वाले कांपने वाले सर्परूप (और) वायु की न्याईं अति शीघ्र चलने वाले (हैं वह) स्वच्छ प्रकाश वाले उषा के जानने वाले (और)कर्म को प्रेम करनें वालीं यश वाली सच्ची (स्त्रियों) की न्याईं (हैं)।

आकाश के विस्तार में विद्युत रूप अग्नि हैं, जिस के सुनहरी बाल हैं जिस का रूप कांपते हुए सर्प की न्याईं हैं और जो वायु के वेग वाले हैं, यह वही अग्नि हैं जो उषःकालमें अग्निहोत्र के लिये प्रदीप्त किये जाने से उषा को जानने वाले कहे जाते हैं और जो घर के कामों में प्रयुक्त किये जाने से ऐसी स्त्रियों से उपमा दिये जाते हैं जो पतिव्रत को पालन करती हुई प्रेम के साथ घर का काम करती हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मध्यमस्थानोवैद्युतोऽग्निर्देवतात्रिष्टुप्छन्दः
११।११।११।११॥

आते सुपर्णा अमिनन्तँ एवैः कृष्णो
नोनावद्वृषभोयदीदम्। शिवाभिर्न-
स्मयमानाभिरागात्पतन्तिमिह्वः
स्तनयन्त्यभ्रा।२।

आ	आ +	–
ते	तत्र	तरे
सऽपर्णाः	सुपक्षाः (क्षण प्रभाः)	सुन्दर पांखों वालीं (दमक)
अमिनन्त	आ+अमिनन्त, तिरोऽभूवन् (आ०को०)	छिप गई हैं
एवैः	गमनैः	चलने से
कृष्णः	कृष्णवर्णः	काले रंग वाले ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नोनाव	भृशं जगर्ज	अत्यन्त गर्जा
वृषभः	वृषभः	बैल
यदि	यदा (सा०भा०)	जब
इदम्	अयम् (सोर्लुक्)	यह
शिवाभिः	कल्याण रूपाभिः	कल्याण रूप वालियों केसाथ
न	इव	की न्याईं
स्मयमानाभिः	ईषद्धसन्तीभिः	मुस्कराती हुइयों के साथ
आ	आ+	—
अगात्	आ+अगात्, आगतवान्	आया है
पतन्ति	पतन्ति	गिरती हैं
मिहः	बिन्दवः (मिहसेचने भावेक्विप्)	बूंदें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्तनयन्ति	गर्जन्ति	गर्जते हैं
अभ्रा	अभ्राणि (शेलं ":)	मेघ

संस्कृतार्थः।

(हे विद्युद्रूपाऽग्ने!) यदाऽयं कृष्णवर्णः(मेघरूपः) वृषभःभृशं जगर्ज (तदा)तव सुपक्षाः (क्षणप्रभाः)गमनैस्तिरोऽभूवन्(पुनः) कल्याणरूपाभिः स्मयमानाभिरिव(कणिकाभिर्वृष्टिः) आगतवती.इदानीम्)बिन्दवः पतन्ति, अभ्राणि (च) गर्जन्ति॥ २ ॥

भाषार्थः।

(हे विद्युत रूप अग्नि) जब यह काले रंग का (बादल रूप) बैल अत्यन्त गर्जा (तब) सुन्दर पांखों वालीं आपकी (दमक) चल कर अन्तर्धान होगई (फिर)कल्याण देनेवाली मुस्कराती सरीखी (कणिओं) के साथ (वृष्टि) आ पहुंची (अब) बूंदें गिरती हैं (और) बादल गर्ज रहे हैं ॥ २ ॥

जब बादल गरजता है उस समय बिजली की दमक शान्त होजाती है, इस का कारण यह है कि प्रकाश की गति शब्द की गति से अधिक है, पृथिवी पर विद्युत का प्रकाश पहिले पहुंचता है और गरज पीछे।

बादल की गरज के पीछे धीमी २ कणियां पड़ती हैं फिर बूंदें गिरती हैं और बादल गरज कर मूसलाधार वर्षा होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मध्यमस्थानोवैद्युतोग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः

११।११।११।११

यदीमृतस्यपयसापियानो नय-

न्नृतस्यपथिभीरजिष्ठैः । अर्यमा-

मित्रोवरुणःपरिज्मा त्वचंपृञ्चन्त्यु-

परस्ययोनौ । ३ ।

यत्	यदा	जब
ईम्	(पूरणः)	–
ऋतस्य	यज्ञस्य	यज्ञ के
पयसा	(हवीरूपेण) अन्नेन (निघं०२।७)	(हविरूप) अन्नसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पियानः	वर्धमानः (ओप्यायीवृद्धौव्यत्ययेन पीभावः)	बढ़ता हुआ
नयन्	प्रापयन्	ले जाता हुआ
ऋतस्य	ऋतस्य	ऋत के
पथिऽभिः	मार्गैः	मार्गों से
रजिष्ठैः	ऋजुतमैः (इष्ठनिसति "विभाषजोंऽछन्दसि" इति ऋकारस्य रत्वं टेर्लोपश्च)	अत्यन्त सीधों से
अर्यमा	अर्यमा	अर्य्यमा
मित्रः	मित्रः	मित्र
वरुणः	वरुणः	वरुण
परिऽज्मा	परितोगन्ता (मरुद्गणः)	मरुतगण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वचम्	अजिनम्	चर्म को
पृञ्चन्ति	संयोजयन्ति	संयुक्त करते हैं
उपरस्य	दिशः (आ०को०)	दिशा के
योनौ	स्थाने (आ०को०)	स्थान में

संस्कृतार्थः ।

यदा यज्ञस्य (हवीरूपेण) अन्नेन वर्धमानः (अयमग्निः) ऋतस्यर्जुतमैर्मार्गैः (देवानामर्थयज्ञम्) प्रापयन् (वर्त्तते तदा) अर्य्यमा मित्रो वरुणो मरुतः (च) दिशः स्थाने(अभ्ररूपम्)अजिनं संयोजयन्ति॥३॥

भाषार्थः ।

जब यज्ञ के (हवीरूप) अन्न से बढते हुए (यह अग्नि) ऋत के अत्यन्त सीधे मार्गों से (देवताओं के लिये यज्ञ को) पहुंचाते हैं (तब) अर्य्यमा, मित्र, वरुण (और) मरुत दिशा के स्थान में (बादल रूपी) चर्म को संयुक्त करते हैं ॥ ३ ॥

जब मनुष्यों से दी हुई हवि देवताओं को पहुंचती है तब वे भी चर्म बिछा कर यज्ञ की तैय्यारी करते हैं जो समाप्त होने पर वर्षा रूप में मनुष्यों को पहुंचता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निर्देवता, उष्णिक् छन्दः ।८।८।१२॥

अग्नेवाजस्यगोमत ईशानःस-

हसोयहो। अस्मेधेहिजातवेदोमहि

श्रः ।४।

अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
वाजस्य	अन्नस्य	अन्नका
गोऽमतः	गोभिर्युक्तस्य	गौओं से युक्त का
ईशानः	स्वामी	स्वामी
सहसः	बलस्य	बल का
यहो०	हे पुत्र !	हे पुत्र
अस्मे०	अस्मासु (सप्तम्याःशेआदेशः)	हम में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धेहि	स्थापय	स्थापन करो
जातऽवेदः	हेजातानां वेदितः	हे उत्पन्न हुओंके जानने वाले
महि	महत्	महान्
श्रवः	यशः	यश को

संस्कृतार्थः।

हे बलस्य पुत्र ! जातानांवेदितः ! अग्ने ! गोभिर्युक्तस्याऽन्नस्यस्वामी (त्वम्) अस्मासु महद्यशः स्थापय ॥ ४ ॥

भाषार्थः।

हे बल के पुत्र ! उत्पन्न हुओं के जानने वाले अग्नि ! गौओं से युक्त अन्न के स्वामी आप हम में महान यश को स्थापन करें ॥ ४ ॥

(१) अग्नि बल के पुत्र इसलिये हैं कि अरणियों में से मथन द्वारा मनुष्य के बल से उत्पन्न होते हैं।

अग्निर्देवता उष्णिक् छन्दः ८।८। १२

सद्धानोवसुष्कवि रग्निरीळे-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न्योगिरा । रेवत्स्मभ्यं पुर्वणीकदी-
दिहि । ५ ।

सः	सः	वह
दूधानः	दीपनशीलः	चमकने वाला
वसुः	धनरूपः	धन रूप
कविः	मेधावी	बुद्धिमान
अग्निः	अग्निः	अग्नि
ईळेन्यः	स्तोतव्यः (ईडस्तुतौ, औणादिक-एन्यप्रत्ययः)	स्तुति करने के योग्य
गिरा	वाचा	वाणी से
रेवत्	धनयुक्तं यथास्यात्तथा (रयिर्धनमस्यास्तीति, मतुपिसति सम्प्रसारणादिच्छान्दसम्)	धनसे युक्त होकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अस्मभ्यम्	अस्मभ्यम्	हमारे लिये
[1]पुरुऽअनीक	हे बहुमुख !	हे बहुतमुखोंवाले
दीदिहि	दीप्यस्व	प्रकाश युक्त हो

संस्कृतार्थः ।

सदीपनशीलोधनरूपोमेधाव्यग्निर्वाचास्तोतव्यः (अस्ति) हे बहुमुख ! (त्वम्) अस्मभ्यं धनयुक्तं यथा स्यात्तथादीप्यस्व ॥ ५ ॥

भाषार्थः ।

वह चमकने वाले, धन के स्वामी, बुद्धिमान अग्नि, वाणी से स्तुति करने के योग्य (हैं,) हे बहुत मुखों वाले ! आप हमारे लिये धन से युक्त होकर प्रकाशित होवें ॥ ५ ॥

(१) अग्नि की ज्वालाएं उस के अनेक मुख हैं ।

अग्निर्देवता उष्णिक्छन्दः ८।८।१२

तपोराजन्नुतत्मनाऽग्नेवस्तो-
रतोषसः । सतिग्मजम्भरक्षसोदह-
प्रति । ६ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्षपः	रात्रीः (अत्यन्तसंयोगे द्वितीया)	रात्रियों में
राजन्	द्योतमानः	प्रकाशित होकर
उत्	अपिच	और भी
त्मना	आत्मना (मन्त्रेष्वित्याकारलोपः)	अपने से
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
वस्तोः	अहानि	दिनों में
उत	अपिच	और
उषसः	उषसः अत्यन्तसंयोगेद्वितीय.	उषाकाल में
सः	सः	वह
तिग्मऽजम्भ	हे तीक्ष्णदन्त !	हे तीखे दांतों वाले
रक्षसः	राक्षसान्	राक्षसों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दह	प्रति+दह	खूब जलाओ
प्रति	प्रति+	–

संस्कृतार्थः

हे तीक्ष्णदन्त ! अग्ने ! सः (त्वम्) आत्मना द्योतमानः (सन्) रात्रिषु, दिनेषु च, उषःस्वपि राक्षसान् सम्यग्दह ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

हे तीखे दांतों वाले अग्नि ! वह आप स्वयं प्रकाशित होकर रात्रियों में दिनों में और उषा कालों में भी राक्षसों को खूब जलावें । ६ ।

हमारे आस पास में रहने वाले राक्षसों के जल कर नष्ट होने से ही हम रोग पाप और भय से बच सकते हैं ।

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८

अवानोअग्नऊतिभि र्गायचस्य-

प्रभर्म्मणि । विश्वासुधीषुवन्द्य ।७।

अव	रक्ष	रक्षा करो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नः	अस्मान्	हम को
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्न
ऊतिऽभिः	रक्षाभिः	रक्षाओं के द्वारा
गायत्रस्य	स्तोत्रस्य (आ०को०)	स्तोत्र के
प्रऽभर्म्मणि	निवेदने (ऋ०१।५७।१)	अर्पण करने पर
विश्ववासु	सवषु	सब में
धासु	कर्म्मसु	कर्म्मों में
वन्द्य	हे स्तुत्य !	हे स्तुत करनेके योग्य

संस्कृतार्थः।

हे सवषु कर्म्मसु स्तुत्य ! अग्ने ! (त्वम्) स्तोत्रस्य निवेदने (सति) अस्मान् (निज) रक्षाभी रक्ष ।७।

भाषार्थः

हे सम्पूर्ण कर्म्मों में स्तति करने योग्य अग्नि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आप स्तोत्र के अर्पण करने पर हमको (अपनी) रक्षाओं के द्वारा रक्षित करो । ७ ।

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८

आनोअग्नेरयिंभर सचासाहं-

वरेण्यम् । विश्वासुपृत्सुदुष्टरम्।८।

आ	आ +	–
नः	अस्मभ्यम्	हमारे लिये
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
रयिम्	धनम्	धन को
भर	आ + भर,आहर (ह्रस्यभत्वम्)	लाओ
सचाऽसहम्	सर्वदाजयशीलम्	सदा जीतने वाले को
वरेण्यम्	वरणीयम्	बरने योग्य को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विश्वासु	सर्वेषु	सब में
पृत्सु	सङ्ग्रामेषु (पृतनाशब्दस्यपृद्भावः)	युद्धों में
दुस्तरम्	तरीतुमशक्यम्,	न जीते जाने वाले को

संस्कृतार्थः।

हे अग्ने! (त्वम्) अस्मभ्यं सर्वदा जयशीलं सर्वेषु सङ्ग्रामेषु तरीतुमशक्यं वरणीयं धनमाहर ।८।

भाषार्थः।

हे अग्नि! आप हमारे लिये सदा जय शील सब युद्धों में न जीते जाने वाले वरने योग्य धन को लाओ। ८।

ऐसा धन जो किसी युद्ध में हम को न हारने दे और जिसके द्वारा हम सदा जय को प्राप्त होवें।

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः।८।८।८

आनोअग्नेसुचेतुना रयिंविश्वायुपोषसम्। माडीकंधेहिजीवसे। ९।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आ	आ+	–
नः	अस्माकम्	हमारे
अग्ने	अग्ने !	हे अग्नि
सुऽचेतुना	सुष्ठुध्यानेन	खूब ध्यान से
रयिम्	धनम्	धन को
विश्वायु-ऽपोषसम्	सर्वस्मिन्नायुषि-पोषकम् (सकारलोपश्छान्दसः)	संपूर्ण आयु में पालने वाले को
मार्डीकम्	मृडीकं सुखं तद्धेतुभूतम्, सुख प्रदमित्यर्थः	सुखकेदेने वाले को
धेहि	आ+धेहि स्थापय	स्थापन करो
जीवसे	जीवनाय	जीवन के लिये

१ स्कृतार्थः ।

हे अग्ने! (त्वम्) अस्माकं जीवनाय सुखप्रदं सर्व-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्मिन्नायुषि पोषकम् (च) धनं सुष्ठुध्यानेन स्थापय। ९।

भाषार्थः।

हे अग्नि! आप हमारे जीवन के लिये सुख के देने वाले (और) सारी आयु में पालने वाले धन को खूब ध्यान से स्थापन करें। ९।

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः।८।८।८

प्रपतास्तिग्मशोचिषे वाचोगोतमाऽग्नये। भरस्वसुम्नयुर्गिरः।१०।

प्र	प्र+	-
पूताः	पूताः	पवित्रों को
तिग्मऽशोचिषे	तीक्ष्णज्वालाय	तीखी लाटों वाले के लिये
वाचः	वाचः	वाणियों को
गोतम	हे गोतम !	हे गोतम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्नये	अग्नये	अग्नि के लिये
भरस्व	प्र+भरस्व, निवेदय	अर्पण कर
सुम्नऽयुः	सुम्नं सुखं तदात्मनइच्छन् (सुम्नमितिसुखनाम निघं०३।६)	सुख की इच्छा करता हुआ
गिरः	स्तुतिरूपाः	स्तुति रूपों को

संस्कृतार्थः

हे गोतम ! आत्मनः सुखमिच्छन् (त्वम्) तीक्ष्ण ज्वालायाऽग्नयेस्तुतिरूपा पूतावाचो निवेदय ।१०।

भाषार्थः ।

हे गोतम!सुख की इच्छा करते हुए तुम तीखी-लाटों वाले अग्नि के लिये स्तुतिरूप पवित्र बाणियों को अर्पण करो । १० ।

आग्नर्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८

योनोअग्नेभिदासत्य न्तिदूरे-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पदीष्टसः। अस्माकमिद्वृधेभव ।११।

यः	यः	जो
नः	अस्मान्	हम को
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
अभिऽदा-सति	आक्रमति	दबाता है
अन्ति	अन्तिके	समीप
दूरे	दूरे	दर
पदीष्ट	पततु	गिरे
सः	सः	वह
अस्माकम्	अस्माकम्	हमारी
इत्	(पूरणः)	–
वृधे	वृद्ध्यै	वृद्धि के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भव	भव	तू हो

संस्कृतार्थः

हे अग्ने ! अन्तिके दूरे (चाऽवस्थितः) योऽस्मानाक्रमति सपतत्तु (त्वञ्च) अस्माकंवृद्ध्यै भव ।११।

भाषार्थः ।

हे अग्नि पास में (और)दूर में (ठैरा हुआ) जो-हम को दबाता है वह गिरे (और) आप हमारी बृद्धि के लिये होवें । ११ ।

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८

सहस्राक्षोविचर्षणिरग्नीरक्षांसिसेधति। होतागृणीतउक्थ्यः ।१२

सहस्रऽअक्षः	सहस्रनेत्रः	हजारों नेत्रोंवाला
विऽचर्षणिः	विशेषदृष्टियुक्तः	विशेष दृष्टिवाला
अग्निः	अग्निः	अग्नि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रक्षांसि	राक्षसान्	राक्षसों को
सेधति	अपसारयति (आ०को०)	हटाता है
होता	होता	होता
गृणीते	स्तौति	स्तुति करता है
उक्थ्यः	प्रशस्यः (निघं०३।२)	प्रशंसा के योग्य

संस्कृतार्थः ।

सहस्रनेत्रः प्रशस्यो होता विशेष दृष्टि युक्तः (च)अग्नीराक्षसानपसारयति (देवाँश्च) स्तौति ॥१२॥

भाषार्थः ।

हजारों नेत्रों वाले प्रशंसा के योग्य होता (और) विशेष दृष्टि वाले अग्नि राक्षसों को हटाते हैं (और देवताओं की) स्तुति करते हैं । १२ ।

अग्निदेव हमारे अहित को करने वाले राक्षसों को जलाते हैं और हित को करने वाले देवताओं की स्तुति करते हैं जैसा जलते समय अग्नि के शब्द से प्रतीत होता है ।

इत्येकोनाऽशीतितमं सूक्तम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं० १ सू० ८०

इन्द्रोदेवता गौतमऋषिः।

विनियोग—पृष्ठ्यषडह के पांचव दिन मरुत्वतीय शास्त्र में यह सूक्त पढा जाता है (आ० ७।१२।९)

पहला मंत्र माध्यन्दिन सवन में अच्छावाक के लिये स्तोत्रियानुरूप है (आ०७।४।४)।

इस सूक्त में कई प्रकार से इन्द्र के वृत्र वध रूपी कर्मको वर्णन किया है ९वें, मंत्र में बहुत उपासकों को इकट्ठा मिल कर स्तुति करने का उपदेश है यह सूक्त मन को बडे कामों के लिये विशेष कर शत्रुवध के लिये उत्तेजित करने वाला और इन्द्र के राज्य में निर्भयता पूर्वक रहने के लिये प्रेरणा करने वाला है।।

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः।८।८।८।८।८।

इत्था हि सोमइन्मदे ब्रह्माच-कार वर्धनम्। शविष्ठवज्रिन्नोजसा पृथिव्यानिःशशा अहि मर्चन्ननुस्व-राज्यम्।१।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ इत्था	इत्थम्	इस प्रकार
हि	खलु	सच मुच
सोमे	सोमे (पीतेसति)	सोम के (पीने)पर
इत्	(पूरणः)	–
मदे	मदे	मद में
ब्रह्मा	स्तोता (सा०भा०)	स्तोता ने
चकार	चकार	किया
वर्धनम्	वर्धनम्	बड़ाई को
शविष्ठ	हे बलवत्तम् !	हे सब से अधिक बलवान
वज्रिन्	हे वज्रिन् !	हे वज्रधारी
ओजसा	बलेन	बल से
पृथिव्याः	पृथिव्याः	पृथिवी से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निः	निः+	–
शशाः	निः+शशाःशासनं कृत्वानिरगमयः (शासु अनुशिष्टौ लङ्शिपोलुकिप्राप्ते इलुः,अडभावश्च)	तूने दण्ड देकर निकाल दिया
अहिम्	वृत्रम्	वृत्र को
२ अर्चन्	अनु+अर्चन्, प्रकाशयन् (आ०को०)	प्रकाशित करता हुआ
अनु	+अनु	–
[२]स्वऽराज्यम्	स्वराज्यम्	अपने राज्य को

संस्कृतार्थ।

हे बलवत्तम (इन्द्र!) इत्थं खलु सोमे (पीते) मदे (सति) स्तोता (तव) वर्धनं चकार हे वज्रिन् ! (त्वम्) शासनंकृत्वा वृत्रं बलेन निरगमयः (त्वम्) स्वराज्यं प्रकाशयन् (वर्तसे) ॥१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हे सब से अधिक बलवान (इन्द्र) सचमुच इस प्रकार सोम पीकर मदमें स्तोताने (आप की) बडाई की है, हे वज्रधारी! आपने वृत्र को दण्ड देकर बल से निकाल दिया (आप) अपने राज्य को प्रकाशित करते हुए (विराजमान हैं) ।१।

१ इस प्रकार अर्थात जिस प्रकार इस सूक्त में आपकी बडाई की जाती है उसी तरह पूर्वकाल में सोम के मद में ऋषियों ने आप की बडाई की थी ॥

२ अपने राज्य को प्रकाशित करते हुए अर्थात इन बल के कर्मों से अपनी महिमा और अखण्ड राज्य को सब पर प्रकट करते हुए विराजते हैं ।

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८

सत्वामदद्वृषामदः सोमःपृथे-
नाभृतःसुतः । येनावृत्रंनिरद्भ्यो
जघन्थवज्रिन्नोजसा ऽचन्ननुस्व-
राज्यम् । २ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सः	सः	उसने
त्वा	त्वाम्	तुझ को
अमदत्	मदयुक्तंकृतवान्	मदसे युक्त किया है
वृषा	वीर्य्यवान्	वीर्य से युक्त
मदः	मदरूपः	मद रूप
सोमः	सोमः	सोम ने
१ श्येनऽ-आभृतः	श्येनेनाऽऽहृतः (ह्रस्यभत्वम्)	श्येनसे लायाहुआ
सतः	निष्पीडितः	निचोड़ा हुआ
येन	येन	जिससे
वृत्रम्	वृत्रम्	वृत्र को
निः	निः +	–

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अत्ऽभ्यः	अद्भ्यः	जलों के लिये
जघन्थ	निः+जघन्थ, नितरां हतवानसि	खूब मारा
वज्रिन्	हे वज्रिन् !	हे वज्रधारी
ओजसा	बलेन	बल से
अर्चन्	अनु + अर्चन् प्रकाशयन्	प्रकाशित करता हुआ
अनु	+ अनु	–
स्वऽराज्यम्	स्वराज्यम्	अपने राज्य को

संस्कृतार्थः ।

हे वज्रिन् ! श्येनेनाऽऽहृतोनिष्पीडितः (च) वीर्य युक्तो मदरूपः स सोमस्त्वां मदयुक्तंकृतवान् येन (त्वम्) वृत्रं बलेन जलेभ्यः (पृथक्कृत्वा) नितरांहतवानसि (त्वम्) स्वराज्यं प्रकाशयन् (वर्तसे)

भावार्थः ।

हे वज्रधारी! श्येन से लाए हुए (और) निचोड़े हुए वीर्ययुक्त उस मद रूप सोमने आपको मद से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

युक्त किया है जिस से आपने बल द्वारा वृत्र को जलों से (अलग करके) खूब मारा, आप अपने राज्य को प्रकाशित करते हुए (विराजमान हैं) ॥ २ ॥

१ श्येन (अर्थात बाज) विद्युत है जो कभी कभी पृथिवी पर इस प्रकार गिरती हुई देखी जाती है जैसे श्येन पक्षी पर। सोम वह प्रकाश वा अग्नि है जो बर्षा के जलों के साथ मिल कर पृथिवी पर गिरता है विद्युत रूपी श्येन वर्षा का हेतु होने से सोम के हरण का भी हेतु है, जब प्रकाश वा अग्निरूपी सोम वर्षा द्वारा पर्वत पर गिरता है तब लतामें प्रवेश करके उस के रस में मद को और उन गुणों को जो सोमरस में पाए जाते हैं स्थापन करता है ॥

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः।८।८।८।८।८

प्रेह्यभीहिधृष्णुहि नतेवज्रोनि-
यंसते। इन्द्रनृम्णंहितेशवो हनोवृ-
त्रंजयाअपोऽर्चन्ननुस्वराज्यम् ।३।

प्र	अग्रे	आगे
इहि	गच्छ	जाओ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अभि	सम्मुखम्	सामने
इहि	गच्छ	जाओ
धृष्णुहि	धृष्णुर्भव	निडर हो
न	न	नहीं
ते	तव	तेरा
वज्रः	वज्रः	वज्र
नि	नि+	–
यंसते	नि + यंसतं, नियम्यते (यमेःकर्म्मणिलेटिसिपि-सत्यडागमः)	रोका जासकता
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
नृम्णम्	पुंस्त्वम्	नरपन
हि	एव	ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ते	तव	तेरा
शवः	बलम्	बल
हनः	हतवानसि (लङ्यडभावःशपो-लुक् च)	तूने हनन किया है
वृत्रम्	वृत्रम्	वृत्र को
जयाः	जितवानसि (लङ्यडभावः)	तूने जीता
अपः	अपः	जलों को
अर्चन्	अनु+अर्चन्, प्रकाशयन्	प्रकाशित करता हुआ
अनु	+अनु	–
स्वऽराज्यम्	स्वराज्यम्	अपने राज्य को

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र ! अयेगच्छ (शत्रु-) सम्मुखं प्राप्नुहि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धृष्णुर्भव तव वज्रो न (केनाऽपि)नियम्यते, (हे इन्द्र!) पुंस्त्वमेव तव बलम् (अस्ति, (त्वम्) वृत्रं हतवान् जलानि (च) जितवान् (त्वम्) स्वराज्य प्रकाशयन् (वर्तसे) ॥३॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र ! आगे बढ़ो (शत्रु के) सामने जाओ निडरहो आपका वज्र(कोई भी) नहीं रोक सकता (हे इन्द्र)पुंस्त्व ही आप का बल (है) आपने वृत्र को हनन किया (और) जलों को जीता (आप) अपने राज्य को प्रकाशित करते हुए (बिराजमानहैं) ।३।

जब अपने उपासकों क लिये कोई बडा काम करने के निमित्त इन्द्र को भी प्रोत्साहन की आवश्यकता है, तो बिचारे निर्बल मनुष्य को कैसे न हो।

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८

निरिन्द्रभूम्या अधि वृचं जघन्थ-

निर्दिवः । सृजा मरुत्वतीरव जीवधन्या भूमा पोऽर्चन्ननुस्वराज्यम् ।४।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निः	निः +	–
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
भूम्याः	भूम्याः+अधि, पृथिवीसकाशात्	पृथिवी से
अधि	+अधि	–
वृत्रम्	वृत्रम्	वृत्र को
जघन्थ	निः+जघन्थ,निः-सार्य हतवानसि	निकाल कर हनन किया
निः	निःसार्य (हतवा-नसि)	निकाल कर(हनन किया)
दिवः	दिवः	द्यौ से
सृज	अव+सृज,पातय	गिराओ
मरुत्वतीः	मरुद्भिः संयुक्ताः	मरुतों से युक्त हुओं को
अव	अव+	–

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जीवऽधन्याः	जीवाःप्राणिनो धन्याःकृतार्था याभिस्ताः, जीव रक्षकाइत्यर्थः	जीवों की रक्षा करने वालों को
इमाः	इमाः	इन को
अपः	अपः	जलों को
अर्चन्	अनु+अर्चन् प्रकाशयन्	प्रकाशित करता हुआ
अनु	+अनु	–
स्वऽराज्यम्	स्वराज्यम्	अपने राज्य को

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र ! (त्वम्) वृत्रं पृथिवीसकाशान्निःसार्य्य हतवानसि दिवः (सकाशात्) निःसार्य्य(हतवानसि) (हेइन्द्र!) मरुद्भिः संयुक्ता जीवरक्षका इमाअपः पातय (त्वम्) स्वराज्यंप्रकाशयन् (वर्तसे) ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र ! आपने वृत्र को पृथिवी से निकाल कर हनन किया है (और) द्यौ से निकाल कर (हनन किया-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है, हे इन्द्र) आप जीव की रक्षा करने वाले और मरुतों से युक्त जलों को गिराओ आप अपने राज्य को प्रकाशित करते हुए (विराजमान हैं)॥ ४॥

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८

इन्द्रोवृत्रस्यदोधतः सानुंवज्रे-
णहीळितः । अभिक्रम्यावजिघ्नते
ऽपःसर्मायचोदय न्नर्चन्ननुस्वरा-
ज्यम् । ५ ।

इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
वृत्रस्य	वृत्रस्य	वृत्र के
दोधतः	भृशंकम्पमानस्य (धूञ् कम्पने)	अत्यन्तकांपतेहुए के
सानुम्	हनुप्रदेशम् (सा०भा०)	जबड़े को
वज्रेण	वज्रेण	वज्र से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ईळितः	क्रुद्धः (ईळ इति क्रोध नाम- निघं० २।१३ एकार- स्येत्वं छान्दसम्)	क्रोधसेयुक्तहुआ२
अभिऽक्रम्य	आभिमुख्येनगत्वा	सामने जाकर
अव	अव	–
जिघ्नते	अव+जिघ्नते, प्रहरति (व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदं बहुवचनञ्च)	प्रहार करता है
अपः	अपः	जलों को
सर्माय	सरणाय	बहने के लिये
चोदयन्	प्रेरयन्	प्रेरणकरताहुआ
अर्चन्	अनु + अर्चन् प्रकाशयन्	प्रकाशित करता हुआ
अनु	+ अनु	–
स्वऽराज्यम्	स्वराज्यम्	अपने राज्य को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः

क्रुद्धइन्द्रआभिमुख्येनगत्वा भृशंकम्पमानस्य वृत्रस्य हनुप्रदेशे वज्रेण प्रहरति (सः) सरजायाऽपःप्रेरयन् (सन्) स्वराज्यं प्रकाशयन् (वर्तते) ॥ ५ ॥

भाषार्थः ।

क्रुद्ध हुए२ इन्द्र सामने जाकर अत्यन्त कांपते हुए बृत्रके जबडे पर वज्र से प्रहार करते हैं,(वह)बहने के लिये जलों को प्रेरण करते हुए अपने राज्य को प्रकाशित करते हुए (विराजमान हैं) ।५।

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८

अधि सानौ निजिघ्नते वज्रेण शतपर्वणा । मन्दानइन्द्रोअन्धसः सखिभ्योगातुमिच्छत्य र्चन्ननुस्वराज्यम् ॥ ६ ॥

अधि | अधि + | -

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सानौ	अधि+सानौ हनुप्रदेशे	जबड़े पर
नि	नि+	–
जिघ्नते	नि+जिघ्नते प्रहरति	प्रहार करता है
वज्रेण	वज्रेण	वज्र से
शतऽपर्वणा	शतपर्वणा	सौ गांठों वालेसे
मन्दानः	हृष्यन्	हर्ष करता हुआ
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
अन्धसः	सोमरसेन (तृतीयार्थेषष्ठी)	सोमरससे
१ सखिऽभ्यः	मित्रेभ्यः	मित्रोंकेलिये
गातुम्	ऐश्वर्य्यम् (आ०को०)	ऐश्वर्य्य को
इच्छति	इच्छति	इच्छा करता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्चन्	अनु+अर्चन्, प्रकाशयन्	प्रकाशित करता हुआ
अनु	+अनु	-
स्वऽराज्यम्	स्वराज्यम्	अपने राज्य को

संस्कृतार्थः।

इन्द्रः सोमरसेन हृष्यन् (सन् वृत्रस्य) हनु प्रदेशे शतपर्वणावज्रेणं प्रहरति, सः मित्रेभ्य ऐश्वर्य्यमिच्छति स्वराज्यं प्रकाशयन् (च वर्तते) ॥ ६ ॥

भाषार्थः।

सोम रस से हर्षित होते हुए इन्द्र(वृत्र के) जबडे पर सौ गांठों वाले वज्र से प्रहार करते हैं (वह) मित्रों के लिये ऐश्वर्य्य की इच्छा करते हैं (और) अपने राज्य को प्रकाशित करते हुए (विराजमान हैं)॥ ६॥

१ मित्रों के लिये अर्थात अपने आर्य्य उपासकों के लिये।

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः।८।८।८।८।८।

इन्द्रतुभ्यमिदद्रिवोऽनुत्तंवज्रिन्-

वीर्य्यम्। यद्वृत्रंमायिनंमृगं तमुत्वं-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मायया वधी रर्चन्ननुस्वराज्यम् ।७।

इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
तुभ्यम्	तुभ्यम्	तेरेलिये
इत्	एव	ही
अद्रिऽवः	हे अशनि युक्त !	हे वज्रयुक्त
अनुत्तम्	अतिरस्कृतम् (सा०भा०)	न तिरस्कार किये जाने वाला
वज्रिन्	हे वज्रिन् !	हे वज्र धारी
वीर्यम्	वीर्य्यम्	वीर्य्य
यत्	येन (विभक्तेर्लुक्)	जिस से
इ	खलु	सच मुच
त्यम्	तंप्रसिद्धमित्यर्थः	प्रसिद्ध को
मायिनम्	मायाविनम्	मायावी को
मृगम्	पशुरूपम्	पशु रूप को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तम्	तम्	उस को
ऊम्०	(पूरणः)	–
त्वम्	त्वम्	तू ने
मायया	मायया	माया से
अवधीः	हतवानसि	हनन किया है
अर्चन्	अनु+अर्चन् प्रकाशयन्	प्रकाशित करता हुआ
अनु	+ अनु	–
स्वऽराज्यम्	स्वराज्यम्	अपने राज्य को

संस्कृतार्थः ।

हे अशनियुक्त ! वज्रिन् ! इन्द्र ! तवार्थमेवाऽतिरस्कृतं वीर्य्यम् (विद्यते) येन तंप्रसिद्धं मायाविनं पशुरूपम् (वृत्रम्) मायया हतवानसि (त्वम्) स्वराज्यंप्रकाशयन् (वर्तसे) ॥ ७ ॥

भाषार्थः ।

हे वज्र युक्त वज्रधारी इन्द्र ! आप के लिये ही न तिरस्कार किये जाने वाला वीर्य्य (है) जिस से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सचमुच आपने उस प्रसिद्ध मायावी पशुरूप (वृत्र) का माया से हनन किया (आप) अपने राज्य को प्रकाशित करते हुए (विराजमान हैं) ॥ ७ ॥

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८।

वितेवज्रासोअस्थिरन्नवतिन्ना-
व्या३अनु । महत्तइन्द्रवीर्यं बाह्वो-
स्तेबलंहित मर्चन्ननुस्वराज्यम् ।८

वि	वि +	–
ते	तव	तेरे
वज्रासः	वज्राः (जसोऽसुगागमः)	वज्र
अस्थिरन्	वि + अस्थिरन् प्रसृता अभवन् (व्यत्ययेनास्यरन्नादेशः	फैल गए हैं
१ नवतिम्	नवतिम्	नव्वे को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ नाव्याः	नावातार्य्याः (नदीः)	बडी (नदियों) को
अनु	अनुसृत्य	साथ साथ
महत्	महत्	बड़ा
ते	तव	तेरा
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
वीर्य्यम्	वीर्य्यम्	वीर्य्य
बाह्वोः	भुजयोः	दोनोंभुजाओं में
ते	तव	तेरी
बलम्	बलम्	बल
हितम्	निहितम्	ठैरा हुआ
अर्चन्	अनु + अर्चन् प्रकाशयन्	प्रकाशित करता हुआ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनु	+ अनु	–
स्वऽराज्यम्	स्वराज्यम्	अपनेराज्य को

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र ! तव वज्रा नवतिंनाव्याः (नदीः) अनुसृत्य प्रसृता (अभवन्) तव वीर्य्यं महत् (अस्ति) तव भुजयोर्बलं निहितम् (अस्ति त्वम्) स्वराज्यं प्रकाशयन् (वर्त्तसे) ॥ ८ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र ! आपके वज्र नव्वे बड़ी (नदियों) के साथ २ फैल गए हैं आपका वीर्य्य महान (है) आप की दोनोंभुजाओं में बल (है) (आप) अपने राज्य को प्रकाशित करते हुए (विराजमान हैं) ॥ ८ ॥

१ नव्वे बडी नदियों अर्थात अनेक जल जो धूलिकणरूप वृत्र ने आकाश में पकडे हुए थे और जिन को इन्द्र ने विद्युत द्वारा छुडाया था नव्वे एक कल्पित संख्या है ।

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८

सहस्रंसाकमर्चत परिष्टोभत-

विंशतिः । शतैकमन्वनोनवु रिन्द्राय-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मोद्यत मर्चन्ननुस्वराज्यम् । ९ ।

सहस्रम्	सहस्रम्	हजार
साकम्	सह	साथ
अर्चत	स्तुत	स्तुति करो
परि	परि+	–
स्तोभत	परि+स्तोभत, स्तोत्रमुच्चारयत	स्तोत्र उच्चारण करो
विंशतिः	विंशतिः	बीस
शता	शतानि (शेलोपः)	सैकड़ों ने
एनम्	एनम्	इस को
अनु	अनु+	–
अनोनवुः	अनु+अनोनवुः पुनःपुनःस्तुतवन्तः	बार २ स्तुति की है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्राय	इन्द्राय	इन्द्र के लिये
ब्रह्म	मन्त्ररूपास्तुतिः	मंत्र रूप स्तुति
उत्ऽयतम्	उन्नीतम्	ऊपर उठाई गई
अर्चन्	अनु+अर्चन् प्रकाशयन्	प्रकाशित करता हुआ
अनु	+अनु	–
स्वऽराज्यम्	स्वराज्यम्	अपने राज्य को

संस्कृतार्थः ।

हे (मनुष्याः ! यूयम्) सहस्रं सह (एवेन्द्रम्) स्तुत, विंशतिः (मिलित्वा) स्तोत्रमुच्चारयत, एनं शतानिपुनः पुनः स्तुतवन्तः अस्मै) इन्द्राय मन्त्र रूप स्तुति ध्वानः (ऋषिभिः) उन्नीतः (सः) स्वराज्य-प्रकाशयन् (वर्तते) ॥ ९ ॥

भाषार्थः ।

(हे मनुष्यो !) हजार इकट्ठे होकर इन्द्र की स्तुति करो बीस (इकट्ठे होकर) स्तोत्र उच्चारण करो इन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की सैंकड़ों ने बार बार स्तुति की है (इस) इन्द्र के लिये (ऋषियों ने) मंत्र रूप स्तुति की ध्वनि को ऊपर उठाया है (वह) अपने राज्य को प्रकाशित करते हुए (विराजमान हैं) ॥ ८ ॥

एकट्ठे मिल कर स्तुति करने से आत्मा रूपी इन्द्र का बल बहुत अधिक बढता है इस लिये बीसों सैंकड़ों और हज़ारों उपासकों को एकट्ठे होकर इन्द्र की स्तुति करनी चाहिये। जो कहते हैं कि आर्य्यों में सामाजिक प्रार्थना (congregtional prayer) नहीं थी, वे इस मंत्र के अर्थ को विचारें ॥

इन्द्रादेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८।

इन्द्रोवृत्रस्यतविषीं निरहन्त्स-
हसासहः । महत्तदस्यपौंस्यं वृत्रं
जघन्वाँअसृजदर्वन्ननुस्वराज्यम्
॥१०॥

इन्द्रः | इन्द्रः | इन्द्र ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृत्रस्य	वृत्रस्य	वृत्र के
तविषीम्	बलम्	बल को
निः	निः+	–
अहन्	निः+अहन् अपहृतवान्	हरण किया
सहसा	साहसेन	साहस से
सहः	साहसम्	साहस को
महत्	महत्	महान
तत्	तत्	वह
अस्य	अस्य	इस का
पौंस्यम्	बलकर्म	बल का काम
वृत्रम्	वृत्रम्	वृत्र को
जघन्वान्	हतवान्	हनन किया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

असृजत्	विसृष्टवान्	छोड़ा
अर्चन्	अनु+अर्चन् प्रकाशयन्	प्रकाशित करता हुआ
अनु	+अनु	–
स्वऽराज्यम्	स्वराज्यम्	अपने राज्य को

संस्कृतार्थः।

इन्द्रो वृत्रस्य बलमपहृतवान् (निज-) साहसेन (तत्कृतम्) साहसम् (च निराकृतवान्) अस्य तदमहद्बलकर्म (यदयम्)वृत्रंहतवान् (अपश्च) विसृष्टवान् (सः) स्वराज्यं प्रकाशयन् (वर्तते) ॥१०॥

भाषार्थः।

इन्द्रने वृत्र के बल को हरण किया (और अपने) साहस से (उसके) साहस को (हटा दिया) इस का यह महान बल कर्म है जो इस ने वृत्र को हनन किया। (और जलों को) छोड़ा (वह) अपने राज्य को प्रकाशित करते हुए (विराजमान हैं ॥१०॥

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः।८।८।८।८।८।

इमेचित्तवमन्यवे वेपेतेभियसा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मही । यदिन्द्रवज्रिन्नोजसा वृत्रं-
मरुत्वाँ अवधीरर्चन्ननुस्वराज्य-
म् ।११।

इमे०	इमे	ये दोनों
चित्	अपि	भी
तव	तव	तेरे
मन्यवे	क्रोधात् (पञ्चम्यर्थेचतुर्थी)	क्रोध से
वेपेते०	कम्पेते	कांपती हैं
भियसा	भीत्या	भय से
मही०	द्यावापृथिव्यौ (निघं०३।३०)	द्यौ (और) पृथिवी
यत्	यत्	जो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
वज्रि	हे वज्रिन् !	हे वज्र धारी
ओजसा	बलेन	बल से
वृत्रम्	वृत्रम्	वृत्र को
मरुत्वान्	मरुद्भिर्युक्तः	मरुतों से युक्त
अवधीः	हतवानसि	तूने हनन किया
अर्चन्	अनु+अर्चन् प्रकाशयन्	प्रकाशित करता हुआ
अनु	+अनु	–
स्वऽराज्यम्	स्वराज्यम्	अपने राज्य को

संस्कृतार्थः ।

हे वज्रिन् ! इन्द्र ! तव क्रोधादिमे द्यावापृथिव्यावपि भीत्या कम्पेते यन्मरुद्भिर्युक्तः (त्वम्) बलेन वृत्रं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हतवानसि, (त्वम्) स्वराज्यंप्रकाशयन् (वर्तसे) ।११।

भाषार्थः ।

हे वज्रधारी इन्द्र ! आपके क्रोध से ये दोनों द्यौ (और) पृथिवी भी डरती हुई कांपती हैं, जो मरुद् गण से युक्त (होकर) बल द्वारा आपने बृत्र का हनन किया, (आप) अपने राज्य को प्रकाशित करते हुए (विराजमान) हैं ॥ ११॥

१ जब बादल गरज कर बिजली कडकती है तब आकाश और पृथिवी कांपते सरीखे दीखते हैं और सब मनुष्य और पशु भय भीत होजाते हैं ॥

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८

नवेपसानतन्यते न्द्रंहचोवि-

बीभयत् । अभ्येनंवज्रआयसः सह-

स्रभृष्टिरायता ऽर्चन्ननुस्वराज्य-

म् ॥ १२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न	न	नहीं
वेपसा	कम्पनेन	कंपाने से
न	न	नहीं
तन्यता	गर्जनेन	गर्जना से
इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
वृत्रः	वृत्रः	वृत्र
वि	वि+	–
बीभयत्	वि+बीभयत् भीषितवान् (अडभावः)	डरा सका
अभि	अभि+	–
एनम्	एनम्	इस को
वज्रः	वज्रः	वज्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आयसः	अयोमयः	लोहे का
१ सहस्रऽ-भृष्टिः	सहस्र धारा युक्तः	सहस्रधाराओं से युक्त
आयत	अभि + आयत, पतितवान् (अयगतौ)	गिरा
अर्चन्	अनु + अर्चन् प्रकाशयन्	प्रकाशित करता हुआ
अनु	अनु +	–
स्वऽराज्यम्	स्वराज्यम्	अपने राज्य को

संस्कृतार्थः।

वृत्र इन्द्रं न कम्पनेन न (च) गर्जनेन भीषितवान् अस्य (वृत्रस्य) उपरि सहस्रधारायुक्तोऽयोमयोवज्रः पतितवान (इन्द्रः) स्वराज्यं प्रकाशयन् (वर्तते)।१२।

भाषार्थः।

वृत्र इन्द्र को न कंपान से (और) न गर्जनासे डरासका इस (वृत्र) के ऊपर सहस्रधारा से युक्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लोहे का वज्र गिरा (इन्द्र) अपने राज्य को प्रकाशित करते हुए (विराजमान हैं) ॥ १२ ॥

१ सहस्रधारावाला वज्र जैसे विजली के रूप से प्रतीत होता है ॥

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८

यद्वृत्रंतवचाशनिं वज्रेणसमयोधयः । अहिमिन्द्रजिघांसतो दिवितेबद्बधेशवोऽर्चन्ननुस्वराज्यम् ॥ १३ ॥

यत्	यदा	जब
वृत्रम्	वृत्रम्	वृत्र को
तव	तव	तेरे
च	च	और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अशनिम्	वज्रम्	वज्र को
वज्रेण	वज्रेण	वज्र से
सम्ऽअयोधयः	सम्यगयोधयः	खूब लड़ाया
अहिम्	वृत्रम्	वृत्र को
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
जिघांसतः	हन्तुमिच्छत	हनन करने की इच्छा करतेहुए के
दिवि	दिवि	द्युलोक में
ते	तव	तेरे
बद्बधे	दृढीबभूव	दृढहो गया
शवः	बलम्	बल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्चन्	अनु+अर्चन्	प्रकाशित करता हुआ
	प्रकाशयन्	
अनु	+अनु	–
स्वऽराज्यम्	स्वराज्यम्	अपने राज्य को

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र ! यदा (त्वम्) वृत्रम् (तेन सृष्टम्) वज्रं-च निज वज्रेण सम्यगयोधयः (तदा तम्) वृत्रं हन्तु-मिच्छतस्तव बलं दिवि दृढी बभूव (त्वम्) स्वराज्यं प्रकाशयन् (वर्त्तसे) ॥ १३ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र! जब आपने वृत्र को और (उससे छोड़े हुए) वज्र को अपने वज्र से खूब लड़ाया (तब उस) वृत्र को हनन करने की इच्छा करते हुए आप का बल द्युलोक में स्थिर होगया (आप) अपने राज्य को प्रकाश करते हुए (विराजमान हैं) ॥ १३ ॥

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८।

अभिष्टनेतेअद्रिवो यत्स्थाजग-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

च्चरेजते । त्वष्टाचित्तवमन्यव

इन्द्रवेविज्यतेभिया ऽर्चन्ननुस्वरा-

ज्यम् ॥१४॥

अभिऽस्तने	गर्जने	गर्जने पर
ते	तव	ते
अद्रिऽवः	हे वज्रिन् ! (यास्कः)	हे वज्र धारी
यत्	यत्	जो
स्थाः	स्थावरम् (तिष्ठतेःकिप्)	स्थावर
जगत्	जङ्गमम्	जंगम
च	च	और
रेजते	कम्पते (निघं०३।२८)	कांपता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वष्टा	त्वष्टा	त्वष्टा
चित्	अपि	भी
तव	तव	तेरे
मन्यवे	कोपात् (पञ्चम्यर्थेचतुर्थी)	क्रोध से
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
वेविज्यते	भृशंकम्पते (ओविजीभयचलनयोः)	अत्यन्त कांपता है
भिया	भीत्या	भय से
अर्चन्	अन+अर्चन्, प्रकाशयन्	प्रकाश करता हुआ
अनु	+अनु	–
स्वऽराज्यम्	स्वराज्यम्	अपने राज्य को

संस्कृतार्थः।

हे त्रिन्निन्द्र! तवगर्जने (सति) यत् स्थावरं जङ्गमंच(अस्ति तदुभयम्) कम्पते, त्वष्ठापि तव कोपा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्भीत्वा भृशंकम्पते (त्वम्) स्वराज्यं प्रकाशयन् (वर्त्तसे) ॥ १४ ॥

भाषार्थः ।

हे वज्रधारी इन्द्र ! आपके गर्जने पर स्थावर और जंगम (दोनों) कांपते हैं त्वष्टा भी आपके क्रोध से डर कर अत्यन्त कांपता है आप अपने राज्य को प्रकाशित करते हुए (विराजमान हैं) ॥ १४ ॥

१ त्वष्टा यद्यपि इन्द्र को भी रूप के देने वाले हैं परन्तु बल की शक्ति से सब शक्तियें कांपती हैं इस लिये त्वष्टा के कांपने में कोई आश्चर्य्य नहीं ॥

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८।

नहिनुयादधीमसीन्द्रंकोवीर्य्या-

परः । तस्मिन्नृम्णमुतक्रतुं देवाओ-

जांसिसंदध रचंन्ननुस्वराज्यम् ।१५।

नहि	नहि	नहीं
नु	खलु	सचमुच

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यात्	यावत् (वर्णलोपः)	जहां तक
अधिऽइमसि	अवगच्छामः (मसइकाराऽऽगमः)	हम जानते हैं
इन्द्रम्	इन्द्रात् (पञ्चम्यर्थेद्वितीया)	इन्द्र से
कः	कः (अपि)	कोई
वीर्य्या	वीर्य्ये (सुपामिति सप्तम्या डादेशः)	वीर्य्य में
परः	परः	बढ़ कर
तस्मिन्	तस्मिन्	उस में
नृम्णम्	पुंस्त्वम्	नर पन को
उत	अपिच	और भी
क्रतुम्	ज्ञानम्	ज्ञान को
देवाः	देवाः	देवताओं ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ओजांसि	बलानि	बलों को
सम्	सम्+	–
दधुः	सम्+दधुः,सम्यक् स्थापितवन्तः	भली प्रकार स्थापन किया है
अर्चन्	अनु+अर्चन् प्रकाशयन्	प्रकाशित करता हुआ
अनु	+अनु	–
स्वऽराज्यम्	स्वराज्यम्	अपने राज्य को

संस्कृतार्थः ।

यावत्खलु (वयम्) अवगच्छामो वीर्य्ये कः (अपि) इन्द्रात् परो न(अस्ति) तस्मिन्देवा पुंस्त्वं ज्ञानं बलानि च सम्यक्स्थापितवन्तः (सः) स्वराज्यं प्रकाशयन् (वर्त्तते) ॥ १५ ॥

भाषार्थः ।

सच मुच जहां तक हम जानते हैं कोई (भी वीर्य में इन्द्र से बढ़ कर नहीं है) देवताओं ने उसमें पुंस्त्व को ज्ञान को और बलोंको भली प्रकार स्थापन किया है (वह) अपने राज्य को प्रकाशित करते हुए (विराजमान हैं) ॥१५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८।

यामथर्वामनुष्पिता दध्यङ्धि-
यमत्नत। अस्मिन्ब्रह्माणिपूर्वथे न्द्र-
उक्थासमग्मता ऽर्चन्ननुस्वराज्य-
म् ॥ १६ ॥

याम्	याम्	जिस को
अथर्वा	अथर्वा	अथर्वा ने
मनुः	मनुः	मनु ने
पिता	पिता	पिता ने
दध्यङ्	दध्यङ्	दध्यङ् ने
धियम्	कर्म्म	कर्म्म को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अतनत	अतन्वत, चक्रः (तनुविस्तारे, विकरणस्यलुक्)	किया
तस्मिन्	तस्मिन्	उस में
ब्रह्माणि	(हवीरूपाणि) अन्नानि (निघं०२।२)	(हवि रूप) अन्न
पूर्वऽथा	यथापूर्वम् (इवार्थेथाल्प्रत्ययः)	पहिले की न्याईं
इन्द्रे	इन्द्रे	इन्द्र में
उक्था	शस्त्राणि (शेर्लोपः)	स्तोत्र
सम्	सम् +	–
अग्मत	सम्+अग्मत, समगच्छन्त	इकट्ठे हुए हैं
अर्चन्	अनु + अर्चन् प्रकाशयन्	प्रकाशित करता हुआ
अनु	+ अनु	–
स्वऽराज्यम्	स्वराज्यम्	अपने राज्य को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

यत्कर्म्माऽथर्वा पितामनुर्दध्यङ् (च) कृतवन्तः (तदनु) तस्मिन्निन्द्रे यथापूर्वम् (अस्मदीयानि हवीरूपाणि) अन्नानि स्तोत्राणि (च) समगच्छन्त [सः] स्वराज्यं प्रकाशयन् (वर्त्तते) ॥ १६ ॥

भाषार्थः ।

जो कर्म्म अथर्वा, पिता मनु [और] दध्यङ् ने किया [उस के पीछे] पहले की न्याईं (हमारे हवि रूप) अन्न [और] स्तोत्र उस इन्द्र में इकट्ठे हुए हैं [वह] अपने राज्यको प्रकाशित करते हुए (विराजमान हैं) ॥१॥

जिस प्रकार आर्य्य जाति के आदि ऋषि अथर्वा और उनके पुत्र दध्यङ् अग्निहोत्रआदि जो कर्म्म करते थे वे सब इन्द्रको प्राप्त होते थे इसी प्रकार हमारी स्तुति और हमारी हवियां यद्यपि अग्नि आदि अनेक देवताओं को दी जातीहैं परन्तु सब मिलकर इन्द्रको ही प्राप्त होती हैं । इसका कारण यह है कि आत्मा ही सब देवता है और सब यज्ञ और स्तुतियां अपनी आत्मा को ही बलवान बनाते हैं ।

इत्यशीतितमं सूक्तम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं०१ सू०८१

इन्द्रो देवता गोतम ऋषिः

विनियोग-यह सूक्त पृष्ठ्यषडह के पांचवें दिन निष्केवल्य शस्त्र में पढा जाता है (आ०सू०७।१२।१६)

पहले तीन मंत्र सत्र के २४ वें दिन के माध्यंदिन सवन में ब्राह्मणाच्छंसी के शस्त्र में विकल्प से स्तोत्रिय हैं और "मदेमदे हिनोददिः-" इस सातवें मन्त्र से नवें तक स्तोत्रियानुरूप हैं (आ० ७।४।३)

पहला मंत्र महाव्रत के निष्केवल्य शस्त्र में भी पढा जाता है (ऐ०आ०५)

जिस इन्द्र का हर्ष और बल स्तुतियों द्वारा बढाया गया है वह छोटे और बड़े युद्धों में हमारी रक्षा करें। वह अकेले सेना से युद्ध करने योग्य हैं और छोटे को बड़ा करने वाले हैं, वह उपासक को बहुत देते हैं क्योंकि उन का धन बहुत है। जब युद्ध होते हैं जिन में निडर की विजय होती है तब इन्द्र रथ में घोड़े जोड़ कर आते हैं वह किसी को मारते हैं और किसी को शत्रु का धन दिलाते हैं, हमें वह शत्रु का धन दिलावें। भयंकर इन्द्र युद्ध में जितनी इच्छा होती है उतना बल बढा लेते हैं और यश की कामना से शत्रुओं के नाश के लिये दोनों हाथों में लोहे का वज्र धारण करते हैं। इन्द्र ने अपनी सत्ता से अन्तरिक्ष को भरा हुआ है उस ने द्यौ में तारागण को स्थिर किया है उस जैसा न कोई हुआ है और न होगा वह सब से बढ कर महान हैं। वह उपासक को मनुष्यों से भोगने योग्य शत्रु के धन को देते हैं सो हमें देवें, वह बहुत धन वाले हैं हमें भी उस में भागी बनावें। सूधे इन्द्र जब २ मद युक्त होते हैं तब २ गौओं के झुंड के झुंड हमें दे देते हैं, वह दोनों हाथों से सैंकड़ों धनों को भरें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और हमारी बुद्धि को तीक्ष्ण करते हुए हम को धन दें। जब हम इकट्ठे होकर सोम को निचोडें तब इन्द्र धन और बल देने के निमित्त मद युक्त हों, हम इन्द्र को बहुत धन वाला जानतेहैं इस लिये अपनी कामनाओं को उन के समीप पहुंचाते हैं, अब वह हमारे रक्षक बनें। हम आर्य्यजन इन्द्र के लिये ही धनों को संचय करते हैं, जो केवल अपने स्वार्थ के लिये धन को जोड़ते हैं और किसी दूसरे को नहीं देते इन्द्र उन के धन को हरण करके हम को देवें॥

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८

इन्द्रोमदायवावृधे शवसेवृत्रहा-
नृभिः। तमिन्महत्स्वाजिषू तेमर्भे-
हवामहे सवाजेषुप्रनोविषत ॥ १ ॥

इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
मदाय	हर्षाय	हर्ष के लिये
ववृधे	वर्धितोबभूव (कर्मणिलिट)	बढाया गया
शवसे	बलाय	बल के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृत्रऽहा	वृत्रस्यहन्ता	वृत्र के हनन करने वाला
नृऽभिः	मनुष्यैः	मनुष्यों से
तम्	तम्	उस को
इत्	एव	ही
महत्ऽसु	महत्सु	बड़ों में
आजिषु	सङ्ग्रामेषु	युद्धों में
उत	अपिच	और भी
ईम्	(पूरणः)	–
अर्भे	अल्पे (युद्धे)	छोटे (युद्ध) में
हवामहे	आह्वयामः	हम बुलाते हैं
सः	सः	वह
वाजेषु	सङ्ग्रामेषु	युद्धों में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्र	प्र+	–
नः	अस्मान्	हम को
अविषत्	प्र + अविषत्, प्रकर्षेण रक्षेत् (अवरक्षणेलेट्यडागमे सिपि च सतीडागमः)	खूब रक्षा करे

संस्कृतार्थः ।

वृत्रस्यहन्ता (यः) इन्द्रो हर्षाय बलाय (च) मनुष्यैर्वर्धितो बभूव तमेव (वयम्) महत्सु सङ्ग्रामेष्वल्पे (संग्रामे) चाऽऽह्वयामः सोऽस्मान् (तेषु) सङ्ग्रामेषु प्रकर्षेण रक्षेत् । १ ।

भाषार्थः ।

वृत्र के हनन करने वाले (जो) इन्द्र हर्ष (और) बल के लिये मनुष्यों से बढ़ाये गए हैं, उन्हींको हम बड़े युद्धों में और छोटे युद्ध में बुलाते हैं वह (उन) युद्धों में हमारी खूब रक्षा करें ।

स्तुति से हर्ष और बल दोनों बढते हैं और दोनों विजय के कारण हैं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८

असिहिवीरसेन्यो ऽसिभूरिपरा-

दृदिः । असिदभ्रस्यचिद्वृधो यज-

मानायशिक्षसि सुन्वतेभूरितेवसु

॥२॥

असि	असि	तू है
हि	खलु	सचमुच
वीर	हे वीर !	हे वीर
१ सेन्यः	सेनार्हः (अर्हार्थेयत्)	सेना के योग्य
असि	असि	तू है
भूरि	प्रभूतस्य	बहुत के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पराऽददिः	आभिमुख्येन-दाता	सामने होकर देने वाला
असि	असि	तू है
दभ्रस्य	अल्पस्य	छोटे के
चित्	अपि	भी
हृधः	वर्धयिता (अन्तर्भावितण्यर्थः)	बढाने वाला
यजमानाय	यजमानाय	यजमान के ताईं
शिक्षसि	ददासि (निघं०३।२०)	तू देता है
सुन्वते	सोमाभिषवंकुर्वते	सोम निचोड़ने वाले के ताईं
भूरि	बहु	बहुत
ते	तव	तेरा
वसु	धनम	धन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे वीर! (त्वम्) खलु सेनार्होऽसि (त्वम्) विपुलस्य (धनस्य) आभिमुख्येन दाताऽसि (त्वम्) अल्पस्याऽपिवर्धयिताऽसि (त्वम्) सोमाभिषवं कुर्वतेयजमानाय (बहु) ददासि (यतः) तव धनं बहु (अस्ति) ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

हे बीर ! सचमुच आप सेनाके योग्य हो (आप) सामने होकर बहुत (धन) के देने वाले हो आप छोटे के भी बढाने वाले हो आप सोमनिचोडने वाले यजमान के ताईं (बहुत) देने वाले हो क्योंकि आप का धन बहुत (है) । २ ।

१ सेना के योग्य अर्थात अकेला सेना के साथ युद्ध करने योग्य ।

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८।

यदुदीरतआजयो धृष्णवेधीयतेधना । युक्ष्वामदच्युताहरी कंहनःकंवसौदधोऽस्माँइन्द्रवसौदधः ।३।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यत्	यदा	जब
उत्ऽईरते	उत्पद्यन्ते	उत्पन्न होते हैं
आजयः	सङ्ग्रामाः	युद्ध
धृष्णवे	प्रगल्भाय	निडर के ताईं
धीयते	दीयते	दिया जाता है
धना	धनम् (सुपामिति डादेशः)	धन
युध्व	योजय (अन्तर्भावितण्यर्थः)	जोड़ो
मदऽच्युता	मदस्य च्यावयितारौ (विभक्तेरात्वम्)	मद के टपकाने वालों को
हरी०	अश्वौ	दोनों घोडों को
कम्	कञ्चन	किसी का
हनः	हंसि (लडर्थेलङडभावः)	हनन करते हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कम्	कञ्चन	किसी को
वसौ	धने (लिङ्गव्यत्ययः)	धन में
दधः	स्थापयसि (लडर्थेलङ्यडभावः)	स्थापन करते हो
अस्मान्	अस्मान्	हम को
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
वसौ	धने (लिङ्गव्यत्ययः)	धन में
दधः	स्थापय (लोडर्थेलङ्यडभावः)	स्थापन करो

संस्कृतार्थः ।

यदा सङ्ग्रामा उत्पद्यन्ते (तदा) प्रगल्भाय धनं दीयते, हे इन्द्र! (त्वम्) मदस्य च्यावयितावश्वौ (रथे) योजय (त्वम्) कञ्चनहंसि कञ्चन धने स्थापयसि, अस्मान् धने स्थापय । ३ ।

भाषार्थः ।

जब युद्ध होते हैं (तब) निडर के ताईं धन दिया जाता है, हे इन्द्र ! आप मद के टपकाने वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दोनों घोड़ों को (रथ में) जोड़ो आप किसी को हनन करते हो किसी को धन में स्थापन करते हो, हम को धन में स्थापन करो ॥ ३ ॥

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८।

क्रत्वा महाँ अनुष्वधं भीम आवा-

वृधे शवः । श्रियऋष्व उपाकयो र्नि-

शिप्रो हरिवान्दधे हस्तयोर्वज्रमाय-

सम् ।४।

क्रत्वा	प्रज्ञया	बुद्धि से
महान्	महान्	महान्
अनऽस्वधम्	स्वेच्छानुकूलम्	अपनी इच्छा के अनुकूल
भीमः	भयङ्करः	भयंकर ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आ	आ+	–
ववृधे	आ+ववृधे,प्रवर्धितवान् (अन्तर्भावितण्यर्थः)	खूब बढाया
शवः	बलम्	बल को
श्रिये	यशसे	यश के लिये
ऋष्वः	महान् (निघं०३।३)	महान
उपाकयोः	समीपमानीतयोःसंश्लिष्टयोरित्यर्थः	जुडे हुओं में
नि	नि+	–
शिप्री	(दृढ-)हनुयुक्तः	(दृढ) जबडेवाला
हरिऽवान्	अश्वोपेतः	घोड़ों से युक्त ने
दृधे	नि+दधे, धारितवान्	पकड़ा
हस्तयोः	हस्तयोः	दोनों हाथों में
वज्रम्	वज्रम्	वज्र को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आयसम्	अयोमयम्	लोहमय को

संस्कृतार्थः ।

प्रज्ञया महान् भीमः (चेन्द्रः) स्वेच्छानुकूलं बलं प्रवर्धितवान् (दृढ) हनुयुक्तोऽश्वोपेतः (च) महान् (सः) यशोऽर्थं संश्लिष्टयोर्हस्तयोरयोमयं वज्रं धारितवान् ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

बुद्धि द्वारा महान (और) भयंकर(इन्द्र ने)अपनी इच्छा के अनुकूल बल को बढाया (और) घोडों से युक्त (दृढ़) जबड़े वाले (उस) महान ने यश के लिये जुडे हुए दोनों हाथों में लोहे के वज्र को पकड़ा ॥४॥

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८।

आपप्रौपार्थिवंरजो बद्बधेरोच-

नादिवि।नत्वावाँइन्द्रकश्चन नजा-

तोनजनिष्यते ऽतिविश्वंववक्षिथ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आ	आ+	—
पप्रौ	आ+पप्रौ,आपूरितवान्	चारों ओर से पूर्ण किया
१ पार्थिवम्	पृथिवीसम्बन्धिनम्	पृथिवीसंबंधी को
१ रजः	अन्तरिक्षम्	अन्तरिक्ष को
बद्बधे	दृढीकृतवान्	दृढ़ किया
रोचना	रोचमानानि (नक्षत्राणि) (शेर्लोपः)	तारा गण को
दिवि	द्युलोके	द्युलोक में
न	न	नहीं
त्वाऽवान्	त्वत्सदृशः	तेरे तुल्य
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
कः	कः	कोई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चन	अपि	भी
न	न	नहीं
जातः	उत्पन्नः (अभूत्)	उत्पन्न (हुआ है)
न	न	नहीं
जनिष्यते	उत्पत्स्यते	उत्पन्न होगा
अति	अति+	–
विश्वम्	सर्वम्	सब को
ववक्षिथ	अति+ववक्षिथ अतीत्यमहानभवः (ववक्षिथेतिमहन्नाम निघं०३।३)	तू बढकर महान हुआ है

संस्कृतार्थः ।

(इन्द्रः) पार्थिवमन्तरिक्षमापूरितवान् द्युलोके नक्षत्राणि (च) दृढीकृतवान् हे इन्द्र ! त्वत्सदृशःकोऽपि न(वर्त्तते)नोत्पन्नो न (च) उत्पत्स्यते (स त्वम्) सर्वमतीत्य महानभवः ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

(इन्द्र ने) पृथिवी सम्बन्धी अन्तरिक्ष को चारों ओर से पूर्ण किया है (और) द्युलोक में नक्षत्रों को दृढ किया है, हे इन्द्र! आप के तुल्य कोई भी नहीं (है) न उत्पन्न हुआ है (और) न होगा आप सब से बढकर महान हुए हैं ॥ ५ ॥

(१) पृथिवी संबंधी अन्तरिक्ष जिस में बादल रहते हैं।

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८।

यो अ॒र्य्यो मर्त॒भोजनं परा॒ददाति-

दा॒शुषे । इन्द्रो॒ अस्मभ्यं॑ शिक्षतु वि-

भजा॒भूरि॑ते॒ वसु॑ भक्षी॒यत॑ रा॒धसः॑ ॥६॥

यः	यः	जो
अ॒र्य्यः	स्वामी	स्वामी
मर्त॒ऽभोजनम्	मनुष्यैर्भोग्यम्	मनुष्यों से भोगने योग्य (पदार्थों) को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पराऽददाति	आभिमुख्येन ददाति	सामने होकर देता है
दाशुषे	(हविः)दत्तवते	(हवि) देने वाले के ताईं
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
अस्मभ्यम्	अस्मभ्यम्	हमारे ताईं
शिक्षतु	ददातु	देवे
वि	वि+	–
भज	वि+भज	बांटो
भूरि	बहु	बहुत
ते	तव	तेरा
वसु	धनम्	धन
भक्षीय	भागीभवानि भजसेवायांलिङ्शपभावसलोपाभावौछान्दसौ)	मैं भागी होऊं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तव	तव	तेरे
राधसः	धनस्य	धन का

संस्कृतार्थः ।

यःस्वामीन्द्रः (हविः) दत्तवते मनुष्यैर्भोग्यम् (पदार्थजातम्) आभिमुख्येन ददाति (सः)अस्मभ्यम् (अपि) ददातु (हे इन्द्र !) विभज, तवधनं बहु (अस्ति) तव धनस्य (अहमपि) भागीभवानि ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

जो स्वामी इन्द्र (हवि) देने वाले के ताईं मनुष्यों से भोगने योग्य (पदार्थों) को सामने होकर देते हैं वह हमारे ताईं (भी) देवें (हे इन्द्र!) बांटो आप का धन बहुत (है) आप के धन का मैं (भी) भागी बनूं ॥ ६ ॥

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८।

मदेमदेहिनोदद्धि यूथागवामृजक्रतुः । संगृभायपुरुशतो भयाहस्त्यावसु शिशीहिरायआभर ।७।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मदेऽमदे	मदे मदे	प्रत्येक मद में
हि	खलु	सचमुच
नः	अस्मभ्यम्	हमारे ताईं
ददिः	दाता	देने वाला
यूथा	यूथानाम् (सुपामितिविभक्तेरात्वम्)	समूहों का
गवाम्	गवाम्	गौओं के
ऋजुऽक्रतुः	सरलबुद्धिः	सरल बुद्धि वाला
सम्	सम्यक्	भली प्रकार
गृभाय	गृहाण (ग्रहउपादानेशायजादेशेकृतेहस्यभत्वम्)	ग्रहण करो
पुरु	पुरूणिबहूनीत्यर्थः (शेर्लोपः)	बहुत
शता	शतानि (शेर्लोपः)	सैकड़ों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उभया-हस्त्या	उभाभ्यांहस्ताभ्यां (सुपामितिविभक्तेर्डर्यादेशः,अन्येषामिति पूर्वपदस्यदीर्घत्वम्)	दोनों हाथों से
वसु	धनानि (विभक्तेर्लुक्)	धनों को
शिशीहि	तीक्ष्णीकुरु (शोतनूकरणेश्लुइछान्दसः)	पैनी करो
रायः	धनानि	धनों को
आ	आ+	–
भर	आ+भर,आहर (हस्यभत्वम्)	लाओ

संस्कृतार्थः।

सरलबुद्धिः (इन्दः) मदेमदे खल्वस्मभ्यं गोयूथानांदाता(अस्ति) (हे इन्द्रः ! त्वम्) उभाभ्यांहस्ताभ्यां बहूनि शतानि धनानि गृहाण (अस्मद् बुद्धिम्) तीक्ष्णीकुरु धनानि (च) आहर ॥ ७ ॥

भाषार्थः।

सचमुच सरलबुद्धि वाले(इन्द्र) प्रत्येक मद में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हमारे ताईं गौओंके यूथों को देते हैं (हे इन्द्र !) आप दोनों हाथों से बहुत सैंकड़ों धनों को ग्रहण करो (हमारीबुद्धि को) पैनाओ(और) धनों को लेआओ ॥७॥

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८।

मादयस्वसुतेसचा शवसेशूरराधसे। विद्माहित्वापुरूवसुमुपकामान्त्ससज्महे ऽथानोऽविताभव।८।

मादयस्व	मदयुक्तोभव (स्वार्थेणिच्)	तू मद से युक्त हो
सुते	निष्पीडिते (सति)	निचोड़े जाने पर
सचा	सह (भूत्वा)	साथ (होकर)
शवसे	बलाऽर्थम्	बल के लिये
शूर	हे शूर !	हे शूरवीर
राधसे	धनार्थम्	धन के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विद्म	जनीमः	हम जानते हैं
हि	खलु	सचमुच
त्वा	त्वाम्	तुझ को
पुरुऽवसुम्	बहुधनम्	बहुत धन वाले को
उप	समीपे	समीप
कामान्	कामान्	कामनाओं को
ससृज्महे	प्रेषयामः (आ०को०) (व्यत्ययेनश्लुःप्रत्ययः, आत्मनेपदञ्च)	हम भेजते हैं
अथ	इदानीम्	अब
नः	अस्माकम्	हमारा
अविता	रक्षिता	रक्षक
भव	भव	तूहो

संस्कृतार्थः ।

हे शूर! सह (भूत्वा सोमे) निष्पीडिते (सति त्वम्)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बलार्थं धनार्थम् (च) मदयुक्तोभव (वयम्)त्वां बहुधनं खलु जानीमः (अतस्तव) समीपे कामान् प्रेषयामः,इदानीमस्माकं रक्षिताभव ॥ ८ ॥

भाषार्थः

हे शूरवीर! इकट्ठे (होकर) (सोमके)निचोड़ेजाने पर आप बल (और) धन के लिये मद से युक्त होवें सचमुच हम आप को बहुत धन वाला जानते हैं (इस लिये आप के) समीप कामनाओं को भेजते हैं अब आप हमारे रक्षक बनें ॥ ८ ॥

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८।

एतेतइन्द्रजन्तवो विश्वंपुष्यन्तिवार्य्यम् । अन्तर्हिख्योजनानामर्य्योवेदोअदाशुषां तेषांनोवेदआभर । ९ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ एते	एते	ये
ते	तवार्थम्	तेरे लिये
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
१ जन्तवः	मनुष्याः	मनुष्य
विश्वम्	सर्वम्	सब को
पुष्यन्ति	वर्धयन्ति (अन्तर्भावितण्यर्थः)	बढ़ाते हैं
वार्य्यम्	वरणीयम् (वस्तुजातम)	वरने योग्य (पदार्थों) को
२ अन्तः	मध्ये (भूत्वा)	बीच में (होकर)
हि	खलु	सचमुच
२ ख्यः	प्रकथय (ख्याप्रकथनेलोडर्थे-लुङ्यडभावः)	प्रकट करो
जनानाम्	मनुष्याणाम्	मनुष्यों के
अर्य्यः	स्वामी	स्वामी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वेदः	धनम्	धन को
अदाशुषाम्	अदातॄणाम्	न देने वालों के
तेषाम्	तेषाम्	उन के
नः	अस्मभ्यम्	हमारे ताईं
वेदः	धनम्	धन को
आ	आ+	–
भर	आ+भर,आहर (ह्रस्यमत्वम्)	लाओ

संस्कृतार्थः।

हे इन्द्र ! एते (आर्य्य-) मनुष्याः सर्वं वरणीयम् (वस्तुजातम्) तवार्थं वर्धयन्ति, स्वामी (त्वम्) मध्ये खलु(वर्तमानः सन्)अदातॄणां जनानां धनं प्रख्यापय, तेषां धनम् (च) अस्मभ्यमाहर ॥ ९ ॥

भाषार्थः।

हे इन्द्र ! ये (आर्य्य) मनुष्य संपूर्ण वरने योग्य (पदार्थों) को आप के लिये बढ़ाते हैं, सचमुच बीच में (रहते हुए) स्वामी आप न देनेवाले मनुष्यों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धन को प्रकट करो (और) उनके धनको हमारे लिये लाओ ॥ ९ ॥

(१) आर्य्य जन इन्द्र के लिये धनों को बढाते हैं अर्थात उस के कामों में धन को व्यय करते हैं केवल अपने स्वार्थ के लिये नहीं जोड़ते।

(२) इन्द्र सब के बीच में हैं इसलिये स्वार्थी के धन को भी जानते हैं वह उस छिपाए हुए धन को प्रकट करें और हमें लाकर देवें।

इत्येकाशीतितमं सूक्तम्।

ऋ०मं० १ सू० ८२।

इन्द्रोदेवता गौतमऋषिः

विनियोग—प्रथम, तृतीय और चतुर्थ मंत्र षोडशी यज्ञ के तृतीय सवन में षोडशी शस्त्र में पढे जाते हैं (आ० सू० ६।२।४)

द्वितीय और तृतीय मंत्र महापितृयज्ञ में आहवनीय के उपस्थान में पढे जाते हैं (श० ब्रा० २।६।१।३८)

सूक्त का संक्षिप्त भाव।

हे इन्द्र! आप हमारी विनय को सुनो, पूर्व से विपरीत भाव को न रक्खो, आपने हमें बाणो का दान दिया है और स्तुति की कामना भी करते हो, फिर पूर्व की न्याईं हमारे स्तोत्र सुनने वर्षों नहीं आते, अब शीघ्र रथ में घोड़े जोड़ कर आओ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हमारे ऋत्विज सोम पान करके आनन्द से सिर हिला चुके हैं, और ऋषि लोग अति नवीन स्तोत्रों से आप की स्तुति कर चुके हैं, इसलिये शीघ्र रथ में घोड़े जोड़ कर आओ। हे इन्द्र ! हम आप दयालु को प्रणाम करते हैं, हम आप भक्तों की स्तुति को सुन कर रथ को धन से पूर्ण करके शीघ्र आओ, जो इन्द्र हमारे धाना युक्त सोमसे भरे पात्र को ताक रहे हैं, वह अवश्य कामनाओं के पूर्ण करने वाले रथको हमारी ओर फेरेंगे। हे इन्द्र ! रथ में दाईं और बाईं ओर के घोड़ों को जोड़ कर हमारे सोम जनित मद से युक्त हुए हुए आप अपनी प्यारी पत्नी की ओर पधारें, मैं आप के घोड़ों को स्तोत्र द्वारा रथमें जोड़ता हूं, आप रासों को पकड़ें और पूषा से युक्त हुए २ पत्नी के सहित हर्षित होवें।

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८।

उपोषुशृणुहीगिरो मघवन्मातथाइव । यदानःसूनृतावतः करआदर्थयासदिद्योजान्विन्द्रतेहरी ।१।

उपो०	समीपे (उप,सामीप्ये,उहतिपद पूरणः)	समीप
सु	सुष्ठु	भलीप्रकार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शृणुहि	शृणु (हलुगभावश्छान्दसः)	सुनो
गिरः	स्तुतीः	स्तुतियों को
मघऽवन्	हे धनवन्!	हे धनवाले
मा	मा	मत
अतथाःऽइव	पूर्वतोविपरीतइव (तथेवाऽऽचरतीतितथाति, अस्मात्क्विप्, तथानेरप्रत्यय.)	पूर्व काल की न्याईं न होने वाला
यदा	यदा	जब
नः	अस्मान्	हम को
सूनृताऽवतः	प्रियसत्यात्मिकयावाचायुक्तान्	प्यारी (और) सच्ची बाणी वालों को
करः	अकार्षीः (लुङिच्यत्ययेनशपिसत्यडभावः)	किया है
आत्	अपिच (आ०को०)	और भी
अर्थयासे	वाञ्छसि (लेटयाडागमः)	चाहते हो
इत्	एव	ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

योज	योजय (णेर्लोपः)	जोड़ो
नु	क्षिप्रम्	शीघ्र
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
ते	तव	तेरे
हरी०	अश्वौ	दोनों घोड़ों को

संस्कृतार्थः ।

हे धनवन् ! (त्वम्) समीपम् (आगत्याऽस्मत्कृताः) स्तुतीः सुष्ठु शृणु पूर्वत विपरीत इव मा (भव) यदा (त्वम्)अस्मान् प्रियसत्यात्मिकया वाचा युक्तानकार्षी-रपिच(स्तुती) वाञ्छस्येव, हे इन्द्र ! तवाश्वौ (रथे) क्षिप्रं योजय ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

हे धनवाले ! आप समीप आकर (हमारी) स्तुतियों को भली प्रकार सुनें जैसे आप पूर्वकाल में थे उससे विपरीत मत (होवें) जब आपने हम को प्यारी (और) सच्ची वाणी से युक्त किया है और (स्तुतियों को) चाहते भी हो, हे इन्द्र! शीघ्र, अपने दोनों घोड़ों को (रथ में) जोड़ो ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूर्वकाल में अर्थात हमारे प्राचीन पुरुषाओं के समय में जैसे मित्रभाव रखतेथे अब उससे विपरीत भाव को न रक्खो, क्योंकि आपने हम को स्तुति के योग्य वाणी दी है और आप स्तुति को चाहते भी हो फिर मित्रभाव छोड़नेका कोई हेतु नहीं होना चाहिये।

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८।

अपा॒न्नमी॑मदन्त॒ह्य व॑प्रि॒याअ॑-

धू॒षत। अस्तो॑षत॒स्वभा॑ नवो॒विप्रा॒-

नवि॑ष्ठयाम॒ती योजा॒न्विन्द्रते॒हरी॑

।२।

अपान्	भुक्तवन्तः (अदेर्लुङ्घस्लादेशः)	भक्षण किया है
अमीमदन्त	हर्षिता अभूवन्	हर्षित हुए हैं
हि	खलु	सचमुच
अव	अव+	–
प्रियाः	प्रियाः	प्यारे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अधूषत	अव+अधूषत संचालितवन्तः	हिलाया है
अस्तोषत	स्तुतवन्तः	स्तुति की है
स्वऽभानवः	स्वतोदीप्तिमन्तः	स्वयंदीप्ति वाले
विप्राः	ऋषयः	ऋषियों ने
नविष्ठया	अतिनवीनया	अत्यन्त नवीन से
मती	मत्या, स्तोत्रेण	स्तोत्र से
योज	योजय (णेर्लोपः)	जोड़ो
नु	क्षिप्रम्	शीघ्र
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
ते	तव	तेरे
हरी०	अश्वौ	दोनों घोड़ों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

(अस्मत्) प्रियाः (ऋत्विजः सोमम्) भक्षितवन्तः (भुक्त्वा) हर्षिता अभूवन् (हर्षेण च) (शिरांसि) खलु संचालितवन्तः, स्वतो दीप्तिमन्तऋषयः (च) अति नवीनेन स्तोत्रेण स्तुतिं कृतवन्तः हे इन्द्र! (इदानीं रथे) तवाश्वौ क्षिप्रंयोजय ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

(हमारे) प्यारे (ऋत्विजोंने सोम को) भक्षण कर लिया है, (भक्षण करके) हर्षित हुए हैं (और हर्ष से) सचमुच(सिरों को) हिलाया है, स्वयं दीप्ति वाले ऋषियों ने अत्यन्त नवीन स्तोत्र से स्तुति की है, हे इन्द्र! (अब रथ में) अपने दोनों घोड़ों को शीघ्र जोड़ो ॥ २ ॥

(१) स्वयं दीप्तिमान ऋषि अर्थात जो परमात्मा की प्रेरणा से स्वयं प्रकाशित होकर नवीन स्तोत्रों के द्रष्टा और वक्ता हुए हैं।

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८।

सुसन्दृशंत्वावयं मघवन्वन्दिषीमहि । प्रनूनंपूर्णवन्धुरः स्तुतोया-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिवशाँअनु योजान्विन्द्रतेहरी।३।

सुऽसन्दृशम्	अनुग्रहदृष्टचा द्रष्टारम्	कृपा दृष्टि से देखने वाले को
त्वा	त्वाम्	तुझ को
वयम्	वयम्	हम
मघऽवन्	हे धनवन् !	हे धन वाले
वन्दिषीमहि	प्रणमामः (लडर्थेलुङ्)	प्रणाम करते हैं
प्र	प्र+	–
ननम्	अवश्यम्	अवश्य
पूर्णाऽवन्धुरः	पूरितेनरथेनयुक्तः (सा०भा०)	भरे हुए रथसे युक्त
स्तुतः	स्तुतः	स्तुति किया हुआ
याहि	प्र+याहि प्राप्नुहि	प्राप्त हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वशान	कामयमानान् (वशकान्तौ)	कामना करने वालों को
अनु	प्रति	की ओर
योज	योजय (णेर्लोपः)	जोड़ो
नु	क्षिप्रम्	शीघ्र
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
ते	तव	तेरे
हरी०	अश्वौ	दोनों घोडों को

संस्कृतार्थः ।

हे मघवन् ! वयमनुग्रह दृष्टया द्रष्टारं त्वां प्रणमामः स्तुतः (त्वम्) (धनैः) पूरितेन रथेन युक्तः (सन्) कामयमानान् (अस्मान्) प्रत्यवश्यं प्राप्नुहि हे इन्द्र ! शीघ्रं तवाऽश्वौ (रथे) योजय ।३।

भाषार्थः ।

हे धनवाले ! कृपा दृष्टि से देखने वाले आप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को हम प्रणाम करते हैं, स्तुति किये हुए आप(धनों से) भरे हुए रथ से युक्त (होकर हम) कामना करने वालों की ओर अवश्य प्राप्त हों, हे इन्द्र! आप शीघ्र अपने दोनों घोड़ों को (रथ में) जोड़ें ॥३॥

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८।

सघातंवृषणंरथ मधितिष्ठातिगोविदम् । यःपात्रंहारियोजनं पूर्णमिन्द्रचिकेतति योजान्विन्द्रतेहरी ।४।

सः	सः	वह
घ	खलु	सचमुच
तम्	तम्	उस को
वृषणम्	(कामानाम्) वर्षितारम्	(कामनाओं को) बरसाने वाले को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रथम्	रथम्	रथ को
अधि	अधि+	–
तिष्ठाति	अधि+तिष्ठाति, आरोक्ष्यति (लेट्याडागमः)	चढेगा
गोऽविदम्	गवांप्रापयितारम्	गौओं के प्राप्त कराने वाले को
यः	यः	जो
पात्रम्	पात्रम्	पात्र को
हारियोजनम्	धानामिश्रित-सोमयुक्तम् (सा०भा०)	धानियों से मिले हुए सोम से युक्त को
पूर्णम्	पूर्णम्	भरे हुए को
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
चिकेतति	चिन्तयति (लेट्यडागमःशपःश्लु-श्च)	चिन्तन करता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

योज	योजय (णेर्लोपः)	जोड़ो
नु	क्षिप्रम्	शीघ्र
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
ते	तव	तेरे
हरी०	अश्वौ	दोनों घोड़ों को

संस्कृतार्थः ।

सः (कामानाम्) वर्षितारं गवांप्रापयितारम् (च) तं रथमारोक्ष्यति खलु, यो धानामिश्रित-सोमेन पूर्णपात्रं चिन्तयति, हे इन्द्र! तवाऽश्वौ क्षिप्रम् (रथे) योजय ।

भाषार्थः ।

वह (कामनाओं के) बरसाने वाले (और) गौओं को प्राप्त कराने वाले सचमुच उस रथ पर अवश्य चढेंगे जो धानियों से मिले हुए सोम से भरे पात्र का चिन्तन कर रहे हैं, हे इन्द्र! अपने दोनों घोड़ों को शीघ्र (रथ में) जोड़ो ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः ।८।८।८।८।८।

युक्तस्ते अस्तु दक्षिण उत सव्यः

शतक्रतो । तेन जायामुप प्रियां मन्दा-

नो याह्यन्धसो योजान्विन्द्र ते हरी

।५।

युक्तः	युक्तः	जुता हुआ
ते	तव	तेरा
अस्तु	अस्तु	हो
दक्षिणः	दक्षिणः	दहना
उत	अपिच	और भी
सव्यः	वामः	बाँयाँ
शतऽक्रतो०	हे बहुबल!	हे बहुत बल वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तेन	तेन	उस से
जायाम्	जायाम्	पत्नी को
उप	प्रति	की ओर
१ प्रियाम्	प्रियाम्	प्यारी को
मन्दानः	मदयुक्तःसन्	मदसे युक्त हुआ २
१ याहि	गच्छ	जाओ
अन्धसः	सोमेन (तृतीयार्थेषष्ठी)	सोम से
योज	योजय (णेर्लोपः)	जोड़ो
नु	क्षिप्रम्	शीघ्र
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
ते	तव	तेरे
हरी०	अश्वौ	दोनों घोड़ों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे बहुबलेन्द्र ! तव (रथस्य) दक्षिण- (पार्श्व-स्थोऽश्वः) युक्तोऽस्तु वाम-(पार्श्वस्थः) अपि (युक्तोऽस्तु) सोमेन मदयुक्तः (त्वम्) तेन (रथेन) प्रियां जायां प्रति गच्छ (इदानीम्) तवाऽश्वौ क्षिप्रम् (रथे) योजय ।५।

भाषार्थः ।

हे बहुत बल वाले इन्द्र ! आप के (रथ के) दहिनी (ओर) का (घोड़ा) जुड़ा हुआ हो और बाईं (ओर) का भी (जुड़ा हुआ हो) सोम से मद युक्त हुए २ आप उस (रथ) से प्यारी पत्नी के प्रति जावें, (अब) अपने दोनों घोड़ों को शीघ्र (रथ) में जोड़ें ॥ ५ ॥

(१) प्यारी पत्नी की ओर जावें अर्थात हमारे सोम से तृप्त होकर अपने घर को पधारें ।

इन्द्रोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२।१२।

युनज्मिते ब्रह्मणा केशिना हरी उप-

प्रयाहि दधिषे गभस्त्योः । उत्त्वा-

सुतासो रभसा अमन्दिषुः पूषण्वा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न्वजिन्त्समुपत्न्याऽमदः । ६ ।

युनज्मि	योजयामि	मैं जोडता हूं
ते	तव	तेरे
१ ब्रह्मणा	स्तोत्रेण	स्तोत्र के द्वारा
केशिना	केशिनौ ('सुपामितिविभक्तेरात्वम्')	बालों वालों को
हरी०	अश्वौ	दोनों घोड़ो को
उप	उप+	–
प्र	प्र+	–
याहि	उप+प्र+याहि	जाओ
दधिषे	धारयस्व (लोडर्थेलिट्)	धारण करो
गभस्त्योः	हस्तयोः	दोनों हाथों में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्	उत् +	–
त्वा	त्वान्	तुझ को
सुतासः	निष्पीडिताः (सोमाः) (जसोऽसुगागमः)	निचोड़े हुए (सोमों) ने
रभसाः	तीव्राः	तीखे
अमन्दिषुः	उत्+अमन्दिषुः, अत्यन्तंमदयुक्त-मकार्षुः	अत्यन्त मद से युक्त किया है
पूषण्वान्	पूष्णायुक्तः	पूषा से युक्त हुए २
वज्रिन्	हे वज्रिन्!	हे वज्र धारी
सम्	सम्यक्	भली प्रकार
ऊम् ०	(पूरणः)	–
पत्न्या	पत्न्यासह	पत्नी के साथ
मदः	हर्षितोभव (मदीहर्षे:लोडर्थेलङ्)	हर्षित हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे वज्रिन् ! (अहम्) केशिनौ तवाऽश्वौ स्तोत्रेण (रथे) योजयामि (तेन त्वम्) प्रयाहि हस्तयोः (रश्मींश्च) धारयस्व, निष्पीडितास्तीव्राः (सोमाः) त्वामत्यन्तं मदयुक्तं कृतवन्तः पूष्णायुक्तः (त्वम्) पत्न्यासह सम्यग् हर्षितोभव ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

हे वज्रधारी! मैं बालों वाले आपके दोनों घोड़ों को स्तोत्र के द्वारा (रथ में) जोड़ता हूं (उस से) आप जावें, दोनों हाथों में (रासों को) धारण करें, निचोड़े हुए तीखे (सोमों) ने आपको मद से युक्त किया है, पूषा से युक्त हुए २ आप पत्नी के साथ हर्षित होवें ॥ ६ ॥

(१) स्तोत्र से घोड़ों को जोड़ना इस बात को सूचन करता है कि इन्द्र के रथ, घोड़े, पत्नी इत्यादि सब स्तोत्र जनित हैं और इन्द्र की सत्ता और आगमन को मन में स्थिर करने के निमित्त कथन किये गए हैं ।

(२) पूषा से युक्त होना पत्नीके सम्बन्ध से कहा गया है, पूषा देव पत्नियोंके लाने वाले हैं ॥

इतिद्वाशीतितमं सूक्तम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं०१ सू० ८३

इन्द्रोदेवता गौतमऋषिः

विनियोग—यह सूक्त अतिरात्र यज्ञ के तृतीय पर्याय में ब्राह्मणाच्छंसी के शस्त्र में पढा जाता है (आ०सू० ६।४।९)

दूसरा मंत्र अपोनप्त्रीय कर्म में होता के चमस में जल भरने पर पढ़ा जाता है (आ० ५।१।१३)

तीसरा मंत्र हविर्धान शकट के चलाते समय पढा जाता है (आ० ४।९।४) और प्रवर्ग्य इष्टि में ऋगावान के स्तवन में भी पढा जाता है (आ० ४।६।३)

जिस मनुष्य की इन्द्र रक्षा करते हैं वह गौ घोड़े आदि धन में सब से अग्रगण्य होता है और उस के पास सब प्रकार के धन आकर इस तरह प्राप्त होते हैं जैसे जल चारों ओर से बह कर समुद्र को प्राप्त होते हैं। जो देवताओं से प्रेम रखता है और जो स्तुतिप्रिय है उस को देवता सुमार्ग से चलाते हैं और उस से ऐसी प्रीति करते हैं जैसे वर वधू से। जो स्त्री पुरुष सुख लेकर इन्द्र की पूजा करते हैं उन का वचन प्रशंसा के योग्य होता है, वह पुरुष बिना यत्न के ही नियम के अनुकूल चलता है और उस का कभी अमंगल नहीं होता। जब अङ्गिराओं, अथर्वा और उशना कवि ने अग्नि को प्रदीप्त करके देवताओं के लिये यज्ञ किया तब लंबी रात्रि के पीछे सूर्य्यका प्रकाश आर्य्य जाति को पहुंचा और उस के द्वारा उन्हों ने गौ घोड़े आदि सब धनों को प्राप्त किया। जहां यज्ञआदि शुभ कर्म के लिये कुशा काटी जाती है, अथवा उच्च स्वर से वेद के स्तोत्र उच्चारण किये जाते हैं, अथवा सोम कूटने का पत्थर बजता है, इन में से किसी एक स्थान में इन्द्र रक्षा करते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्र देवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२।

अश्वावतिप्रथमोगोषुगच्छति

सुप्रावीरिन्द्रमर्त्यस्तवोतिभिः । त-

मित्पृणक्षिवसुनाभवीयसा सिन्धु-

मापोयथाभितोविचेतसः । १ ।

अश्वऽवति	अश्वयुक्ते (धने)	घोड़ों से युक्त-(धन) में
प्रथमः	प्रथमः (सन्)	मुख्य हुआ २
गोषु	गो-(सम्बन्धिषु धनेषु)	गौओं (संबंधी-धनों) में
गच्छति	चरति	विचरता है
सुप्रऽअवीः	सुष्ठुप्ररक्षितः (अवतेरीकारप्रत्ययः)	भली प्रकार रक्षा किया हुआ
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मर्त्यः	मनुष्यः	मनुष्य
तव	तव	तेरी
ऊतिऽभिः	रक्षाभिः	रक्षाओं से
तम्	तम्	उस को
इत्	एव	ही
पृणाक्षि	संयोजयसि (पृचीसम्पर्के)	संयुक्त करते हो
वसुना	धनेन	धन के साथ
भवीयसा	बहुतरेण (बहुशब्दस्यभूभावे-सतीकारलोपाभाव इछान्दसः)	बहुत अधिक से
सिन्धुम्	समुद्रम्	समुद्र को
आपः	आपः	जल
यथा	यथा	जैसे
अभितः	सर्वतः	सब ओर से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विऽचेतसः	विशिष्ट चेतना युक्ताः	विशेष चेतना से युक्त

संस्कृतार्थः।

हे इन्द्र ! (यः) मनुष्यस्तवरक्षाभिः सुष्ठु प्ररक्षितः (भवति सः) अश्वयुक्ते (धने) गोसम्बन्धिषु (च धनेषु) प्रथमः (भूत्वा) चरति, तमेव (त्वम्) बहुतरेण धनेन सह संयोजयसि यथा विशिष्ट चेतना युक्ताआपः सर्वतः समुद्रम्(आत्मना संयोजयन्ति)।१।

भाषार्थः।

हे इन्द्र ! (जो) मनुष्य आप की रक्षाओं से भली प्रकार रक्षित (होता है वह) घोड़े (और)गौओं से युक्त (धनों) में मुखिया (होकर) विचरता है, उसी को आप बहुत अधिक धन से संयुक्त करते हैं जैसे विशेष चेतना से युक्त जल सब ओर से समुद्र (के साथ संयुक्त होते हैं) ॥ १ ॥

जैसे जल, अत्यन्त चेतनावान पुरुष की न्याईं रस्ता न भूल कर सब ओर से समुद्र को ही प्राप्त होते हैं वैसे ही और मनुष्यों को छोड़ कर, इन्द्र से रक्षित मनुष्य को ही सब ओर से धन आकर प्राप्त होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२।

आपोनदेवीरुपयन्तिहोत्रियं म-

वःपश्यन्तिविततंयथारजः । प्राचै-

र्देवासःप्रणयन्तिदेवयुं ब्रह्मप्रियंजो-

षयन्तेवराइव । २ ।

१ आपः	आपः	जल
न	इव	की न्याईं
देवीः	द्योतमानाः (पूर्वसवर्णदीर्घः)	प्रकाश मान
उप	उप +	—
१ यन्ति	उप+यन्ति, प्राप्नुवन्ति	प्राप्त होते हैं
होत्रियम्	होतृसम्बन्धि (चमसम्)	होता के (चमस पात्र) को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ अवः	अधस्तात् (अव्ययम्)	नीचे की ओर
पश्यन्ति	पश्यन्ति	देखते हैं
२ विऽततम्	विस्तीर्णम्	फैला हुआ
यथा	यथा	जैसे
२ रजः	अन्तरिक्षम्	अन्तरिक्ष
२ प्राचैः	प्रकृष्टगमनैः (प्रपूर्वादञ्चतेर्भावे कः प्रत्ययो नलोपश्च)	उत्तम मार्गों से
देवासः	देवाः (जसोऽसुगागमः)	देवता
प्र	प्र+	—
२ नयन्ति	प्र+नयन्ति	भली प्रकार ले जाते हैं
२ देवऽयुम्	देवान्कामयमानम्	देवताओंकी कामना करते हुए को
ब्रह्मऽप्रियम्	स्तोत्रप्रियम्	स्तोत्र को प्यार करने वाले को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ जोषयन्ते	प्रीयन्ते (स्वात्मनः प्रयोज्यत्वाद् हेतुमतिणिच्)	प्रीति करते हैं
२ वराऽइव	वराइव	वरों की न्याईं

संस्कृतार्थः

देवाः स्तोत्रप्रियं देवान्कामयमानम् (यजमानम्) होतुः (चमसपात्रम्) द्योतमाना आप इव प्राप्नुवन्ति, विस्तीर्णमन्तरिक्षमिव (च) अधस्तात्पश्यन्ति (तएनम्) उत्तम मार्गैः प्रणयन्ति वराइव (च) प्रीयन्ते ॥२॥

भाषार्थः।

देवता स्तोत्र को प्यार करने वाले, देव भक्त (यजमान) को ऐसे प्राप्त होते हैं जैसे होता के (चमसपात्र को) प्रकाशमान जल, (और) विस्तार वाले अन्तरिक्ष की न्याईं नीचे की ओर देखते हैं (वे उसको) उत्तम मार्गों से ले जाते हैं (और) वरों की न्याईं प्रीति करते हैं ॥ २ ॥

(१) जैसे होता के चमस पात्र में रखे हुए जल की सत्ता में किसी को सन्देह नहीं होता, ऐसे ही स्तोत्र प्रिय देवभक्त यजमान को देवता अवश्य प्राप्त होते हैं उन के दृष्टि गोचर न होने से उन की सत्ता में सन्देह नहीं करना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) देवता ऊपर से यजमान को ऐसे देखते हैं जैसे अन्तरिक्ष पृथिवी को देखता है, वे उस को सुमार्ग से लेचलते हैं और उस में ऐसी प्रीति करते हैं जैसे स्वयंवर में इकट्ठे हुए २ बहुत से वर एक स्त्री में प्रीति करते हैं ॥

इन्द्रोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२।

अधिद्वयोरदधाउक्थ्यं१वचो यतस्रुचामिथुनायासपर्यतः । असंयत्तोव्रतेतेक्षेतिपुष्यति भद्राशक्तिर्यजमानायसुन्वते ॥ ३ ॥

अधि	अधि+	-
द्वयोः	द्वयोः	दोनों में
अदधाः	अधि+अदधाः, निहितवानसि	तूने स्थापन किया है
उक्थ्यम	प्रशस्यम् (निघं०३।८)	प्रशसनीय को
वचः	वचः	वचन को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ यतऽस्रुचा	यते (हस्तेन) धृते स्रुचौयाभ्यांतौ (सुपामितिविभक्तेरात्वम्)	जिन्होंने (हाथ)में स्रुचों को पकड़ा है
मिथुना	स्त्रीपुरुषौ	स्त्री (और) पुरुष
या	यौ " "	जो दोनों
सपर्य्यतः	पूजयतः (सपर पूजायाम्)	पूजन करते हैं
२ असमऽयत्तः	अतियत्नरहितः	बहुत यत्न से रहित
२ व्रते	व्रते	नियम में
ते	तव	तेरे
२ क्षेति	निवसति (क्षिनिवासे)	निवास करता है
पुष्यति	पुष्टोभवति	पुष्ट होताहै
२ भद्रा	कल्याणरूपा	कल्याण रूप
२ शक्तिः	शक्तिः	शक्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यजमानाय सुन्वते	यजमानाय (सोमस्य) अभिषवं कुर्वते	यजमानके ताईं (सोम) निचोड़ने वाले के ताईं

संस्कृतार्थः ।

(हे इन्द्र ! त्वं तयोः) द्वयोः प्रशस्यंवचो निहितवानसि यौ स्त्रीपुरुषौ धृतस्रुचौ (सन्तौ) (त्वाम्) पूजयतः (स पुरुषः) अतियत्न रहितः (अपि) त्वदीये व्रत निवसति पुष्टः (च) भवति, (सोमस्य) अभिषवं कुर्वते (तस्मै) यजमानाय कल्याण रूपा शक्तिः (प्राप्नोति) ॥ ३ ॥

भाषार्थः ।

(हे इन्द्र !) आपने (उन) दोनों में प्रशंसा योग्य वचन को स्थापन किया है जो स्त्री पुरुष स्रुच ले कर (आप का) पूजन करते हैं वह यजमान) बहुत प्रयत्न के बिना (भी) आप के नियम में रहता है (और) पुष्ट होता है, (सोम) निचोड़ने वाले (उस) यजमान के ताईं कल्याण रूप शक्ति (प्राप्त होती है ।३।

(१) जो स्त्री और पुरुष स्रुच ले कर आहुति द्वारा इन्द्र का पूजन करते हैं उन में इन्द्र ने प्रशंसा योग्य वचन को स्थापन किया है अर्थात उन की वाणी वा लेख सदा प्रशंसा के योग्य होता है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) उस यजमान के लिये इन्द्र के व्रत अर्थात ऋत पर चलना स्वाभाविक जैसा होजाताहै उस को बहुत यत्न नहीं करना पड़ता।

(३) सोम निचोड़न वाले को कल्याणरूप शक्ति प्राप्त होती है जिस से वह सदा अमंगल को नाश करके मंगल का सेवन करता है॥

इन्द्रादेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२

आदङ्गिराःप्रथमंदधिरेवय इद्वा-

ऽग्नयःशम्यायेसुकृत्यया। सर्वंपणेः

समविन्दन्तभोजनं मश्वावन्तंगो-

मन्तमापशुंनरः॥ ४॥

आत्	अनन्तरम्	(इस के)अनन्तर
अङ्गिराः	अङ्गिरसः (सुपामितिजस:सुः)	अंगिराओं ने
प्रथमम्	पूर्वम्	पहिले
दधिरे	सम्पादितवन्तः	संपादन किया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वयः	(हवीरूपम्) अन्नम्	(हविरूप)अन्नको
दूह्वऽअग्नयः	प्रदीप्ताऽग्नयः	अग्नि को प्रदीप्त करने वाले
शम्या	कर्म्मणा (शमीतिकर्म्मनाम निघं०२।१)	कर्म्म से
ये	ये	जो
सुऽकृत्यया	सुष्ठुकर्त्तव्यवता	सुन्दर कर्त्तव्य युक्त से
सर्वम्	सर्वम्	सम्पूर्ण को
पणेः	पणेः	पणि के
सम्	सम् +	–
अविन्दन्त	सम् + अविन्दन्त समलभन्त	भली प्रकार प्राप्त किया
भोजनम्	धनम् (निघं०२।१०)	धन को
अश्वऽवन्तम	अश्वैर्युक्तम्	घोड़ों से युक्त को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गोऽमन्तम्	गोभरुपेतम्	गौओं से युक्त को
आ	(समुच्चये)	और
पशुम्	पशुम्	पशु को
नरः	नराः	नरों ने

संस्कृतार्थः ।

येऽङ्गिरसः सुकर्तव्यवता कर्मणा प्रदीप्ताग्नयः (सन्तः सर्वेभ्यः) प्रथमम् (हवीरूपम) अन्नंसम्पादितवन्तः (ते) नराअनन्तरम् (एव) पणेरश्वैर्युक्तं गोभिरुपेतं पशुयुक्तम् (च) सर्वधनं समलभन्त ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

जिन अंगिराओं ने सुन्दर कर्तव्य युक्त कर्म से अग्नि को प्रदीप्त कर के (सब से) पहिले (हविरूप) अन्न को संपादन किया, (उन) नरों ने तुरन्त (ही) पणि के घोड़ों, गौओं (और) पशुयुक्त संपूर्ण धन को भली प्रकार प्राप्तकिया ॥ ४ ॥

पणि अन्धकार रूपी असुर है जिस का धन सूर्य की किरणें हैं जिन को वह कंजूसकी न्याईं छिपा कर रखता है, ये किरणें ही घोड़े गौ और अन्य सब धन का मूल कारण हैं, अंगिराओं ने सब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से पहले अग्नि को प्रदीप्त करके उस में देवताओं के लिये हवि दो और इस के फल में उन को पणि का धन अर्थात सूर्य्य का खुला प्रकाश प्राप्त हुआ जो सब धनों से उत्तम धन और सब धनों का मूल कारण है ॥

इन्द्रोदेवता जगतीछन्दः। १२।१२।१२।१२

यज्ञैरथर्वाप्रथमःपथस्तते ततः सूर्य्योव्रतपाव॑नआजनि। आगाआजदुशनाकाव्यःसचा यमस्यजातममृतंयजामहे ॥५॥

यज्ञैः	यज्ञैः	यज्ञों से
अथर्वा	अथर्वा	अथर्वा ने
प्रथमः	पूर्वम् (लिङ्गव्यत्ययः)	पहिले
पथः	मार्गान्	रस्तों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तत्	तस्मात्, विस्तारात् वानित्यर्थः (विडर्थेलट, सा०भा०)	विस्तृत होकर
ततः	तदनन्तरम्	उस के अनन्तर
सूर्य्यः	सूर्य्यः	सूर्य
व्रतऽपाः	व्रतानां पालयिता	नियमों के पालन करने वाला
वेनः	कान्तिमान्	कान्ति वाला
आ	(समुच्चये)	और
अजनि	आ+अजनि, प्रादुरभूत्	प्रकट हुआ
आ	आ+	–
गाः	गाः	गौओं को
आजत्	आ + आजत् सञ्चालितवान् (अजगतौ, अन्तर्भावितण्यर्थः)	हांका
उशना	उशना	उशना ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काव्यः	कवेःपुत्रः	कवि का पुत्र
सचा	सह (एव)	साथ (ही)
यमस्य	यमस्य	यम के
जातम्	उत्पन्नम् (पुत्रम्)	पुत्र को
अमृतम्	मरण रहितम्	मरण से रहित को
यजामहे	पूजयामः	हम पूजन करते हैं

संस्कृतार्थः।

पूर्वमथर्वा यज्ञैः (स्वर्गस्य) मार्गान् विस्तारितवान् ततो व्रतानां पालयिता कान्तिमान्सूर्य्यः प्रादुरभूत् कवेःपुत्रउशना च सह(एव) गाःसञ्चालितवान्(वयम्) यमस्य मरण रहितं पुत्रम् (तं सूर्य्यम्) पूजयामः॥५॥

भाषार्थः।

पहिले अथर्वा ने यज्ञों से (स्वर्ग के) मार्गों को विस्तृत किया, फिर नियमों के पालन करने वाले कान्तिमान सूर्य्य प्रकट हुए और कवि के पुत्र उशना ने साथ (ही) गौओं को हांका, हम यम के मरण रहित पुत्र (उस सूर्य्य) का पूजन करते हैं॥५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जब मेरु समीपस्थ देशों को लम्बी रात्रि में हमारे प्राचीन पिता अथर्वा ने यज्ञों को संपादन किया तब सूर्य्य भगवान् प्रकट हुए और उशना कवि ने कंजूस पणि को किरण रूप गौओं को हांका अर्थात जैसे शत्रु को गौओं को हांक कर अपने घर ले जाते हैं इस प्रकार किरण रूपी धन को आर्य्य जाति के लिये प्राप्त किया, ऐसे यम अर्थात अन्धकार रूप मृत्यु के मरण रहित पुत्र सूर्य्य भगवान को हम नमस्कार और यज्ञ द्वारा पूजन करते हैं ॥

इन्द्रोदेवता निचृज्जगतीछन्दः।१२।११।१२।१२।

बर्हिर्वा यत्स्वपत्याय वृज्यते ऽर्को-
वा श्लोकमाघोषते दिवि। ग्रावा यच-
वदति कारुरुक्थ्य स्तस्येदिन्द्रो-
ऽभिपित्वेषु रण्यति ॥ ६ ॥

बर्हिः	बर्हिः	कुशा
वा	खलु	सचमुच
यत्	यदा	जब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सऽअपत्याय	शोभनाऽपतनहेतुः भूताय (कर्म्मणे) (सा०भा०)	शुभ कर्म्म केलिये
वृज्यते	छिद्यते	काटी जाती है
अर्कः	स्तोता (आ०वी०)	स्तोता
वा	वा	अथवा
श्लोकम्	श्लोकम्	श्लोक को
आऽघोषते	प्रतिध्वनयति	गुंजाता है
दिवि	दिवि	आकाश में
१ ग्रावा	उपलः	ऊपर का पत्थर
यत्र	यत्र	जहां
वदति	शब्दं करोति	शब्द करता है
१ कारुः	स्तोतेव (कारुरितिस्तोतृ नाम निघं० ३।१६) (दृष्टोपमत्वेन)	स्तोता की न्याईं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उक्थ्यः	उक्थस्यशस्त्रस्य-शंसिता	स्तुति के राग बोलने वाला
तस्य	तस्य एतेषामन्य-तमस्येत्यर्थः (पूरणः)	इनमें से किसी एक के
इत्		–
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
अभिऽपि-त्वेषु	अभिप्राप्तिषु	प्राप्त होने पर
रणयति	रमते	क्रीड़ा करता है

संस्कृतार्थः ।

यदा खलु शुभकर्म्माऽर्थं बर्हिश्छिद्यते, अथवा स्तोता दिवि श्लोकं प्रतिध्वनयति यत्र (वा) उपलः शस्त्रस्य शंसिता स्तोतेव शब्दं करोति, एतेषामन्य-तमस्य प्राप्तिष्विन्द्रोरमते ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

जब सचमुच शुभ कर्म्म के लिये कुशा काटी जाती है, अथवा स्तोता श्लोक को आकाश में गुंजाता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है (वा) जहां उपल स्तुति के राग बोलने वाले स्तोता की न्याईं शब्द करता है इन में से किसी एक के प्राप्त होने पर इन्द्र रमण करते हैं ॥ ६ ॥

उपल वह पत्थर का वट्टा है जिस से सोम कूटा जाता है, सोम कूटने के लिये प्रथम १० अंगुल व्यास के और एक हाथ गहरे चार कूप खोदे जाते हैं, उनके ऊपर काष्ठ के दो फलक (तखते) रखे जाते हैं उन पर लाल रंगा हुआ चर्म बिछाया जाता है, उस पर सोम डाल कर पत्थरों से कूटा जाता है, इस प्रकार कूटने से बहुत शब्द होता है जिस को ऋषि स्तोता के शस्त्रपाठ से उपमा देते हैं।

इति त्र्यशीतितमं सूक्तम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं०१ सू०८४।

इन्द्रोदेवता गोतमऋषिः।

विनियोगः—

१–६ "अस्माविसोम–" इत्याद्यात्मकौतृचौ षोडशीशस्त्रे आभिलपविकेषूक्थेषुच स्तोत्रियानुरूपौ (आ० ६।२।२,७।८।३)

७–९ "यएकइद्विदयते-" इत्याद्यात्मकस्तृच आभिलपविकेषूक्थेषुस्तोत्रियः (आ०७।८।२)

१०–१२ "स्वादोरित्थाविषूवतः" इत्याद्यात्मकस्तृचइन्द्रातुर्विंशिकेऽहनि माध्यन्दिने सवनेऽच्छावाकस्य स्तोत्रियः (आ०७।४।४)

१३–१५ "इन्द्रोदधीचः-" इत्याद्यात्मकस्तृच इन्द्रातुर्विंशिकेऽहनि प्रातः सवनेब्राह्मणाच्छंसिनः शस्त्रे स्तोत्रियः (आ०७।२।३)

१५ "अत्राहगोः" इत्येषा सोर्य्याचन्द्रमस्योरिष्ट्योरनुवाक्या (आ०९।८।३)

१६–१७ "कोअद्य"–"कईषते–" इति द्वे ऋचौ सर्वपृष्ठायामिष्टौ कायस्य हविषो याज्यानुवाक्ये (आ०४।१२।३)

शेषाणांलैङ्गिको विनियोगः।

सूक्तस्य भावार्थः।

अस्माभिः सोमोऽभिषुतस्तत्पानार्थमिन्द्रआगच्छेत्, तज्जनित बलेनपूरितश्चभवेत् ॥ १ ॥ ऋषीणां स्तुतीःप्रति मनुष्याणां च यज्ञं प्रत्यपराजितबलमिन्द्रं तदीयावश्वौ प्रापयतः ॥ २ ॥ तावस्मत्स्तुतिभीरथेयुक्तौस्तः, अस्मत् सोमकुट्टनशब्दश्चेद्रस्यमनइहप्रेरयेत् ॥ ३ ॥ आगत इन्द्रअस्माभिर्निष्पीडितं सोमं पिबत् तदर्थमेव सोमस्यधाराः क्षरितवत्यः ॥ ४ ॥ इदानीमस्माभिरिन्द्रोऽर्चनीयः स्तोत्राणि वक्त-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ठ्यानि, मद्युक्तस्य तस्य महद्बलं च नमस्कर्तव्यम् ॥५॥ इन्द्रोयदा निजावश्वौ रथे योजयति तदा तस्मादन्यो रथितरो न दृश्यते न बलेन तत्सदृशोऽन्यःकश्चिद्भवति नच कश्चिदश्वारोहस्तमाप्तुंशक्नोति ॥६॥ एकएव यइन्द्रो भक्ताय धनं ददाति स केनाऽपि वारयितुं न शक्यते ॥ ७ ॥ स कदा दानहीनमनार्य्यजनं पादेन मर्दयिष्यति,कदा चाऽस्मत्कृताःस्तुतीः श्रोष्यति॥८॥बहुषु मनुष्येषु यः कश्चित्सोमेनेन्द्रं परिचरति स उग्रस्य बलस्य स्वामी भवति॥९। अबरूपा गौरवर्णा गावो ऽन्तरिक्षे सोमं पिबन्त्य इन्द्रेण सहगच्छन्त्यश्च तदीयराज्ये मोदन्ते१० ताएवेन्द्रस्य प्रियाश्चित्रा मेघरूपा गावःसोमंपयसामिश्रयन्त्यस्तस्येन्द्रस्यवज्रंप्रेरयन्ति ।११। तस्यबलं नमस्कारेणपूजयन्त्यश्च तास्तस्यैव व्रतान्यनुगच्छन्ति, अतस्तदीये राज्येऽग्रगण्याःसत्यो निवसन्ति ।१२। इन्द्रः सूर्य्यरूपस्यदधीचो नक्षत्ररूपैरस्थिभिरनेकानि तमोरूपाणि वृत्राणि जघान ॥ १३ ॥ यदादेवा वृत्रैरपहृतान्सूर्य्यरश्मीनन्वेषितवन्तस्तदा ताँश्चन्द्ररूपे सरोवरे लब्धवन्तः ॥ १४ ॥ चन्द्रज्योतिष्यन्तर्हितो वृषभरूपः सूर्य्य एवेतिनिश्चितवन्तश्च ॥ १५ ॥ यःकर्मोद्युक्तान्, सुखसम्पादकान्, शत्रुवक्षसि पादप्रक्षेपकान् ,मुखेबाणरूपाणां मंत्राणां धारकानृत्विजो यज्ञे नियोज्य तेषां भरणं निष्पादयति स जीवनोत्कृष्टतां प्राप्नोति ॥१६॥ ऋत्विजोऽन्यः कःपुरुषः बहुनाकष्टेन यज्ञं साधयित्वायजमानस्य शरीरधनभृत्य सन्तानार्थं जनस्यवृद्ध्यर्थं चेन्द्रे श्रद्दधानः सन्नाऽऽशास्ते? ॥१७॥ ऋत्विजोऽन्यःकोऽग्निंस्तौति? कश्चप्रत्यावर्तिष्ऋतुषु, घृतेनहविषा च देवात् यजति? देवायजमानं विहाय कस्मैधनमावहन्ति ? कश्चाऽस्मादन्यः सुदेवो भूत्वेन्द्रं ज्ञातुं शक्नोति? ॥१८॥ इन्द्र एव मर्त्यं हीनावस्थायां प्रोत्साहयति,अस्मादन्यः कश्चित् समाश्वासयिता नास्तीतिसत्यमेव ॥ १९ ॥ तस्य दानानि रक्षाश्चास्मान् कदापि नोपेक्षन्ताम्, मनुष्यहितेरतः सोऽनार्य मनुष्येभ्यः सर्वाणि धनान्याहृत्याऽस्मान् प्रति प्रापयतु ।२०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोदेवता, अनुष्टुप्छन्दः ।८।८।८।८

असावि सोमइन्द्रते शविष्ठधृ-
ष्णवागहि। आत्वापृणक्त्वन्द्रियं
रजःसूर्योनरश्मिभिः ॥ १॥

असावि	अभिषुतः	निचोड़ागया है
सोमः	सोमः	सोम
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र !
ते	तुभ्यम्	तेरेलिये
शविष्ठ	हे बलवत्तम !	हे सबसे अधिक बलवाले
धृष्णो०	हे प्रगल्भ !	हे बेधड़क
आ	आ+	–
गहि	आ+गहि,आगच्छ	आओ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आ	आ+	-
त्वा	त्वाम	तुझ को
पृणक्तु	आ+पृणक्तु, पूरयतु	पूर्ण कर
इन्द्रियम्	बलम्	बल
रजः	आकाशम्	आकाश को
सूर्य्यः	सूर्य्यः	सूर्य्य
न	इव	की न्याईं
रश्मिऽभिः	रश्मिभिः	किरणों से

संस्कृतार्थः।

हे बलवत्तमेन्द्र! तुभ्यं सोमोऽभिषुतः, हे प्रगल्भ! आगच्छ त्वाम् (सोमपान जनितम्) बलं पूरयतु यथा सूर्य्योरश्मिभिराकाशम् (पूरयति) ॥१॥

भाषार्थः।

हे सब से अधिक बल वाले इन्द्र! आप के लिये सोम निचोड़ा गया है, हे बेधड़क! आओ आप को (सोम पानसे उत्पन्न हुआ) बल पूर्ण करे जैसे सूर्य्य किरणों से आकाश को (पूर्ण करताहै)।१।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोदेवता,अनुष्टुप्छन्दः ।८।८।८।८

इन्द्रमिद्धरीवहतो ऽप्रतिधृष्टशवसम् । ऋषीणांचस्तुतीरुप यज्ञञ्चमानुषाणाम् ॥ २ ॥

इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
इत्	(पूरणः)	–
हरी०	अश्वौ	घोड़े
वहतः	नयतः	ले जाते हैं
अप्रतिधृष्टशवसम्	प्रतिधर्षणरहित बलयुक्तम	न दबने वाले बल से युक्त को
ऋषीणाम्	ऋषीणाम्	ऋषियों की
च	च	और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्तुतीः	स्तुतीः	स्तुतियों को
उप	प्रति	की ओर
यज्ञम्	यज्ञम	यज्ञको
च	च	और
मानुषाणाम्	मनुष्याणाम्	मनुष्यों के

संस्कृतार्थः ।

प्रतिधर्षणरहितबलयुक्तमिन्द्रम् (तदीयौ)अश्वा वृषीणां स्तुती मनुष्याणां च यज्ञं प्रति नयतः ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

न दबने वाले बल से युक्त इन्द्र को (उन के) घोडे ऋषियों की स्तुति और मनुष्यों के यज्ञ के प्रति लेजाते हैं ॥ २ ॥

इन्द्रोदेवता, अनुष्टुप्छन्दः ।८।८।८।८

आतिष्ठद्वज्रहस्तथं युक्तातेब्रह्म-

णाहरी। अर्वाचीनंसुतमनो ग्रावाक्ष-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गीतुवग्नुना ॥ ३ ॥

आ	आ+	–
तिष्ठ	आ+तिष्ठ, आरोह	चढ़ो
वृत्रऽहन्	हेवृत्रस्यहन्तः !	हेवृत्रकेमारनेवाले
रथम्	रथम्	रथको
युक्ता	युक्तौ (सुपामितिविभक्तेराकारम्)	जुड़गएहैं
ते	तव	तेरे
ब्रह्मणा	स्तोत्रेण	स्तोत्रकेद्वारा
हरी०	अश्वौ	घोड़े
अर्वाचीनम्	इतः	इधर
सु	सुष्ठु	भलीप्रकार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ते	तव	तेरे
मनः	मनः	मनको
ग्रावा	ग्रावा	(सोमकूटनेका) पत्थर
कृणोतु	करोतु (कृविकरणे)	करे
वग्नुना	शब्देन (वचेर्नप्रत्ययः)	शब्द से

संस्कृतार्थः ।

हे वृत्रस्यहन्तः ! (त्वम्) रथमारोह स्तोत्रेण तवाऽश्वौ युक्तौ (विद्येते) ग्रावा (सोमकुट्टन-) शब्देन तव मनः सुष्ठ्वतः करोतु ॥ ३ ॥

भाषार्थः ।

हे वृत्र के मारने वाले ! आप रथपर चढें स्तोत्र के द्वारा आप के दोनों घोड़े जुड़ गए हैं, (सोम कूटने का) पत्थर शब्द से आप के मन को भली प्रकार इधर करे ॥ ३ ॥

इन्द्र के रथ में घोड़े जुड़न का कारण हमारा स्तोत्र है, और हमारे घर की ओर रथ को प्रेरण करने का कारण हमारे सोम कूटने का शब्द है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोदेवता, अनुष्टुप्छन्दः ।८।८।८।८

इमममिन्द्रसुतंपिबज्येष्ठममर्त्यंमदम् । शक्रस्यत्वाऽभ्यक्षरन् धाराऋतस्यसादने ।४।

इमम्	इमम्	इसको
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
सुतम्	निष्पीडितम्	निचोड़े हुए को
पिब	पिब	पीओ
ज्येष्ठम्	श्रेष्ठम्	उत्तम को
अमर्त्यम्	मरणरहितम्	मरणसेरहितको
मदम्	मदरूपम्	मदरूपको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शुक्रस्य	दीप्तस्य	दीप्ति वाले की
त्वा	त्वाम्	तुझ को
अभि	प्रति	की ओर
अक्षरन्	क्षरितवत्यः	बही हैं
धाराः	धाराः	धाराएं
१ ऋतस्य	ऋतस्य	ऋतके
१ सदने	स्थाने	स्थान में

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र ! (त्वम्) श्रेष्ठं मरणरहितं मदरूपमिमं निष्पीडितम् (सोमम्) पिब दीप्तस्य (अस्य) धारा ऋतस्य स्थाने त्वां प्रति क्षरितवत्यः ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र ! आप उत्तम, अमर, मदरूप इस निचोड़े हुए (सोम) को पीओ (इस) दीप्ति वाले की धाराएं ऋत के स्थान में आप की ओर बही हैं।४।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) ऋत जो सब देवताओं का स्थान है वही इन्द्र का स्थान है, मनुष्यों का स्थान अनृत है जिस में रह कर वे अनेक दुःखों को उठाते हैं और जिन से बचने का उपाय ऋत की शरण है ॥

इन्द्रोदेवता, अनुष्टुप्छन्दः ।८।८।८।८।

इन्द्रायनूनमर्चतोक्थानिचप्र-
वीतन । सुताअमत्सुरिन्दवो ज्ये-
ष्ठंनमस्यतासहः ॥ ५ ॥

इन्द्राय	इन्द्राय	इन्द्र के लिये
नूनम्	इदानीम् (आ०को०)	अब
अर्चत	पूजनंकुरुत	पूजन करो
उक्थानि	स्तोत्राणि	स्तोत्रों को
च	च	और
प्रवीतन	ब्रूत (तनबादेशः)	बोलो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुताः	निष्पीडिताः	निचोड़े हुए
अमत्सुः	मदयुक्तं कृतवन्तः (अन्तर्भावितण्यर्थः)	मद से युक्त किया है
इन्दवः	सोमाः	सोमों ने
ज्येष्ठम्	ज्येष्ठम्	सब से बड़े को
नमस्यत	नमस्कुरुत	नमस्कार करो
सहः	बलम्	बल को

संस्कृतार्थः ।

इदानीमिन्द्राय पूजनं कुरुत स्तोत्राणि च ब्रूत (एनम्) निष्पीडिताः सोमा मदयुक्तं कृतवन्तः (तस्य) ज्येष्ठं बलं नमस्कुरुत ॥ ५ ॥

भाषार्थः ।

अब इन्द्र के लिये पूजन करो और स्तोत्रों को उच्चारण करो (इस को) निचोड़े हुए सोमों ने मद से युक्त किया है सब से बड़े (इस के) बल को नमस्कार करो ॥ ५ ॥

इन्द्र का बल सब से बड़ा है उस को हमारा नमस्कार हो उस की ओट में होने से ही हम निर्भय रह सकते हैं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोदेवता,अनुष्टुप्छन्दः ।८।८।८।८।

नकिष्ट्वद्रथीतरो हरीयदिन्द्रय-
च्छसे। नकिष्ट्वाऽनुमज्मना नकिः
स्वश्वआनशे। ६।

नकिः	नहि	नहीं
त्वत्	त्वत्तः	तुझ से
रथिऽतरः	रथितरः	बढ़कर रथवान
हरी०	अश्वौ	दोनों घोड़ों को
यत्	यदा	जब
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
यच्छसे	योजयसि (सा०भा०)	जोड़ते हो
नकिः	नहि	नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वा	त्वाम्	तुझ को
अनु	(साम्ये)	समान
मज्मना	बलेन	बल से
नकिः	नहि	नहीं
सुऽअश्वः	कुशलाऽश्वारोहः	कुशल घोडे का सवार
आनशे	प्राप्तवान्	पहुंचा है

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र ! यदा (त्वम्) अश्वौ (रथे) योजयसि (तदा) त्वत्तोरथितरो न (कोऽपिदृश्यते), बलेन तव समानः (अन्यः) न-(अस्ति,काऽपि) कुशलाऽश्वारोहः (च त्वाम्) न प्राप्तवान् ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र! जब आप घोड़ों को (रथ में)जोड़ते हो (तब) आप से बढ कर रथवान (कोई) नहीं (दीखता) बलमें आपके समान दूसरानहीं (है और कोई)कुशल घोड़े का सवार (आप को) नहीं पहुंचा है ॥ ६ ॥

वास्तव में सब से बड़ा बल आत्म रूपी इन्द्र का बल है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोदेवता, उष्णिक्छन्दः ।८।८।१२।

यएकइद्विदयते वसुमर्ताय-
दाशुषे । ईशानोअप्रतिष्कुतइन्द्रो-
अङ्ग ॥ ७ ॥

यः	यः	जो
एकः	एकः	अकेला
इत्	एव	ही
विऽदयते	विशेषेणददाति (दयदाने)	बहुत देता है
वसु	धनम्	धन को
मर्ताय	मनुष्याय	मनुष्य के ताईं
दाशुषे	(हविः) दत्तवते	(हवि) देने वाले के ताईं
ईशानः	स्वामी	स्वामी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अप्रतिऽस्कुतः	प्रतिकूलशब्द-रहितः	किसी के कहने से न हटने वाला
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
अङ्ग	खलु (आ०को०)	सचमुच

संस्कृतार्थः ।

य एक एव (हविः) दत्तवतेमनुष्याय धनं प्रयच्छति (सः) स्वामीन्द्रः प्रतिकूलशब्द रहितः खलु(अस्ति) ॥ ७ ॥

भाषार्थः ।

जो अकेला ही (हवि) देने वाले मनुष्य के ताईं धन को देता है (वह) स्वामी इन्द्र सचमुच किसी के कहने से हटने वाला नहीं है ॥ ७ ॥

इन्द्रोदेवता, उष्णिक्छन्दः ।८।८।१२

कदामर्तमराधसं पदाक्षुम्पमिव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्फुरत्। कदानःशुश्रवद्गिरइन्द्रो-

अङ्ग ॥ ८ ॥

कदा	कदा	कब
मर्तम्	मनुष्यम्	मनुष्य को
१ अराधसम्	दानेन रहितम्	दान से रहित की
पदा	पादेन	पैर से
चुम्पम्ऽइव	अहिच्छत्रकमिव (निघं०४।२)	सांप की छत्री की न्याइ
स्फुरत्	स्फुरिष्यति, मर्दयिष्यति (आ०को०लृडर्थेलङ्यडभावः)	कुचलेगा
कदा	कदा	कब
नः	अस्माकम्	हमारी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शुश्रवत्	श्रोष्यति (लेट्यडागमेशपः श्लुश्छान्दसः)	सुनेगा
गिरः	स्तुतीः	स्तुतियों को
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
अङ्ग	खलु	सचमुच

संस्कृतार्थः।

इन्द्रः कदा दानेनरहितं मनुष्यमहिच्छत्रकमिव पादेन मर्दयिष्यति कदा (खलु) अस्माकं स्तुतीः (च) श्रोष्यति ॥ ८ ॥

भाषार्थः।

इन्द्र कब दान से रहित मनुष्य को सांप की छत्री की न्याईं पैर से कुचलेंगे (और) सचमुच कब हमारी स्तुतियों को सुनेंगे ॥ ८ ॥

(१) दान से रहित, अनार्य्य नास्तिक स्वार्थी आर्य्यशत्रु से तात्पर्य्य है ॥

इन्द्रोदेवता, उष्णिक्छन्दः ।८।८।१२

यश्चिद्धित्वा बहुभ्य आ सुतावाँ-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आविवासति । उग्रंतत्पत्यतेशव-

इन्द्रोअङ्ग ॥ ९ ॥

यः	यः+चित्	जो कोई
चित्	+चित्	–
हि	खलु	सचमुच
त्वा	त्वाम्	तुझ को
बहुऽभ्यः	बहुभ्यः + आ	बहुतों में से
आ	+ आ	–
सुतऽवान्	निष्पीडितसोमः	सोम निचोड़ने वाला
आऽविवासति	सर्वतःपरिचति	सब प्रकार से सेवा करता है
उग्रम्	भयङ्करम्	भयानक को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तत्	सः (विभक्तेर्लुक्)	वह
पत्यते	ईष्टे (निघं०२।२१)	स्वामी होता है
शवः	बलम्	बल को
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
अङ्ग	खलु	सचमुच

संस्कृतार्थः।

(हे इन्द्र !) बहुभ्यो यश्चित् (मनुष्यः) निष्पीडितसोमः (सन्) त्वां खलु सर्वतः परिचरति स उग्रं बलमीष्टे, इन्द्रः खलु (धन्योऽस्ति) ॥ ९ ॥

भाषार्थः।

(हे इन्द्र !) बहुतों में से जो कोई (मनुष्य) सचमुच सोम निचोड़ने वाला (होकर) सब प्रकार से आप की सेवा करता है वह भयानक बल का स्वामी होता है, सचमुच इन्द्र (धन्य हैं) ॥ ९ ॥

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः।८।८।८।८।८

स्वादोरित्था विषूवतो मध्वः पि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बन्तिगौर्य्यः । याइन्द्रेणसयावरी

र्वृष्णामदन्तिशोभसे वस्वीरनुस्व-

राज्यम् ॥ १० ॥

स्वादोः	स्वादयुक्तम् (कर्म्मणिषष्ठी)	स्वाद से युक्त को
इत्था	इत्थम्	इस प्रकार
विषुऽवतः	व्यापनशीलम् (विष्लृव्याप्तौकुप्रत्ययेसतिमतुप्, कर्म्मणिषष्ठी)	फैलने वाले को
मध्वः	मधुरम् (कर्म्मणिषष्ठी, गुणाभावेयणादेशः)	मीठे को
पिबन्ति	पिबन्ति	पान करती हैं
१ गौर्य्यः	गौरवर्णाः (गावः)	उज्ज्वल गवाली (गाएं)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

याः	याः	जो
इन्द्रेण	इन्द्रेण	इन्द्र के साथ
सऽयावरीः	सहगच्छन्त्यः (वनिपिसतिङीबूरे-फौपूर्वसवर्णदीर्घश्च)	साथ जाती हुई
वृष्णा	वीर्य्यवता	वीर्य्यवान के साथ
मदन्ति	माद्यन्ति (श्यनिप्राप्तेर्व्यत्ययेन शप्)	मोद करती हैं
१ शोभसे	शोभार्थम्	शोभा के लिये
वस्वीः	निवसन्त्यः (पूर्वसवर्णदीर्घः)	निवास करतीहुई
२ अनु	अनु	पीछे
२स्वऽराज्यम्	स्वराज्यम्	स्वराज्य को

संस्कृतार्थः

इत्थं स्वादयुक्तम् (शरीरे) व्यापनशीलं मधुरम् (सोमम्) गौरवर्णाः (गावः) पिबन्ति याः शोभार्थं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वीर्यवतेन्द्रेण सह गच्छन्त्यः (तस्य) स्वराज्यमनु-निवसन्त्यः (सत्यः) माद्यन्ति ॥ १० ॥

भाषार्थः ।

इस प्रकार स्वाद से युक्त (शरीर में) फैलने वाले मीठे (सोम) को उज्जल रंग वाली (गौएं) पान करती हैं जो शोभा के लिये वीर्य्यवान इन्द्र के साथ जाती हुई (उस के) स्वराज्य के पीछे निवास करती हुई मोद करती हैं ॥ १० ॥

(१)उज्वल रंग वाली गौएं अन्तरिक्ष में होने वाले जल हैं, ये आकाश में होने वाले सोम को पान करती हैं और वीर इन्द्र के साथ रमण करती हुई जगत की शोभा को बढाती हैं ।

(२) इन्द्र के स्वराज्य के पीछे अर्थात उस के स्वराज्य के आश्रय में निवास करती हैं ।

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः । ८।८।८।८।८।

ताअस्यपृश्नायुवः सोमंश्रीणन्ति पृश्नयः । प्रियाइन्द्रस्यधेनवो वज्रं हिन्वन्तिसायकं वस्वीरनुस्वराज्यम् ॥ ११ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ताः	ताः	वे
अस्य	अस्य	इस के
पृश्नऽयुवः	स्पर्शनमिच्छन्त्यः	स्पर्श को चाहती हुई
सोमम्	सोमम्	सोम को
श्रीणन्ति	मिश्रयन्ति (सा०भा०)	मिलाती हैं
पृश्नयः	चित्राः	नाना रंग वालीं
प्रियाः	प्रियाः	प्यारी
इन्द्रस्य	इन्द्रस्य	इन्द्र की
धेनवः	गावः	गौएं
वज्रम्	वज्रम्	वज्र को
हिन्वन्ति	प्रेरयन्ति	प्रेरण करती हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सायकम्	अन्तकारकम् (षोऽन्तकर्म्मणि शतुः-लयात्वेयुगागमः)	अन्त करने वाले को
वस्वीः	निवसन्त्यः (पूर्वसवर्णदीर्घः)	निवास करती हुई
अनु	अनु	पीछे
स्वऽराज्यम्	स्वराज्यम्	स्वराज्यको

संस्कृतार्थः।

इन्द्रस्यप्रियास्ताश्चित्रागावोऽस्य स्पर्शनमिच्छन्त्यः सोमम् (पयसा) मिश्रयन्ति (तस्य) स्वराज्यमनु निवसन्त्यः (सत्यश्च) अन्तकारकम् (तस्य) वज्रं प्रेरयन्ति ॥ ११ ॥

भाषार्थः।

इन्द्र की प्यारी वे नाना रंग वाली गौएं इस के स्पर्श को चाहती हुई सोम को (दूध से) मिलाती हैं (और उसके) स्वराज्य के पीछे निवास करती हुई अन्त करने वाले (उस के) वज्र को प्रेरण करती हैं ॥ ११ ॥

इन्द्र की प्यारी नाना रंग वाली गौएं बादल हैं जो अपने जल रूपी दूध को आकाश के सोम से मिलाती हैं यही इन्द्र के विद्युत रूपी वज्र को प्रेरण करती हैं क्योंकि बादल ही विद्युत के प्रकट होने का कारण हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोदेवता पङ्क्तिश्छन्दः । ८।८।८।८।८।

ताअस्यनमसासहः सपर्यन्ति

प्रचेतसः । व्रतान्यस्यसश्चिरे पुरूणि

पूर्वचित्तये वस्वीरनुस्वराज्यम् ।१२।

ताः	ताः	वे
अस्य	अस्य	इसके
नमसा	नमस्कारेण	नमस्कार से
सहः	बलम्	बल को
सपर्यन्ति	पूजयन्ति (सपर् पूजायाम्)	पूजन करती हैं
प्रऽचेतसः	प्रकृष्ट ज्ञानाः	उत्तम ज्ञान वालीं
व्रतानि	व्रतानि	नियमों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अस्य	अस्य	इसके
सश्चिरे	अनुगच्छन्ति (आ०को०लडर्थेलिट्, व्यत्ययेन परस्मैपदम)	पीछे चलती हैं
पूरूणि	बहूनि	बहुतों को
पूर्वऽचित्तये	अग्रगण्यत्वार्थम्	सबसे आगे गिने जाने के लिये
वस्वीः	निवसन्त्यः	निवास करतीहुई
अनु	अनु	पीछे
स्वऽराज्यम्	स्वराज्यम्	स्वराज्य को

संस्कृतार्थः ।

प्रकृष्टज्ञानास्ताः (गावः) अस्य (इन्द्रस्य) बलम् नमस्कारेण पूजयन्ति, (अस्य) स्वराज्यमनुनिवसन्त्यः (सत्यश्च) अग्रगण्यत्वार्थमस्य बहूनि व्रतान्यनुगच्छन्ति ॥ १२ ॥

भाषार्थः ।

उत्तम ज्ञान वाली वे (गौएं) इस (इन्द्र) के बल को नमस्कार द्वारा पूजन करती हैं, (और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उस के) स्वराज्य के पीछे निवास करती हुई सब से आगे गिने जाने के लिये इस के अनेक नियमों का पालन करती हैं ॥ १२ ॥

वे गौएं अर्थात जल जीवन के मूल आधार होनेसे इस जगत में अग्रगण्य हैं, और उन्हों ने इस पदवी को इसलिये पाया है कि वे इन्द्र के बल के सामने सिर झुकाती हैं (इसीलिये निवान की ओर बहती हैं) और उस के सब नियमों का पालन करती हैं, किसी व्रत का उल्लंघन नहीं करतीं (किसी से कभी नहीं सुना कि जलों ने अमुक कर्म नियम के विरुद्ध किया है)

मनुष्य भी अग्रगण्य वही हो सकता है जो इन्द्र के बल के सामने सिर झुकाता है और उस के नियमों का उल्लंघन नहीं करता वही इन्द्र के स्वराज्य पर आश्रित हुआ २ आनन्द को भोगता है।

इन्द्रोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८॥

इन्द्रो॑ दधी॒चो अ॒स्थभि॑ र्वृ॒त्राण्य॑प्र॑तिष्कुतः । ज॒घान॑ नव॒तीर्नव॑ ।१३।

इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र ने
१ दधीचः	दधीचः	दधीची की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ अस्थऽभिः	अस्थिभिः (अनङादेशश्छान्दसः)	हड्डियों से
३ वृत्राणि	वृत्राणि	वृत्रों को
अप्रतिऽस्कुतः	प्रतिकूल शब्द रहितः	किसीके कहने से न हटने वाला
जघान	हतवान्	हनन किया
३ नवतीः	नवतीः	नव्वों को
३ नव	नव	नौ को

संस्कृतार्थः।

प्रतिकूलशब्द रहित इन्द्रो दधीचोऽस्थिभिः नव नवतीः (च) वृत्राणि हतवान् ॥ १३ ॥

भावार्थः।

किसी के कहने से न हटने वाले इन्द्रने दधीची की हड्डियों से नौ (और) नव्वे वृत्रों को हनन किया ।१३।

(१) घोडे के सिर वाला दध्यङ् प्रातःकाल का सूर्य्य है जिस ने अश्विदेवों को प्रातःकाल के ज्योतीरूप मधु को दिया था (देखो ऋ० १।११६।१२)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) जब सूर्य्य अस्त होकर मृत्यु को प्राप्त हुआ तो उत्साह भंग न होने वाले इन्द्र ने नक्षत्र रूपी वा मेरु ज्योतीरूपी सूर्य्य की हड्डियों से अन्धकार का नाश किया।

(३) नौ और नव्वे वृत्र अर्थात अनेक अन्धकार रूपी असुर।

इन्द्रोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८॥

इच्छन्नश्वस्ययच्छिरः पर्वते ष्वपश्रितम्। तद्विदच्छर्य्यणावति।१४।

इच्छन्	इच्छन्	इच्छाकरते हुएने
अश्वस्य	अश्वस्य	घोड़े का
यत्	यत्	जो
शिरः	शिरः	शिर
पर्वतेषु	पर्वतेष	पर्वतों में
अपऽश्रितम्	अपगत्यस्थितम्	दूर जाकर पड़ा हुआ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तत्	तत्	उसको
विदत्	लब्धवान् (अडभावः)	प्राप्त किया
शर्य्यणाऽवति	शर्य्यणावति (सरसि)	शर्य्यणावान (सरोवर) में

संस्कृतार्थः ॥

यदश्वस्यशिरःपर्वतेष्वपगत्यस्थितम् (आसीत्) तदिच्छन् (सन्निद्रः) शर्य्यणावति (सरसि) लब्धवान् ॥ १४ ॥

भाषार्थः ।

जो घोड़े का सिर पर्वतों में दूर जाकर पडा हुआ (था) उस को इच्छा करते हुए (इन्द्र) ने शर्य्यणावान (सरोवर) में प्राप्त किया ॥ १४ ॥

शर्य्यणावान, कुरुक्षेत्र की सीमा पर एक सरोवर है जिस के किनारे बहुत सोम निष्पोडन होता था यहां पर सोम के संबंध मात्र से यह शब्द सोम अर्थात चन्द्रमा का वाची होगया है ।

सूर्य्य रूपी अश्व का सिर उस की रश्मियां है, जो अन्धकार रूपी पर्वतों में दूर पड़ी हुई थीं इन को देवताओं ने खोजा तो चन्द्र रूप सरोवर में पाया, जैसे अगले मंत्र में स्पष्ट वर्णन किया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं०१ सू०८४मं०१५ (२०८२)

इन्द्रोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८॥

अत्राहगोरमन्वत नामत्वष्टुरपीच्यम् । इत्थाचन्द्रमसोगृहे ॥१५॥

अत्र	आस्मन्	इस में
अह	एव	ही
गोः	वृषभम् (कर्म्मणि षष्ठी)	बैल को
अमन्वत	ज्ञातवन्तः	जाना है
नाम	खलु (आ०को०)	सचमुच
त्वष्टुः	त्वष्टुः	त्वष्टा के
अपीच्यम्	अन्तर्हितम् (निघं०३।२५)	छिपे हुए को
इत्था	इत्थम	इस प्रकार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चन्द्रमसः	चन्द्रमसः	चन्द्रमा के
गृहे	गृहे	घर में

संस्कृतार्थः।

देवा अनेन प्रकारेण खल्वस्मिँश्चन्द्रमसो गृहेऽन्तर्हितं त्वष्टुर्वृषभमेव ज्ञातवन्तः ॥ १५ ॥

भाषार्थः।

(देवताओं ने) सचमुच इस प्रकार इस चन्द्रमा के घर में छिपे हुए त्वष्टा के बैल को ही जाना।१५।

पिछले मंत्र का आशय इस में स्पष्ट किया है, त्वष्टा का बैल सूर्य्य है उसी को देवताओं ने चन्द्रमा के घर में छिपा हुआ पाया अर्थात यह देखा कि सूर्य्य का प्रकाश ही चन्द्रमा की ज्योति का कारण है।

इन्द्रोदेवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११।

को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हृणायून्। आसन्निषून्हृत्स्वसोमयोभून् य एषां भृत्या-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मृणधत्सजीवात् ॥ १६॥

कः	कः	कौन
अद्य	अद्य	आज
युङ्क्ते	योजयति	जोड़ता है
धुरि	धुरि	धुरे में
१ गाः	बलीवर्दान्	बैलों को
१ ऋतस्य	यज्ञस्य	यज्ञ के
शिमीऽवतः	कर्म्मोपेतान् (शिमीतिकर्म्मनाम-निघं०२।१)	कर्म्म करने वालों को
भामिनः	दीप्तियुक्तान्	तेजस्वियों को
दुःऽहृणायून्	दुस्सहक्रोध युक्तान् (हृणीयतिःक्रुध्यति-कर्म्मा,निघं०२।१२)	जिनका क्रोधनहीं सहारा जासकता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आसन्ऽइषून्	आसनिमुखे-इषवोंबाणायेषांतान्	मुख में बाणों वालों को
हृत्सुऽअसः	हृत्सु(शत्रूणाम्) हृदयेषुअस्यन्ति-(पादम्)क्षिपन्ति तान् (सप्तम्याअलुक्,असु-क्षेपणे-क्विप्प्रत्ययः	(शत्रुओं की) छातियों पर पैर रखने वालों को
मयःऽभून्	सुखस्यभावयितन् सुखप्रदानित्यर्थः (मयइति सुखनाम,निघं० ३।६ भवतेर्डुप्रत्ययः)	सुख के देने वालों को
यः	यः	जो
एषाम्	एषाम्	इन की
३ भृत्याम्	भरणक्रियाम्	आजीविका को
३ ऋणधत्	समर्धयति (ऋधुवृद्धौ-लेटिव्यत्ययेनइनम्,अडागमश्च)	बढाता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सः	सः	वह
३ जीवात्	जीवति (लेट्याडागमः)	जीता है

संस्कृतार्थः ।

कोऽद्य कर्म्मोपेतान् दीप्तियुक्तान् दुस्सहक्रोध-युक्तान् मुखेबाणधारकान् (शत्रूणाम् -) हृदयेषु (पाद-) क्षेपकान् (यजमानेभ्यः) सुखप्रदान् यज्ञस्य बलीवर्दान् धुरि योजयति, यएषां भरणक्रियां समर्धयति स जीवति ॥ १६ ॥

भाषार्थः ।

कौन आज कर्म्म में तत्पर,तेजस्वी, दुःसह क्रोध से युक्त, मुख में बाणों वाले,(शत्रुओं की)छातियों पर (पैरों को) रखने वाले, (यजमानों के ताईं) सुख के देने वाले यज्ञ के बैलों को धुरे में जोड़ता है, जो इन की आजीविका को बढाता है वह जीवन से युक्त होता है ॥ १६ ॥

(१) यज्ञ के बैल ऋत्विज हैं जो कर्म में तत्पर रहते हैं और तेजस्वी हैं, जिन का क्रोध ब्रह्मतेज के कारण दुःसह है।

(२) ऋत्विज के मुख में यजमान के शत्रुओं को बींधने वाले वेदमंत्र रूपी बाण हैं।

(३) जो ऐसे सुख के देने वाले ऋत्विजों का भरणपोषण करता है वह उच्चजीवन से युक्त होता है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोदेवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११॥

कईषतेतुज्यतेकोबिभायकोमं

सतेसन्तमिन्द्रंकोअन्ति । कस्तो-

कायकईभायोतराये ऽधिब्रवत्तन्वे

३कोजनाय॥१७॥

कः	कः	कौन
ईषते	(इतस्ततः)गच्छति (ईषगतौ)	चलता फिरता है
तुज्यते	पीड्यते (कर्म्मणियक्)	कष्ट उठाता है
कः	कः	कौन
बिभाय	बिभेति (लडर्थेलिट्)	डरता है
कः	कः	कौन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मंसते	आद्रियते (मनेर्लेटिसिपटौ)	आदर करता है
सन्तम्	वर्त्तमानम्	वर्तमान को
इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
कः	कः	कौन
अन्ति	अन्तिके (कलोपः)	समीप
कः	कः	कौन
तोकाय	अपत्याय	सन्तान के लिये
कः	कः	कौन
इभाय	भृत्याय (आ०को०)	भृत्य के लिये
उत	अपिच	और भी
राये	धनाय	धन के लिये
अधि	अधि +	–

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रवत्	अधि + ब्रवत् आशास्ते (लेटयडागमः)	आशीर्वादमांगता है
तन्वे	शरीराय (गुणाभावेयणादेशः)	शरीर के लिये
कः	कः	कौन
जनाय	जनाय	जन समूह के लिये

संस्कृतार्थः।

कः (इतस्ततः) गच्छति ? कः पीडयते ? कोबिभेति? वर्त्तमानमिन्द्रं कआद्रियते ? समीपे (स्थितमिन्द्रम्) कः (जानाति) ? कः (अन्यस्य) अपत्याय को भृत्याय धनाय च को जनाय (परस्य) शरीराय (च) आशास्ते ? ॥ १७॥

भाषार्थः।

कौन चलता फिरता है ? कौन कष्ट उठाता है? कौन डरता है ? वर्तमान इन्द्र का कौन आदर करता है ? समीप (ठैरे हुए इन्द्र को) कौन (जानता है?) कौन (दूसरे की) सन्तान के लिये भृत्य के लिये और धन के लिये कौन जन समूह के लिये (और पराये) शरीर के लिये आशीर्वाद मांगता है ?॥ १७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन सब प्रश्नों का उत्तर ऋत्विज है, जो यज्ञ में इधर उधर चलता है कष्ट उठाता है,भूल होने से डरता है,इन्द्र को समीप ठैरा हुआ जानकर उस का आदर करता है, दूसरे की अर्थात् यजमान की सन्तान उस के भृत्य, धन और शरीर के लिये और सारी जाति के लिये देवताओं से आशीर्वाद मांगता है ॥

इन्द्रोदेवता त्रिष्टुप्छन्दः ११।११।११।११।

कोअग्निमीट्टेहविषाघृतेन स्रु-
चायजाताऋतुभिर्ध्रुवेभिः। कस्मैदे-
वाआवहानाशुहोम कोमंसतेवीति-
होत्रःसुदेवः॥१८॥

कः	कः	कौन
अग्निम्	अग्निम्	अग्नि को
ईट्टे	स्तौति (ईडस्तुतौ)	स्तुति करता है
हविषा	हविषा	हवि से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घृतेन	घृतेन	घी से
स्रुचा	जुह्वा	जुहूके द्वारा
यजातै	यजति (यजतेर्लेटयाडागमेसति "वैतोऽन्यत्र"इयैकारः)	यजन करता है
ऋतुऽभिः	ऋतुषु (सप्तम्यर्थेतृतीया)	ऋतुओं में
ध्रुवेभिः	नित्येषु (,,)	सदा होने वालियों में
कस्मै	कस्मै	किस के लिये
देवाः	देवाः	देवता
आ	आ +	–
वहान	आ + वहान्, आवहन्ति (लेटयाडागमः)	लाते हैं
आशु	शीघ्रम्	शीघ्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होम	ह्वातव्यम्(धनम्) (सा०भा०)	धन को
कः	कः	कौन
मंसते	जानाति	जानता है
वीतिऽहोत्रः	प्राप्तयज्ञः	जिसने यज्ञ किया है
सुऽदेवः	शोभनदेवताकः	सुन्दर देवतावाला

संस्कृतार्थः

कोऽग्निं स्तौति? (कश्च)जुह्वा नित्येष्वृतुषु घृतेन हविषा (च) यजति?कस्मैदेवाः शीघ्रं धनमावहन्ति? कः प्राप्तयज्ञः शोभनदेवताकः (सन्निन्द्रम्) जानाति? ॥ १८ ॥

भाषार्थः।

कौन अग्नि की स्तुति करता है ? (और कौन) जुहू के द्वारा नित्य आने वाली ऋतुओं में घी (और) हवि से यजन करता है? किस के लिये देवता शीघ्र धन को लाते हैं? कौन यज्ञकर्त्ता सुन्दर देवता वाला (हुआ २ इन्द्र को) जानता है? ॥ १८॥

पहले दो प्रश्नों का उत्तर ऋत्विज है, पिछले दो का यजमान है जिस के घर में ऊपर कहे गुणों वाले ऋत्विज आते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोदेवता बृहतीछन्दः ।८।८।१२।८।

त्वमङ्गप्रशंसिषो देवःशविष्ठ मर्त्यम् । नत्वदन्योमघवन्नस्तिमर्डितेन्द्रब्रवीमितेवचः ॥ १९ ॥

त्वम्	त्वम्	तू
अङ्ग	खलु	सचमुच
प्र	प्र+	–
शंसिषः	प्रोत्साहयसि (लेडयडागमः)	उत्साह बढ़ाते हो
देवः	देवः	देवता
शविष्ठ	हे बलवत्तम !	हे सब से अधिक बल वाले
मर्त्यम्	मरण धर्माणम्	मरण धर्मी को
न	न	नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वत्	त्वत्तः	तुझ से
अन्यः	अन्यः	दूसरा
मघऽवन्	हे धनवन् !	हे धन वाले
अस्ति	अस्ति	है
मर्डिता	समाश्वासयिता	धीरज देने वाला
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
ब्रवीमि	ब्रवीमि	मैं कहता हूं
ते	तुभ्यम्	तेरे ताईं
वचः	वचः	वचन को

संस्कृतार्थः।

हे बलवत्तम! इन्द्र ! देवस्त्वं मरणधर्म्माणम् (मनुष्यम्) प्रोत्साहयसि हे धनवन् ! त्वदन्यः (कश्चित्) समाश्वासयिता नास्ति, अहं तुभ्यम् (सत्यम्) वचो ब्रवीमि ॥ १९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः

हे सब से अधिक बल वाले इन्द्र ! देवता आप मरणधर्म्मा (मनुष्य) का उत्साह बढाते हो, हे धन-वाले ! आप से दूसरा (कोई) धीरज देने वाला नहीं है मैं आपके ताईं (सच) वचन को कहता हूं ॥१९॥

इन्द्रोदेवता,सतोवृहतीछन्दः ।१२।८।१२।८

मातेराधांसिमातऊतयोवसो ऽस्मान्कदाचनादभन्। विश्वाचन उपमिमीहिमानुष वसूनिचर्षणिभ्यआ ॥२०॥

मा	मा	मत
ते	तव	तेरे
राधांसि	दानानि	दान
मा	मा	मत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ते	तव	तेरी
ऊतयः	रक्षाः	रक्षाएं
वसो०	हे धनरूप !	हे धन रूप
अस्मान्	अस्मान्	हम को
कदा	कदा	कभी
चन	अपि	भी
दभन्	उपेक्षन्ताम् (लोडर्थेलङ्यडभावः)	चूकें
विश्वा	विश्वानि	सब को
च	(पूरणः)	–
नः	अस्मभ्यम्	हमारे ताईं
उपऽमि मीहि	समीपे कुरु (व्यत्ययेनपरस्मैपदम्)	समीप करो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मानष	हे मनुष्य हित ! (हितार्थेऽण्)	हेमनुष्योंके हित कारी
वसूनि	धनानि	धनों को
चर्षणिऽभ्यः	मनुष्येभ्यः (निघं०२।३)	मनुष्यों से
आ	आ-(हृत्य)	लाकर

संस्कृतार्थः ।

हे धनरूप ! (इन्द्र !) तव दानानि तव रक्षाः (च) कदाऽप्यस्मान् नोपेक्षन्ताम् हे मनुष्य हित ! (त्वम्) सर्वाणि धनानि मनुष्येभ्य आ-(हृत्य) अस्मत्समीपं कुरु ॥ २० ॥

भाषार्थः ।

हे धनरूप (इन्द्र !) आप के दान (और) आप की रक्षाएं कभी हम को न चूकें, हे मनुष्यों के हित-कारी ! आप मनुष्यों से सब प्रकार के धन को ला-कर हमारे समीप करो ॥२०॥

(१) 'चर्षणिभ्यः' से अन्य जातीय अनार्य्य मनुष्यों का ग्रहण है

इति चतुरशीतितमं सूक्तम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं०१ सू०८५।

मरुतोदेवता गोतमऋषिः।

विनियोगः—

१-१२। एतत्सूक्तमभिप्लवषडहस्य चतुर्थेऽहन्याग्निमारुतेमारुत निविद्धानीयम् (आ०सू०७।७।४)

६। "आवोवहन्तु" इत्येषा तृतीयसवने पोतुःप्रस्थितयाज्या (आ०सू०५।५।१९)

१२। "यावःशर्म-" इत्येषा मारुतेपशौ हविषो याज्या (आ०-सू०३।७।१२)

सूक्तस्य भावार्थः।

रुद्रस्यपुत्रा मरुतः प्रयाणावसरे वैद्युतप्रभारूपैराभरणैःशोभन्ते, शत्रूणां घर्षकास्ते द्यावापृथिव्यौ वर्धयन्ति,,अस्मदीयेषु यज्ञेषु च माद्यन्ति १॥ महत्त्वं प्राप्ता मरुतो दिवि स्वकीयं सदनं कृतवन्तः परमात्मनः स्तुतिं कुर्वन्तस्ते बलमुत्पादयन्तःसन्त ऐश्वर्यरूपाणि वस्त्राणि परिहितवन्तः ॥२॥ यदाऽन्तरिक्षस्यपुत्रा मरुतोऽलङ्कारैर्दीप्यन्ते तदा सर्वं शत्रुसमूहं नाशयन्ति मार्गेषु च घृतोपलक्षितं प्राचुर्य्यं स्रावयन्ति ॥ ३ ॥ मनोवद्वेगवन्तो मरुतो यदा पांशुलवायुरूपा वृष्टि बिन्दुयुक्ता मृगी रथेषु योजयन्ति॥४॥तदा मेघस्य धारा विमुच्य चर्मभस्त्रा इव पृथिवीं क्लेदयन्ति॥५॥ एतादृशान्मरुतः शीघ्रगामिनोऽश्वा अस्मदीये यज्ञ आनयन्तु,त आगत्य बर्हिष्युपविशन्तु मधुरेण सोमेन मदयुक्ताश्च भवन्तु ॥६॥ स्वतोवृद्धा मरुतोऽन्तरिक्षे स्वस्मै विस्तीर्णं स्थानं कृतवन्तः, अस्माभिर्यदायदा यज्ञ आरभ्यते तदातदा ते तत आगत्य बर्हिष्युपविशन्ति ॥ ७॥ प्रयाणं कुर्वन्तो योद्धार इव, यशोऽभिलाषिण शूराइव च मरुतोऽस्मदर्थं संग्रामेषु प्रयतन्ते, राजान इव तेजस्विरूपास्ते विश्वानि भुवनानि भये धारयन्ति ।८।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदा त्वष्टा सहस्रधारायुक्तं वज्रं सम्पादितवान् तदेन्द्रः शत्रुनाशाय तं वज्रं गृहीतवान्, तेन वृत्रं हत्वा जलानामाप्लावमधः पातितवान् ॥९॥ मरुतः समुद्रोत्थितं बाष्पं बलेनोर्ध्वं प्रेरयित्वा संघटितं मेघं विदारितवन्तः, ते सोमस्यमद एतादृशानि बहूनि रमणीयानि कर्माणि कृतवन्तः ॥ १० ॥ विचित्रदीप्तयो मरुतो गोतमर्षेर्ग्रामं प्रति मेघं तिर्य्यञ्चं प्रेरयित्वा तृषिताय तस्मै जलप्रस्रवणं सिक्तवन्तः, तदन्तिके रक्षाभिः सह प्राप्य तं यथाकामं तर्पितवन्तश्च ॥ ११॥ मरुद्भिर्यानि सुखानि निजभक्तेभ्यो दीयन्ते तान्यस्मान्प्रति प्राप्नुवन्तु, सेचन समर्थास्ते मरुतोऽस्मभ्यं श्रेष्ठपुत्रैर्युक्तंधनं प्रयच्छन्तु ॥ १२ ॥

मरुतोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२

प्रयेशुम्भन्तेजनयोनसप्तयोया-
मन्रुद्रस्यसूनवःसुदंससः । रोदसी
हिमरुतश्चक्रिरेवृधे मदन्तिवीरा
विदथेषुघृष्वयः । १ ।

प्र	प्र +	–
ये	ये	जो
१ शुम्भन्ते	प्र + शुम्भन्ते, प्रकर्षेण शोभन्ते	खूब सिंगरते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जनयः	जायाः	स्त्रियाँ
न	इव	की न्याईं
सप्तयः	शाघ्रगमनशीलाः	शीघ्रगति वाले
यामन्	यामनि,प्रयाणे (सति) (सप्तम्यालुक्)	यात्रा होने पर
रुद्रस्य	रुद्रस्य	रुद्र के
सूनवः	पुत्राः	पुत्र
सुऽदंससः	सुकर्म्माणः	उत्तम कर्म्मोंवाले
रोदसी०	द्यावापृथिव्यौ	द्यौ (और)पृथिवी को
हि	खलु	सचमुच
मरुतः	मरुतः	मरुतों ने
चक्रिरे	कृतवन्तः	बनाया है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृधे	वृद्धयै	वृद्धि के लिये
मदन्ति	माद्यन्ति	मोदयुक्त होते हैं
वीराः	वीराः	वीर
विदथेषु	यज्ञेषु	यज्ञों में
घृष्वयः	(शत्रूणाम्)घर्षकाः	(शत्रुओं के)रगड़ने वाले

संस्कृतार्थः ।

शीघ्रगमनशीला रुद्रस्य पुत्राः सुकर्म्माणो ये मरुतः प्रयाणे (सात) स्त्रियइव प्रकर्षेण शोभन्ते(येच) खलु द्यावापृथिव्योर्वर्धनं कृतवन्तः, (ते शत्रूणाम्) घर्षका वीराः (अस्मदीयेषु) यज्ञेषु माद्यन्ति ॥ १ ॥

भाषार्थ :

शीघ्र चलने वाले जो रुद्र के पुत्र सुकर्म्मा मरुत यात्रा होने पर स्त्रियों की न्याईं खूब सिंगरते हैं (और जिन्होंने) सचमुच द्यौ(और) पृथिवी को बढायाहै (वे शत्रुओं के) रगड़ने वाले वीर(हमारे) यज्ञों में मोद को प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥

(१) मरुतों के आभूषण बिजली की दमक हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतो देवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२

तउच्चितासोमहिमानमाशत

दिविरुद्रासोअधिचक्रिरेसदः। अर्चन्तो

अर्कंजनयन्तइन्द्रियमधिश्रियोदधि-

रेपृश्निमातरः ॥ २ ॥

ते	ते	वे
उच्चितासः	महान्तः (निघं०३।३,जसोऽसुगागमः)	महान
महिमानम्	महत्त्वम्	महत्त्व को
आशत	प्राप्तवन्तः (विकरणस्यलुक्)	प्राप्त हुए हैं
दिवि	दिवि+अधि	आकाश में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुद्रासः	रुद्रस्य पुत्राः (जसोऽसुगागमः)	रुद्र के पुत्रों ने
अधि	+अधि	–
चक्रिरे	कृतवन्तः	किया है
सदः	सदनम्	स्थान को
१ अर्चन्तः	स्तुवन्तः, उच्चारयन्तः	उच्चारण करते हुए
१ अर्कम्	स्तोत्रम्	स्तोत्र को
१ जनयन्तः	उत्पादयन्तः	उत्पन्न करते हुए
१ इन्द्रियम्	बलम्	बल को
अधि	अधि+	–
श्रियः	ऐश्वर्याणि	ऐश्वर्यों को
दधिरे	अधि + दधिरे, परिहितवन्तः	पहना है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पृश्निऽमातरः	पृश्निर्मातायेषांते, अन्तरिक्षस्यपत्राः (पृश्निरित्यन्तरिक्ष-नाम निघं०१।४)	अन्तरिक्ष के पुत्रों ने

संस्कृतार्थः ।

ते महान्तो रुद्रस्य पुत्रा महत्त्वं प्राप्तवन्तो दिवि (स्वकीयम्) सदनम् (च) कृतवन्तः, स्तोत्रमुच्चारयन्तो वीर्य्यम् (च) उत्पादयन्तः (ते) अन्तरिक्षस्य पुत्रा ऐश्वर्य्याणि परिहितवन्तः ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

उन महान रुद्रके पुत्रों ने महत्त्वको प्राप्त कियाहै (और) आकाश में (अपने लिये) स्थान बनाया है, स्तोत्र को उच्चारण करते हुए (और) बल को उत्पन्न करते हुए (उन) अन्तरिक्ष के पुत्रों ने ऐश्वर्य्यों को पहना है ॥ २ ॥

(१) साएं साएं शब्द से परमात्मा की स्तुति करते हुए मरुत बल को उत्पन्न करते हैं और अपने को अनेक ऐश्वर्य्यों से आच्छादन कर लेते हैं ॥

मरुतोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२।

गोमातरोयच्छुभयन्तेअञ्जिभि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्तनूषुशुभ्रादधिरेविरुक्मतः। बा-
धन्तेविश्वमभिमातिनमप वर्त्मा-
ऽन्येषामनुरीयतेघृतम् । ३।

गोऽमातरः	अन्तरिक्षस्यपत्राः (गौरित्यन्तरिक्ष नाम निघं० १।४)	अन्तरिक्ष के पुत्र
यत्	यदा	जब
शुभयन्ते	शोभन्ते	सजते हैं
अञ्जिजऽभिः	अलङ्कारैः	अलंकारों से
तनूषु	शरीरेषु	शरीरों में
शुभ्राः	शुभ्राः	उज्ज्वल
दधिरे	धारयन्ति (लडर्थेलिट)	धारण करते ह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विरुक्मतः	विशेषेण रोचमानान् (स्वर्णहारान्)	खूब चमकीले (सोनेके हारों)को
बाधन्ते	अप+बाधन्ते, नाशयन्ति	नाश करते हैं
विश्वम्	सर्वम्	सम्पूर्ण को
अभिऽमातिनम्	शत्रुजातम् (आ०को०)	शत्रुओं को
अप	अप +	–
वर्त्मानि	मार्गान्	रस्तों को
एषाम्	एषाम्	इन के
अनु	अनु	पीछे २
रीयते	स्रवति (रीङ् स्रवणे, श्यन्)	बहता है
१ घृतम्	घृतम्	घृत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

अन्तरिक्षस्य पुत्राः शुभ्राः (मरुतः) यदाऽलङ्कारैः शोभन्ते शरीरेषु विशेषेण रोचमानान् (स्वर्णहाराँश्च) धारयन्ति (तदा) सर्वं शत्रु-(समूहम्) नाशयन्ति, एषां मार्गाननु घृतम् (च) स्रवति ।३।

भाषार्थः ।

अन्तरिक्ष के पुत्र उज्वल (मरुत) जब अलंकारों से सजते हैं (और) अंगों में खूब चमकीले (सोने के हारों) को धारण करते हैं (तब) संपूर्ण शत्रुओं का नाश करते हैं (और) इन के मार्गों के पीछे घृत बहता है ॥ ३ ॥

(१) घृत का बहना बहुतायत का उपलक्षण है आशय यह है कि जहां २ मरुत जाते हैं वहां बहुतायत होजाती है ॥

मरुतोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२

वियेभ्राजन्तेसुमखासऋष्टिभिः

प्रच्यावयन्तोअच्युताचिदोजसा। म

नोजुवोयन्मरुतोरथेष्वा वृषव्राता-

सःपृषतीरयुग्ध्वम् ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वि	वि+	–
ये	ये	जो
भ्राजन्ते	वि+भ्राजन्ते, विशेषेणदीप्यन्ते	खूब चमकते हैं
सुऽमखासः	शोभनयज्ञाः (जसोऽसुगागमः)	सुन्दर यज्ञोंवाले
ऋष्टिऽभिः	आयुधैः	शस्त्रों से
प्रऽव्यवयन्तः	प्रच्यावयन्तः (ह्रस्वश्छान्दसः)	गिराते हुए
अच्युता	च्युतिरहितानि (शेर्लोपः)	न गिरनेवालों को
चित्	अपि	भी
ओजसा	बलेन	बल से
मनःऽजुवः	मनोवद्वेगवन्तः	मनकीन्याइबेग वाले
यत	ये (सुपामितिविभक्तेर्लुक)	जा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतः	हे मरुतः !	हे मरुतो
रथेषु	रथेषु+आ	रथोंमें
आ	+आ	–
वृषऽव्रातासः	वृषाःशूरा व्राता गणायेषां ते (जसोऽसुगागमः)	शूरबीर गणों वाले
१ पृषतीः	बिन्दुयुक्तामृगीः	बूंदोंवाली हिरनियों को
अयुग्ध्वम्	योजयथ (लडर्थेलुङ्)	जोड़ते हो

संस्कृतार्थः ।

शोभन यज्ञा ये (मरुतः) आयुधैः प्रदीप्यन्ते (ते) द्युतिरहितान्यपि (वस्तूनि) बलेन प्रच्यावयन्तः (वर्तन्ते) हे मरुतः! मनोवद्वेगवन्तो ये (यूयम्) शूरगण-युक्ताः (सन्तः) रथेषु बिन्दुयुक्ता मृगीर्यो जयथ ॥४॥

भाषार्थः ।

सुन्दर 'यज्ञों वाले जो (मरुत) शस्त्रों से खूब चमकते हैं (वे) न गिरने वाले (पदार्थों) को भी बल से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गिरा देते हैं हे मरुतो ! मन की न्याईं बेग वाले जो आप शूरवीर गणों से युक्त (होकर) रथों में बूंदों वाली हिरनियों को जोड़ते हो ॥ ४ ॥

(१) बिन्दु युक्त मृगी, वृष्टि की बूंदों से युक्त आंधियां हैं।

मरुतोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२

प्रयद्रथेषुपृषतीरयुग्ध्वं वाजेअद्रिंमरुतोरंहयन्तः। उतारुषस्यविष्यन्तिधारा श्चर्म्मंवोदभिर्व्युन्दन्तिभूम ॥ ५ ॥

प्र	प्र +	–
यत्	यदा	जब
रथेषु	रथेषु	रथोंमें
पृषतीः	बिन्दुयुक्तामृगीः	बूंदोंवालीहिरनियोंको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अयुग्ध्वम्	प्र+अयुग्ध्वम्, प्रकर्षेणयोजयथ (लडर्थेलुङ्)	भली प्रकार जोड़ते हो
वाजे	युद्धे	युद्ध में
अद्रिम्	वज्रम् (यास्कः)	वज्र को
मरुतः	हे मरुतः !	हे मरुतो
रंहयन्तः	प्रेरयन्तः (रहिगतौ)	प्रेरण करते हुए
उत	अपिच	और
अरुषस्य	अरुणमेघस्य (आ०को०)	लाल बादल की
वि	वि+	–
स्यन्ति	वि+स्यन्ति, विमुच्यन्ते	छुटती हैं
धाराः	धाराः	धाराएं।
१ चर्म्मऽइव	चर्म्मेव	चर्म की न्याईं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उदऽभिः	उदकैः (उदकशब्दस्यउदन्नादेशः)	जलोंसे
वि	वि +	–
उन्दन्ति	वि+उन्दन्ति, विशेषेणक्लेदयन्ति (उन्दी क्लेदने)	तर करती हैं
भूम	भूमिम् (द्वितीयायाडादेशे सति ह्रस्वश्छान्दसः)	पृथिवी को

संस्कृतार्थः।

हे मरुतः ! यदा युद्धे वज्रं प्रेरयन्तः (यूयम्) रथेषु बिन्दुयुक्तामृगीर्योजयथ तदाऽरुण मेघस्य धारा विमुच्यन्ते (ताश्च) चर्म्मेव जलैःपृथिवीं क्लेदयन्ति ॥ ५ ॥

भाषार्थः।

हे मरुतो ! जब युद्ध में वज्र को प्रेरण करते हुए आप रथों में बूंदों वाली हिरनियों को जोड़ते हो तब लाल बादल की धाराएं छुटती हैं (और वे) चर्म की न्याईं पृथिवी को जलों से तर करती हैं ॥ ५ ॥

(१) चर्म की न्याईं अर्थात जैसे चर्म की मसक पृथिवी को तर कर देती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२

आवोवहन्तुसप्तयोरघुष्यदो रघुपत्वानःप्रजिगातबाहुभिः। सीदताबर्हिरुरुवः सदस्कृतं मादयध्वंमरुतोमध्वोअन्धसः॥ ६॥

आ	आ+	-
वः	युष्मान्	आपको
वहन्तु	आ+वहन्तु	लावें
सप्तयः	अश्वाः	घोड़े
रघुऽस्यदः	लघुधावनयुक्ताः	हलकेदौड़नेवाले
रघुऽपत्वानः	लघुस्कन्धाः	हलके कन्धोंवाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्र	प्र+	–
जिगात	प्र+जिगात, प्राप्नुत (जिगातिर्गत्यर्थः निघं०२।१४)	आप प्राप्त होवें
बाहुऽभिः	बाहुभिः	भुजाओं से
सीदत	आ+सीदत,उपविशत	आप बैठें
आ	आ+	–
बर्हिः	बर्हिषि (सुपामितिसप्तम्याःसुः)	कुशापर
उरु	विस्तीर्णम्	चौड़ा
वः	युष्मभ्यम्	आपकेलिये
सदः	सदनम्	आसन को
कृतम्	कृतम्	किया है
मादयध्वम्	मदयुक्ता भवत	आप मदयुक्त होवें
मरुतः	हेमरुतः!	हे मरुतो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मध्वः	मधुरेण (तृतीयार्थेषष्ठी)	मीठे से
अन्धसः	सोमेन (,,)	सोम से

संस्कृतार्थः ।

हे मरुतः ! लघुधावनयुक्ता लघुस्कन्धाः (च) अश्वा युष्मान् (अत्र) आवहन्तु (यूयं तेषाम्) बाहुभिरागच्छत, (आगत्य च) बर्हिष्युपविशत युष्मभ्यं सदनं विस्तीर्णं कृतम् (अस्ति तत्रोपविश्य) मधुरेण सोमेन मदयुक्ता भवत ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

हे मरुतो ! हलके दौड़ने वाले (और) हलके कंधों वाले घोड़े आप को (यहां) लावें आप (उन की) भुजाओं से आवें (और आकर) कुशा पर बैठें आप के लिये चौड़ा आसन बनाया है (उस पर बैठ कर) मीठे सोम से मद युक्त होवें ॥ ६ ॥

मरुतोदेवता जगतीछन्दः १२।१२।१२।१२

तेवर्धन्तस्वतवसोमहित्वना

ऽऽनाकंतस्थुरुरुचक्रिरेसदः । विष्णु-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यद्वा॑ वृषणं॑ मच्युतं॑ वयोनसीद॑न्नधि॑बर्हिषि॑प्रिये ॥ ७ ॥

ते	ते	वे सब
अवर्धन्त	अवर्धन्त	बढे हैं
स्वऽतवसः	स्वतोबलवन्तः	स्वयं बल वाले
महिऽत्वना	महिम्ना (व्यत्ययेन नाभावः)	महिमा से
आ	आ +	–
नाकम्	अन्तरिक्षम् (निघं० १।४)	अन्तरिक्ष को
तस्थुः	आ+तस्थुः,आरूढवन्तः	चढे हैं
उरु	विस्तीर्णम्	विस्तार वाला
चक्रिरे	कृतवन्तः	किया है
सदः	सदनम्	स्थान को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ विष्णुः	विष्णुः	विष्णु
यत्	यदा	जब
ह	खलु	सचमुच
१ आवत्	रक्षति (लडर्थेलङ्)	रक्षा करता है
वृषणम्	(कामानाम्)वर्षितारम्	(कामनाओं के) बरसाने वाले को
मदऽच्युतम्	मदस्य च्यावयितारम्	मदके टपकाने वाले को
वयः	पाक्षणः	पक्षी
न	इव	की न्याईं
सीदन्	उपविशन्ति (लेट्यडागमः)	बैठते हैं
अधि	अधि+	–
बर्हिषि	अधि + बर्हिषि	कुशा पर
प्रिये	प्रिये	प्यारी पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

स्वतोबलवन्तस्ते महिम्नाऽवर्धन्त,अन्तरिक्ष आरूढवन्तः (तत्रस्वस्मै) विस्तीर्णं सदनम्(च)कृतवन्तः, यदा खलु मदस्य च्यावयितारम् (कामानाम्) वर्षितारम् (च यज्ञम्) विष्णू रक्षति (तदा मरुतः) पक्षिण इव प्रिये बर्हिष्युपविशन्ति ॥ ७ ॥

भाषार्थः।

स्वयं बल वाले वे महिमा द्वारा बढ़े हैं, अन्तरिक्ष पर चढ़े हैं (और वहां पर अपने लिये) विस्तीर्ण स्थान को बनाया है,जब विष्णु सचमुच मदके गिराने वाले (और) कामनाओं की वर्षा करने वाले (यज्ञ) की रक्षा करते हैं (तब मरुत)पक्षियों की न्याईं प्यारी कुशा पर बैठते हैं ॥ ७ ॥

(१) जब विष्णु यज्ञ की रक्षा करते हैं अर्थात जब हमारे यहां यज्ञ होता है तब मरुत कुशा पर आकर बैठते हैं जैसे पक्षी अपने प्रिय स्थान पर।

मरुतोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२।

शूराइवेद्युयुधयोनजग्मयः श्रवस्यवोनपृतनासुयेतिरे। भयन्तेवि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रवाभुवनामरुद्भ्यो राजानइवत्वे-
षसन्दृशोनरः ॥ ८ ॥

शूराःऽइव	शूराइव	शूरबीरों की न्याईं
इत्	खलु	सच मुच
युयुधयः	योद्धारः (किन् प्रत्ययः)	योधा
न	इव	की न्याईं
जग्मयः	प्रयाणं कुर्वन्तः	चढाई करते हुए
श्रवस्यवः	यशोऽभिलाषुकाः	यशके अभिलाषी
न	इव	की न्याईं
पृतनासु	संग्रामेषु	युद्धों में
येतिरे	प्रयतवन्तः	परिश्रमकिया है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भयन्ते	भयं प्राप्नुवन्ति (व्यत्ययेनशपःश्लोर-भावः)	डरते हैं
विश्वा	विश्वानि (शेर्लोपः)	सम्पूर्ण
भुवना	भुवनानि (,,)	लोक
मरुत्ऽभ्यः	मरुद्भ्यः	मरुतों से
राजानःऽइव	राजानइव	राजाओंकी न्याईं
त्वेषऽसन्दृशः	तेजस्विरूपाः	तेजस्वी रूप वाले
नरः	नराः	नर

संस्कृतार्थ ।

शूराइव खलु (मरुतः) योद्धारइव प्रयाणं कुर्वन्तो यशोऽभिलाषुकाइव संग्रामेषु प्रयतवन्तः (एभ्यः) मरुद्भ्यः सर्वाणि भुवनानि भयं प्राप्नुवन्ति (एते) नरा राजान इव तेजस्विरूपाः (सन्ति) ॥ ८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

सचमुच शूरवीरों जैसे (मरुतों ने) योधाओं की न्याईं चढाई करते हुए यश के अभिलाषियों की न्याईं युद्धो में परिश्रम किया है (इन) मरुतों से सम्पूर्ण लोक डरते हैं (ये) नर राजाओं की न्याईं तेजस्वी रूप वाले (हैं) ॥ ८ ॥

मरुतोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२।

त्वष्टायद्वज्रंसुकृतंहिरण्ययं

सहस्रभृष्टिंस्वपाअवर्तयत् । धत्त

इन्द्रोनर्य्यपांसिकर्तवे ऽहन्वृत्रंनिर-

पामौब्जदर्णवम् ॥९॥

त्वष्टा	त्वष्टा	त्वष्टा ने
यत्	यम् (विभक्तेर्लुक्)	जिस को
वज्रम्	वज्रम्	वज्र को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुऽकृतम्	सुष्ठुनिर्म्मितम्	सुन्दर बने हुए को
हिरण्ययम्	सुवर्णमयम्	स्वर्णमय को
सहस्रऽभृष्टिम्	सहस्रधारायुक्तम्	सहस्र धाराओं वाले को
सुऽअपाः	सुकर्म्मा	सुकर्म्मा ने
अवर्तयत्	सम्पादितवान्	तैय्यार किया
धत्ते	धृतवान् (लिडर्थेलट्)	धारण किया
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र ने
नरि	सङ्ग्रामे (सा०भा०)	युद्ध में
अपांसि	कर्म्माणि	कर्म्मों को
कर्तवे	कर्त्तुम्	करने के लिये
अहन्	हतवान्	हनन किया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृत्रम्	वृत्रम्	वृत्र को
निः	निः+	–
अपाम्	अपाम्	जलों की
औब्जत्	निः+औब्जत्, अधःपातितवान्	नीचे गिराया
अर्णवम्	आप्लावम् (आ०को०)	बाढ को

संस्कृतार्थः।

सुकर्म्मा त्वष्टा यं सुनिर्मितं सहस्रधारोपेतं सुवर्णमयं वज्रं सम्पादितवान् (तम्) इन्द्रः संग्रामे(शत्रुहनन रूपाणि)कर्म्माणि कर्तुं धृतवान्(तेन) वृत्रं हतवान्, अपामाप्लावम् (च) अधः पातितवान्।९।

भाषार्थः।

सुकर्म्मा त्वष्टाने जिस सुन्दर बने हुए सहस्र धाराओं वाले सोने के वज्र को तैय्यार किया (उस को) इन्द्र ने युद्ध में (शत्रु हनन रूप) कर्म्मों को करने के लिये धारण किया (उस के द्वारा) वृत्र को मारा (और) जलों की बाढ को नीचे गिराया ॥९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२।

ऊर्ध्वंनुनुद्रेऽवतंतओजसा दा-
दृहाणंचिद्बिभिदुर्विपर्वतम् । धम-
न्तोवाणंमरुतःसुदानवो मदेसो-
मस्यरण्यानिचक्रिरे ॥ १० ॥

ऊर्ध्वम्	ऊर्ध्वम्	ऊपर की ओर
नुनुद्रे	प्रेरितवन्तः (णुदप्रेरणे, लिटि 'इरयो-रे' इतिरेआदेशः)	प्रेरण किया
१ अवतम्	जलाशयम् (निघं०३।२३)	जलाशय को
ते	ते	उन्होंने
ओजसा	बलेन	बल से
१ दृहाणम्	दृढीभूतम् (लिटःकानच्)	दृढ हुए को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चित्	अपि	भी
बिभिदुः	वि+बिभिदुः विभेदितवन्तः	चीर डाला
वि	वि+	–
पर्वतम्	मेघम् (निघं०१।१०)	बादल को
२ धमन्तः	धमन्तः	धौंकते हुए
२ वाणम्	शब्दम् (निघं०१।११)	शब्द को
मरुतः	मरुतः	मरुतों ने
सुऽदानवः	कल्याणदानाः (यास्कः)	कल्याण के देने वाले
मदे	मदे	मदमें
सोमस्य	सोमस्य	सोमके
रणयानि	रमणीयानि (कर्माणि)	अति सुन्दर (कर्म्मों को)
चक्रिरे	कृतवन्तः	किया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

मरुतो बलेन जलाशयमूर्ध्वं प्रेरितवन्तः, दृढीभूतमपि मेघम् (च) विभेदितवन्तः, कल्याणदानाः (ते) शब्दं धमन्तः (सन्तः) सोमस्य मदे रमणीयानि (कर्माणि) कृतवन्तः ॥ १० ॥

भाषार्थः ।

मरुतों ने बल से जलाशय को ऊपर की ओर प्रेरण किया (और) दृढ़ हुए बादलको भी चीर डाला, शब्द को धौंकते हुए (उन) कल्याण के देने वालों ने सोम के मद में अति सन्दर (कर्म्मों) को किया॥१०॥

(१) जलाशय समुद्र है जिस के जलों को मरुतदेवता ऊपर के आकाश में प्रेरण करके बादल बनाते हैं और जब वे संघटित हो जाते हैं तब उन को चीर कर मीठा जल बरसाते हैं ॥

(२) हम जिह्वा से शब्द को बोलते हैं, मरुत श्वास द्वारा धौंकते हैं ॥

मरुतोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२।

जिह्मंनुनुद्रेऽवतंतयादिशाऽसिञ्चन्नुत्संगोतमायतृष्णजे । आगच्छन्तीमवसाचित्रभानवः कामंवि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रस्यतर्पयन्तधार्माभिः ॥ ११ ॥

जिह्मम्	तिर्य्यञ्चम्	तिर्छा
नुनुद्रे	प्रेरितवन्तः (रेआदेशः)	प्रेरणा किया
अवतम्	जलाशयम् (निघं०३।२३)	जलाशय को
१ तया	तया	उससे
१ दिशा	दिशा	दिशा से
असिञ्चन्	सिक्तवन्तः	सींचा
उत्सम्	प्रस्रवणम्	झरने को
गोतमाय	गोतमाय	गोतम के लिये
तृष्णाऽजे	तृषिताय (तितृषापिपासायां नजिङ्प्रत्ययः)	प्यासे के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आ	आ+	-
गच्छन्ति	आ+गच्छन्ति प्राप्तवन्तः (लिडर्थेलट्)	प्राप्त हुए
ईम्	एनम्	इसको
अवसा	रक्षया	रक्षा के साथ
चित्रऽभानवः	विचित्र दीप्तयः	विचित्र दीप्ति वाले
कामम्	यथेच्छम्	इच्छाके अनुसार
विप्रस्य	ऋषिम् (कर्म्मणि षष्ठी)	ऋषि को
तर्पयन्त	तर्पितवन्तः	तृप्त किया
धामऽभिः	बलैः (आ०को०)	बलों से

भाषार्थः।

(मरुतः) जलाशयं तया दिशा तिर्य्यञ्चं प्रेरित-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वन्तः, तृषिताय गोतमाय प्रस्रवणम् (च) सिक्तवन्तः, विचित्रदीप्तयः (ते) एनमृषिं रक्षयासह प्राप्तवन्तः (निज) बलैर्यथाकामं तर्पितवन्तः (च) ॥ ११ ॥

भाषार्थः ।

(मरुतों) ने जलाशय को उस दिशा से तिर्छा प्रेरण किया (और) प्यासे गोतम के लिये झरने को सींचा, विचित्र दीप्ति वाले (वे) इस ऋषि को रक्षा के साथ प्राप्त हुए (और) (अपने) बलों द्वारा इच्छा के अनुसार तृप्त किया ॥ ११ ॥

(१) जलाशय को उस दिशा से तिर्छा प्रेरण किया अर्थात बादल को ऊपर प्रेरण करने की जगह गोतम ऋषि के ग्राम की ओर तिर्छा प्रेरण किया और वर्षा के प्यासे गोतम को जल बरसा कर तृप्त किया ॥

मरुतोदेवता त्रिष्टुप्छन्दः ।११।११।११।११

यावः शर्म्म शशमानाय सन्ति-
त्रिधातूनि दाशुषे यच्छताधि । अस्म-
भ्यं तानि मरुतो वियन्त रयिं नो धत्त
वृषणः सुवीरम् ॥ १२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

या	यानि (ग्रेर्लोपः)	जो
वः	युष्माकम्	आपके
शर्म्म	शर्म्माणि (ग्रेर्लोपः)	सुख
शशमानाय	स्तुतिंकुर्वते (निघं०३।१४)	स्तुति करने वाले के लिये
सन्ति	सन्ति	हैं
त्रिऽधातूनि	त्रिगुणानि	तिगुने
दाशुषे	दत्तवते	देने वाले के ताईं
यच्छत	अधि+यच्छत प्रयच्छथ (लडर्थे लङ्यडभावः)	देतेहो
अधि	+अधि	–
अस्मभ्यम्	अस्मभ्यम्	हमारे ताईं
तानि	तानि	उनको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतः	हे मरुतः !	हे मरुतो
वि	वि +	–
यन्त	वि + यन्त, प्रयच्छत (शपोलुक्, तबादेशश्च)	आप दें
रयिम्	धनम्	धन को
नः	अस्मभ्यम्	हमारे ताईं
धत्त	स्थापयत	स्थापन करो
वृषणः	हे सेचन समर्थाः !	हे शरबीरो
सुऽवीरम्	श्रेष्ठपुत्रैर्युक्तम्	श्रेष्ठ पुत्रों से युक्त को

संस्कृतार्थः

हे मरुतः ! यानि युष्मत्सम्बन्धीनि त्रिगुणानि सुखानि स्तुतिं कुर्वते सन्ति (यानि च हविः) दत्तवते प्रयच्छथ, तानि (सर्वाणि) अस्मभ्यं प्रयच्छत, हे सेचन समर्थाः ! श्रेष्ठपुत्रैर्युक्तं धनम् (अपि) अस्मभ्यं स्थापयत ॥ १२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

हे मरुतो ! जो आपके तिगुने सुख स्तुति करने वाले के लिये हैं (और जो सुख हवि) देने वाले के ताईं देते हो वे (सब) हमें दो, हे शूरवीरो ! श्रेष्ठ पुत्रों से युक्त धन को (भी) हमारे ताईं स्थापन करो ॥ १२ ॥

इति पञ्चाशीतितमंसूक्तम् ॥

ऋ० मं० १ सू० ८६

मरुतोदेवता गोतमऋषिः।

विनियोगः—

१-१० । एतत्सूक्तं व्यूळ्हस्य तृतीये छन्दोमआग्निमारुते शस्त्रे विनियुक्तम् (आ०८ । ११।४)

१ । "मरुतः" इत्येषा ऐन्द्रामारुत्याभिष्टावनुवाक्या (आ०२।११।१४)

,, । एषैव वरुणप्रघासेषु मारुत्याआमिक्षाया अनुवाक्या(आ०२।१७.१) प्रातःसवने पोतुःप्रस्थितयाज्या च (आ०५।५।१८)

सूक्तस्य भावार्थः ।

यस्य गृहे मरुतः सोमं पिबन्ति सजनोऽतिशयेन सुरक्षकैर्युक्तो भवति १ यज्ञवाहकास्ते मरुतो यज्ञैः स्तुतिभिर्वाऽस्मदाह्वानं शृण्वन्तु २ यस्य यजमानस्यर्त्विज ऋषितुल्याः सन्ति स गोभिः पूर्णस्य गोष्ठस्य स्वामी भवति ३ अस्य वीरस्य यज्ञेषु सोमः सूयते, स्तोत्राणि हर्षगीतानि च गीयन्ते ४ ५ भावयालिनस्ते मरुतः सर्वाभिभाविनो·

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऽस्य यजमानस्याऽभ्यर्थनं शृण्वन्तु स्तोतारमृषिं प्रत्यन्नानि च प्राप-यन्तु ५ तेषां वेगवतां रक्षाभिर्युक्ता वयं बहुकाला दृहवींषि दत्तवन्तः ६ यस्मै मनुष्याय पूज्यतमामरुतोऽन्नानि प्रयच्छन्ति स सुभगोऽस्तु ७ सत्यबलास्ते नराः स्तुतिं कुर्वतो यज्ञेन श्रान्तस्य यजमानस्य कामयमानस्य भक्तस्य वा कामं पूरयन्तु ८ निजमहत्त्वेन राक्षसाँ इव ताडयन्तु ९ ते मरुतोऽन्धकारं गूहन्तु रोगाद्युत्पादनैर्मनुष्याणां भक्षकान् राक्षसान् निर्गमयन्तु, अस्माभिः काम्यंज्योतिश्च प्रकट-यन्तु ॥ १० ॥

मरुतोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८

मरुतोयस्यहिक्षये पाथादिवो

विमहसः। ससुगोपातमोजनः ॥ १ ॥

मरुतः	हे मरुतः !	हे मरुतो
यस्य	यस्य	जिसके
हि	खलु	सचमुच
क्षये	गृहे	घर मे
पाथ	पिबथ (शपोलुक्)	पीते हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिवः	द्युलोकस्य	आकाश के
विऽमहसः	हे महापुरुषाः	हे महापुरुषो
सः	सः	वह
सुऽगोपातमः	अतिशयेन सुरक्षकैर्युक्तः	सब से अधिक सुरक्षकों वाला
जनः	मनुष्यः	मनुष्य

संस्कृतार्थः ।

हे द्युलोकस्य महापुरुषाः ! मरुतः ! (यूयम्) यस्य गृहे (सोमम्) खलु पिबथ स मनुष्योऽतिशयेन सुरक्षकैर्युक्तः (भवति) ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

हे आकाश के महापुरुषो ! हे मरुतो ! आप जिस के घर में सचमुच (सोम को) पीते हो, वह मनुष्य सब से अधिक रक्षकों वाला (होता है) ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

यज्ञैर्वा यज्ञवाहसो विप्रस्य वा मतीनाम् । मरुतः शृणुताहवम् ।२।

यज्ञैः	यज्ञैः	यज्ञों के द्वारा
वा	वा	वा
यज्ञऽवाहसः	हे यज्ञस्यवोढारः!	हे यज्ञ के प्राप्त कराने वालो
विप्रस्य	ऋषेः	ऋषि की
वा	वा	वा
मतीनाम्	स्तुतिभिः (तृतीयार्थे षष्ठी)	स्तुतियों के द्वारा
मरुतः	हे मरुतः !	हे मरुतो
शृणुत	शृणुत	सुनो
हवम्	आह्वानम्	पुकार को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे यज्ञस्यवोढारोमरुतः ! (यूयम्) यज्ञैर्वा, ऋषेः स्तुतिभिर्वा (अस्मद्) आह्वानं शृणुत ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

हे यज्ञ के प्राप्त कराने वाले मरुतो ! आप यज्ञों के द्वारा अथवा ऋषि की स्तुतियों के द्वारा (हमारी) पुकार को सुनो ॥ २ ॥

मरुतोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

उतवायस्यवाजिनो ऽनुविप्रम तष्टत । सगन्तागोमतिव्रजे ।३।

उत	अपि च	और
वा	वा	अथवा
यस्य	यस्य	जिसके
वाजिनः	वेगवन्तः (ऋत्विजः)	वेग वाले ([illegible])

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[illegible]	(सादृश्ये) (आ०को०)	सदृश
विप्रम्	ऋषिम्	ऋषि को
अतक्षत	कृतवन्तः (आ०को०)	बनाया है
सः	सः	वह
गन्ता	गन्ता	चलने वाला
गोऽभरि	गोभिर्युक्ते	गौओं से युक्त में
व्रजे	गोष्ठे	गोष्ठ में

संस्कृतार्थः।

अपिच (हे मरुतः ! यूयम्) यस्यर्त्विज ऋषिसदृशान् कृतवन्तः स गोभिर्युक्ते गोष्ठे गन्ता(भवति)।३।

भाषार्थः।

और (हे मरुतो !) आपने जिस के ऋत्विजों को ऋषि के सदृश बनाया है वह गौओं से युक्त गोष्ठ में चलने वाला (होता है) ॥ ३ ॥

[illegible] ऋषि तुल्य हैं उस का गोष्ठ गौओं से [illegible]।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

अस्यवीरस्यबर्हिषि सुतःसो-

मोदिविष्टिषु । उक्थंमदश्चशस्यते ।४।

अस्य	अस्य	इसके
वीरस्य	वीरस्य	वीर के
बर्हिषि	बर्हिषि	कुशा पर
सुतः	निष्पीडितः	निचोड़ा हुआ
सोमः	सोमः	सोम
दिविष्टिषु	यज्ञेषु	यज्ञों में
उक्थम्	शस्त्रम्	स्तोत्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मदः	हर्षः	हर्ष
च	च	और
शस्यते	गीयते	गाया जाता है

संस्कृतार्थः ।

यज्ञेष्वस्य वीरस्य बर्हिषि निष्पीडितः सोमः (स्थाप्यते,अस्य गृहे च) स्तोत्रं हर्षश्च गीयेते ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

यज्ञों में इस वीर की कुशा पर निचोड़ा हुआ सोम(रक्खा जाता है और उस के घरमें) स्तोत्र और हर्ष गाया जाता है।४।

"इस वीर की" जिस का पिछले मंत्र में वर्णन है अर्थात जिस के ऋषि तुल्य ऋत्विज हैं ।

मरुतोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

अस्यश्रोषन्त्वाभुवो विश्वाय-

श्चर्षणीरभि । सूरंचित्सस्रुषीरिषः।५।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अस्य	अस्य	इसकी
श्रोषन्तु	शृण्वन्तु (बाहुलकाल्लोटिसिप्)	सुनें
आ	आ+	–
भुवः	आ+भुवः सप्रभावाः	प्रभाव वाले
विश्वाः	सर्वान्	सब को
यः	यः	जो
चर्षणीः	मनुष्यान्	मनुष्यों को
अभि	अभि-(भवति)	बढ़ जाता है
सूरम्	स्तोतारम् (षूप्रेरणे ऋन्प्रत्ययः)	स्तोता को
चित्	अपि	भी
सस्रुषीः	गामिनः(भवन्तु) (सृगतौ,अस्माल्लिटः क्वसुस्ततोङीप्,पूर्व सवर्णदीर्घश्च),	पहुंचने वाले (हों)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दूषः	अन्नानि	अन्न

संस्कृतार्थः ।

सप्रभावाः (मरुतः) अस्य (यजमानस्याऽभ्यर्थनम्) शृण्वन्तु यः सर्वान् मनुष्यानभिभवति, अन्नानि (च) (माम्) स्तोतारमपि प्राप्नुवन्तु ॥ ५ ॥

भाषार्थः ।

प्रभाव वाले (मरुत) इस (यजमान) की जो सब मनुष्यों से बढ जाता है प्रार्थना सुनें, (और) अन्न (मुझ) स्तोता को भी प्राप्त हों ॥५॥

मरुतोदेवता निचृद्गायत्रीछन्दः ।८।८।७।

पूर्वीभिर्हि ददाशिम शरद्भिर्मरुतो वयम् । अवोभिश्चर्षणीनाम् ।६।

पूर्वीभिः	बहीभिः	बहुतों से
हि	खलु	सचमुच

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ददाशिम	ददाशिम (दाशृदाने लिटिरूपम्)	हमने दी हैं
१ शरत्ऽभिः	वर्षैः	वर्षों से
मरुतः	हे मरुतः !	हे मरुतो
वयम्	वयम्	हम
अवःऽभिः	रक्षाभिः	रक्षाओं से
चर्षणीनाम्	वेगवताम् (आ०को०)	वेग वालों की

संस्कृतार्थः ।

हेमरुतः ! वेगवताम् (भवताम्) रक्षाभिः(युक्ताः) वयं बहुभिर्वर्षैः खलु (हवींषि) दत्तवन्तः ॥६॥

भाषार्थः ।

हे मरुतो ! वेगवाले (आप) की रक्षाओं से (युक्त हुए २) हम बहुत वर्षों से (हवियें) देते आए हैं ॥६॥

(१) जिस प्रकार आजकल वर्षा सम्वत्सर का उपलक्षण है, इसी प्रकार पूर्व समय में शरत् थी ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

सुभगःसप्रयज्यवो मरुतोअस्तु मर्त्यः। यस्यप्रयांसिपर्षथ ।७।

सऽभगः	सौभाग्ययुक्तः	भाग्यवान्
सः	सः	वह
प्रऽयुज्यवः	हे प्रकर्षेणयष्टव्याः!	हे भली प्रकार पूजने योग्य
मरुतः	हे मरुतः!	हे मरुतो
अस्तु	अस्तु	हो
मर्त्यः	मनुष्यः	मनुष्य
यस्य	यस्मै (चतुर्थ्य षष्ठी)	जिसके लिये
प्रयांसि	अन्नानि	अन्नों को
पर्षथ	प्रयच्छथ (आ०को०)	देते हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

हे प्रकर्षेण यष्टव्याः! मरुतः! स मनुष्यः सौभाग्य युक्तोऽस्तु यस्मै [यूयम्]अन्नानि प्रयच्छथ ॥७॥

भाषार्थः।

हे भली प्रकार पूजने योग्य मरुतो! वह मनुष्य भाग्यवान हो जिसके लिये आप अन्नों को देते-हो॥ ७ ॥

मरुतोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

शशमानस्यवानरः स्वेदस्य-

सत्यशवसः। विदाकामस्यवेनतः।८।

शशमानस्य	स्तुतिं कुर्वतः (निघं०३।१४)	स्तुति करते हुए का
वा	वा	अथवा
नरः	हे नराः!	हे नरो
स्वेदस्य	स्वेदयुक्तस्य, श्रान्तस्येत्यर्थः (अन्तर्भावितण्यर्थात् कर्मणि घञ्)	थके हुए की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सत्यऽश्र-वसः	हे सत्यबलाः !	हेसच्चे बल वालो
विद	लम्भयत (विद्लृलाभे लोटिमध्य० बहु०रूपम्, अन्तर्भावित ण्यर्थादस्माद् व्यत्ययेन झादेशः)	प्राप्त कराओ
कामस्य	कामम् (कर्म्मणिषष्ठी)	कामना को
वेनतः	कामयमानस्य (वेनतिःकान्तिकर्मा, निघं०२।६)	कामना करते हुए की

संस्कृतार्थः ।

हे सत्यबलाः ! नराः । [यूयम्] स्तुतिंकुर्वतः (यज्ञेन) श्रान्तस्य (यजमानस्य) कामयमानस्य भक्तस्य) वा कामं लम्भयत॥८॥

भाषार्थः ।

हे सच्चे बल वाले नरो ! आप स्तुति करने वाले (यज्ञसे) थकेहुए (यजमान) की अथवा कामना करने वाले [भक्तकी] कामना को प्राप्त कराओ ॥ ८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतो देवता गायत्रीछन्दः।८।८।८।

यूयंतत्सत्यशवस आविष्कर्त-

महित्वना। विध्यताविद्युतारक्षः।९।

यूयम्	यूयम्	आप
तत्	तत्	उसको
सत्यऽशवसः	हे सत्यबलाः !	हे सच्चे बलवाला
आविः	आविः+	–
कर्त	आविः + कर्त, आविष्कुरुत (करोतेर्लोटि विकरणस्य लुक्,तबादेशश्च)	प्रकट करो
महिऽत्वना	महत्त्वेन	महत्त्व से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विध्यत	ताडयत (व्यधताडने)	मारो
विद्युता	विद्योतमानेन	चमकते हुए से
रक्षः	राक्षसान् (सुपामिति द्वितीयायाः सुः)	राक्षसों को

संस्कृतार्थः ।

हे सत्यबलाः! यूयंमहत्त्वेन तत्प्रसिद्धम् (बलम्) आविष्कुरुत विद्योतमानेन [वज्रेण च] राक्षसांस्ताडयत ।९।

भाषार्थः ।

हे सच्चे बलवालो! आप महत्त्वसे उस प्रसिद्ध (बल) को प्रकट करो (और) चमकते हुए (वज्र) से राक्षसों को मारो ॥ ९ ॥

मरुतोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

गूहतागुह्यतमो वियातविष्वम्चिणम् । ज्योतिष्कर्तायदुष्मसि ।१०।

गूहत	गूहत (गुहसंवरणे)	छिपाओ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गुह्यम्	गोप्यम्	छिपाने योग्य को
तमः	अन्धकारम्	अन्धकार को
वि	वि+	–
यात	वि + यात,निर्या-पयत (अन्तर्भावितण्यर्थः)	निकालो
विश्वम्	सर्वम्	सम्पूर्ण को
अत्रिणम्	अत्तारम् (अदेस्त्रिनिः)	भक्षण करने वाले को
ज्योतिः	ज्योतिः	प्रकाश को
कर्त	कुरुत विकरणस्य लुकि तबादेशः)	करो
यत्	यत्	जिसको
उश्मसि	कामयामहे (वशकान्तौ-मसइकारागमः)	हम कामना करते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

(हे मरुतः ! यूयम्) गोप्यमन्धकारं गूहत, अत्तारं सर्वम् (राक्षस जातम्) निर्गमयत,ज्योतिः (च) कुरुत यद् (वयम्) कामयामहे ॥ १० ॥

भाषार्थः ।

[हेमरुतो !] आप छिपाने योग्य अन्धकार को छिपाओ,भक्षण करने वाले (राक्षसों) को निकालो (और) प्रकाश को करो, जिसकी हम कामना करते हैं ॥ १० ॥

"अत्रि" के लिये देखो पृ० ४१६-४१७ ।

इति षडशीतितमं सूक्तम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं० १ सू० ८७

मरुतोदेवता। गोतमऋषिः।

विनियोगः—

१-६। अग्निष्टोमस्याऽऽग्निमारुते शस्त्र इदं सूक्तं विनियुक्तम् (आ०सू० ५।२०।९)

सूक्तस्य भावार्थः॥

वर्षारम्भकाले मरुतः कतिपयै र्नक्षत्रैरुषसइव विद्युद्रूपैरलङ्कारै रात्मानं विभूषयन्ति १ त आकाशस्य नत स्थानेषु मेघांश्चिन्वन्ति तथा पर्वतस्य प्रवणस्थानेषु पक्षिणस्तृणादीनि चिन्वन्ति, ते रक्षाय मधुसदृशं जलं सिञ्चन्तु २ यदा मरुतो युद्धायगन्तुं सज्जी-भवन्ति तदा पृथिवी भीतेव भृशं कम्पते. क्रीडा शीला दीप्यमाना-युधास्ते निजमहत्त्वं स्वयं स्तुवन्ति ३ इत्थमीशानः पापिनोऽ-वगन्ता दोष रहितो मरुद्गणोऽस्मद् यज्ञस्य रक्षिता भवतु ४ यदा मरुतो युद्धकर्मणि स्तुतिभिरिन्द्रं प्रोत्साहितवन्तस्तदा ते देवा अभूवन्निति कथाऽस्माभिः पुरातनेभ्यः पितृभ्यः संप्रदायक्रमेण लब्धा, अस्मद्वाणी च सूक्तोच्चारणे सोमपानेन प्रेरिता भवति ५ मरुतः सूर्यरश्मीनां स्तोतॄणां च साहाय्येन प्राणिनामुपकारार्थं वृष्टि सम्पादितवन्तः, आत्मनोऽर्थं चाऽऽकाशं स्थानं लब्धवन्तः ॥६॥

मरुतोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२

प्रत्वक्षसः प्रतवसो विरप्शिनो

ऽनानता अविथुराऋजीषिणः जुष्ट-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तमासोनृतमासोअञ्जिभिर्व्यानजे

केचिदुस्राइवस्तृभिः । १ ।

प्रऽत्वक्षसः	महान्तः (आ०को०)	महान
प्रऽतवसः	प्रबलाः (तवइतिबलनाम निघं०३।३)	प्रबल
विऽरप्शिनः	बहुभाषिणः (रप्लप् व्यक्तायांवाचि)	बहुत बोलने वाले
अनानताः	नमनरहिताः	न झुकनेवाले
अविथुराः	निर्भयाः (व्यथभये-उरच्प्रत्ययः)	निर्भय
ऋजीषिणः	शीघ्रगामिनः (आ० को०)	शीघ्रचलनेवाले
जुष्टऽतमासः	प्रियतमाः (जसोऽसुगागमः)	सबसे अधिकप्यारे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नृऽतमासः	अतिशयेन नराः (जसोऽसुगागमः)	अत्यन्तनरबीर
१अञ्जिऽभिः	अलङ्कारैः	अलंकारों से
वि	वि+	–
आनञ्जे	वि+आनञ्चे, भूषिताःबभवुः ('इरयोरे'इतिरेआदेशः)	सिंगरे हैं
के	के+चित्,कतिपयै (तृतीयार्थे प्रथमा)	थोड़ों से
चित्	+चित्	–
उषासःऽइव	उषसइव	उषाओंकी न्याई
स्तृऽभिः	नक्षत्रैः	तारों से

संस्कृतार्थः ।

महान्तः प्रबला बहुभाषिणो नमनरहिता निर्भयाः शीघ्रगामिनः प्रियतमा अतिशयेन नराः(मरुतः) कतिपयैर्नक्षत्रै रुषसइवाऽलङ्कारैर्भूषिता बभूवुः ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

महान, प्रबल, बहुत बोलने वाले, न झुकने वाले, निर्भय, शीघ्र चलने वाले, सब से अधिक प्यारे, अत्यन्त नरबीर (मरुत) अलंकारों से ऐसे सजे हैं जैसे थोड़े तारों से उषाएं ॥ १ ॥

(१) वर्षा के आरम्भ काल में बिजली की मन्द मन्द दमक से मरुत ऐसे शोभायमान होते हैं जैसे थोड़े तारों से प्रभातें।

मरुतोदेवता जगतीछन्दः।१२।१२।१२।१२

उपह्वरेषुयदचिध्वंययिं वयइव मरुतःकेनचित्पथा। श्चोतन्तिकोशाउपवोरथेष्वा घृतमुक्षतामधुवर्णमर्चते।२।

उपऽह्वरेषु	नतस्थानेषु (आ०को०)	झुकाओ वाले स्थानों में
यत्	यदा	जब
अचिध्वम्	सञ्चितवन्तः (चिङ्चयने)	चिना है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यथिम्	मेघम् (आ०को०)	मेघ को
१वयःऽइव	पक्षिणइव	पक्षियों की न्याईं
मरुतः	हे मरुतः !	हे मरुतो
केन	केन+चित्	किसीसे
चित्	+चित्	–
पथा	मार्गेण	रस्तेसे
प्रचोतन्ति	क्षरन्ति	झरते हैं
कोशाः	अभ्राणि	बादल
उप	(सामीप्ये)	समीप
वः	युष्माकम्	आप के
रथेषु	रथेषु	रथों में
आ	समन्तात्	चारों ओर से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घृतम्	उदकम् (निघं०१।१२)	जल को
उक्षत	सिञ्चत (उक्षसेचने)	सींचो
मधुऽवर्णम्	मधुसदृशम्	मधुकेतुल्यको
अर्चते	पूजयते	पूजा करने वाले के ताईं

संस्कृतार्थः।

हे मरुतः! (यूयम्) पक्षिण इव केनचिन्मार्गेण (आकाशस्य) नतस्थानेषु मेघं सञ्चितवन्तः, युष्माकं रथेष्वभ्राणि क्षरन्ति (यूयम्) पूजयते मधुसदृशमुदकं सिञ्चत ॥ २ ॥

भाषार्थः।

हे मरुतो! आपने पक्षियों की न्याईं किसी रस्ते से (आकाश के) झुकाओ के स्थानों में मेघ को चिना है आपके रथों में बादल झरते हैं आप पूजा करने वाले के ताईं मधु के तुल्य जल को सींचो ॥ २ ॥

(१) जैसे पर्वत के ढलानों पर जहां कोई मार्ग नहीं है पक्षी अपना घोंसला बनाने के लिये तृण आदि इकट्ठा कर लेते हैं इसी प्रकार मरुत न जाने किस रस्ते से आकाश की गुलाई में बादलों की तह लगा देते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतोदेवता जगतीछन्दः।१२।१२।१२।१२

प्रैषामज्मेषुविथुरेवरेजते भूमि

र्यामेषुयद्वयुज्जतेशुभे। तेक्रीळयो-

धुनयोभ्राजदृष्टयः स्वयंमहित्वं

पनयन्तधूतयः।३।

प्र	प्रकर्षेण	अत्यन्त
एषाम्	एषाम्	इनके
अज्मेषु	युद्धेषु (निघं०२।१७)	युद्धों में
विथुराऽइव	भीतेव (व्यथ भये)	डरीहुईकीन्याईं
रेजते	कम्पते	कांपती है
भूमिः	पृथिवी	पृथिवी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यामेषु	प्रयाणे (याप्रापणे मन्प्रत्ययः)	यात्राओं में
यत्	यदा	जब
ह	खलु	सचमुच
युञ्जते	सज्जीभवन्ति	सज्जितहोते हैं
शुभे	विजयाऽर्थम् (आ०को०)	विजय के लिये
ते	ते	वे
क्रीळयः	क्रीडा शीलाः	क्रीडाकरनेवाले
धुनयः	गर्जन्तः	गर्जने वाले
भ्राजत्ऽऋष्टयः	दीप्यमानायुधाः	चमकतेहुए शस्त्र वाले
स्वयम्	स्वयम्	अपने आप
महिऽत्वम्	महत्त्वम्	महत्त्व को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पनयन्त	स्तुवन्ति (पनस्तुतौ-आय प्रत्ये सति ह्रस्वश्छान्दस,लडर्थेलङ्यडभावः)	स्तुति करते हैं
धूतयः	कम्पयितारः	कंपाने वाले

संस्कृतार्थः ।

एषाम् (मरुताम्) युद्धेषु पृथिवी भीतेव भृशं कम्पते यदा खलु (ते) विजयार्थं प्रयाणेषु सज्जीभवन्ति, क्रीडाशीला गर्जन्तो दीप्यमानायुधाः कम्पयितारः (च) ते (निज-) महत्त्वं स्वयं स्तुवन्ति ॥३॥

भाषार्थः ।

इन (मरुतों) के युद्धों में पृथिवी डरी हुई की न्याईं अत्यन्त कांपती है जब (ये) सचमुच विजय के लिये सज्जित होते हैं, क्रीड़ा करने वाले, गर्जने वाले, चमकते हुए शस्त्रों वाले (और) कंपानेवाले वे आप (अपने) महत्त्व की स्तुति करते हैं ॥ ३ ॥

मरुतोदेवता जगती छन्दः ।१२।१२।१२।१२

सहिस्वसृत्पृषदश्वोयुवागणो३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऽयाईशानस्तविषीभिरावृतः। असि सत्यऋणयावाऽनेद्यो ऽस्याधियः प्राविताथावृषागणः। ४।

सः	सः	वह
हि	खलु	सचमुच
स्वऽसृत्	स्वयं सरणशीलः (क्विपितुक्)	अपनेआपचलनेवाला
पृषत्ऽअश्वः	श्वेतबिन्दुङ्किताश्वयुक्तः	चितकबरे घोडोंवाला
युवा	युवा	जवान
गणः	(मरुद्-) गणः	(मरुद्-)गण
अया	इत्थम् (आ०को०)	इस प्रकार
ईशानः	ईशानः	ईशन करनेवाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तविषीभिः	बलैः	बलों से
आऽवृतः	परिवेष्टितः	घिरा हुआ
असि	अस्ति (पुरुष व्यत्ययः)	है
सत्यः	सत्यः	सच्चा
ऋणऽयावा	पापिनोऽवगन्ता (ऋणइति पापिनाम; आ०को०)	पापीकोजानने वाला
अनेद्यः	अनिन्द्यः	दोष रहित
अस्याः	अस्य	इसकी
धियः	कर्म्मणः	कर्म्म की
प्रऽअविता	प्रकर्षेणरक्षिता	भली प्रकार रक्ष करने वाला
अथ	अपिच (आ०को०)	और
वृषा	वीर्य्यवान्	वीर्य्यवान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गणः | गणः | गण

संस्कृतार्थः ।

सःखलु स्वयं सरणशीलः श्वेतबिन्दुङ्किताश्वयुक्त इत्थमीशानो युवा (मरुद्-) गणो बलैरावृतः (अस्ति) अपिच सत्यःपापिनोऽवगन्ताऽनिन्द्यो वीर्य्यवान् (सः) गणोऽस्यकर्म्मणः प्रकर्षेण रक्षिता (भवति) ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

सचमुच अपने आप चलने वाला, चितकबरे घोड़ों वाला इस प्रकार ईशन करने वाला जवान (मरुद)गण बलों से घिरा हुआ (है) और सच्चा, पापिओं के जानने वाला, दोष रहित (और) वीर्यवान (वह) गण इस कर्म्म की भली प्रकार रक्षा करने वाला (है) ॥ ४ ॥

मरुतोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२

पितुःप्रत्नस्यजन्मनावदामसि

सोमस्यजिह्वाप्रजिगातिचक्षसा ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यदीमिन्द्रंशम्यृक्वाणआशता ऽऽदिन्नामानियज्ञियानिदधिरे ।५।

१ पितुः	पितुः(सकाशात्)	पिता से
१ प्रत्नस्य	पुरातनस्य	प्राचीन के
१ जन्मना	जन्मना	जन्म से
१ वदामसि	वदामः (मसइकारागमः)	हम कहते हैं
२ सोमस्य	सोमस्य	सोम की
२ जिह्वा	जिह्वा	जिह्वा
प्र	प्र +	–
२ जिगाति	प्र + जिगाति, भृशंचलति	खूब चलती है
२ चक्षसा	दर्शनेन	दर्शन से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यत्	यदा	जब
ईम्	(पूरणः)	–
इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
शमि	कर्म्मणि (सुपामितिसप्तम्याल्लुक्छतेङ्ग्रस्वश्छान्दसः)	काममें
ऋक्वाणः	स्तुवन्तः (ऋचस्तुतौ)	स्तुतिकरतेहुए
आशत	प्राप्तवन्तः	प्राप्त हुए
आत्	अनन्तरम्	पीछे
इत्	एव	ही
नामानि	नामानि	नामों को
यज्ञियानि	यज्ञार्हाणि	यज्ञके योग्यों को
दधिरे	धृतवन्तः	धारण किया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

पुरातनस्य पितुः (सकाशात्) जन्मना (लब्ध-संप्रदाया वयम्)वदामः (अस्मद्-)जिह्वा (च) सोमस्य दर्शनेन भृशं चलति, यदा (मरुतोयुद्ध-) कर्म्मणीन्द्रं स्तुवन्तः (सन्तः) प्राप्तवन्तस्तदा यज्ञार्हाणि नामानि धृतवन्तः ॥ ५ ॥

भाषार्थः ।

हम प्राचीन पिता से जन्म द्वारा (संप्रदाय को प्राप्त करके) कहते हैं (और हमारी) जिह्वा सोम के दर्शन से खूब चलती है, जब (युद्ध के) काम में स्तुति करते हुए (मरुत) इन्द्र को प्राप्त हुए तब यज्ञ के योग्य नामों को धारण किया ॥ ५ ॥

(१) मरुतों के यज्ञीय नामों को धारण करने की कथा हमने प्राचीन पितरों की परम्परा से सीखी है और—

(२) हमारी बाणी सोम के दर्शन से सूक्त उच्चारण के लिये प्रेरित होती है।

(३) जब मरुत अपने साएं २ शब्द से स्तुति करते हुए युद्ध में इन्द्र को प्राप्त हुए तब वे देवता की पदवी को पहुंचे।

मरुतोदेवता जगतीछन्दः ।१२।१२।१२।१२

श्रियसेकंभानुभिःसंमिमिक्षिरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तेरश्मिभिस्तक्षकवभिःसुखादयः ।
तेवाशीमन्तइष्मिणोअभीरवो विद्रं-
प्रियस्यमारुतस्यधाम्नः । ६ ।

शिवसे	सेवितुम् (षिञ् सेवायांतुमर्थे-सेन् प्रत्ययः)	सेवन करने के लिये
कम्	उदकम्	जल को
भानुऽभिः	सूर्य्यसम्बन्धिभिः	सूर्य्य संबंधियों से
सम्	सम्यक्	खूब
मिमिक्षिरे	सेक्तुमिच्छितवन्तः (मिह सेचने, सन्नन्ता ल्लिटिष्यत्ययेना ऽऽत्मनेपदम्)	बरसाने की इच्छा की है
ते	ते	उन्हों ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रश्मिऽभिः	किरणैः	किरणों से
ते	ते	वे
ऋक्वऽभिः	स्तोतृभिः (ऋचस्तुतौ)	स्तोताओंकेद्वारा
सुऽखादयः	शोभनंखादिः कङ्कणंयेषांतथोक्ताः	सुन्दर कंगन पहनने वाले
ते	ते	उन्होंने
वाशीऽमन्तः	आयुधोपेताः	शस्त्रों वाले
इष्मिणः	(शीघ्र)गामिनः (इषगतौ मक्सिसतीनिः प्रत्ययः)	(शीघ्र)चलने वाले
अभीरवः	निर्भयाः	निडर
विद्रे	लब्धवन्तः (विदृलृलाभे,लिटिद्विर्वचनाद्यभावश्छान्दसः 'इरयोरे' इतिरे आदेशश्च)	प्राप्त किया
प्रियस्य	प्रियम् (कर्मणिषष्ठी)	प्यारे को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ मारुतस्य	मरुत्सम्बन्धिनम् (,,)	मरुतसंबंधी को
२ धाम्नः	धाम (,,)	स्थान को

संस्कृतार्थः।

शोभनकङ्कणधारिणस्ते सूर्य्य किरणैः स्तोतृभिः (च युक्ताः सन्तः प्राणिभिः) सेवितुमुदकं सम्यक् सेक्तुमिच्छितवन्तः, आयुधोपेताः (शीघ्र-) गामिनो निर्भयाः (च) ते मरुत्सम्बन्धिनं प्रियं स्थानं लब्धवन्तः।६।

भाषार्थः।

उन सुन्दर कंगन पहनने वालों ने सूर्य्य की किरणों (और) स्तुति करने वालों से (युक्त होकर प्राणियों से) सेवन करने के लिये खूब जल बरसाने की इच्छा की है, उन शस्त्रों वाले शीघ्र चलने वाले (और) निर्भय मरुतों ने अपने प्यारे स्थान को प्राप्त किया है।

(१) जैसे सूर्य्य की किरणें वर्षा का हेतु हैं वैसे ही मनुष्य की प्रार्थना भी है।

(२) मरुत संबंधी स्थान को अर्थात आकाश के देवताओं में स्थान को प्राप्त किया।

इति सप्ताशीतितमं सूक्तम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ACC. 29056

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu